



रचनात्मक मूल्यांकन हेतु शिक्षक संदर्शिका

हिंदी (पाठ्यक्रम- अ)

हिंदी (पाठ्यक्रम- ब)

कक्षा - दसवीं



केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केन्द्र, 2 - समुदाय केन्द्र, प्रीत विहार, नई दिल्ली- 1100092

कक्षा नौवीं के हिंदी पाठ्यक्रम हेतु रचनात्मक मूल्यांकन के लिए शिक्षक संदर्शिका

मूल्य :

प्रथम संस्करण : 2010 केमाशिबो, भारत

प्रतियाँ :

कॉपीराइट : केमाशिबो, भारत

प्रकाशक : सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 2, सामुदायिक केन्द्र, शिक्षा केन्द्र, दिल्ली- 110092

अक्षर संयोजन तथा विन्यास : मल्टी ग्राफिक्स, 5748/81, रैगर पुरा, करोल बाग, नई दिल्ली- 110005 फोन : 25783846

मुद्रक :

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक '[सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में,

व्यक्ति की गरिमा और [राष्ट्र की एकता
और अखण्डता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से), "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

51 क. मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
- (ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परीक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई उंचाइयों को छू ले।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a **SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the ² [unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do **HEREBY TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

1. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "Sovereign Democratic Republic (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "unity of the Nation (w.e.f. 3.1.1977)

THE CONSTITUTION OF INDIA

Chapter IV A

Fundamental Duties

ARTICLE 51A

Fundamental Duties - It shall be the duty of every citizen of India-

- (a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;
- (b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;
- (c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;
- (d) to defend the country and render national service when called upon to do so;
- (e) To promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;
- (f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;
- (g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wild life and to have compassion for living creatures;
- (h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;
- (i) to safeguard public property and to abjure violence;
- (j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement.

विषय सूची

हिन्दी पाठ्यक्रम - अ

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	नेता जी का चश्मा	9
2.	बाल गोबिन भगत	15
3.	लखनवी अंदाज	21
4.	मानवीय करुणा की दिव्य चमक	29
5.	एक कहानी यह भी	37
6.	स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन	43
7.	नौबतखाने में इबादत	51
8.	संस्कृति	59
9.	पद	65
10.	राम लक्ष्मण - परशुराम संवाद	71
11.	सवैया एवं कवित्त	77
12.	आत्म कथ्य	85
13.	उत्साह, अट नहीं रही है	91
14.	यह दंतुरित मुस्कान, फसल	97
15.	छाया मत छूना	103
16.	कन्यादान	109
17.	संगतकार	115
18.	माता का आँचल	121
19.	जॉर्ज पंचम की नाक	127
20.	साना साना हाथ जोड़ि	133
21.	एही ढैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!	141
22.	मैं क्यों लिखता हूँ	147
23.	क्रिया	153
24.	विशेषण	155
25.	पद परिचय	159
26.	वाक्य के भेद	161
27.	वाक्य रचनांतरण	163
28.	वाक्य के आधार पर	165
29.	अलंकार	167
30.	निबन्ध	171
31.	पत्र लेखन	173

विषय सूची

हिन्दी पाठ्यक्रम - ब

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	बड़े भाई साहब	181
2	डायरी का एक पन्ना	187
3.	साखी	195
4.	पद	203
5.	हरिहर काका	211
6.	तताँरा वामीरो कथा	219
7.	तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र	225
8.	पर्वत प्रदेश में पावस	233
9.	तोप	241
10.	गिरगिट	249
11.	अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले	257
12.	दोहे	265
13.	मनुष्यता	273
14.	मधुर-मधुर मेरे दीपक जल	281
15.	सपनों के से दिन	289
16.	पतझर में टूटी पत्तियाँ	295
15.	कारतूस	303
16.	कर चले हम फिदा	311
17.	आत्मत्राण	317
18.	टोपी शुक्ला	325
19.	व्याकरण	331

आभार

सलाहकार : केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

- श्री विनीत जोशी, अध्यक्ष, केमाशिबो
- श्रीमती चित्रलेखा गुरुमूर्ति, निदेशक, (शैक्षणिक), केमाशिबो
- डाक्टर साधना पराशर, प्रमुख, नवप्रवर्तन एवं शोध, केमाशिबो

अनुवीक्षण एवं संपादकीय समिति

- श्री पी. मणि, शिक्षा अधिकारी, केमाशिबो
- श्री अल हिलाल अहमद, सहायक शिक्षा अधिकारी

सामग्री निर्माण समूह

हिंदी (पाठ्यक्रम - अ)

- श्रीमती किरण गुप्ता, सेवानिवृत्त अध्यापिका, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
- श्रीमतर प्रेम वर्षा सेठी, सेवा निवृत्त अध्यापिका, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
- डाक्टर (श्रीमती) रेखासिंह, वीर चन्द्र सिंह गडवाली, सर्वोदय बाल विद्यालय साकेत, दिल्ली

हिंदी (पाठ्यक्रम - ब)

- श्रीमती बबीता सिंह, विभागाध्यक्ष, के आर मंगलम वर्ल्ड स्कूल, ग्रेटर कैलाश, दिल्ली
- सुश्री संज्ञा, वेद व्यास डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, दिल्ली
- श्रीमती नीलम रानी, भारतीय विद्या भवन विद्यालय, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, दिल्ली
- श्री अंशुमन ऋषि, कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली



प्रस्तावना

विद्यालयी शिक्षा आज रूपांतरण के जिस दौर से गुज़र रही है, उसके केन्द्र में है मूल्यांकन तथा इसके अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया से अन्तर्संबंध के प्रति एक नया दृष्टिकोण। आज सभी इस तथ्य को मानते हैं कि जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, जैसे पढ़ाया जाता है, अधिगम की प्रक्रिया यह सभी मूल्यांकन की प्रक्रिया से प्रभावित होते हैं। शोध कर्ता, शिक्षाविदों तथा शिक्षा जगत से जुड़े व्यक्तियों में यह एक सामान्य धारणा है कि मूल्यांकन कई बार सीखने के प्रतिफल को बढ़ाने के बजाय बढ़ने से रोक देता है। अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया में यदि हम शिक्षण के विकल्पों और अधिगम की गतिविधियों के अभ्यास को केवल परीक्षा की पूर्व तैयारी मानते हैं, तो हम निश्चित रूप से अपने शिक्षार्थियों के प्रति असफल होने का जोखिम अवश्य उठा रहे होते हैं। मूल्यांकन के लिए काम करते समय एक बड़ा दोष यह पाया जाता है कि शिक्षार्थी का प्रयास होता है कि वह पास होने के लिए न्यूनतम अनिवार्य कार्यों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करे।

आज हमारे समक्ष पारम्परिक परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन को बदलने की चुनौती उभर कर आई है। माध्यमिक स्तर पर सतत एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति को अपने सभी विद्यालयों में लागू करते हुए सीबीएसई ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि मूल्यांकन करते समय विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखा जाना चाहिए। अधिगम एक सतत प्रक्रिया है इसलिए मूल्यांकन भी सतत होना चाहिए। मूल्यांकन अध्यापन एवं अधिगम की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है इसलिए सीसीई (स.स.मू.) में मूलरूप से विद्यार्थी के ज्ञान की परीक्षा के स्थान पर उसके अधिगम की प्रक्रिया को मूल्यांकन के लिए चुना गया है।

इस तरह की संकल्पना ने रचनात्मक मूल्यांकन की भूमिका को और भी अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। यहाँ यह भी बताना आवश्यक है कि कई विद्यालय पहले से ही सतत एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति को अपनाए हुए हैं, इन विद्यालयों ने कक्षा 1 से 8 तक रचनात्मक मूल्यांकन प्रक्रिया को कई वर्षों से क्रियान्वित किया हुआ है। परन्तु उन्होंने इस आकलन को अधिकतर 'परीक्षण' के रूप में प्रयुक्त किया हुआ है, ज्ञान समृद्धि के लिए नहीं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि वे रचनात्मक मूल्यांकन की मूल अवधारणा को स्पष्ट रूप से नहीं समझ सके हैं। इसी कारण संबंधित व्यक्ति रचनात्मक मूल्यांकन के उपकरणों और प्रक्रिया को, जो प्रकृति से संकलित मूल्यांकन जैसे ही है, संकलित मूल्यांकन समझने की भूल कर बैठते हैं और इसीलिए विद्यार्थियों को कई बार संकलित मूल्यांकन के अनुसार मूल्यांकित करते हैं। जब कि महत्व इस बात का है कि ज्ञान प्राप्ति की इस मूल्यांकन प्रक्रिया में विद्यार्थी ने क्या जानकारी ग्रहण की तथा अधिगम की यह प्रक्रिया उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का किस प्रकार मूल्यांकन करने में सहायता करती है।

यह हमें रचनात्मक मूल्यांकन को सशक्त बनाने की आवश्यकता की ओर ले आता है क्योंकि हमारा समग्र उद्देश्य रचनात्मक मूल्यांकन द्वारा एकत्रित सूचनाओं के आधार पर अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाकर अधिगम को सुविधाजनक बनाना है।

इस प्रकार रचनात्मक मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का वह अभिन्न अंग है जो विद्यार्थियों की सहभागिता पर बल देता है। विद्यार्थियों को अपने अधिगम के मूल्यांकन के साथ-साथ अपने सहपाठियों के अधिगम के मूल्यांकन में भी सम्मिलित होना चाहिए तथा उसके लिए संसाधन होने का कार्य भी करना चाहिए। यह शिक्षक द्वारा मूल्यांकन के साथ-साथ स्वमूल्यांकन व सहपाठीय मूल्यांकन की भूमिका को प्रकाश में ले आता है। शोध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि जब विद्यार्थी सहभागिता करते हैं और स्वयं अपने काम के स्वामित्व को संभालते हैं तो अधिगम के प्रति उनकी जिज्ञासा और बढ़ जाती है। रचनात्मक मूल्यांकन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह अधिगम को एक सुखद अनुभूति बना देता है क्योंकि विद्यार्थी की सहभागिता उसकी सीखने की ललक को ही नहीं बढ़ाती अपितु अनजाने में मूल्यांकन की विधियों को भी प्रभावित करती है।

संकलित मूल्यांकन सार्वजनिक जीवन में उपलब्धियों की एक पहचान बनाता है और हम सभी संकलित मूल्यांकन के उपकरणों एवं प्रक्रिया से पूरी तरह से परिचित हैं। फिर भी कुछ अध्यापकों के लिए प्रभावशाली रचनात्मक मूल्यांकन के उपकरण तैयार करना एक कठिन चुनौती है। वे इसे कक्षा शिक्षण के अनुसार व्यवस्थित करने में भी कठिनाई अनुभव करते हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन की संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए अध्यापकों के लिए कुछ उदाहरण प्रदत्त कार्य के रूप में प्रदान किए जा रहे हैं। बोर्ड ने कक्षा नवीं व दसवीं के लिए सभी मुख्य विषयों में रचनात्मक मूल्यांकन पर पुस्तिकाओं की एक शृंखला प्रकाशित की है। यह आशा की जाती है कि अध्यापक और विद्यार्थी इन प्रकाशनों का पूरा-पूरा लाभ उठाएँगे। इन प्रकाशनों में छपी सामग्री को सावधानी पूर्वक पढ़कर अध्यापक इन प्रदत्त कार्यों का कक्षा में उपयोग कर न केवल अपनी शिक्षण योग्यता को बढ़ाएँगे बल्कि इनके आधार पर स्वयं सामग्री तैयार करके पाठ्यक्रम को संप्रेषणीय करके और मूल्यवान बनाएँगे। कुछ व्यावहारिक दिशा निर्देशों को इन पुस्तिकाओं की पाठ्य सामग्री में इस प्रकार संकलित किया गया है जिससे विद्यालय और अध्यापक बोर्ड द्वारा निर्धारित सतत एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत रचनात्मक मूल्यांकन का सही उपयोग कर पाने में सक्षम हो जाएँगे। इस सामग्री को तैयार करने में जिन अध्यापकों का योगदान रहा बोर्ड उन सभी के प्रयासों की सराहना करता है। मैं शिक्षाधिकारी श्री पी.मणि व श्री अल हिलाल अहमद, सहायक शिक्षा अधिकारी की सराहना करता हूँ कि उन्होंने इस संकल्पना को ठोस रूप प्रदान करने में समन्वयकर्ता की भूमिका निभाते हुए इस सामग्री को तैयार करवाया जिससे ये पुस्तिकाएँ छपकर सामने आ सकीं।

मैं पूर्ण हृदय से आशा करता हूँ कि इस बहुमूल्य सामग्री की उपलब्धि से अध्यापक पूरी ईमानदारी के साथ सीसीई योजना के अन्तर्गत बोर्ड से जुड़े सभी विद्यालयों में इसे लागू करने में समर्थ होंगे। पुस्तिकाओं की बेहतरी के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

(विनीत जोशी)

अध्यक्ष

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

शिक्षा का लक्ष्य बच्चों को समाज के लिए उत्तरदायी, उत्पादक और उपयोगी सदस्य बनने की क्षमता प्रदान करना है। विद्यालय में छात्रों के लिए सीखने के अनुभवों और सृजित अवसरों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के माध्यम से निर्मित की जाती हैं। कक्षाकक्ष में छात्र अपने अनुभवों का विश्लेषण और मूल्यांकन करने, शंकाएँ अभिव्यक्त करने, प्रश्न करने, खोजबीन करने और स्वतंत्र रूप से सीखने का कार्य कर सकेंगे। साथ ही साथ शिक्षा का लक्ष्य समाज की वर्तमान आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को दर्शाना और इसके चिरस्थायी मूल्यों और मानवीय आदर्शों को प्रदर्शित करना है। किसी भी समय और स्थान पर इन्हें व्यापक और चिरस्थायी मानवीय आकांक्षाओं और मूल्यों का समकालीन और संदर्भित कथन कहा जा सकता है।

छात्रों की समझ, शैक्षिक लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति और विद्यालय की प्रकृति एक सामाजिक संस्थान के रूप में हमें कक्षा में होने वाले अभ्यासों को सिद्धांतों को तय करने में सहायता दे सकते हैं। इस प्रकार संकल्पनात्मक विकास की प्रक्रिया निर्धारित संदर्भों को गहराई तक ले जाने, समृद्ध बनाने तथा अर्थ के नए आयामों को अर्जित करने की निरंतर प्रक्रिया है। इसी के साथ इससे प्राकृतिक और सामाजिक दुनिया के उन सिद्धांतों का विकास होता है जिनके विषय में बच्चे जानते हैं, इसमें अन्य व्यक्तियों के साथ उनके संबंध शामिल हैं, जो उन्हें यह समझाते हैं कि चीजें ऐसी क्यों हैं, जैसी दिखाई देती है और इसके कारण तथा प्रभाव के बीच क्या संबंध है। इस प्रकार मनोवृत्तियाँ, भावनाएं और मूल्य बोधात्मक विकास का अविभाज्य हिस्सा हैं और ये भाषा, मानसिक प्रस्तुतीकरण, संकल्पनाओं और तार्किकता के विकास के साथ जुड़े हैं। जैसे जैसे बच्चों की उच्च अवबोधात्मक क्षमताओं का विकास होता है उनका अपनी मान्यताओं से और अधिक परिचय हो जाता है तथा वे अपने सीखने की प्रक्रिया का विनियमन करने में सक्षम होते हैं।

अधिगम की विशेषताएँ

- सभी बच्चे सीखने के लिए प्राकृतिक रूप से प्रेरित होते हैं और वे सीखने में सक्षम होते हैं।
- अमूर्त सोच, परावर्तन (प्रतिक्रिया) और कार्य के लिए समझ और क्षमता का विकास अधिगम की प्रक्रिया के सबसे अधिक महत्वपूर्ण पक्ष हैं।
- बच्चे कई तरीकों से सीखते हैं - अनुभव द्वारा, चीजों को बनाने और सीखने के जरिए, प्रयोगों से, पढ़ने से, चर्चा से, पूछकर, सुनकर, सोचकर और परावर्तन (प्रतिक्रिया) और वे बोलकर या लिखकर स्वयं को

अभिव्यक्त (व्यक्तिगत रूप व सामूहिक रूप से भी) करते हुए भी सीखते हैं – ये अलग अलग या अन्य के साथ मिलकर की जा सकती हैं। उन्हें अपने विकास के दौर में इन सभी प्रकारों के अवसरों की आवश्यकता होती है।

- जब तक बच्चा बोधात्मक रूप से तैयार नहीं है उससे पहले कुछ भी सिखाने से वास्तविक अधिगम नहीं होता है। बच्चे अनेक तथ्यों को “याद” रख सकते हैं किन्तु वे उन्हें समझ नहीं सकते या वे अपने आस पास की दुनिया के साथ इनका संबंध स्थापित नहीं कर सकते हैं।
- अधिगम की प्रक्रिया विद्यालय के अंदर और विद्यालय के बाहर भी होती है। यदि इन दोनों क्षेत्रों में आपस में अंतःक्रिया होती है तो अधिगम की प्रक्रिया में समृद्धि आती है। कला और कार्य से अधिगम की समग्र प्रक्रिया के अवसर मिलते हैं जो सूक्ष्म सौन्दर्य बोध तत्वों से समृद्ध होते हैं। यह अनुभव केवल प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ही सीखकर जीवन में समेकित किए जा सकते हैं।
- अधिगम इस प्रकार की रफ्तार से समन्वित होना चाहिए कि इससे सीखने वाले छात्र संकल्पनाओं से स्वयं को जोड़ सकें और वे परीक्षा के बाद इन्हें भूल जाने तक ही याद रखने के बजाए उसे गहराई से समझ सकें। इसी के साथ सीखने की प्रक्रिया में विविधता और चुनौती होनी चाहिए, और इन्हें रोचक तथा बाँधे रखने वाला होना चाहिए। इसमें ऊब का होना एक ऐसा संकेत है कि यह कार्य बच्चे के लिए यांत्रिक रूप से दोहराने वाला है और बोधात्मक रूप से इसका महत्व कम है।
- अधिगम की प्रक्रिया मध्यस्थता के साथ या इसके बिना हो सकती है। दूसरे मामले में सामाजिक संदर्भ और अंतःक्रियाएँ, विशेष रूप से जो सक्षम हैं, उन छात्रों को बोधात्मक स्तरों से ऊपर कार्य करने के मार्ग प्रदान करती हैं।

पाठ्यचर्या में मूल्यांकन का स्थान

पाठ्यक्रम वास्तव में समग्र लक्ष्यों, पाठ्यचर्या, सामग्रियों, विधियों और मूल्यांकन से मिलकर बना एक समग्र अध्यापन – अधिगम कार्यक्रम है। संक्षेप में, यह ज्ञान और क्षमताओं की रूपरेखा प्रदान करता है, जिसे एक विशेष स्तर पर उपयुक्त माना जाता है। मूल्यांकन से न केवल छात्रों की प्रगति और उपलब्धि को मापा जा सकता है बल्कि इससे अध्यापन सामग्रियों और विधियों की प्रभावशीलता को भी मापा जा सकता है, जिनका उपयोग अध्यापन में किया गया हो। अतः मूल्यांकन को प्रभावी आपूर्ति और अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया में आगे सुधार के दोहरे प्रयोजन के साथ पाठ्यक्रम के घटक के रूप में देखा जाना चाहिए।

यदि मूल्यांकन को उचित रूप से समझा जाए तो इसे सीखने की अवधि के लिए निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अध्यापकों

द्वारा इस्तेमाल किए जाने और छात्रों द्वारा सीखने के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। जब सीखने के अभ्यास के अंत के रूप में मूल्यांकन को देखा जाता है तो अध्यापक और छात्र दोनों इस अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के बाहर दिखाई देते हैं, और मूल्यांकन पाठ्यचर्या के लिए मोटे तौर पर असंगत और असंबद्ध हो जाता है। पुनः यह अवधारणा छात्रों के लिए मूल्यांकन के साथ चिंता और तनाव को जोड़ती है। इसके विपरीत, यदि मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में एक अविभाज्य भाग के रूप में देखा जाता है तो यह अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया दोनों के लिए एक निरंतर प्रक्रिया बन जाती है। जब मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में शामिल कर दिया जाता है तो छात्र टेस्ट तथा परीक्षा को डर के साथ नहीं लेते। इससे सीखने की प्रक्रिया का निदान, उपचार और वृद्धि की जा सकेगी।

विद्यालयों में मूल्यांकन के विस्तार को छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लगभग सभी क्षेत्रों में ले जाया जा सकता है। इसमें शैक्षिक और सह शैक्षिक क्षेत्र शामिल होने चाहिए अर्थात् इसे समग्र प्रकृति का होना चाहिए। यह शिक्षा के लक्ष्यों के अनुरूप है। मूल्यांकन एक निरंतर प्रक्रिया है और इससे छात्रों की क्षमताओं और कमियों को बार बार प्रकट किया जा सकता है, ताकि छात्रों को अपनी समझ को बढ़ाने और स्वयं में सुधार लाने के बेहतर अवसर मिल सकें। इसमें अध्यापकों को भी अपनी अध्यापन कार्यनीतियों के संशोधन के लिए प्रतिपुष्टि मिलती है।

बच्चे के अधिगम के मूल्यांकन का संपूर्ण चित्र पाने के लिए छात्र का मूल्यांकन निम्नलिखित क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए -

- वह विभिन्न विषय क्षेत्रों से संबंधित वांछित कौशल सीख सके और अर्जित कर सके।
- विभिन्न विषय क्षेत्रों में आवश्यक मापन सहित उपलब्धि के स्तर को अर्जित कर सके।
- बच्चे के व्यक्तिगत कौशलों, रुचियों, मनोवृत्तियों और प्रेरणा का विकास किया जा सके।
- एक स्वस्थ और उत्पादक जीवन को समझ सके और अपना सके।
- समय के साथ बच्चे के सीखने, व्यवहार और प्रगति में आने वाले बदलावों की निगरानी की जा सके।
- विद्यालय के अंदर और बाहर विभिन्न परिस्थितियों और अवसरों पर प्रतिक्रिया कर सके।
- विभिन्न प्रकार के परिवेशों, परिस्थितियों और स्थितियों में सीखी गई बातों का उपयोग कर सके।

- स्वतंत्र, सहयोगात्मक और सौहार्द पूर्ण रूप से कार्य कर सके।
- विश्लेषण और मूल्यांकन कर सके।
- सामाजिक और पर्यावरण संबंधी मुद्दों से अवगत हो सके।
- सामाजिक और पर्यावरण संबंधी परियोजनाओं और कारणों में हिस्सा ले सके।
- सीखी गई बातों को लंबे समय तक याद रख सके।

इस प्रकार मूल्यांकन एक उपयोगी, वांछित और समर्थकारी प्रक्रिया है। इसे साकार करने के लिए व्यक्ति को निम्नलिखित प्राचल ध्यान में रखने चाहिए -

निम्नलिखित की आवश्यकता -

- छात्र का मूल्यांकन
- छात्र की अधिगम प्रक्रिया और विषयों तथा पाठ्यक्रम से बाहर की सीमाओं में की गई प्रगति के बारे में सूचना जमा करने के अनेक तरीकों का उपयोग।
- सूचना को निरंतर जमा करना और इसका अभिलेखन।
- प्रत्येक छात्र की प्रतिक्रिया और सीखने के तरीके तथा ऐसा करने में लगने वाले समय को महत्व देना।
- निरंतर आधार पर इसकी रिपोर्ट बनाना तथा प्रत्येक छात्र की प्रतिक्रिया पर संवेदनशील होना।
- फीडबैक (प्रतिपुष्टि) प्रदान करना जिससे सकारात्मक कार्य किया जा सके और छात्र को बेहतर निष्पादन में सहायता मिले।

मूल्यांकन की प्रक्रिया में निम्नलिखित बातों को न करने की सावधानी रखने की आवश्यकता है :

- छात्रों को धीमा, कमजोर, बुद्धिमान आदि श्रेणी में बाँटना।
- उनके बीच तुलना करना।
- नकारात्मक वक्तव्य देना।

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) का अर्थ छात्रों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन की प्रणाली से है, जिसमें छात्रों के विकास के सभी पक्ष शामिल हैं। यह एक बच्चे की विकास प्रक्रिया है, जिसमें दोहरे उद्देश्यों पर बल दिया जाता है। ये उद्देश्य एक ओर मूल्यांकन में निरंतरता और व्यापक रूप से सीखने के मूल्यांकन पर तथा दूसरी ओर व्यवहार के परिणामों पर आधारित हैं।

यहां “निरंतरता” का अर्थ इस पर बल देना है कि छात्रों की “वृद्धि और विकास” के अभिज्ञात पक्षों का मूल्यांकन एक बार के कार्यक्रम के बजाए एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसे संपूर्ण अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में निर्मित किया गया है और यह शैक्षिक सत्र की पूरी अवधि में फैली हुई है। इसका अर्थ है मूल्यांकन की नियमितता, अधिगम अंतरालों का निदान, सुधारात्मक उपायों का उपयोग, स्वयं मूल्यांकन के लिए अध्यापकों और छात्रों के साक्ष्य का फीडबैक।

दूसरा पद “व्यापक” का अर्थ है शैक्षिक और सह शैक्षिक पक्षों को शामिल करते हुए छात्र की वृद्धि और विकास को परखने की योजना। चूंकि क्षमताएँ, मनोवृत्तियाँ और सोच अपने आप को लिखित शब्दों के अलावा अन्य रूपों में प्रकट करती है, इसलिए यह पद अनेक साधनों और तकनीकों के अनुप्रयोग को संदर्भित करता है (परीक्षणकारी और गैर परीक्षणकारी दोनों) और यह सीखने के क्षेत्रों में छात्र के विकास के मूल्यांकन पर लक्षित है जैसे:

- ज्ञान
- समझ / व्याख्या
- अनुप्रयोग
- विश्लेषण
- मूल्यांकन
- सृजनात्मकता

सीसीई के उद्देश्य हैं :

- बोधात्मक, मनोप्रेरक और भावात्मक कौशलों के विकास में सहायता।
- सीखने की प्रक्रिया पर बल देना और याद रखने पर बल नहीं देना।

- मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का अविभाज्य हिस्सा बनाना।
- नियमित निदान के आधार पर उपचारात्मक अनुदेशों के बाद छात्रों की उपलब्धि और अध्यापन-अधिगम कार्यनीतियों के सुधार के लिए मूल्यांकन का उपयोग करना।
- मूल्यांकन को निष्पादन के वांछित स्तर बनाए रखने के लिए गुणवत्ता नियंत्रण युक्ति के रूप में इस्तेमाल करना।
- सामाजिक उपयोगिता, वांछनीयता या एक कार्यक्रम की प्रभावशीलता का निर्धारण करना और छात्र, सीखने की प्रक्रिया और सीखने के परिवेश के बारे में उपयुक्त निर्णय लेना।
- अध्यापन और अधिगम प्रक्रिया को छात्र केन्द्रित कार्यकलाप बनाना। सीसीई की विशेषताएँ हैं :

सीसीई की विशेषताएँ हैं :

- सीसीई के “निरंतर” पक्ष में मूल्यांकन के “निरंतरता” और “आवधिकता” पक्षों का ध्यान रखा जाता है।
- निरंतरता का अर्थ मूल्यांकन की अनेक तकनीकों का अनौपचारिक रूप से उपयोग करते हुए छात्रों का मूल्यांकन अनुदेशों के आरंभ में (नियोजन मूल्यांकन) और अनुदेशात्मक प्रक्रिया के दौरान मूल्यांकन (निर्माणकारी मूल्यांकन) करना है।
- आवधिकता का अर्थ इकाई / कार्य अवधि (सारांश) के अंत में बार बार निष्पादन का मूल्यांकन करना है।
- सीसीई के “व्यापक” घटक में बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास का मूल्यांकन करने का ध्यान रखा जाता है। इसमें छात्र की वृद्धि के शैक्षिक और सह शैक्षिक पक्षों का मूल्यांकन शामिल है।
- शैक्षिक पक्षों में पाठ्यक्रम के क्षेत्र या विषय विशिष्ट क्षेत्र शामिल हैं, जबकि सह शैक्षिक पक्षों में जीवन कौशल, सह पाठ्यक्रमेतर कार्यकलाप, मनोवृत्ति और मान्यताएँ शामिल हैं।
- शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन निरंतर और आवधिक रूप से मूल्यांकन की अनेक तकनीकों का औपचारिक तथा अनौपचारिक उपयोग करते हुए किया जाता है। नैदानिक मूल्यांकन इकाई / कार्य अवधि परीक्षा के अंत में दिया जाता है। कुछ इकाइयों में खराब निष्पादन के कारणों का निदान करने के लिए नैदानिक परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। इनका अनुवर्तन उपयुक्त हस्तक्षेपों और इसके बाद पुनः परीक्षा द्वारा किया जाता है।

- सह शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन अभिज्ञात मानदण्डों से आधार पर अनेक तकनीकों का उपयोग करते हुए किया जाता है, जबकि जीवन कौशलों में मूल्यांकन का कार्य मूल्यांकन के संकेतकों और जाँचसूचियों के आधार पर किया जाता है।

स्रोत : परीक्षा सुधार, एनसीईआरटी

सीसीई के कार्य हैं :

- यह अध्यापक को प्रभावी अध्यापन कार्यनीतियां बनाने में सहायता देते हैं।
- निरंतर मूल्यांकन से छात्र की प्रगति (विशिष्ट शैक्षिक और सह शैक्षिक क्षेत्रों के संदर्भ सहित क्षमता और उपलब्धि) सीमा और स्तर के नियमित मूल्यांकन में सहायता मिलती है।
- निरंतर मूल्यांकन से कमियों का निदान किया जा सकता है और अध्यापक छात्र की क्षमताओं, कमियों और जरूरतों को इससे सुनिश्चित कर सकते हैं। इससे अध्यापकों को तत्काल फीडबैक मिलता है, जो यह निर्णय ले सकते हैं कि एक विशेष इकाई या संकल्पना पूरी कक्षा को दोबारा पढ़ाने की जरूरत है या कुछ ही छात्रों को उपचारात्मक अनुदेश की आवश्यकता है।
- निरंतर मूल्यांकन द्वारा बच्चे अपनी क्षमताओं और कमियों जान सकते हैं। इससे बच्चे को अपने अध्ययन का वास्तविक स्वयं मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। इससे बच्चों को पढ़ाई की अच्छी आदतें विकसित करने, गलतियों को सुधारने और अपने कार्यकलापों को वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर निर्देशित करने की प्रेरणा मिलती है। यह अनुदेश के उन क्षेत्रों का निर्धारण करने में छात्र की सहायता करता है, जिस पर और अधिक बल देने की आवश्यकता है।
- निरंतर और व्यापक मूल्यांकन मनोवृत्ति और रुचि के क्षेत्रों को अभिज्ञात कराता है। यह मनोवृत्तियों और मूल्य प्रणालियों में बदलावों को अभिज्ञात करने में सहायता देता है।
- यह भविष्य में विषयों, पाठ्यक्रमों और कैरियर के विषय में निर्णय लेने में सहायता देता है।
- इससे शैक्षिक और सह शैक्षिक क्षेत्रों में छात्रों की प्रगति पर सूचना / रिपोर्ट मिलती है और इस प्रकार छात्रों की भावी सफलताओं का अनुमान लगाने में मदद मिलती है।

निरंतर मूल्यांकन से समय समय पर बच्चे की उपलब्धि, अध्यापकों और माता-पिता में जागरूकता लाने में मदद मिलती है। वे उपलब्धि में आने वाली गिरावट के संभावित कारणों पर विचार कर सकते हैं और अनुदेश के उपचारात्मक उपाय कर सकते हैं कि कहाँ अधिक बल देने की आवश्यकता है। कई बार कुछ व्यक्तिगत कारणों से, पारिवारिक समस्याओं

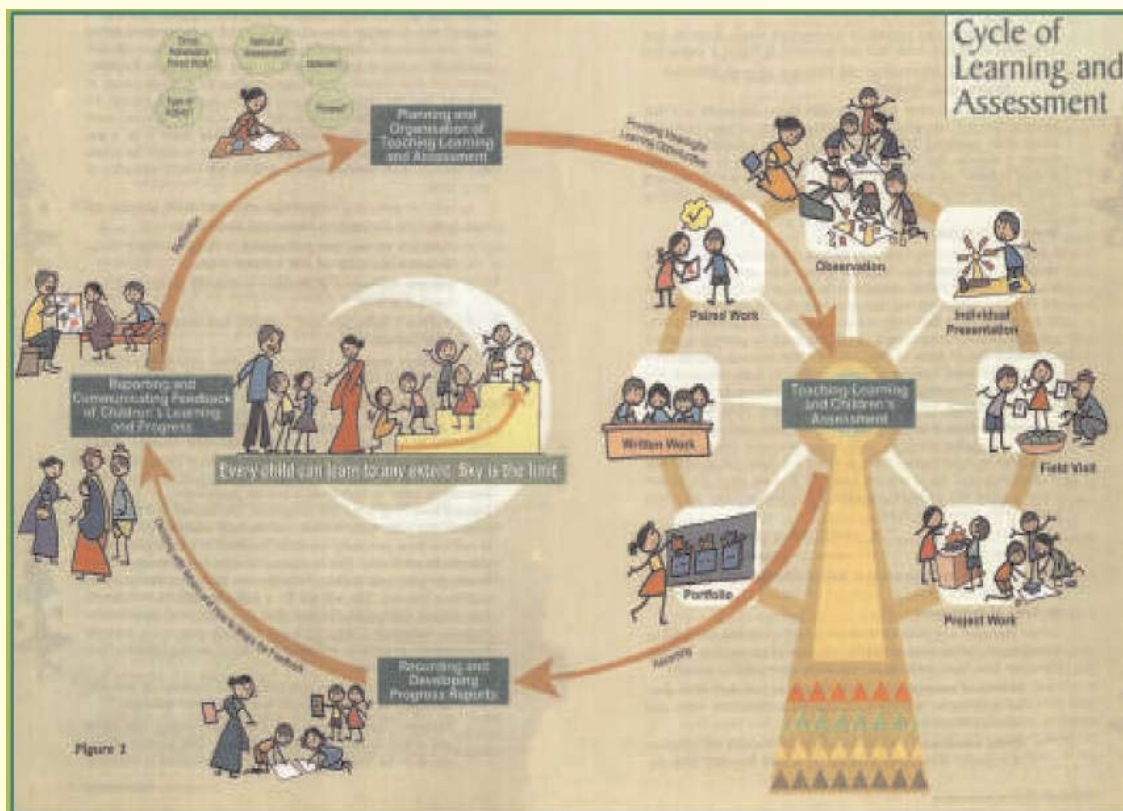
या समायोजन की समस्याओं से बच्चे अपनी पढ़ाई की उपेक्षा करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उनकी उपलब्धि में अचानक गिरावट आती है। यदि अध्यापक, छात्र और माता पिता उपलब्धि में इस अचानक आई गिरावट के बारे में जानकारी नहीं पाएँगे और बच्चे द्वारा लंबी अवधि तक पढ़ाई की उपेक्षा जारी रहेगी तो इसके परिणाम स्वरूप उपलब्धि में कमी आएगी और बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में स्थायी कमी आएगी।

सीसीई का प्रमुख बल छात्रों की निरंतर वृद्धि पर है, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जाए और इसलिए यह केवल छात्र की शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन तक सीमित नहीं होगा। इसमें छात्र को प्रेरित करने के साधनों के रूप में मूल्यांकन का इस्तेमाल किया जाता है ताकि कक्षाकक्ष में सीखने में सुधार लाने के लिए फीडबैक और अनुवर्तन कार्य की व्यवस्था की जा सके तथा छात्र की रूपरेखा का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत किया जा सके।

इसी के आधार पर विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक मूल्यांकन की संकल्पना का उद्भव हुआ है।

शैक्षिक और सह शैक्षिक मूल्यांकन

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन के लिए शैक्षिक और सह शैक्षिक दोनों ही क्षेत्रों में चितम अन्यता देने की आवश्यकता है इस समग्र मूल्यांकन में प्रत्येक छात्र के लिए एक जारी, परिवर्तनशील और व्याख्यात्मक रूपरेखा तैयार



करने की आवश्यकता है, जो ईमानदार, प्रोत्साहनकारी और विवेकशील हो। जबकि अध्यापक प्रतिदिन सुधारात्मक कार्यनीतियों को प्रदर्शित, योजनाबद्ध और कार्यान्वित करते हैं, छात्र की धारित और उच्चारित करने की क्षमता वह है जो एक समय के दौरान सीखी जाती है, इसे भी आवधिक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। ये मूल्यांकन अनेक रूपों में किए जा सकते हैं, किन्तु इन सभी को जहाँ तक संभव हो व्यापक और असतत होना चाहिए। साप्ताहिक, पाक्षिक या तिमाही समीक्षाएँ (सीखने के क्षेत्र पर निर्भर करते हुए) जो खुले तौर पर किसी अन्य छात्र के साथ एक छात्र की तुलना नहीं करती और सकारात्मक हैं तथा आम तौर पर रचनात्मक अनुभवों की सिफारिश बच्चों के बीच न केवल सीखने और धारित करने की क्षमता बढ़ाने हेतु, बल्कि उनमें कौशल विकसित करने के लिए भी की जाती है।

अध्याय २

विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

पिछले दशक में सार्वजनिक या बोर्ड की परीक्षाओं को तनावरहित बनाकर छात्रों के भार को कम करने के प्रति निरंतर प्रयास किए गए हैं। छात्रों और विद्यालयों में अधिक से अधिक अंक पाने और इस प्रकार अधिक प्रतिस्पर्द्धा की तगड़ी दौड़ बनी हुई है।

सीबीएसई द्वारा अंकों के स्थान पर ग्रेड लाने का कदम सही दिशा में उठाया गया है। विद्यालयों को कार्य करने योग्य विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक योजना के सृजन द्वारा सशक्त बनाकर प्रतिमान स्थापित किया गया है।

विद्यालय आधारित निरंतर और व्यापक मूल्यांकन प्रणाली की स्थापना की जानी चाहिए ताकि :

- बच्चों पर दबाव कम किया जा सके।
- मूल्यांकन को व्यापक तथा नियमित बनाया जा सके।
- रचनात्मक अध्यापन के लिए अध्यापक को स्थान दिया जा सके।
- निदान और सुधार के साधन प्रदान किए जा सके।
- छात्रों को अधिक कौशल प्रदान किए जा सके।

सीसीई आधारित विद्यालय के लक्ष्य :

- अवसर तत्व और विषयपरकता को हटाना (जहाँ तक संभव हो) याद रखने की क्षमता पर से बल हटाना, शैक्षिक और सह शैक्षिक पक्षों को शामिल करते हुए छात्र के विकास के पक्षों का व्यापक मूल्यांकन करने को प्रोत्साहन देना।
- निरंतर मूल्यांकन की प्रक्रिया समग्र अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया के एक अविभाज्य अंतर्निर्मित पक्ष के रूप में अनुदेशात्मक समय के कुल दौर में फैला हुआ निरंतर मूल्यांकन है।
- अध्यापकों, छात्रों, माता पिता और समाज द्वारा प्रभावी उपयोग के लिए परिणामों की कार्यात्मक और सार्थक घोषणा।

- परीक्षा परिणामों के उपयोग न केवल छात्र की उपलब्धियों और प्रवीणताओं के स्तरों के मूल्यांकन के लिए हैं बल्कि उसके निदान और उपचारात्मक / समृद्धीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से उसके सुधार के लिए मुख्य रूप से हैं।
- अन्य अनेक संबद्ध प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए परीक्षाओं के आयोजन की प्रक्रिया में सुधार।
- अनुदेशात्मक सामग्रियों और विधि में सहवर्ती परिवर्तन आरंभ करना।
- माध्यमिक स्तर के आगे सेमेस्टर (सत्र) प्रणाली आरंभ करना।
- छात्रों के निष्पादन और प्रवीणता के निर्धारण तथा घोषणा में अंकों के स्थान पर ग्रेडों का उपयोग करना।

उपरोक्त लक्ष्य विद्यालयों में बाह्य परीक्षा और मूल्यांकन दोनों के लिए संगत हैं।

शिक्षा के लक्ष्य पर स्थिति शोधपत्र - एनसीएफ 2005-एनसीईआरटी

इसकी विशेषताएँ

विद्यालय आधारित मूल्यांकन

- पारंपरिक प्रणाली की तुलना में व्यापक, अधिक व्याख्यात्मक और निरंतर है।
- इसका लक्ष्य प्राथमिक रूप से छात्रों को व्यवस्थित अधिगम और विकास में सहायता देना है।
- इसमें भविष्य के जिम्मेदार नागरिकों के रूप में छात्रों की जरूरतों की देखभाल की जाती है।
- यह अधिक पारदर्शी, भविष्य निर्मात्री है और इसमें छात्रों, अध्यापकों और माता पिता के बीच जुड़ाव की अधिक संभावना मिलती है।

विद्यालय आधारित मूल्यांकन से अध्यापकों को अपने छात्रों के बारे में निम्नलिखित बातें जानने का अवसर मिलता है :

- उन्होंने क्या सीखा?
- उन्होंने कैसे सीखा?
- मिलजुलकर सीखने के उद्देश्यों की प्राप्ति में उनके सामने किस प्रकार की कठिनाइयाँ / सीमाएँ आती हैं?

- बच्चे क्या सोचते हैं?
- बच्चे क्या महसूस करते हैं?
- उनकी रुचियाँ और झुकाव क्या हैं?

अब केन्द्र गहराई से सीखने के परिवेश की ओर प्रतिस्थापित हो गया है। अब शिक्षा शास्त्र में और “नियंत्रण” से “समृद्धिकरण” विद्यालयों के “सशक्तीकरण” की क्षमताओं में प्रतिमान विस्थापन है।

पारंपरिक विद्यालय	विद्यालय का समृद्धिकरण	विद्यालय का सशक्तीकरण
? अध्यापक केन्द्रित ? विषय और कक्षाएँ ? छात्रों को छांटना और उनकी रैंकिंग क्षमता : याददाश्त प्रतिस्पर्द्धा	? छात्र केन्द्रित ? स्वयं निर्देशित ? निरंतर मूल्यांकन क्षमता : ? समीक्षात्मक सोच ? सहयोगात्मक ? रचनात्मक	? अनुभव केन्द्रित ? आभासी प्रमाणिकता ? बहु साक्षरता क्षमता : ? जोखिम उठाना ? नैतिकता ? अंतःक्रियात्मक

मूल्यांकन के चार प्रतिमान हैं

(1) अधिगम का मूल्यांकन

सबसे अधिक सामान्य रूप से मूल्यांकन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के ज्ञान, मनोवृत्ति या कौशलों का वर्णन या मात्रा ज्ञात करने का प्रयास करता है। अध्यापक के निर्देश देने की क्षमता सर्वोपरि है और छात्र इन परिस्थितियों में मूल्यांकन की प्रक्रिया की रूपरेखा या कार्यान्वयन में बहुत कम शामिल होता है -II

- सारांश
- अध्यापक द्वारा निर्णय कि अधिगम की रूपरेखा

- अध्यापक द्वारा साक्ष्य संग्रह
- अध्यापक द्वारा निर्णय कि मूल्यांकन में क्या सीखा गया है (और क्या नहीं)?

(2) अधिगम के लिए मूल्यांकन

अधिगम के लिए मूल्यांकन में छात्र की स्वायत्तता के बढ़े हुए स्तर शामिल हैं, किन्तु इसमें अध्यापक का मार्गदर्शन और सहयोग अपेक्षित है। अधिगम के लिए मूल्यांकन कुछ ऐसा है जिसे “निर्माणात्मक मूल्यांकन ” के रूप में देखा जाता है और इसे सूचित करने के अध्यापन के रूप में देखा जा सकता है। इसमें छात्रों को उपयोगी सलाह देने पर अधिक बल दिया जाता है और अंक तथा ग्रेडिंग देने पर कम दिया जाता है –

- अध्यापक द्वारा अधिगम की रूपरेखा
- छात्र को प्रतिपुष्टि सहित अध्यापक द्वारा मूल्यांकन की रूपरेखा
- अध्यापक यह परखता है कि क्या सीखा गया है (छात्र इसकी अंतर्दृष्टि विकसित करता है कि क्या नहीं सीखा गया)

(3) अधिगम के रूप में मूल्यांकन

“अधिगम के रूप में मूल्यांकन ” संभवतया नैदानिक मूल्यांकन के साथ सबसे अधिक जुड़ा हुआ है और इसे सूचित अधिगम पर बल सहित निर्मित किया जा सकता है। अधिगम के रूप में मूल्यांकन से स्वयं मूल्यांकन और अभिजात मूल्यांकन के अवसर पैदा होते हैं। छात्र अपने अधिगम और अन्य लोगों के अधिगम के बारे में गुणवत्तापूर्ण सूचना उत्पन्न करने के लिए अधिक दायित्व लेते हैं –

- अध्यापक और छात्र सह निर्मित अधिगम
- अध्यापक और छात्र सह निर्मित मूल्यांकन
- अध्यापक और छात्र सह निर्मित अधिगम प्रगति मानचित्र

अधिगम कार्यकलापों के रूप में मूल्यांकन तथा अधिगम के लिए मूल्यांकन को अध्यापन तथा अधिगम में गहराई से जोड़ा जाना चाहिए और यह प्रतिपुष्टि की पुनरावृत्ति का स्रोत होना चाहिए, जिससे छात्र समायोजन, पुनःविचार और पुनः अधिगम कर सकें।

(4) अधिगम में मूल्यांकन

अधिगम में मूल्यांकन अध्यापन तथा अधिगम के केन्द्र में प्रश्न रखता है। यह अध्यापन को “सही उत्तर” पर केन्द्रित न करके “एक उपयोगी प्रश्न” पर केन्द्रित करता है। पूछताछ के जरिए छात्र उन प्रक्रियाओं में लिप्त होते हैं जो उनके अधिगम के बारे में प्रतिपुष्टि देते हैं, जो अनेक स्रोतों और कार्यकलापों से आते हैं। यह अन्य अधिगम कार्यक्रमों के निर्माण, पूछताछ की दिशा तथा अन्य प्रश्नों को जन्म देने में योगदान देता है –

- अधिगम के केन्द्र में छात्र
- छात्र अधिगम की निगरानी, मूल्यांकन और प्रतिक्रिया देते हैं
- छात्र (स्वयं और अन्य के लिए) अधिगम का प्रदर्शन आरंभ करते हैं
- अध्यापक एक प्रशिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में

अध्यापकों और छात्रों को प्रत्येक मूल्यांकन कार्यनीति का प्रयोजन समझने की आवश्यकता होती है, ताकि छात्र छात्रों और अध्यापकों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे समग्र मूल्यांकन ‘पैकेज’ को शुद्धतापूर्वक ग्रहण करते हैं, गहराई से अधिगम और समझ को उत्पन्न करने के लिए सार्थक अधिगम सूचना का उपयोग करते हैं।

मूल्यांकन का प्रयोजन

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि अध्ययन के विभिन्न विषयों में बीते समय में बच्चे के अंदर क्या अधिगम, परिवर्तन और प्रगति हुई है और बच्चे के व्यक्तित्व के अन्य पक्ष।
- यह पता लगाना कि प्रत्येक छात्र की जरूरतें और अधिगम शैली क्या हैं?
- एक अध्यापन-अधिगम योजना संकल्पित करना जो वैयक्तिक जरूरतों और अधिगम शैलियों के लिए प्रतिक्रियाशील हो।
- मूल्यवर्धन द्वारा अध्यापन-अधिगम सामग्रियों का सुधार।
- प्रत्येक छात्र को अपनी रुचियों, मनोवृत्तियों, क्षमताओं और कमियों के बारे में पता लगाने में सहायता करना ताकि छात्र प्रभावी अधिगम कार्यनीतियाँ विकसित कर सकें।
- पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को पाने की सीमा का मापन करना।

- अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ाना।
- प्रत्येक छात्र की प्रगति को अभिलेखित करना और माता पिता तथा अन्य हितधारकों को इसका सम्प्रेषण करना।
- अध्यापक और छात्र के बीच वार्तालाप कायम रखना और साथ ही माता पिता को प्रणाली के समग्र सुधार के लिए एक संयोगात्मक प्रयास के रूप में जोड़े रखना।
- अभिजात और स्वयं मूल्यांकन के जरिए प्रक्रिया में छात्रों को शामिल करना।

मूल्यांकन में विभिन्न चरण

परीक्षा मूल्यांकन नहीं है, यह केवल मूल्यांकन का एक साधन है। जैसा कि हमने ऊपर देखा है, मूल्यांकन वास्तव में अध्यापन अधिगम प्रक्रिया का अविभाज्य हिस्सा है और इसलिए इसे पृथक्करण के अंतिम चरण के रूप में नहीं देखा जा सकता है। मूल्यांकन का समग्र लक्ष्य अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया में सुधार की जानकारी जमा करना है। इसलिए इसके विशिष्ट अलग अलग चरण हैं।

चरण-1 अध्यापन और अधिगम की प्रभावशीलता की सीमा के साक्ष्य और इसके विषय में जानकारी जमा करना

हम अनेक साधनों का इस्तेमाल करते हुए कई तरीकों से जानकारी जमा करते हैं। पर्यवेक्षण, वार्तालाप और चर्चा, कार्य परियोजनाएँ, विभिन्न प्रकार के परीक्षण आदि कुछ विधियाँ और सॉफ्टवेयर जिनमें हम सूचना जमा करने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

चरण 2 सूचना का अभिलेखन

जमा की गई जानकारी को व्यवस्थित रूप से अभिलेखित करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह न केवल समृद्ध निवेशों से बनी है, जिनका उपयोग अध्यापन और अधिगम को सुधारने में किया जाता है बल्कि इसमें निष्कर्ष को समर्थन देने के लिए साक्ष्य भी हैं, जो छात्रों द्वारा की गई प्रगति के बारे में हमें मिलते हैं। अभिलेखन को प्रभावी बनाने के लिए हमें विभिन्न अभिलेखन युक्तियों का उपयोग करना होता है जैसे छात्र संबंधी जानकारी, जातिवृत्तीय अभिलेख, प्रकरण अध्ययन, रिपोर्ट पुस्तिकाएँ आदि। यह अनिवार्य है कि सूचना गुणात्मक और मात्रात्मक संदर्भों में पूरी तरह विचार के बाद तथा अध्यापक के उद्देश्य पर्यवेक्षण सहित दर्ज की गई है। यह भी अनिवार्य है कि अध्यापक की रिपोर्ट के समर्थन के लिए साक्ष्य के रूप में छात्र के कार्य के नमूने रखे जाएँ। अच्छे अभिलेखन और रिपोर्टिंग का सबसे अधिक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें एक समय अवधि के दौरान विभिन्न प्रक्षेत्रों में छात्र की प्रगति दर्शाई जाती है।

चरण 3 जमा की गई सूचना का विश्लेषण और रिपोर्टिंग

दर्ज की गई सूचना वह मूल्यवान प्रतिपुष्टि बनाती है कि जिसे अध्यापक, छात्र और माता पिता अधिगम की प्रक्रिया में उन्नति के लिए उपयोग कर सकते हैं। इसके लिए जमा की गई सूचना का आवधिक विश्लेषण किया जाना चाहिए, ताकि अध्यापक बच्चे की अधिगम प्रक्रिया और प्रगति के विषय में निष्कर्ष निकाल सके। उक्त विश्लेषण और ग्रेडिंग वास्तव क्षमताओं में सीखने के परिवेश में छात्रों की प्रगति का मानचित्रण हैं। विश्लेषण और समीक्षा से भी प्रत्येक बच्चे की शक्तियों के बारे में स्पष्ट विवरण मिलते हैं और आगे सुधार के पक्षों की जानकारी मिलती है। इस रिपोर्ट की जानकारी छात्रों और उनके माता पिता को भी दी जानी चाहिए ताकि वे सीखने की प्रक्रिया में सुधार के लिए अनिवार्य चरण उठाने में अध्यापक के साथ सहयोग कर सकें। यह अनिवार्य है कि बच्चे को अन्य बच्चों की तुलना में स्वयं अपने साथ प्रतिस्पर्द्धा का बढ़ावा दिया जाए। छात्रों को अपने सीखने के परिवेश के मूल्यांकन में शामिल करने के लिए उनके सीखने पर एक प्रमुख घटक उन्हें विवरणात्मक प्रतिपुष्टि देना है। अनुसंधान से प्रदर्शित होता है कि विवरणात्मक प्रतिपुष्टि छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की सबसे अधिक प्रभावी अनुदेशात्मक कार्यनीति है। विवरणात्मक प्रतिपुष्टि से छात्रों को यह समझ मिलती है कि वे क्या अच्छा कर रहे हैं, वे कक्षाकक्ष के अधिगम और अगले चरण तक पहुँचने पर विशिष्ट निवेश के साथ जुड़ते हैं।

चरण 4 सुधार के लिए सूचना का उपयोग

मूल्यांकन के परिणाम स्वरूप सुधार होना चाहिए। इस प्रतिमान में छात्र, अध्यापक और माता पिता सभी भागीदार हैं, यह अध्यापक है जिसे अधिगम को बढ़ाने के लिए प्रत्येक छात्र पर सूचना के विश्लेषण का उपयोग की पहल करनी होती है। इससे प्रतिक्रियात्मक अभ्यास की माँग होती है। कुछ प्रश्न जो अध्यापक अपने आप से पूछ सकता है, वे हैं :

1. क्या सभी छात्र कक्षा के कार्यकलापों में शामिल हैं?
2. क्या ऐसे छात्र हैं जिन्हें अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया की गति और प्रवाह के साथ आगे बढ़ने में समस्या आती है?
3. उनकी समस्याएँ क्या हैं और मैं उनकी सहायता कैसे कर सकता हूँ?
4. क्या मेरी अध्यापन कार्य नीति में ऐसी कोई बात है जिसे कक्षाकक्ष को बेहतर बनाने के लिए संशोधित किया जा सकता है? मुझे इसके बारे में क्या करना चाहिए?
5. क्या ऐसे छात्र हैं जिन्हें सामग्रियों और विधियों से प्रेरणा नहीं मिलती और इसलिए वे जल्दी ही इसकी प्रेरणा को खो देते हैं? मुझे उनकी विशेष जरूरतों के लिए क्या करना चाहिए?

6. क्या ऐसे कोई पाठ / अध्याय / इकाइयाँ हैं जो अनेक छात्रों के सामने कठिनाई प्रस्तुत करते हैं? मुझे पाठ्यचर्या के इन हिस्सों के लिए किस प्रकार मूल्यवर्धन करना चाहिए?
7. क्या मैंने संग्रह और विश्लेषित की गई सूचना से कुछ सामान्य त्रुटियों, गलतियों और संकल्पनात्मक स्पष्टता के दृष्टांतों को अभिज्ञात किया है? मुझे इनके सुधार पर प्रभावी कार्यक्रम के विषय में कैसे आगे बढ़ना चाहिए?
8. क्या मेरा कक्षाकक्ष समय प्रबंधन प्रभावी है? ऐसे कौन से परिवर्तन हैं, जिन्हें आरंभ करते हुए छात्रों और अधिगम को अधिक उन्मुख बनाया जा सकता है?
9. क्या मुझे विद्यालय प्रबंधन, अपने सहकर्मियों, माता-पिता और समुदाय से पर्याप्त समर्थन मिल रहा है? मैं अपने छात्रों के लाभ के लिए इन सभी हितधारकों को और अधिक सक्रिय रूप से किस प्रकार शामिल कर सकता हूँ?
10. व्यावसायिक विकास की मेरी अपनी जरूरतें क्या हैं? मैं उन्हें निरंतर आधार पर कैसे पूरा कर सकता हूँ।

ये प्रतिक्रियात्मक प्रश्न अध्यापक को अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति तथा अपनी व्यावसायिक दक्षता को निरंतर बढ़ाने के लिए कार्यक्रम के संशोधन और परिष्करण में सहायता करेंगे।

अब तक यह सुस्थापित हो चुका है कि अधिगम एक निरंतर प्रक्रिया है और इसमें औपचारिक, अनौपचारिक तथा गैर – औपचारिक माध्यम शामिल हैं। यह भी व्यापक रूप से मान लिया गया है कि बच्चे अपने ज्ञान के निर्माण द्वारा सीखते हैं और इस प्रकार एक सीखने की प्रक्रिया बनती है जो बच्चे के अंदर चलती है न कि बाहर। रचनात्मकता के इस प्रतिमान में अध्यापक अधिगम के विभिन्न चरणों का महत्व समझने के लिए बाध्य हैं अर्थात् आरंभिक चरण जहाँ छात्र का मौजूदा ज्ञान प्रवेश स्तर के रूप में देखा जाता है, दूसरा चरण, जहाँ नए ज्ञान को समझा जाता है और मौजूदा ज्ञान के अंदर समायोजित किया जाता है तथा तीसरा चरण जहाँ संरचित ज्ञान को “समग्र” रूप में छात्र द्वारा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में लागू किया जाता है, ताकि वह दुनिया और स्वयं को समझ सकें और निष्कर्ष निकाल सकें, समस्या सुलझा सकें, निर्णय ले सकें आदि। तीसरे चरण पर ज्ञान के निर्माण में यह स्वतः छात्र के मौजूदा ज्ञान का रूप धारण कर लेता है और सीखने की प्रक्रिया आगे चलती है तथा इस प्रकार यह एक चक्रीय प्रक्रिया है।

मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ावा है और इसलिए इसे अधिगम के प्रत्येक चरण के साथ उपयुक्त रूप से समेकित किया जाता है। चूँकि अधिगम एक निरंतर प्रक्रिया है अतः मूल्यांकन भी निरंतर होना चाहिए। अन्यथा छात्र यह नहीं जान सकेगा/ सकेगी कि वह सही दिशा में जा रहा / रही है, वे कौन से चरण हैं जिस पर उसे कठिनाइयों का अनुभव हुआ, वे नए निवेश और कार्यनीतियाँ कौन सी हैं, जिनकी आवश्यकता ज्ञान के

निर्माण की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक आगे ले जाने में होती है और अध्यापक की ओर से इस प्रकार की सहायता अपेक्षित है।

इसी प्रकार अध्यापक को यह भी जानना चाहिए कि प्रत्येक छात्र में एक विशेष समय बिन्दु पर अधिगम का कौन सा चरण है, वे कौन से परिवर्तन हैं जिन्हें प्रत्येक छात्र को प्रभावी रूप से सीखने में सक्षम बनाने के लिए अध्यापन कार्यनीतियों में किया जाना चाहिए और आगे कौन सी सहायता दी जा सकती है। उदाहरण के लिए जब बच्चा पहली कक्षा में विद्यालय आता है तो संभव है कि उसके पहले बच्चा किसी औपचारिक विद्यालय में न गया हो। इसका यह अर्थ नहीं है कि बच्चे को इसका कोई पूर्व ज्ञान नहीं है, क्योंकि अधिगम, जैसा कि पहले बताया गया है औपचारिक तथा गैर औपचारिक माध्यमों से भी करना संभव है। अतः यह अध्यापक का कर्तव्य है कि वह किसी विशेष संकल्पना या कौशल के साथ काम करते हुए बच्चे को पूर्व ज्ञान को पहचाने। यह केवल तभी होता है जब अध्यापक प्रत्येक छात्र के ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में शामिल हो।

शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान को सुनिश्चित करने के लिए अध्यापक को कई उपकरणों और तकनीकों जिसमें प्रश्न भी शामिल हैं, को अपनाना पड़ता है। इसी प्रकार अधिगम प्रक्रिया के दौरान तथा वास्तविक जीवन में ज्ञान के अनुप्रयोग के अनुवर्ती चरण में अध्यापक को शिक्षार्थी का निरंतर मूल्यांकन करना पड़ता है ताकि अनुकूलन, समांगीकरण और विस्तारण की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सके।

उक्त से यह स्पष्ट है कि मूल्यांकन जो कि मूलतः रचनात्मक होता है, को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। परिभाषित: रचनात्मक मूल्यांकन आनंद खोजने की वह प्रक्रिया है जिससे शिक्षार्थी संकल्पनाओं और कौशलों का निर्माण कर सके और इस प्रकार यह प्रक्रिया केंद्रित है न कि उत्पाद केंद्रित। जब मूल्यांकन को ज्ञान-सृजन प्रक्रिया से अलग किया जाता है यह एक प्रभावी अधिगम-उन्नयन पद्धति नहीं रह जाती। अतः अध्यापक, प्राध्यापक, छात्र और अन्य हितधारकों को इस संदर्शिका को मूल्यांकन तक सीमित रखने के बजाए समग्र अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के व्यापक परिदृश्य को ध्यान में रखकर पढ़ा जाए, यद्यपि संदर्शिका रचनात्मक मूल्यांकन पर आधारित है।

इस बात को समझा जाए कि सभी प्रभावी मूल्यांकन रचनात्मक होते हैं। तथापि, रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों में सूक्ष्म अंतर है और ये समग्र की बजाए प्रक्रियात्मक होते हैं। हम निःसंदेह यह कह सकते हैं रचनात्मक मूल्यांकन के व्यापक ढाँचे में रचनात्मक मूल्यांकन का बड़ा उप-भाग और योगात्मक मूल्यांकनों का छोटा उप-भाग होता है। यहाँ तक कि जब योगात्मक मूल्यांकन से एकत्र की गई जानकारी का उपयोग अध्यापन-विद्या सामग्री तथा मूल्यांकन उपकरणों में सुधार के लिए किया जाता है तो योगात्मक मूल्यांकन का रचनात्मक ढंग से उपयोग किया जा सकता है। जब मूल्यांकन मुख्यतः रचनात्मक होता है तो शिक्षार्थी अधिगम में रुचि लेता है और उन्हें अवांछित तनाव महसूस नहीं होता। दूसरी ओर जब हम केवल वार्षिक अथवा आवधिक योगात्मक परीक्षा अथवा परीक्षाओं को महत्व देते हैं, जैसा कि अभी तक कई स्कूलों में हो रहा है, तो इस प्रणाली से निम्नवत परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं :

- कल परीक्षा की समय तालिका घोषित हुई। जब मैंने घर जाकर अपनी माँ को समय तालिका दिखाई तो वह बहुत उत्साहित हो गई। उन्होंने मुझे इस संबंध में बहुत सारे निर्देश दिए कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। टी. वी. और दोस्तों के साथ बातचीत बंद कर दी गई थी। अचानक से पूरे घर को परीक्षा के डर ने जकड़ लिया था। जब मेरे पिताजी ऑफिस से आए वह भी उस जोरदार चर्चा में शामिल हो गए जो तैयारी, मेहनत, अंक और खराब प्रदर्शन के भयंकर परिणामों के बारे में थी। मैं कल रात सो नहीं पाई।

– श्रुति

- जब मैंने उत्तर लिखना शुरू किया मेरे दिमाग में कुछ नहीं आया। उत्तर-पुस्तिका में मुझे मेरे पिता का चेहरा दिखाई दिया। वह मुझसे कह रहे थे कि मुझे मेरी बड़ी बहन से अच्छा करके दिखाना है जिसे वह 'असफल' कहते थे। इस मूर्च्छा जैसी स्थिति में मुझे मेरा दादाजी की आवाज़ भी सुनाई दी जो कह रहे थे कि यदि मैंने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया तो उनके सपने टूट जाएँगे। यही नहीं, उन सभी ने कहा कि यह मेरे जीवन की नींव है।

– दीपक

- जब से परीक्षा की समय तालिका घोषित हुई है मैं बहुत तनाव में हूँ। यदि बोर्ड के परिणाम आशानुरूप नहीं हुए तो मेरे प्रदर्शन का मूल्यांकन कर मुझे अगले सत्र में जूनियर कक्षाएँ दे दी जाएँगी। मैं बहुत परेशान और चिंतित हूँ। मुझे कुछ अतिरिक्त कक्षाएँ लेनी चाहिए और कमजोर छात्रों को कई आदर्श प्रश्न-पत्रों का अभ्यास करवाना चाहिए ताकि उन्हें भी महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर अच्छी तरह से याद हो जाएँ। मुझे प्रयास करना है कि किसी भी तरह से उन्हें अच्छे अंक मिल जाएँ अन्यथा मुझे निरंतर इसका स्मरण कराया जाएगा।

– कविता, शिक्षिका

क्या हम इस तरह की बातों से परिचित नहीं हैं? शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को भय, चिंता, तनाव, असुरक्षा और परिहास से मुक्त करना और उनका ज्ञानवर्धन करना है। लेकिन पिछले कई वर्षों में हमने भौतिक लाभों के लिए इस उत्कृष्ट प्रक्रिया को एक साधारण प्रक्रिया में बदल दिया है। जब अंक प्राप्त करना, दाखिला लेना, नौकरी पाना और धन कमाना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बन जाता है तो इससे प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है और परिणामतः बच्चों पर अत्यधिक दबाव हो जाता है। यदि हम प्रत्येक बच्चे के लिए अधिगम को एक रुचिपूर्ण अनुभव बनाना चाहते हैं तो परीक्षा की पारंपरिक प्रणाली को बदलने की चुनौती को हमें शीघ्र प्राथमिकता देनी होगी।

सोच : हम परीक्षा उन्मुख शिक्षा प्रणाली के इतने आदी हो चुके हैं कि इसके विकल्प खोजने के प्रयास पर संदेह और अविश्वास किया जाता है। परीक्षा – उन्मुख शिक्षा से एक सुपरिभाषित नमूना निर्मित हो गया है जिसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नवत् हो सकती हैं –

- अधिगम का उद्देश्य परीक्षा में बैठना होता है जो अक्सर शैक्षणिक सत्र के अंत में होती है।
- अध्यापक और छात्रों के अनुसार मूल्यांकन अधिगम के पश्चात होता है अर्थात् पहले बच्चे सीखते हैं और फिर उनकी परीक्षा ली जाती है।
- चूंकि औपचारिक परीक्षा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित होती है, जिससे अध्यापन और अधिगम पाठ्य पुस्तक आधारित हो जाता है जिसमें अध्यापक का कार्य केवल पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी देना होता है।
- अधिगम जानकारी एकत्र करने और उसे दोहराने के समान हो जाता है और इसमें व्यक्तिगत चिंतन, मौलिकता और सृजनात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता।
- चूंकि परीक्षाएँ बाद में होती हैं, अध्यापक और छात्र आरंभ में आराम से रहते हैं और बाद में बहुत ज्यादा चिंतित हो जाते हैं।
- तनाव से छात्र घबरा जाते हैं और उन्हें परीक्षा अच्छी नहीं लगती (हालाँकि उन्हें यह तनाव और चिंता समाप्त करने का अंतिम अवरोध लगता है।)
- इस परिदृश्य में अध्यापक अनिवार्यतः अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित नहीं करते क्योंकि परीक्षा में छात्र के प्रदर्शन के रूप में केवल अंतिम उत्पाद का ही मूल्यांकन किया जाना है।
- छात्र अक्सर अंतिम क्षण तक अधिगम को स्थगित कर देते हैं। एक ओर अधिगम नियमित नहीं रहता और दूसरी ओर एक सीमित अवधि में अधिगम करने हेतु अत्यधिक सामग्री एकत्र होने के कारण यह अवास्तविक रूप से निरुत्साहित करने वाला हो जाता है।
- जो छात्र कम अवधि में रट्टा मारने में सिद्धहस्त होते हैं वे अच्छा प्रदर्शन करते हैं और जिनमें यह क्षमता नहीं होती वे खराब प्रदर्शन करते हैं।

उक्त विशेषताओं के साथ-साथ अन्य जिन पर अक्सर चर्चा होती है और जिनके बारे में सभी हितधारक अच्छे से जानते हैं, से ऐसी सोच बनी है जो निम्नवत विश्वासों से उत्पन्न होती है -

- यदि परीक्षा नहीं होगी तो अध्यापक पढ़ाएँगे नहीं और छात्र सीखेंगे नहीं।
- परीक्षा-प्रणाली अध्यापकों के लिए सुविधाजनक है क्योंकि अधिकांशतः उन्हें पाठ्यपुस्तकें पढ़ानी होती हैं और छात्रों को निकट भविष्य में होनी वाली परीक्षाओं के लिए तैयार करना होता है।

- यदि अध्यापकों को नियमित और व्यापक मूल्यांकन करना हो तो उन्हें अधिक कार्य करना पड़ेगा। अतः यथास्थिति बनाए रखना अधिक सुविधाजनक है।
- यदि मूल्यांकन को केवल शैक्षिक विषयों तक ही सीमित रखा जाता है तो यह उससे कहीं अधिक सरल हो जाएगा जब इसमें छात्र के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को शामिल किया जाए।
- जब मूल्यांकन सबसे आखिर में किया जाता है तो अध्यापकों को अपनी पद्धतियों को देखने की और बेहतर अधिगम के लिए इनकी समीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती। इसका अर्थ यह भी है कि सामग्री और विधियों हेतु किसी मूल्य संवर्धन की आवश्यकता नहीं है।
- **बदलता हुआ परिदृश्य :** अब सोच को बदलना होगा क्योंकि विश्वभर में बच्चों को अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का केंद्र माना जाता है। मूल्यांकन में सामाजिक - सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि, अधिगम उपायों, शैलियों और अभिरुचियों के संदर्भ में **व्यक्तिगत अंतर** को भी शामिल किया जाना चाहिए। 'एक बात सभी के लिए सही है' इस विश्वास को तोड़ना होगा और साथ ही अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को व्यक्तिगत रूप देने की आवश्यकता है जिसमें प्रत्येक छात्र को अपने तरीके से ही सीखने में सहायता मिले, इस बात के लिए नियमित सुधार किया जाता है। इसका अर्थ है कि मूल्यांकन और अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया साथ-साथ चलनी चाहिए जिसमें अध्यापक और छात्रों को समृद्ध ज्ञान प्राप्त हो ताकि प्रक्रिया की प्रभाविता को निरंतर बढ़ाया जा सके। ऐसा निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-
- यदि मूल्यांकन को अध्यापन-अधिगम के साथ एकीकृत कर दिया जाए।
- यदि अध्यापक सामग्री, विधियों और शिक्षार्थियों की क्षमताओं और कमियों को सुनिश्चित करने हेतु मूल्यांकन करें।
- यदि अध्यापक अपने अध्यापन और प्रत्येक छात्र के अधिगम में सुधार हेतु मूल्यांकन करें।
- यदि शिक्षार्थी अपनी अधिगम शैली और तरीकों का प्रेक्षण करें और इसका उपयोग अपने अधिगम में सुधार के लिए करें।

शैक्षिक मूल्यांकन

शिक्षार्थी के ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, मूल्यांकन, विश्लेषण के संबंध में वांछित व्यवहार और विषयों में सृजनात्मकता तथा अनजानी परिस्थितियों में इसका उपयोग करने की क्षमता शैक्षिक क्षेत्र के कुछ उद्देश्य हैं।

अध्यापन अधिगम प्रक्रिया में सुधार हेतु मूल्यांकन रचनात्मक और योगात्मक दोनों ही प्रकार का होना चाहिए।

रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन

रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग अध्यापक द्वारा भयरहित और सहयोगी वातावरण में छात्र के प्रगति के नियमित प्रबोध के लिए किया जाता है। इसमें नियमित और व्याख्यात्मक प्रतिपुष्टि छात्रों को अपने प्रदर्शन पर नजर डालने के लिए एक अवसर देने, सलाह लेकर इसमें सुधार करना शामिल है। इससे छात्रों को स्वयं का अथवा सहपाठियों के मूल्यांकन की रूपरेखा मूल्यांकन का अनिवार्य अंग है। यदि इसका प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाए तो यह बच्चे के स्वाभिमान को बढ़ाकर और अध्यापक के बोझ को कम कर छात्र के प्रदर्शन में अत्यधिक सुधार करता है।

रचनात्मक मूल्यांकन की विशेषताएँ

- यह नैदानिक और उपचारात्मक होता है।
- प्रभावी प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।
- छात्रों की अधिगम में सक्रिय भागीदारी हेतु मंच प्रदान करता है।
- मूल्यांकन के परिणामों को देखने के लिए अध्यापकों के अध्यापन को अनुकूल बनाने में सहायता करता है।
- अभिप्रेरणा और छात्रों के स्वाभिमान जिनका कि अधिगम पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है पर मूल्यांकन के गंभीर प्रभाव का पता लगाता है।
- छात्रों को अपना मूल्यांकन करने की सक्षमता की आवश्यकता को पहचानने में सहायता करता है और बताता है कि इसमें कैसे सुधार करना है।
- यह समझने में कि क्या सिखाया गया है, छात्रों के पूर्व ज्ञान और अनुभव का निर्माण करता है।
- यह निर्णय करने कि कैसे और क्या पढ़ाना है, के लिए विविध अधिगम शैलियों को शामिल करता है।
- छात्रों को उस मानदंड को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है जिसका उनके कार्य के संबंध में निर्णय लेने के लिए उपयोग किया जाएगा।
- छात्रों को प्रतिपुष्टि के पश्चात अपने कार्य को सुधारने का अवसर देता है।

- छात्रों की अपने सहपाठियों की सहायता करने और उनसे सहायता की अपेक्षा रखने में सहयोग करता है।

अतः अध्यापन पद्धतियों और अधिगम कार्यकलापों में समुचित संशोधन के संबंध में निर्णय लेने हेतु अध्यापकों और शिक्षार्थियों दोनों को निरंतर प्रतिपुष्टि देने हेतु निर्देश पाठ्यक्रम में रचनात्मक मूल्यांकन किया जाता है।

- ‘..... अक्सर इसका तात्पर्य इतना ही है कि मूल्यांकन कई बार किया जाता है और इसकी आयोजना अध्यापन के समय ही की जाती है’ (ब्लैक एंड विलियम, 1999)
- ‘..... प्रतिपुष्टि प्रदान करता है जिससे छात्रों में (अधिगम) अंतर को पहचानने और इसे दूर करने में सहायता मिलती है यह आगे की ओर देखता है’ (हारलेन, 1998)
- ‘..... इसमें प्रतिपुष्टि और स्व-निगरानी दोनों शामिल है’ (सैडलर, 1989)
- ‘..... अनिवार्यतः इसका उपयोग अध्यापन और अधिगम प्रक्रिया की प्रतिपुष्टि के लिए किया जाता है’ (टून्सटल और गिप्स, 1996)

अधिगम के पाठ्यक्रम के समाप्त होने पर **योगात्मक मूल्यांकन** किया जाता है। इसमें यह मापा जाता है अथवा आंका जाता है कि छात्र ने पाठ्यक्रम से कितना सीखा है। सामान्यतया यह एक ग्रेडेड टेस्ट है अर्थात् इसका अंकन ग्रेडों के पैमाने अथवा समुच्चय के अनुसार किया जाता है। मुख्यतया योगात्मक प्रकृति के मूल्यांकन से बच्चे की वृद्धि और विकास का वैध मापन करना संभव नहीं होगा। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि यह एक निर्धारित समय में उपलब्धि के स्तर को प्रमाणित करता है। पेपर-पेंसिल परीक्षण से मुख्यतया एक बार मूल्यांकन किया जा सकता है और बच्चे की वृद्धि के बारे में निर्णय हेतु विशिष्ट रूप से इन पर निर्भर रहना न केवल अनुचित अपितु अवैज्ञानिक भी है। केवल शैक्षिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए परीक्षा के अंकों पर अधिक बल देने से बच्चे यह मान लेते हैं कि मूल्यांकन अधिगम से भिन्न है और परिणामतः ‘**सीखो और भूलो**’ विकृति उत्पन्न हो जाती है। हानिकारक प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करने के अलावा योगात्मक मूल्यांकन प्रणाली पर अधिक बल देने से शिक्षार्थियों में काफी तनाव और चिंता उत्पन्न हो जाती है।

योगात्मक मूल्यांकन की विशेषताएँ

- अधिगम का मूल्यांकन
- सामान्यतया अध्याय अथवा सत्र के अंत में यह जानने के लिए किया जाता है कि छात्रों ने क्या सीखा है और क्या नहीं।

- छात्र के कार्य का मूल्यांकन करने के लिए योगात्मक मूल्यांकन सबसे पारंपरिक तरीका है।

योगात्मक मूल्यांकन

- ‘अच्छा योगात्मक मूल्यांकन – परीक्षण और अन्य ग्रेडेड मूल्यांकन निश्चित तौर पर विश्वसनीय, वैध और पक्षपात रहित होना चाहिए’ (एंजेलो और क्रोस, 1993)
- ‘..... मूल्यांकन जिसका उपयोग अधिकतर अधिगम के बारे में निर्णय लेने के लिए किया जाता है – (ब्लैक और विलियम, 1999)
- ‘..... पूर्व की उपलब्धियों को देखता है विद्यमान कार्य में प्रक्रियाएँ अथवा परीक्षणों को जोड़ता है छात्र को केवल अंकन और प्रतिपुष्टि ग्रेड देता है अध्यापन से भिन्न है उस अंतराल में किया जाता है जब उपलब्धि का सार तैयार कर बताना होता है (हारलेन 1998)

शैक्षिक मूल्यांकन (भाग एक - क)		
रचनात्मक मूल्यांकन (नम्य समय सारिणी)		योगात्मक मूल्यांकन (लिखित - सत्र की समाप्ति पर)
उपकरण	तकनीक	
- वस्तुनिष्ठ सार - लघु उत्तर - दीर्घ उत्तर - प्रश्न - प्रेक्षण समय-सारिणी - साक्षात्कार समय-सारिणी - चेकलिस्ट (जाँच सूची) - रेटिंग स्केल (आकलन पैमाना) - उपाख्यान रिकॉर्ड - प्रलेख विश्लेषण - परीक्षण और इन्वेंटरी - पोर्टफोलियो विश्लेषण	- परीक्षण - अधिन्यास - प्रश्न-मंच (क्विज़) और प्रतियोगिताएँ - परियोजनाएँ - वाद-विवाद - व्याख्यान - सूमह चर्चा - क्लब गतिविधियाँ	- वस्तुनिष्ठ प्रकार - लघु उत्तर - दीर्घ उत्तर

अध्यापक समुदाय हेतु बाधाएँ

सामान्यतया स्कूली शिक्षा और विशेष रूप से मूल्यांकन पद्धतियों ने परिवर्तन की प्रचलित प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका को पुनः परिभाषित किया है। इसमें कुछ प्रमुख बाधाएँ निम्नवत हैं :

- अध्यापन पद्धतियाँ और अधिक समय तक यांत्रिक नित्यचर्या जैसी नहीं हो सकती। चूँकि रचनात्मक मूल्यांकन कक्षा अध्यापन का अभिन्न अंग है अतः अध्यापक को पाठ्यचर्या अध्यापन हेतु प्रतिपुष्टि का उपयोग करने के तरीके और साधन खोजने पड़ते हैं।
- पाठ्यपुस्तक को पढ़ाना कक्षा-पद्धतियों की मुख्य विधि नहीं होगी। अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सभी शिक्षार्थियों को शामिल करने के लिए सहक्रियात्मक कार्यों सहयोगात्मक कार्य और परियोजनाओं के संबंध में मूल्य संवर्धन तथा नई विषय-वस्तु के एकीकरण की आवश्यकता होगी।

- चूँकि रचनात्मक मूल्यांकन में अध्यापक द्वारा पढ़ाए गए अध्याय अथवा पाठ विशेष समुचित उपकरण और पद्धतियाँ तैयार करनी होती हैं, अतः अध्यापक के लिए यह आवश्यक होगा कि वह अपने ज्ञान-कोष में निरंतर नई सामग्री और तरीकों को जोड़ता रहे। इसका अर्थ यह भी होगा कि पाठ और शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ-योजना उत्कृष्ट हो और इसमें निरंतर परिवर्तन होते रहें।
- अध्यापक को एक सच्चा ज्ञान का भंडार बनना होता है, स्रोतों से सहायता लेनी होती है, नई सामग्री पढ़नी पड़ती है, सहयोगियों और विशेषज्ञों के साथ पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दों पर चर्चा करनी पड़ती है, सामग्री तैयार करनी होती है और शोध करना पड़ता है।
- अब अध्यापन छह अथवा सात घंटे की नौकरी नहीं हो सकती। यह एक व्यवसाय है और इसे अपनाने वालों को न केवल स्कूल में बल्कि स्कूल के बाहर भी रोज स्वयं को तैयार करना पड़ता है।
- अभिलेखन और प्रतिवेदन अनिवार्यतः विस्तृत हो जाएँगे क्योंकि कई बार अनदेखी किए गए अथवा जिनका कम उपयोग किया गया है, ऐसे मानदंडों को भी प्रभावी रूप से शामिल करना होगा। अध्यापकों को रचनात्मक मूल्यांकन और इसके अभिलेखन हेतु नियमित आधार पर इसके लिए पर्याप्त समय देना आवश्यक होगा। इसका अर्थ यह भी है कि अध्यापकों को जटिलता और अस्पष्टता के लिए सहिष्णुता का विकास करना होगा। संक्षेप में, कहा जाए तो सोच को बदलना है और अध्यापक-समुदाय को अधिक जिम्मेदारी लेनी होगी।

बदलते प्रतिमान

सतत और व्यापक मूल्यांकन से कक्षा में भारी परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन का मुख्य पहलू यह है कि मूल्यांकन अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। सीसीई और रचनात्मक मूल्यांकन नई संकल्पनाएँ नहीं हैं और कई स्कूलों में काफी लंबे समय से ये विद्यमान हैं। लेकिन भिन्न-भिन्न उपकरणों और संकेतकों के उपयोग से शैक्षिक और सह-शिक्षात्मक क्षेत्रों में मूल्यांकन से मूल्यांकन प्रक्रिया को ठोस वैज्ञानिक आधार तथा विश्वसनीयता मिली है। इसी प्रकार से, यद्यपि रचनात्मक मूल्यांकन स्कूलों द्वारा अपनाई गई मूल्यांकन पद्धतियों का एक अंग रहा है तथापि अधिगम अंतर्गत् की पहचान करने और इन्हें दूर करने हेतु इसका व्यवस्थित ढंग से उपयोग नहीं किया गया है। एक प्रकार से अध्याय परीक्षा, कार्य और परियोजनाओं की प्रणाली जिनका उपयोग अधिगम के सतत मूल्यांकन को दर्शाने के लिए किया जा रहा है, की प्रकृति अधिक योगात्मक हो गई है क्योंकि प्रतिपुष्टि का प्रयोग यदा-कदा ही अध्यापन अधिगम पद्धतियों में सुधार के लिए किया जाता है। अतः यह अनिवार्य है कि रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की संकल्पनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जाए ताकि हम न केवल तदनुसार उपकरण निर्मित कर सकें अपितु उस प्रयोजन हेतु उनका उपयोग भी कर सकें जिसके लिए हमने उनका निर्माण किया है।

रचनात्मक मूल्यांकन क्या है?

आइए एक कार्यकलाप देखें :

विषय : सामाजिक विज्ञान (कक्षा : 8वीं)

विषय : महिलाएँ, जाति और सुधार

कार्य : नाट्यकरण

पद्धति

1. छात्रों को समूह में बांटा जाएगा। वे अपने समूह में चर्चा करेंगे और भारतीय समाज में भिन्न भिन्न काल में व्याप्त सामाजिक बुराइयों में से किसी पर एक लघु नाटिका (स्किट) तैयार करेंगे।
2. सामाजिक बुराइयों में सती प्रथा, बाल विवाह, बालिका शिशु हत्या, महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखना और लिंग असमानता इत्यादि हो सकते हैं।
3. प्रत्येक समूह एक लघु नाटिका तैयार करेगा और इसको प्रदर्शित करेगा। प्रत्येक छात्र से कुछ संवाद बोलने को कहा जाएगा।
4. प्रस्तुतीकरण के बाद, विद्यार्थी चर्चा करेंगे।

अधिगम उद्देश्य :

शिक्षार्थियों को भारत में विभिन्न कालावधियों में व्याप्त सामाजिक बुराइयों के बारे में जानकारी देना।

शिक्षार्थियों को सामाजिक बुराइयों को दर्शाने का अवसर देना और उनकी भावनाओं को मौखिक रूप देना।

कौशल

छात्रों में निम्न की क्षमता का विकास करना :

- कहानी का नाट्य रूप लिखना
- संवाद बोलना
- अभिनय करना
- समूह में कार्य करना

मूल्यांकन

समूहों के प्रदर्शन का मूल्यांकन विषय-वस्तु, संवाद बोलने और संकल्पना की स्पष्टता के आधार पर किया जाएगा।

समय

- चर्चा और स्क्रिप्ट लेखन : 2 पीरियड
- प्रस्तुतीकरण : 1 पीरियड

अनुवर्ती कार्यवाही :

प्रस्तुतीकरणों पर कक्षा द्वारा चर्चा की जा सकती है। जहाँ पर भी संकल्पना स्पष्ट नहीं है अध्यापक छात्रों को अपनी टिप्पणियाँ देने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। अध्यापक पाठ के किसी भी भाग जो छात्रों की समझ में ठीक से नहीं आया है, को दोहरा सकते हैं।

यह रचनात्मक मूल्यांकन कार्य है या योगात्मक मूल्यांकन कार्य ?

इसकी विशेषताएँ निम्नवत् हैं :

- इसका मुख्य उद्देश्य हैं शिक्षार्थियों को भारत में विभिन्न कालावधियों में बालिका शिशु और महिला के विरुद्ध व्याप्त सामाजिक बुराइयों की संकल्पना को समझने में सहायता करना।
- यह कार्यकलाप महिलाएँ, जाति और सुधार विषय के अध्यापन-अधिगम का एक भाग है।
- इस कार्यकलाप में छात्र सामूहिक परिचर्चा और प्रस्तुतीकरण करते हैं।
- कार्यकलाप पूरा होने के बाद अध्यापक सुधार हेतु प्रतिपुष्टि देता है। साथ ही यदि आवश्यक हो पाठ की समीक्षा की जा सकती है।
- मूल्यांकन सु-परिभाषित मानदंड के आधार पर की जाती है।
- यह कार्यकलाप कक्षा में पाठ के भाग के रूप में किया जाता है।
- इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी के ज्ञान का मापन करना नहीं है। इस कार्यकलाप का उद्देश्य प्रयोगात्मक अधिगम के माध्यम से संकल्पनात्मक स्पष्टता प्रदान करना है।
- यह अधिगम को और प्रोत्साहित करता है।

ये विशेषताएँ रचनात्मक मूल्यांकन का आधार हैं।

आइए अब हम परीक्षण में दिए निम्नवत प्रश्नों को देखते हैं :

विभिन्न कालों में भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक बुराइयाँ कौन-सी हैं? उन्होंने बालिकाओं और महिलाओं को कैसे प्रभावित किया है? अपना उत्तर दो सौ शब्दों में लिखें।

यह एक सामान्य प्रश्न है जो योगात्मक परीक्षण अथवा परीक्षा में आता है। यहाँ पर मुख्य उद्देश्य परीक्षित पाठ

में शिक्षार्थी के ज्ञान को मापना है। शिक्षार्थियों के उत्तरों के लिए मूल्य बिंदु और अंकन योजना के आधार पर अंक दिए जाएंगे अथवा ग्रेडिंग की जाएगी। अध्यापक द्वारा एकत्र जानकारी का उपयोग शिक्षार्थियों की समस्याओं का पता लगाने अथवा उपचारार्थ नहीं किया जाए क्योंकि परीक्षण सामान्यतया अध्याय अथवा पाठ समाप्त होने के बाद किया जाता है।

लेकिन, यदि पाठ के दौरान इस उद्देश्य से कि शिक्षार्थियों की और सहायता की जा सके, अधिगम में कमी का पता लगाने हेतु विषय पर लघु क्विज़ या परीक्षण का आयोजन किया जाए तो यह रचनात्मक प्रकृति का होगा। अतः, कमोबेश जिस तरह से उपकरण का उपयोग किया जाता है अर्थात् अधिगम में संवर्धन हेतु अथवा अधिगम की प्रमात्रा सुनिश्चित करने और उसका मापन करने हेतु, यह निर्णय करता है कि यह रचनात्मक प्रयोजन हेतु है अथवा योगात्मक प्रयोजन हेतु।

अपनी संकल्पना को स्पष्ट करने हेतु आइए रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन की विशेषताओं को विस्तार से देखते हैं :-

रचनात्मक मूल्यांकन

- रचनात्मक मूल्यांकन वह मूल्यांकन है जो एक पाठ्यक्रम अथवा अध्ययन कार्यक्रम के दौरान किया जाता है।
- यह अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
- यह अक्सर अनौपचारिक होता है अर्थात् यह अध्यापकों द्वारा अध्यापन के दौरान किया जाता है।
- यह इस बारे में अध्यापक और शिक्षार्थी दोनों को प्रतिपुष्टि देता है कि पाठ्यक्रम कैसा चल रहा है और पाठ्यक्रम के दौरान अधिगम में सुधार कैसे किया जा सकता है।
- यह अध्यापक और शिक्षार्थी को निम्न प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता करता है :

क्या शिक्षार्थी वह कर रहे हैं जो उन्हें करना चाहिए?

क्या अध्यापक द्वारा चयनित अध्यापन और अधिगम के तरीकों में संशोधन की आवश्यकता है?

जब रसोइया सूप चखता है, यह रचनात्मक है

जब अतिथि सूप चखते हैं, यह योगात्मक है।

- रॉबर्ट स्टेक्स

योगात्मक मूल्यांकन

- योगात्मक मूल्यांकन आवधिक रूप से यह पता लगाने के लिए किया जाता है कि छात्र एक समय विशेष में क्या जानते हैं और क्या नहीं।
- सामान्यतया योगात्मक मूल्यांकन मानकीकृत परीक्षणों जैसे बोर्ड की परीक्षा, अर्ध वार्षिक और वार्षिक परीक्षा और यहाँ तक कि अध्याय परीक्षा के साथ संबद्ध होते हैं।
- कुछेक सप्ताह, महीनों अथवा वर्ष में एक बार निर्देश द्वारा इन्हें आयोजित किया जाता है।
- इस प्रकार ये कार्यक्रमों की प्रभाविता, स्कूल सुधार संबंधी लक्ष्यों, पाठ्यचर्या का संरेखण और छात्रों के स्थापन का मूल्यांकन करने में सहायता करने वाले उपकरण हैं।
- चूंकि इनका उपयोग समग्र अधिगम को जानने के लिए किया जाता है इसलिए इन्हें योगात्मक मूल्यांकन कहा जाता है।
- ये हमेशा औपचारिक प्रकृति के होते हैं।
- ये मूल्यांकन अधिगम के दौरान काफी आगे जाकर होते हैं ताकि कक्षा के स्तर पर जानकारी दी जा सके और अधिगम प्रक्रिया के दौरान निर्देशात्मक सामंजस्य स्थापित करने और हस्तक्षेप करने के लिए किए जाते हैं।

• रचनात्मक मूल्यांकन अधिगम की सहायता के लिए मूल्यांकन होता है

• योगात्मक मूल्यांकन हो चुके अधिगम का मूल्यांकन है।

• रचनात्मक मूल्यांकन अध्यापन – विधि है

• योगात्मक मूल्यांकन अनिवार्यतः मूल्यांकन है।

• रचनात्मक मूल्यांकन को 'अभ्यास' माना जा सकता है।

• योगात्मक मूल्यांकन 'अभ्यास के बाद प्रदर्शन' है।

• एक अच्छे व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों के बीच संतुलन बनाता है।

रचनात्मक मूल्यांकन क्या 'नहीं' है?

यह देखने में आया है स्कूल सतत मूल्यांकन के नाम पर कई परीक्षणों (टेस्ट) का आयोजन करते हैं। शैक्षणिक सत्र के लगभग सप्ताह के प्रत्येक दिन अथवा प्रत्येक माह में परीक्षण होते हैं। इसका तर्क यह है कि बार-बार परीक्षण आयोजित करने से ही सतत मूल्यांकन सुनिश्चित किया जा सकता है। लेकिन इन पद्धतियों को रचनात्मक मूल्यांकन नहीं कहा जा सकता क्योंकि ये अध्यापन-अधिगम प्रक्रियाओं के साथ एकीकृत नहीं हैं। न ही अध्यापकों द्वारा उक्त परीक्षणों से एकत्र जानकारी का अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सुधार हेतु प्रभावी और व्यवस्थित ढंग से उपयोग किया जाता है।

स्थिति अध्ययन

कक्षा 9वीं के छात्रों को विज्ञान में निम्न परियोजना दी गई :

संचारी रोगों की परियोजना

- पुस्तकों और पत्रिकाओं से पढ़कर और इंटरनेट सर्फिंग द्वारा संचारी रोगों के बारे में जानकारी एकत्र करें।
- दृष्टान्तों, चित्रों और फोटोग्राफों सहित जानकारी को एक फोल्डर में प्रस्तुत करें।
- फोल्डर को मूल्यांकन हेतु 15 दिनों के भीतर प्रस्तुत करें।
- फोल्डर का मूल्यांकन निम्न मानदंडों के अनुसार किया जाएगा, विषयवस्तु और दृष्टान्तों का सुंदर प्रस्तुतीकरण

छात्र कार्यकलाप को स्वयं पूरा करें और निर्धारित तिथि तक फोल्डर प्रस्तुत करें। अध्यापक द्वारा मूल्यांकन मानदंड के अनुसार छात्रों के कार्य की ग्रेडिंग की जाए।

प्रश्न

- क्या यह एक अच्छा रचनात्मक कार्य है?
- इस कार्य को करने में छात्रों की अध्यापक और सहपाठियों ने किस प्रकार मदद की?
- परियोजना का उद्देश्य क्या है?
- छात्रों की जानकारी एकत्र करने और उसे प्रस्तुत करने की क्षमता का मूल्यांकन करना?

अथवा

- छात्रों के अधिगम को बढ़ाने में सहायता करना?

यदि इसका उद्देश्य 'शिक्षार्थी की परियोजना के विषय को समझने में सहायता करना है तो परियोजना को अलग ढंग से व्यवस्थित करना चाहिए।

- अध्यापक को शिक्षार्थियों के साथ परियोजना पर चर्चा करनी चाहिए।

- वे उन तरीकों को खोजेंगे जिनके द्वारा जानकारी एकत्र की जा सकती है; समझी जा सकती है और ग्रहण की जा सकती है।
- सामूहिक कार्य हेतु अवसर प्रदान करता है ताकि शिक्षार्थी मिल-जुलकर विषय का अध्ययन करें और एक दूसरे की सहायता और सहयोग करें।
- अध्यापक द्वारा नियमित अंतराल पर समग्र प्रक्रिया की निगरानी की जाती है तथा सुधार, संशोधन और इसे बेहतर बनाने हेतु प्रतिपुष्टि दी जाती है।
- फोल्डर प्रस्तुत करने के अलावा शिक्षार्थियों को कक्षा में प्रस्तुतीकरण देना होता है अथवा वाइवा (मौखिक परीक्षा) भी देना होता है।
- शिक्षार्थियों की सहपाठियों के मूल्यांकन में शामिल करने के द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।
- अध्यापक और शिक्षार्थियों द्वारा एकत्र जानकारी का उपयोग अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में सुधार करने तथा इसे आगे बढ़ाने में किया जाता है।

ऐसी परियोजनाओं और कार्यों के संबंध में मुख्य बात यह है कि अध्यापक के पास यह सुनिश्चित करने का अवसर बहुत कम होता है कि ये छात्रों ने स्वयं तैयार किए हैं। अब यह सभी जानते हैं कि परियोजनाएँ और कार्य दुकान से खरीदे जा सकते हैं। अभिभावकों द्वारा परियोजनाएँ बनाने के उदाहरण भी आम हैं। यही नहीं, इंटरनेट से जानकारी लेने से ज्यादा कुछ नहीं सीखा जा सकता।

अतः परियोजनाओं और कार्यों का रचनात्मक मूल्यांकन के प्रभावी उपकरणों के रूप में उपयोग करने हेतु अध्यापक को कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए -

- शिक्षार्थियों द्वारा यथासंभव स्कूल में ही अध्यापक के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में कार्य किया जाए।
- शिक्षार्थियों के साथ परियोजना पर चर्चा करें और प्रत्येक चरण में उनकी प्रगति की निगरानी करें।
- स्वयं और सहपाठियों के मूल्यांकन के माध्यम से उन्हें मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल करें।
- छात्रों को अधिगम प्रक्रिया में आगे बढ़ाने के लिए निर्देशात्मक उपाय के रूप में व्याख्यात्मक प्रतिपुष्टि दें।
- छात्रों के कक्षा अधिगम के कार्यकलाप और अपने अनुभव के साथ जोड़ने में सहायता करें।
- इसकी अनुवर्ती गतिविधियों में कुछ संकल्पनाओं को दोहराने, स्पष्टीकरण इत्यादि को हासिल करें।

इस संदर्शिका में क्या है?

सीबीएसई से मान्यता प्राप्त स्कूलों में 2009-10 में कक्षा 9वीं में सीसीई को कार्यान्वित करने के पश्चात बोर्ड को लगा कि सभी हितधारकों विशेषकर अध्यापकों को सीसीई के बारे में समग्र जानकारी देना आवश्यक है। अतः, सतत और व्यापक मूल्यांकन संबंधी अध्यापक संदर्शिका - कक्षा 9वीं और 10वीं तैयार की गई। सीसीई योजना के बारे में विस्तृत

जानकारी देने के अलावा सह-शिक्षात्मक और शैक्षिक क्षेत्रों के मूल्यांकन के आधारभूत तत्त्व, स्कूल आधारित मूल्यांकन के आयाम और रचनात्मक और योगात्मक प्रयोजनों हेतु मूल्यांकन के उपकरण और तकनीक को भी संदर्शिका में शामिल किया गया है। रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों हेतु भारांक का आवधिक आवंटन को भी संदर्शिका में दिया गया है।

इस प्रकाशन के अनुक्रम में बोर्ड ने कक्षा 9वीं और 10वीं के लिए भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में रचनात्मक मूल्यांकन पर उदाहरण और व्याख्यात्मक सामग्री उपलब्ध कराने हेतु संदर्शिकाओं की एक श्रृंखला निकालने का निर्णय किया। योगात्मक मूल्यांकन हेतु विनिर्देशनों सहित विस्तृत दिशानिर्देश स्कूलों को पहले ही उपलब्ध करा दिए गए हैं। रचनात्मक मूल्यांकन को और सुदृढ़ बनाए जाने की आवश्यकता है, इसलिए ये संदर्शिका तैयार की गई हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन संबंधी संदर्शिका के उद्देश्य

1. सीसीई की व्यापक रूपरेखा में रचनात्मक मूल्यांकन की संकल्पना को स्पष्ट करना।
2. निर्धारित सामग्री और कक्षा पद्धतियों के साथ रचनात्मक मूल्यांकनों (एफ 1, एफ 2, एफ 3 और एफ 4) को एकीकृत करना।
3. अध्यापन - अधिगम में संवर्धन हेतु रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग करने के लिए अध्यापकों और शिक्षार्थियों की सहायता करना।
4. कक्षा 9वीं और 10वीं हेतु भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में अध्यापक/ पाठ के लिए रचनात्मक मूल्यांकन के कार्यकलापों के समृद्ध स्रोत उपलब्ध कराना।
5. अध्यापकों की संदर्शिका में दिए गए रचनात्मक मूल्यांकन कार्यकलापों के उपयोग से स्वयं और कार्यकलाप तैयार करने में सहायता करना।
6. रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों के संबंधों में संकल्पना स्पष्ट करने में अध्यापकों की सहायता करना।
7. सामग्री और प्रविधियों को बेहतर बनाने के लिए अध्यापकों को क्षमता वृद्धि (संवर्धन) हेतु प्रेरित करना।
8. अध्यापकों की प्रभावी समय-प्रबंधन में सहायता करना।
9. रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों को व्यवस्थित ढंग से अभिलेखन हेतु स्कूलों को दिशानिर्देश उपलब्ध कराना।
10. मूल्यांकन, परामर्श तथा ज्ञानवर्धन के क्षेत्र में विकास हेतु अध्यापक को अवसर प्रदान करना।
11. विभिन्न हितधारकों के बीच सीसीई और इस योजना में रचनात्मक मूल्यांकन के स्थान पर स्वस्थ और सार्थक चर्चा आरंभ करना।

12. अध्यापकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर बनाना।

विषयवस्तु :

संदर्शिका में व्यापक रूप से निम्न क्षेत्र शामिल हैं।

1. रचनात्मक मूल्यांकन और योगात्मक मूल्यांकन : संकल्पना और भेद
2. वे रचनात्मक मूल्यांकन पद्धतियाँ कौन सी हैं जो अच्छी नहीं हैं?
3. अध्याय, समय सीमा, अवधि, प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन हेतु कार्यकलापों की संख्या, भारांक की गणना और अभिलेखन, विश्लेषण और अनुवर्ती कार्यवाई में विभाजन सहित रचनात्मक मूल्यांकन की समग्र रूपरेखा।
4. कक्षा 9वीं और 10वीं हेतु भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में विभिन्न अध्यायों / पाठों के लिए रचनात्मक मूल्यांकन कार्यकलाप।

रचनात्मक मूल्यांकन की समग्र रूपरेखा

(1) कक्षा 9वीं और 10वीं -शैक्षिक क्षेत्र

शैक्षिक भाग 1 (क)

कक्षा 9वीं और 10वीं में शैक्षणिक विषयों का मूल्यांकन

6 मूल्यांकन प्रस्तावित हैं। ये अधिकांश स्कूलों के लिए वैध है लेकिन बोर्ड से पत्र व्यवहार कर इनकी संख्या में परिवर्तन किया जा सकता है या इन्हें अनुकूल बनाया जा सकता है।

मूल्यांकन का प्रकार	शैक्षणिक सत्र में भारांक का प्रतिशत	माह	सत्रवार भारांक
पहला सत्र			
रचनात्मक मूल्यांकन - 1	10 प्रतिशत	अप्रैल - मई	एफ 1+2=20 प्रतिशत
रचनात्मक मूल्यांकन - 2	10 प्रतिशत	जुलाई - अगस्त	
योगात्मक मूल्यांकन - 1	20 प्रतिशत	सितंबर	एस 1 = 20 प्रतिशत

द्वितीय सत्र			
रचनात्मक मूल्यांकन - 3	10 प्रतिशत	अक्तूबर - नवंबर	एफ 3+4=20 प्रतिशत
रचनात्मक मूल्यांकन - 4	10 प्रतिशत	जनवरी - फरवरी	
योगात्मक मूल्यांकन - 2	40 प्रतिशत	मार्च	एस 2 = 40 प्रतिशत

कुल रचनात्मक मूल्यांकन = एफ 1 + एफ 2 + एफ 3 + एफ 4 = 40 प्रतिशत

योगात्मक मूल्यांकन = एस1 + एस 2 = 60 प्रतिशत

अध्यापकों और छात्रों द्वारा निम्न बिंदुओं को नोट किया जाए (कक्षा 9वीं और 10वीं के लिए)

- पहले और दूसरे सत्र में दो-दो रचनात्मक मूल्यांकन हैं।
- प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन लघु मूल्यांकनों में विभाजित है (कक्षा कार्य, क्विज़, परियोजनाएं, लिखित परीक्षण) जिनके अंक भिन्न-भिन्न हैं।
- प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन का भारांक 10 प्रतिशत है जो कि सर्वाधिक बेहतर तीन या चार या सभी कार्यकलापों के औसत से निकाला जा सकता है।
- सभी चार रचनात्मक मूल्यांकनों का कुल वेटेज 40 प्रतिशत है।
- चारों रचनात्मक मूल्यांकनों के अनुसार पाठ्यचर्याओं की समयावधि, आवंटन और प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन हेतु सुझाए गए कार्यकलापों की न्यूनतम संख्या प्रत्येक विषय के लिए वार्षिक योजना प्रलेख में दी गई है। वार्षिक योजना प्रलेख केवल सुझावात्मक है और स्कूलों द्वारा अपनी जरूरतों के अनुसार इसे अपनाया जा सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन और कक्षीय अध्यापन

रचनात्मक मूल्यांकन के कार्य निम्नलिखित सिद्धांतों को ध्यान में रखकर संकल्पित किए गए हैं :

- रचनात्मक मूल्यांकन कक्षीय अभ्यासों का अविभाज्य हिस्सा है। इसलिए इन्हें पढ़ाई जाने वाली पाठ्यचर्या के साथ जोड़ा गया है।
- कार्यों में आम तौर पर निम्नलिखित को निर्दिष्ट किया जाता है :

- अध्याय/पाठ
- कार्य कब आयोजित करना है
- प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक अनुमानित समय
- कार्य का उद्देश्य
- कार्य की विशिष्टियाँ
- कार्य आयोजित करने के लिए तैयारी सहित प्रक्रिया विधि, यदि कोई हो
- मूल्यांकन का मानदण्ड
- प्रतिपुष्टि और अनुवर्तन

यद्यपि अध्यापकों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कार्य के समग्र अभिकल्पन में छोटे मोटे संशोधन करने की स्वतंत्रता है।

ध्यान में रखने वाला सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि ये कार्य अध्यापन - अधिगम प्रक्रिया में समेकित करने के लिए बनाए गए हैं, अर्थात् एक अध्याय/पाठ को पढ़ते समय (इसके बाद नहीं) इसे शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही शंकाओं को स्पष्ट करने, सीखने वालों के सामने आने वाली समस्याओं को दूर करने और अध्यापन की विधियों में संशोधन करने और कार्यनीतियों के संदर्भ में अनुवर्तन को अत्यधिक महत्व दिया जाना चाहिए। अतः रचनात्मक मूल्यांकन कार्य अध्यापकों द्वारा विकसित अध्यापन योजनाओं में दर्शाए जाएंगे।

पाठ्यचर्या का विभाजन

सीसीई का सुचारु कार्यान्वयन करने के लिए सीबीएसई ने पाठ्यचर्या को सभी विषय अवधि वार विभाजित किया है। इस संदर्शिका में पुनः पाठ्यचर्या को उप विभाजित कर अध्यायों/पाठों के नाम तथा संख्या दर्शाए गए हैं जैसे एफए 1, एफए 2, एसए 1, एफए 3, एफए 4, और एसए 2 जबकि चारों रचनात्मक मूल्यांकनों को दिया गया भारांक 10 प्रतिशत है, फिर भी यूनिटों / पाठों की संख्या इनमें से प्रत्येक के लिए बदल सकती है जो वार्षिक शैक्षिक कैलेंडर में उपलब्ध समय पर निर्भर करती है। अध्यापकों को शैक्षिक सत्र की शुरुआत में सुझाए गए वार्षिक कैलेंडर का अध्ययन करने और उन्हें अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अनिवार्य पाए गए किसी प्रकार के छोटे संशोधनों को अपनी स्वयं की वार्षिक योजना में सहयोगात्मक रूप से अभिकल्पित करने की सलाह दी जाती है। जबकि यह अनिवार्य है कि समग्र योजना को इस प्रकार धारित किया जाए कि निरंतर और व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया सच्चे अर्थों में जारी रह सके।

योगात्मक और रचनात्मक मूल्यांकन

प्रथम सत्र में रचनात्मक मूल्यांकन (एफए 1 + एफए 2) को दिया गया भारांक (वेटेज) 20 प्रतिशत है। एफए 1 को दिया गया भारांक 20 प्रतिशत है। स्कूल को एफए 1 में प्रथम सत्र के लिए समग्र पाठ्यचर्या में छात्रों का मूल्यांकन करना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि ऐसी एक या दो इकाइयाँ हो सकती हैं जिन्हें एफए 2 के बाद पढ़ाया जाए। इन इकाइयों को एफए 1 में मूल्यांकन के लिए शामिल किया जाएगा। सीप, कारदूसरेस त्रमेश पोषप पाठ्यचर्या का मूल्यांकन एफए 2 में किया जाएगा। इसका अर्थ यह है कि शिक्षकों को उन यूनिटों / पाठों के मूल्यांकन के बारे में बिना कारण चिंतित नहीं रहना चाहिए जो एफए 4 आयोजित करने के बाद पढ़ाई गई हैं। अन्य के साथ इन यूनिटों / पाठों को 40 प्रतिशत भारांक के लिए एफए 2 द्वारा दूसरे सत्र में शामिल किया जाएगा। यह भी नोट किया जाए कि यदि कोई यूनिट / पाठ समय की कमी के कारण रचनात्मक रूप से आकलित नहीं किया गया है तो प्रत्येक सत्र के अंत में इनका योगात्मक मूल्यांकन किया जाएगा।

रचनात्मक मूल्यांकन की प्रक्रियाविधि

- पाठ्यचर्या का सुझाया गया विभाजन रचनात्मक मूल्यांकन के लिए अध्यापकों द्वारा अपनाया जाएगा।
- रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों की न्यूनतम संख्या, जो वार्षिक योजना में सुझाई गई हैं, आयोजित की जाएगी। जबकि अध्यापक आवश्यक तथा उपलब्ध समय पर निर्भर करते हुए कार्यों की न्यूनतम संख्या से अधिक दे सकते हैं।
- प्रत्येक कार्य में छात्रों के निष्पादन का मूल्यांकन दिए गए मूल्यांकन मानदण्डों के आधार पर किया जाएगा।
- रचनात्मक कार्यों में प्रत्येक छात्र द्वारा प्राप्त कुल अंकों की गणना की जाएगी और इसे 10 अंकों से विभाजित किया जाएगा। उदाहरण के लिए यदि 5 अंक के 3 कार्य एफए 1 के लिए दिए गए हैं और छात्र को इन कार्यों में 3, 3 और 2 अंक मिलते हैं तो छात्र द्वारा प्राप्त किए गए कुल अंक 15 में से 8 होंगे। अतः 10 के लिए भारांक $(8 \div 15) \times 10 = 5.33 = 5$ ग्रेड सी (कुल अंकों को अगले पूरे अंक तक पूर्णांक में बदला जाएगा, यदि दशमलव 0.5 या इससे अधिक है। यदि इससे कम है तो इसे छोड़ दिया जाए)। इसी प्रकार एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए अंकों की गणना की जाएगी तथा कुल अंकों से पूरे शैक्षिक सत्र के लिए 40 प्रतिशत अंकों में से रचनात्मक मूल्यांकन के अंक निकाले जाएंगे।

अभिलेख रखना

यह परम आवश्यक है कि अध्यापक आयोजित रचनात्मक मूल्यांकन (एफए) का एक स्पष्ट अभिलेख रखें, क्योंकि इसे सीबीएसई द्वारा समय-समय पर सत्यापित किया जाएगा। एफए को अभिलेखित करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

- जैसा कि सीबीएसई द्वारा सुझाया गया है छात्रों के रिपोर्ट फॉर्म के अतिरिक्त इसकी भी अलग अलग रिपोर्ट पुस्तिका रखी जानी चाहिए।
- प्रत्येक छात्र के लिए निम्नलिखित को दर्शाने वाला एक अलग समेकित अंक रजिस्टर भी बनाया जाना चाहिए।
 - रचनात्मक मूल्यांकन के साधनों (प्रश्नोत्तरी, बहुविकल्पीय प्रश्न, वाद विवाद, सामूहिक चर्चा, प्रश्नात्मक लेखन, प्रस्तुतीकरण आदि) को दर्ज किया जाना चाहिए।
 - चारों में से प्रत्येक रचनात्मक मूल्यांकन के लिए 10 अंकों के लिए अधिकतम अंक, प्राप्त अंक और भारांक दर्ज किया जाना चाहिए।
 - रचनात्मक मूल्यांकन में संचयी योग की गणना और इसका अभिलेखन किया जाना चाहिए।

स्कूलों में अंक रजिस्टर बनाने का एक उपयुक्त प्रारूप संकल्पित किया जाना चाहिए। अनेक स्कूलों में मूल्यांकनों को दर्ज करने की पूरी प्रक्रिया का कम्प्यूटरीकरण किया जाता है। ऐसे एक कार्यक्रम का विकास करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी संगत विवरणों को कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

- छात्र निष्पादन और अध्यापक / स्वयं / साथी द्वारा किए गए मूल्यांकन के दर्ज साक्ष्य का संकलन और अनुरक्षण इस प्रकार किया जाए कि अभिभावकों की पूछताछ का उत्तर इस साक्ष्य के आधार पर किया जा सके। इस संदर्भ में छात्र पोर्टफोलियो का महत्व बढ़ जाता है। यह सुझाया गया है कि प्रत्येक छात्र प्रत्येक विषय में अपने लिखित कार्यों में से सर्वोत्तम कार्यों का पोर्टफोलियो बनाए। इसमें प्रारूप और संपादित तथा उन्नत संस्करणों को जमा किया जाए ताकि एक काल अवधि में सीखने की प्रगति को प्रदर्शित किया जा सके। अध्यापकों के लिए शैक्षिक सत्र की शुरुआत में अलग-अलग छात्रों के पोर्टफोलियो फोल्डर खोलना, इसके महत्व पर छात्रों से चर्चा करना और पोर्टफोलियो बनाए रखने की प्रक्रिया तय करना सुविधाजनक होगा।
- यह नोट किया जाए कि मूल्यांकनों को रिपोर्ट पुस्तक में केवल ग्रेड के रूप में दर्शाया जाए। ये ग्रेड 9 अंकों के ग्रेडिंग पैमाने पर इस प्रकार होंगे

91-100	ए1	81-90	ए2
71-80	बी1	61-70	बी2
51-60	सी1	41-50	सी2
33-40	डी	21-32	ई1
00-20	ई2		

- समेकित अंक रजिस्टर में दिए गए अंकों की गणना द्वारा विभिन्न एफए तथा एसए के लिए भारांक ज्ञात किया जाएगा और समकक्ष ग्रेड रिपोर्ट पुस्तक में लिखे जाएंगे। इसका अर्थ है कि एफए में प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन होगा और प्रत्येक एसए परीक्षा अंकों के संदर्भ में आयोजित की जाएगी, जिसे समेकित अंक रजिस्टर में दर्ज किया जाएगा। प्रत्येक सत्र में एक बार रिपोर्ट पुस्तक में लिखे गए ग्रेडों की गणना समेकित अंक रजिस्टर से की जाएगी।
- उपरोक्त रिकॉर्डों के अतिरिक्त स्कूल में प्रत्येक अनुभाग (सेक्शन) के लिए परिणाम रजिस्टर भी बनाया जाएगा, जिसे शैक्षिक सत्र के अंक में प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के लिए समेकित किया जाएगा।

रचनात्मक मूल्यांकन के लिए उपयुक्त कार्यों के प्रकार

सीसीई पर यह अध्यापक संदर्शिका अध्यापकों के पास उपलब्ध मूल्यांकन साधनों के प्रकारों पर प्रकाश डालती है। इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि सभी साधन रचनात्मक मूल्यांकन के लिए उपयुक्त नहीं हैं। इस संदर्शिका में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि कौन सा मूल्यांकन रचनात्मक नहीं है। चूंकि रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों के प्रयोजन अलग-अलग हैं, इन साधनों को सावधानीपूर्वक चुना जाना चाहिए। जबकि एक सामान्य नियम के रूप में निम्नलिखित बिन्दुओं से इस विषय में अध्यापकों को एक निर्णय लेने में सहायता मिलेगी :

- औपचारिक कागज पैसिल की परीक्षाएं सदैव रचनात्मक मूल्यांकन के लिए उपयुक्त नहीं होती हैं, क्योंकि स्कूलों द्वारा इन्हें रचनात्मक प्रयोजनों के बजाए योगात्मक मूल्यांकन के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।
- इसी प्रकार परियोजनाओं और कार्यों के लिए अधिकांश कार्य स्कूल और कक्षा के घण्टों के अलावा किया जाना चाहिए जो रचनात्मक मूल्यांकन के लिए आदर्श नहीं है। इसके कारण स्पष्ट हैं :
- उचित निगरानी के बिना इन कार्यों की वैधता और साख समाप्त हो जाती है (छात्र इंटरनेट से इन्हें कॉपी या डाउनलोड कर लेते हैं। अभिभावक और अन्य लोग वास्तव में ये परियोजनाएं और कार्य पूरे करते हैं। इन दिनों ये तैयार परियोजनाएं और कार्य “शिक्षा की दुकानों से” खरीदे जा सकते हैं।)
- रचनात्मक होने के लिए इन कार्यों में सहयोग, चर्चा, अभिव्यक्ति और सुधार होने चाहिए।

इन कारणों को देखते हुए परियोजनाओं और कार्यों को रचनात्मक मूल्यांकन के साधनों के रूप में सावधानी पूर्वक इस्तेमाल किया जाना चाहिए जबकि कल्पनाशील और साधन सम्पन्न अध्यापकों के हाथों में ये रचनात्मक मूल्यांकन के प्रभावी साधन बन सकते हैं।

- रचनात्मक मूल्यांकन के साधन के माध्यम से जिसे प्रभावी रूप से आकलित किया जा सकता है, उसे योगात्मक मूल्यांकन द्वारा आकलित नहीं किया जा सकता है। बोलने और सुनने के कौशल, प्रस्तुतीकरण के कौशल और व्यावहारिक कौशल तथा सभी सह शिक्षात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन रचनात्मक रूप से किया जाना चाहिए।
- रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकनों को जोड़ कर छात्र के व्यक्तित्व विकास के सभी पक्षों को व्यापक रूप से शामिल किया जा सकता है।

रखी जाने वाली कुछ सावधानियां

क) वास्तविकता के कार्य और परियोजनाएं दें। ऐसे विषय नहीं दें जैसे :

‘मुगल वास्तुकला का सर्वेक्षण’

ऐसी परियोजनाओं से ‘कट एण्ड पेस्ट’ की प्रथा को बढ़ावा मिलता है। दूसरी ओर यह छात्रों के लिए अधिक वास्तविकता के नजदीक होगा कि वे अपने आप इन्हें करने का प्रयास करें :

मुगल वास्तुकला का एक उदाहरण चुनें। उस स्मारक की जानकारी और तस्वीरें जमा करें। निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए लगभग 2 पृष्ठ की संक्षिप्त रिपोर्ट लिखें :

- स्मारक का नाम
- बनने का समय
- यह किसने बनाया
- प्रयोजन (स्मारक का इतिहास)
- मुख्य वास्तुकलात्मक विशेषताएँ
- इसका वर्तमान राज्य

ख) यह काफी नहीं है कि हम यदि इन परियोजनाओं या कार्यों को सरल या वास्तविकता के नजदीक बनाएँ। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आगे सीखने की प्रक्रिया हो रही है और छात्र इस नए ज्ञान को कक्षा में सीखी गई बातों से जोड़ने में सक्षम है तो अध्यापक परियोजना के विषय में प्रत्येक छात्र का साक्षात्कार ले सकते हैं। यदि यह साक्षात्कार कल्पनाशील रूप से लिया जाता है तो यह बहुत संक्षिप्त हो जाता है किन्तु इसी के साथ इससे छात्र के अपने शोध और प्रस्तुतीकरण का प्रमाण भी मिल सकता है।

ग) परियोजनाओं को एक समूह की गतिविधि के रूप में बनाएँ ताकि यह कक्षा में ही किया जा सके। अध्यापक की सहायता से छात्रों के समूह तय कर सकते हैं कि वे किन परियोजनाओं पर कार्य करें, परियोजना को छोटी

इकाइयों में बांटा जा सकता है, इसकी छोटी इकाइयों को सदस्यों आदि के बीच में बाँटा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि परियोजना कार्य की चर्चा कक्षा में ही की जाए, जो आगे कार्य कर सके।

घ) एक समय सीमा तय करें और समूह के साथ यह देखने के लिए बातचीत करें कि वे किन विभिन्न चरणों पर हैं, वे क्या कर रहे हैं और क्या उन्हें सहायता की जरूरत है। इससे प्रयोजन की गंभीरता बढ़ेगी और छात्रों को गहरी दिलचस्पी के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

5. जैसा पहले बताया गया है, रचनात्मक और योगात्मक साधनों का निर्धारण उन प्रयोजनों द्वारा किया जाता है, जिसके लिए उन्हें उपयोग किया गया है।

क. यदि प्रयोजन को एक दिए गए समय बिन्दु पर औपचारिक रूप से सुनिश्चित किया जाना है कि छात्रों को क्या पता है और क्या नहीं पता, तब यह योगात्मक है।

ख. यदि प्रयोजन इस विषय में अनौपचारिक रूप से जानकारी लेना है कि पाठ्यक्रम कैसे आगे बढ़ रहा है, सीखने की प्रक्रिया को पाठ्यक्रम के दौरान कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, अलग-अलग छात्रों के सामने कौन सी चुनौतियाँ हैं और उन्हें कैसे संबोधित करते हैं, तब यह रचनात्मक है।

अतः यह साधनों का प्रयोजन है जो आम तौर पर तय करता है कि यह रचनात्मक या योगात्मक मूल्यांकन है। ऐसा कह कर हम अब भी मूल्यांकन साधनों को पहचानने का प्रयास करते हैं जो योगात्मक मूल्यांकन की तुलना में रचनात्मक मूल्यांकनों के लिए अधिक उपयुक्त हैं। चूंकि योगात्मक मूल्यांकन औपचारिक है आम तौर पर इसमें कागज-पेन की परीक्षा ली जाती है इन साधनों द्वारा जो आकलित नहीं किया जा सकता वह केवल रचनात्मक मूल्यांकन साधनों द्वारा किया जा सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन के लिए सुझाए गए साधन

भाषा

- सुनने की अवधारणा
- पढ़ने की अवधारणा
- वाद-विवाद/भाषण/समूह चर्चा/रोल (पात्राभिनय) प्रस्तुतीकरण
- नाटकीय रूप / डायलॉग (संवाद)/चर्चा / कमेंटरी
- बहुविकल्पीय प्रश्न/प्रश्न मंच
- व्याकरण अभ्यास
- कविता, कहानी, पांडुलिपि, नाटक, डायरी प्रविष्टि लेखन आदि को पूरा करना

- वेब चार्ट, संकल्पना मानचित्रण
- दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण
- पत्र, ई-मेल, आंकड़ा-प्रस्तुतीकरण, लेख, आत्मवृत्त और संवाद पूर्ति

यह सुझाव दिया जाता है कि चारों कार्यों में से कम से कम एक कार्य श्रवण क्षमता या वार्तालाप की दक्षता के मूल्यांकन के लिए उपयोग किया जा सकता है।

गणित

- आंकड़ों का संयोजन और विश्लेषण
- समूह परियोजनाएँ
- समस्या सुलझाना
- गणित प्रयोगशाला गतिविधियाँ
- क्विज़ / मौखिक प्रश्न
- प्रयोग
- प्रस्तुतीकरण
- चार्ट, मॉडल बनाना
- विजुअल (दृश्यात्मक) प्रस्तुतीकरण
- सरल और रोचक कार्य
- विभिन्न प्रमेयों पर आधारित गणित की पहेलियाँ

यह सुझाव दिया जाता है कि गणित विषय के लिए इन चारों में से कम से कम एक गतिविधि का उपयोग गणित प्रयोगशाला गतिविधियों में निष्पादन मूल्यांकन हेतु किया जाना चाहिए।

विज्ञान

- प्रयोग
- सूचना जमा करना और परिणाम निकालना
- विज्ञान की संकल्पनाओं और प्रयोगों पर प्रस्तुतीकरण
- बताई गई समस्याओं के लिए खोजबीन

- बहुविकल्पीय प्रश्न तथा विज्ञान प्रश्न मंच
- सरल और रोचक कार्य
- समूह कार्य और परियोजनाएं
- मॉडल बनाना
- विज्ञान गोष्ठी / सेमिनार
- विभिन्न यौगिकों / लवणों को तैयार करना
- वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करते हुए विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या

यह सुझाव दिया जाता है कि वर्ष के दौरान विज्ञान विषय के लिए इन चारों में से कम से कम एक गतिविधि का उपयोग प्रयोगों के लिए किया जाना चाहिए।

सामाजिक विज्ञान

- लिखित कार्य, जिसमें अनुमान, व्याख्या और मूल्यांकन
- कमेंटरी
- सरल परियोजनाएं (सामूहिक और व्यक्तिगत)
- प्रस्तुतीकरण (सामूहिक और व्यक्तिगत)
- क्विज़ और बहुविकल्पीय प्रश्न
- मॉडल तथा चार्ट
- वाद विवाद
- गोष्ठी / सेमिनार
- ऐतिहासिक आंकड़ों की व्याख्या करना
- रोल प्ले (चरित्रांकन)
- ऐतिहासिक घटनाओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण।

यह सुझाव दिया जाता है कि वर्ष के दौरान सामाजिक विज्ञान विषय के लिए इन चारों में से कम से कम एक गतिविधि का उपयोग परियोजना के आधार पर किया जाना चाहिए।

उपरोक्त बताए गए साधनों के अतिरिक्त अध्यापक अन्य अनौपचारिक मार्गों को विकसित कर सकते हैं जिसमें रचनात्मक मूल्यांकन किया जाए। उदाहरण के लिए कक्षा में छात्रों के निष्पादन के पर्यवेक्षण को (भागीदारी, प्रश्नों के

उत्तर देना आदि) रचनात्मक मूल्यांकन के लिए प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है। लिखित परीक्षाओं को उपरोक्त सूची में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि ये औपचारिक हैं तथा इसलिए योगात्मक मूल्यांकन के लिए अधिक उपयुक्त हैं। इसके अलावा यदि लिखित परीक्षाओं का उपयोग रचनात्मक प्रयोजनों के लिए किया जाता है तो इन्हें आम तौर पर अधिक उपयोग करने की ओर रुझान होगा, क्योंकि इन्हें निर्मित और लागू करना अपेक्षाकृत आसान है। इससे छात्रों के तनाव के स्तर में भी वृद्धि होगी। इन्हें योगात्मक मूल्यांकन के रूप में बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे अध्यापकों को एक मिनट की परीक्षा लेने, खुली पुस्तक की परीक्षा तथा एक यूनिट या पाठ को पढ़ाने के दौरान लिखित उत्तरों की अपेक्षा करते हुए संकल्पना आधारित प्रश्न तैयार करने की स्वतंत्रता है। इन उत्तरों का विश्लेषण करते हुए और सीखने की प्रक्रिया में संकल्पनात्मक स्पष्टता प्रदान की जानी चाहिए और अंतरालों को दूर करने के लिए उन पर भी चर्चा की जानी चाहिए। इस संदर्शिका में शामिल किए गए कुछ रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों में लेखन कार्य शामिल है। जबकि इन सभी को प्रतिपुष्टि के लिए विस्तार सहित कक्षा में इस्तेमाल करने का प्रयास गया है।

इस संदर्शिका का उपयोग कैसे करें

जैसा कि पहले बताया गया है कि इस संदर्शिका में सभी मुख्य शैक्षिक विषयों में कक्षा 9वीं और 10वीं के लिए अनेक रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों को शामिल किया गया है। शिक्षक एक योजनाबद्ध रूप में इनका उपयोग न केवल अधिगम का मूल्यांकन करने में बल्कि अपने स्वयं के अध्यापन की प्रभावशीलता को बढ़ाने में भी कर सकते हैं। रचनात्मक कार्यों के प्रभावी उपयोग हेतु कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं :

क. योजना

शैक्षिक सत्र के आरंभ में एक ही विषय के अध्यापक आपस में चर्चा कर सकते हैं और पूरे सत्र के लिए रचनात्मक मूल्यांकन की एक योजना बना सकते हैं। इस संदर्शिका में प्रत्येक विषय के लिए एक वार्षिक योजना (प्लानर) दी गई है। प्रत्येक स्कूल द्वारा बनाई गई वार्षिक योजना में निम्नलिखित विवरण शामिल होने चाहिए :

- एफए 1, एफए 2, एफए 3 और एफए 4 के लिए कितने रचनात्मक कार्यों का उपयोग किया जाएगा (कार्यों की संख्या सुझाए गए न्यूनतम कार्यों से कम नहीं होनी चाहिए)।
- संदर्शिका से अभिज्ञात कार्य (जबकि अध्यापक संदर्शिका में दिए गए कार्यों के अलावा अन्य कार्य लेने के लिए स्वतंत्र हैं)।
- कार्यों को तय करते समय / चुनते समय विविधता को बनाए रखने की सावधानी रखी जानी चाहिए ताकि ज्ञान और कौशलों को व्यापक रूप से शामिल किया जा सके और इसमें एक रसता की स्थिति न हो। उदाहरण के लिए भाषाओं में पढ़ने, लिखने, बोलने जैसे विभिन्न कौशलों तथा सुनने एवं भाषा के साहित्य तथा व्याकरण जैसे क्षेत्रों को रचनात्मक मूल्यांकन में शामिल किया जाना चाहिए। इस योजना में चार

रचनात्मक कार्यों में कार्यों को इस प्रकार बाँटा जाना चाहिए कि इन सभी पक्षों का मूल्यांकन सत्र के दौरान कम से कम दो या तीन बार किया जा सके। इसी प्रकार प्रदत्त कार्यों का चयन अन्य विषयों में भी इस प्रकार किया जाए कि मूल्यांकन के विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हुए विभिन्न कौशलों और दक्षताओं का मूल्यांकन किया जा सके।

ख. कक्षा संबंधी कार्य नीतियां

कार्यों को कक्षीय अनुदेशों के साथ समेकित किया जाना है, अतः अध्यापकों को इन्हें अपनी पाठ योजनाओं में शामिल करना होगा।

संदर्शिका में दी गई कार्य विशिष्टियों का उपयोग अध्यापक द्वारा निम्नलिखित रूप में किया जाए।

उद्देश्य : ये प्रत्येक कार्य के लिए अधिगम परिणामों को निर्दिष्ट करते हैं इसलिए ये ध्यान केन्द्रित करने में अध्यापकों और छात्रों की सहायता करते हैं। इन्हें मूल्यांकन के समय भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

प्रक्रिया : प्रदत्त कार्य के लिए अध्यापक की ओर से कुछ तैयारियों की जरूरत हो सकती है। इन्हें 'प्रक्रिया' के तहत शामिल किया जाना चाहिए। विभिन्न चरणों का पालन किया जाना चाहिए, सावधानियाँ रखी जानी चाहिए और इस शीर्षक के तहत सूचना जमा करने के सुझाव दिए जाते हैं।

मूल्यांकन के लिए मानदण्ड

मूल्यांकन को वस्तुनिष्ठ और व्यवस्थित बनाने के लिए विशिष्ट मानदण्ड सुझाए गए अंकों के साथ प्रत्येक कार्य के नीचे दिए गए हैं। यह अनिवार्य है कि अध्यापक इन मानदण्डों को देखें या एक कार्य आरंभ करने से पहले इन्हें कक्षा में पढ़ें। छात्रों को यह जानना चाहिए कि उनका मूल्यांकन किस आधार पर किया जाएगा। इससे उन्हें कार्य करने में स्पष्टता भी मिलेगी। प्रत्येक आयोजित कार्य में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों को दर्ज करना आवश्यक है। मूल्यांकन का अभिलेख रखा जाना चाहिए। जब भी एक लिखित सामग्री तैयार होती है तो यह छात्र - पोर्टफोलियो का हिस्सा बनाई जानी चाहिए।

प्रतिपुष्टि / अनुवर्तन

यह रचनात्मक मूल्यांकन का महत्वपूर्ण चरण है। छात्रों के निष्पादन से उनकी समझ, संकल्पनात्मक स्पष्टता, आने वाली समस्याएँ और सीखने के अंतरालों के बारे में मूल्यवान जानकारी मिलती है। इस सूचना के आधार पर अध्यापक (प्रतिपुष्टि) फीड बैक दे सकते हैं और सुधार तथा संवर्धन के लिए अनुवर्तन गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। इन जानकारीयों से अध्यापकों के सीखने को उन्नत व प्रभावशाली बनाने के लिए अपने अभ्यासों को संशोधित करने में भी सहायता मिलेगी।

कुछ चुनौतियाँ

अध्यापकों के सामने रचनात्मक मूल्यांकन को अपने अध्यापन में समेकित करने के दौरान कुछ चुनौतियाँ आ सकती हैं। इनके कारण इस प्रकार हैं।

- कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या
- समय की कमी
- सामग्री की कमी से होने वाली बाधाएं
- समूह / जोड़ों में कार्य का मूल्यांकन करने की कार्यनीति

उचित योजना की सहायता से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। कुछ सुझाव इस प्रकार हैं :

कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या

- ऐसे कार्य चुनें जिसमें समूह कार्य और जोड़ों में कार्य शामिल हो।
- ऐसे कार्य जिनके लिए छात्रों से लिखित उत्तरों की आवश्यकता हो और जिन्हें उनके सहपाठी आकलित कर सकें।
- बहुविकल्पीय प्रश्न तथा अन्य वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों के उत्तर छात्रों द्वारा आपस में अपने (कार्य प्रपत्र) को आदान-प्रदान करते हुए अंकित किए जा सकते हैं और अध्यापक अंत में सभी को उत्तर बता सकते हैं।
- एक कालांश (पीरियड) में सभी छात्रों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि कार्यों को छात्रों के समूहों के बीच बांटा जाए ताकि अध्यापक उन्हें अलग-अलग कालांशों में आकलित कर सकें। इसका अर्थ यह है कि अधिक छात्रों वाली कक्षा में सभी छात्रों का मूल्यांकन सभी कार्यों के लिए करना आवश्यक नहीं है। कार्यों की सावधानीपूर्वक योजना बनाकर सभी कौशलों को छात्रों के समूहों के बीच बारी बारी से देकर उन सभी को शामिल किया जा सकता है।
- इससे पता लगता है कि एक समय पर एक कार्य में सभी छात्रों को शामिल करने की जरूरत नहीं है। अनेक उत्कृष्ट कार्यों को सिखाने के संदर्भ में अध्यापक छात्रों को अलग-अलग कार्य देकर एक लचीला रास्ता अपना सकते हैं। उदाहरण के लिए लिखित कार्य में अच्छे माने जाने वाले छात्रों को व्यावहारिक कार्य में अच्छे पाए गए छात्रों की तुलना में कुछ भिन्न कार्य दिए जा सकते हैं।
- समय तालिका बनाते समय प्रत्येक विषय के लिए दो कालांशों को मिलाया जाए। वाद विवाद, प्रस्तुतीकरण, सामूहिक चर्चा, नाटकीय प्रस्तुतीकरण, रोल प्ले (चरित्रांकन) आदि को शामिल करने वाले कार्य दो कालांशों के दौरान आयोजित किए जा सकते हैं।

समय का प्रबंधन

प्रत्येक विषय के लिए अध्यापन के कालांशों की संख्या पहले से तय है अतः अध्यापक महसूस कर सकते हैं कि आवंटित कालांशों में रचनात्मक मूल्यांकन कार्यों का आयोजन कठिन हो सकता है। जबकि यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि रचनात्मक मूल्यांकन अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया में शामिल किया जाना है और यह केवल पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए अपनाई गई विधि में एक बदलाव है। व्याख्याओं और अध्यापक केन्द्रित शिक्षण को कम करते हुए कार्यों तथा गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय मिल सकता है। कुछ अन्य सुझाव इस प्रकार हैं:

- उचित योजना से समय का दक्ष प्रबंधन किया जा सकेगा।
- कक्षा आरंभ होने से पहले प्रत्येक कार्य की तैयारी पूरी करें ताकि इसमें समय व्यर्थ न जाए।
- स्वयं और सहपाठी द्वारा मूल्यांकन का इस्तेमाल युक्तिसंगत रूप से करें।
- सत्र के शुरूआती हिस्से में छात्रों को आपस में तथा अध्यापक के साथ सहयोग करने का प्रशिक्षण दें। आने वाले समय में वे दक्षता बनाए रखने और तेज गति से आगे बढ़ने में सक्षम होंगे।
- यह अनिवार्य है कि छात्रों के नाम के साथ अंक पत्र वार्षिक योजना के अनुसार शैक्षिक सत्र की शुरूआत में तैयार किया जाए। प्रत्येक मूल्यांकन के लिए चुने गए एफए 1, एफए 2, एफए 3, एफए 4 के लिए कार्यों के विवरण के साथ कॉलम दिए जाएँ और अधिकतम अंक लिखे जाएँ ताकि अंकों को दर्ज करने में बहुत अधिक समय न लगे।
- छात्रों को अपने पोर्टफोलियो को बनाने का प्रशिक्षण दिया जाए। प्रत्येक विषय के लिए एक फोल्डर बनाया जाए जिसमें प्रत्येक छात्र द्वारा सर्वोत्तम लिखित सामग्री रखी जाए। जब छात्रों को अभिलेख रखने का दायित्व लेने में सहायता मिलती है तो वे समय के बेहतर प्रबंधन के अलावा अध्यापक का कुछ भार भी कम कर सकते हैं।

सामग्री

कार्य प्रपत्र की फोटो कॉपी सभी स्कूलों में करना संभव नहीं है। इस समस्या से निपटने के लिए अध्यापक कुछ कार्यनीतियाँ अपना सकते हैं।

सुझाव

- केवल विस्तृत कार्य प्रपत्र और चित्रों तथा तस्वीरों वाले कार्यों की फोटोकॉपी की आवश्यकता होती है।
- जब भी संभव हो कार्य प्रपत्र को श्यामपट्ट पर लगाया जाए।
- यदि तकनीक उपलब्ध है तो कार्य प्रपत्र को एलसीडी प्रोजेक्टर की सहायता से पूरी कक्षा को दिखाया जाए।

- बहुविकल्पीय प्रश्न और वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न पढ़े जा सकते हैं और छात्रों को कागज पर केवल उत्तर लिखने का अनुदेश दिया जा सकता है।
- जोड़ों में कार्य, समूह में कार्य और पूरी कक्षा के कार्य के लिए अनुदेशों को एक या दो बार पढ़ा जाए।
- प्रधानाचार्य और स्कूल के प्रशासन को फोटोकॉपी की आवश्यकता के बारे में पहले से बताया जाए ताकि स्कूल द्वारा पर्याप्त व्यवस्था की जा सके।
- हमेशा कागज के दोनों ओर फोटोकॉपी करें। इसका अर्थ यह है कि एक कागज पर एक से अधिक कार्यों की फोटोकॉपी की जा सके। जब छात्र एक कार्य को पूरा कर लें तो इन प्रपत्रों को ले लिया जाए और अगले कार्य के लिए दोबारा बांटा जाए।
- जब कभी संभव हो कार्य प्रपत्र को दो या अधिक छात्रों के बीच बांटा जाए।
- छात्रों को कागज / कार्य प्रपत्र के उपयोग में किफायत रखने के लिए कहा जाए।

समूह / जोड़ों में कार्य का मूल्यांकन करने के लिए कार्यनीति

आरंभ में अध्यापकों के लिए समूह / जोड़ों में कार्यों का मूल्यांकन करना कुछ कठिन हो सकता है, क्योंकि इसका परिणाम एक से अधिक छात्रों को मिलता है। नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं जिनसे अध्यापकों को इस विषय में सहायता मिल सकती है :

- जब कभी संभव हो समूह और जोड़ों के कार्य का मूल्यांकन छोटे हिस्सों में बांटा जाए और समूह के प्रत्येक सदस्य को एक हिस्सा सौंपा जाए।
- यदि उपरोक्त स्थिति संभव नहीं है तो समूह कार्य के प्रत्येक छात्र के योगदान का पर्यवेक्षण और निगरानी की जाए।
- आम तौर पर समूह चर्चा के बाद प्रत्येक समूह द्वारा एक प्रस्तुतीकरण किया जाए। सभी छात्रों के बीच प्रस्तुतीकरण संचालित करने की सावधानी रखी जाए ताकि एक समय के बाद सभी को अपने समूह के विचार प्रस्तुत करने का मौका मिल सके।
- समूह कार्यों का मूल्यांकन पूरे समूह / जोड़े के लिए किया जाए। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक समूह के सदस्य एक समान अंक / ग्रेड प्राप्त कर सकते हैं। जबकि जोड़ों में कार्य करने से अलग अलग छात्र के निष्पादन का मूल्यांकन आसान होता है।
- रचनात्मक मूल्यांकन अनौपचारिक होता है, इसलिए समूह कार्यों का मूल्यांकन व्यापक मापदंडों जैसे समूह के प्रत्येक छात्र की भागीदारी, योगदान और प्रभावशीलता।
- यह अनिवार्य है कि अध्यापक समूह के कार्यों की निगरानी उचित रूप से करते हुए सुनिश्चित करें कि प्रत्येक छात्र इसमें भाग ले और कोई भी छात्र अपना प्रभुत्व न बनाए।

निष्कर्ष

इस पुस्तक में अध्यापक की तैयारी, योजना और समन्वय पर बल दिया गया है। यह सुझाव दिया गया है कि एक वार्षिक योजना बनाने के समय प्रधानाचार्य प्रत्येक विषय समिति से बातचीत करें और अध्यापक यह सुनिश्चित करते हुए एक कार्य योजना बनाएं कि मूल्यांकन को अध्यापन – अधिगम प्रक्रिया के साथ समेकित किया जाए।

यह अनिवार्य है कि प्रत्येक यूनिट / पाठ के लिए विस्तृत पाठ योजनाओं को तैयार किया जाए और प्रथम तथा द्वितीय सत्रों के लिए समग्र योजना बनाई जाए। जबकि पाठ योजना अनिवार्यतः सिखाई जाने वाली संकल्पनाओं, छात्रों की आवश्यकताओं और अन्य सामाजिक – सांस्कृतिक कारकों पर निर्भर करते हुए प्रत्येक अध्यापक द्वारा एक नवाचारी साधन विकसित किया जाए। यह उपयुक्त होगा कि पाठ योजना में निरंतर और व्यापक मूल्यांकन को समेकित करने के लिए इसमें कुछ व्यापक क्षेत्रों को शामिल किया जाए। जबकि ये व्यापक क्षेत्र पाठ योजना के प्रारूप के साथ प्रत्येक स्कूल द्वारा तय किए जा सकते हैं, निम्नलिखित घटकों को समग्र योजना सुनिश्चित करने के लिए शामिल किया जाए :

- सामग्री / विषय / पाठ
- संकल्पना / कौशल
- अनुदेशात्मक उद्देश्य
- स्तर – आगमन, प्रक्रिया, समेकन, निगमन
- विशिष्ट प्रश्नों के साथ मूल्यांकन के साधन
- सुधार

यह भी सुझाव दिया गया है कि रचनात्मक कार्यों का मूल्यांकन 10 अंकों या 10 के गुणकों में किया जाए ताकि भारांक की गणना में आसानी है। इसी प्रकार छात्रों द्वारा स्वयं मूल्यांकन को बढ़ावा देकर (आईसीटी) को समेकित किया जा सकता है और छात्रों के स्वयं मूल्यांकन-साधन विकसित किए जा सकते हैं। जबकि इससे छात्रों को स्वायत्तता का पर्याप्त विस्तार मिलेगा, इससे अध्यापकों का भार भी कम होगा। अंत में परियोजनाओं के बारे में कुछ बातें। इस पुस्तक में बताया गया है कि जहां तक संभव हो परियोजना को स्कूल में ही किया जाना चाहिए। परन्तु कुछ परियोजनाओं के लिए वृहद शोध और स्वयं कार्य करने तथा विभिन्न सामग्रियों के उपयोग की जरूरत होती है, जिसे स्कूल के समय के दौरान करना कठिन होता है। चूँकि यहाँ मुख्य चिंता छात्रों द्वारा मूल्यांकन के लिए जमा किए गए कार्यों की वास्तविकता और साख के विषय में है अतः अध्यापक को परियोजना कार्य की निगरानी में पूरी सावधानी बरतनी चाहिए, छात्रों को स्कूल से बाहर कुछ कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए। इस विषय में इस संदर्शिका में सावधानियों पर विस्तृत दिशा निर्देश दिए गए हैं। परियोजनाओं को वास्तविक और सरल बनाकर अध्यापक अपने छात्रों के कार्य की प्रामाणिकता को सुनिश्चित कर सकते हैं।

हिन्दी पाठ्यक्रम
‘अ’



हिन्दी पाठ्यक्रम 'अ'

कक्षा-दसवीं

रचनात्मक मूल्यांकन

		क्षितिज भाग 2 (गद्य)	क्षितिज भाग 2 (काव्य)	कृतिका	व्याकरण
FA-1	रचनात्मक मूल्यांकन (अप्रैल-मई) भार विभाजन 10% दो प्रदत्त कार्य	1. नेता जी का चश्मा 2. बाल गोबिन भगत	1. सूरदास 2. देव	1. माता का आँचल	क्रिया भेद - अकर्मक- सकर्मक, मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया, संयुक्त क्रिया
FA-2	रचनात्मक मूल्यांकन (जुलाई-अगस्त) भार विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	3. लखनवी अंदाज	3. जयशंकर प्रसाद 4. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	2. जॉर्ज पंचम की नाक	विशेषण और क्रिया विशेषण
SA-1	सितम्बर भारविभाजन 20%				
FA-3	रचनात्मक मूल्यांकन (अक्टूबर-दिसंबर) भार विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	4. मानवीय करुणा की दिव्य चमक 5. एक कहानी यह भी 6. स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन	5. तुलसीदास 6. नागार्जुन 7. गिरिजा कुमार माथुर	3. साना साना हाथ जोड़ि	पद परिचय वाक्य भेद-रचना के अनुसार, रचनांतरण



		क्षितिज (गद्य)	क्षितिज (पद्य)	कृतिका	व्याकरण
FA4	रचनात्मक मूल्यांकन (जनवरी-फरवरी) भार विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	7. नौबत खाने में इबादत 8. संस्कृति	8. ऋतुराज 9. मंगलेश डबराल	4. एही हैंयाँ झुलनी हेरानी हो रामा 5. मैं क्यों लिखता हूँ	वाच्य परिवर्तन, अलंकार- अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण
SA2					

10. पाठ्यक्रम अ	1	2	3	4	5
FA1					
नेता जी का चश्मा	अनुच्छेद लेखन	संकलन एवं संस्मरण	संवाद लेखन	नेता जी पर सूचना संकलन	वाद विवाद
बाल गोबिन भगत	ग्राम्य जीवन पर लेखन	भेंटवार्ता	लोकगीत- संकलन, गायन	अनुच्छेद लेखन-पठन	वार्ता
सूरदास	मोबाइल संदेश	पदों का संकलन एवं गायन	समूह चर्चा	नव रसों पर कवि सम्मेलन	श्रीकृष्ण-लीला का मंचन
देव	कार्य प्रपत्र	ऋतुओं पर परिचर्चा	दूल्हा-दुल्हन के शृंगार व रंग-रूप का वर्णन	वाद-विवाद	वर्ग पहेली
माता का आँचल	आंचलिक शब्द चयन	बाल मंडली के खेल- सामूहिक प्रदर्शन	वाद-विवाद	समूह चर्चा	लोक कथाओं का संकलन
FA2					



लखनवी अंदाज	उर्दू शब्दों का संग्रह	कार्य प्रपत्र	समूह चर्चा	शब्द चित्र	बुरी से बुरी बात को सुंदर ढंग से कहना
जयशंकर प्रसाद	परिचर्चा	किसी सपने का वर्णन	डायरी निर्माण एवं लेखन निर्माण	अनुच्छेद-लेखन	कार्य प्रपत्र
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	अभिनय एवं संवाद	तुकान्त शब्दों का संकलन	अनुच्छेद लेखन	परिचर्चा	काव्य संकलन, लेखन तथा वाचन
जॉर्ज पंचम की नाक	नाक पर मुहावरे	सूचना संकलन	कार्य प्रपत्र	परिचर्चा	आशु भाषण
FA3					
मानवीय करुणा की दिव्य चमक	संस्मरण	पत्र लेखन	कार्य प्रपत्र	मुहावरेदार कहानी	विशेष्यों से विशेषण बनाना
एक कहानी यह भी	संवाद लेखन एवं वाचन	अनुभव सुनाना	वाद विवाद	नारा लेखन	संस्मरण
	1	2	3	4	5
स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन	पौराणिक कथाओं का संकलन	वाद विवाद	सूची निर्माण	कार्य प्रपत्र	परिचर्चा
तुलसीदास	संवाद लेखन एवं वाचन	चौपाई कंठस्थ कर सुनाना	वाद विवाद	परिचर्चा-क्रोध-प्रबंधन	रामलीला मंचन
नागार्जुन	अनुभूति एवं अनुभव लेखन	वाद विवाद	परिचर्चा	नारे लिखना और बोलना	मानचित्र में नदियाँ दर्शाना
गिरिजा कुमार माथुर	छाया शब्द के अनेकार्थी प्रयोग	कार्य प्रपत्र	फूलों के नाम की सूची, चित्र और कविता बनाना	आशु भाषण	स्वरचित कविता (तुकबंदी)
साना साना हाथि जोड़ि	कैलेण्डर तैयार करना	अनुच्छेद लेखन	कार्य प्रपत्र	संवाद वाचन	सही गलत के निशान लगाना
FA4					



नौबतखाने में इबादत	अनुभव सुनाना	कार्य प्रपत्र	भेंटवार्ता / साक्षात्कार	भारत रत्न विभूषित व्यक्तियों की सूची	लोकगीतों का संकलन
संस्कृति	पहेली रचना	परिचर्चा	भारत के रमणीय स्थलों का सूचना संकलन	तुलनात्मक संवाद	योग और प्रयोग
ऋतुराज	समूह चर्चा	सामूहिक वार्ता	परिचर्चा	वाद विवाद	निमंत्रण पत्र तैयार करना
मंगलेश डबराल	परदे के पीछे कार्य करने वाले कलाकारों की भूमिका	समूह गान	अन्त्याक्षरी	वाद्य यंत्र का सचित्र वर्णन	समीक्षा
एही ढैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा	कक्षा पत्रिका निर्माण	क्षेत्रीय त्यौहारों का लेखन	नुक्कड़ नाटक	अनुच्छेद लेखन	रिपोर्ट / प्रतिवेदन
किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया	कविता वाचन	संवाद	आत्मवृत्तात्मक लेखन	समूह चर्चा	सचित्र फाइल
मैं क्यों लिखता हूँ	चिकित्सालय से रोगों संबंधी सूचनाओं का संग्रह	सामूहिक कार्य - कविता, चित्रकला, पत्र, अनुच्छेद लेखन	एक चर्चा	समूह चर्चा	लेखन डायरी लेखन



व्याकरण		
FA1	संयुक्त क्रिया	एक प्रपत्र
FA2	विशेषण	शब्द चयन और प्रयोग
4	विशेषण-विशेष्य	प्रश्नोत्तरी
5	क्रिया विशेषण	सामूहिक कार्य
FA3	पद परिचय	नाटकीकरण
7	वाक्य भेद रचना के आधार पर	वाक्य की पहचान
8	वाक्य रचानांतरण	सामूहिक क्रिया
FA4	वाक्य परिवर्तन	सामूहिक क्रिया
10	अलंकार	1. कार्य प्रपत्र 2. सही विकल्प छाँटना
11	निबन्ध लेखन	निबन्ध लेखन एवं वाचन X - एक सामूहिक प्रयास
12	पत्र लेखन	बधाई पत्र अध्यापक को अध्यापक दिवस पर





नेता जी का चश्मा

स्वयं प्रकाश

प्रदत्त कार्य : 1. दादा जी का चश्मा - अनुच्छेद लेखन

उद्देश्य:

- अनुच्छेद रचना की कला विकसित करना।
- बड़ों के प्रति आदर / सम्मान की भावना का विकास करना।
- बुजुर्गों की स्वास्थ्य समस्या के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- मानव-जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का परिचय कराना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया :

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सभी छात्रों को अपने परिवार के विषय में परिचर्चा करने को कहेंगे।
- सभी छात्र अपने दादा दादी व नाना नानी के स्वभाव की विशेषताएँ बताएँगे।
- इसके बाद सब विद्यार्थी अपने दादा जी/नाना जी और उनके चश्मे के विषय में एक अनुच्छेद लिखेंगे।
- इस कार्य के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस बीच शिक्षक छात्रों के लेखन कौशल का निरीक्षण करेंगे।
- कार्य पूर्ण होने पर अध्यापक सुविधानुसार उसका मूल्यांकन कर लेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

अनुच्छेद की मौलिकता	2
लेखन कौशल	1
भाषायी दक्षता	1
परस्पर विचार विनिमय	1

टिप्पणी

- इसके अतिरिक्त यदि अध्यापक चाहें स्वतन्त्र रूप से किसी उपयुक्त बिन्दु को आधार मानकर मूल्यांकन कर सकते हैं



प्रतिपुष्टि :

- सर्वोत्तम अनुच्छेद को कक्षा में पढ़कर सुनाया जायेगा।
- छात्रों को व्यवहार-कुशल होने के लिए प्रेरित किया जायेगा।
- कमजोर विद्यार्थियों को अच्छा लिखने के लिए मार्ग दर्शन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य 2. स्वतन्त्रता सेनानियों के नामों का संकलन एवं उनसे जुड़ी किसी विशेष घटना का वर्णन।

उद्देश्य

- देश भक्ति की भावना का विकास करना
- राष्ट्रीय स्वतन्त्रता कायम रखने की प्रेरणा देना
- पारस्परिक एकता व मनोबल को बढ़ावा देना
- खोज परक प्रवृत्ति का विकास करना
- देश भक्तों के प्रति संवेदनशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना

प्रक्रिया

सामूहिक कार्य

- 1857 के क्रान्ति आन्दोलन के प्रमुख सेनानियों का उल्लेख शिक्षक द्वारा कक्षा में किया जायेगा।
- कक्षा को पांच समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- तत्पश्चात् छात्रों को निर्देश दिया जायेगा कि वे कम से कम पांच स्वतन्त्रता सेनानियों के नामों की सूची बनाएं व उनसे जुड़ी किसी एक विशेष घटना का वर्णन कुछ पंक्तियों में करें।
- इस कार्य के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दिया जाए।
- इस मध्य शिक्षक छात्रों के कार्य का निरीक्षण करेंगे।
- इसके बाद प्रत्येक समूह प्रस्तुतीकरण देगा प्रत्येक समूह को 3-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन आधार श्याम पट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक योजना

अभिव्यक्ति क्षमता	2
घटना क्रम का वर्णन	1
सूची	2

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतन्त्र रूप से सुविधानुसार मूल्यांकन कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

- सर्वाधिक नाम लिखने वाले छात्र की प्रशंसा की जाएगी।
- जिन छात्रों को अधिक जानकारी नहीं है उन्हें उत्साहित किया जाएगा तथा और जानकारी दी जाएगी।

प्रदत्त कार्य : 3. मूर्तिकार, चित्रकार तथा संगीतकार के विवाद को व्यक्त करता संवाद लेखन।

उद्देश्य

- कलाकारों के महत्व को समझाना।
- कलाकारों का अहं झगड़े का कारण है, अतः अहम् के दुष्प्रभाव से दूर रहने की प्रेरणा देना।
- संवाद विधा से परिचित कराना।
- मौलिक चिंतन की प्रेरणा देना।
- लेखन, वाचन, श्रवण क्षमताओं का विकास।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक विषय का स्पष्टीकरण करेगा कि मूर्तिकार, चित्रकार तथा संगीतकार अपनी-अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते हैं। इसी बात को संवादों के माध्यम से अभिव्यक्त करें।
- पूरी कक्षा को तीन समूहों में विभक्त कर दिया जाए।
 - * मूर्तिकार समूह
 - * चित्रकार समूह
 - * संगीतकार समूह
- 5-10 मिनट का समय सोचने के लिए दिया जाएगा तथा प्रत्येक समूह यह योजना बनाएगा कि समूह के किस सदस्य को क्या कार्य करना है।
- प्रत्येक समूह का एक-एक प्रतिनिधि कक्षा में सबके सम्मुख जाकर अपने-अपने संवादों को नाटक की रूपरेखा के अनुसार बोलेंगे।
- इसमें 10-15 मिनट का समय लगेगा।
- सारी प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।
- अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले से ही श्याम पट्ट पर लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु

1



सटीक तर्क	1
संवाद का उच्चारण	1
हाव भाव	1
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे संवाद बोलने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- खुलकर संवाद बोलने की प्रेरणा देते हुए अन्य विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य : 4. सुभाष चन्द्र बोस पर सूचना एकत्र करना

उद्देश्य

- सुभाष चन्द्र बोस के जीवन से प्रेरणा लेना।
- देश भक्ति की भावना उत्पन्न करना।
- खोजपरक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
- लेखन एवं पठन कौशल तथा वाचन की क्षमता को परिष्कृत करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक सर्वप्रथम कक्षा में स्पष्ट कर देगा कि सभी को सुभाषचंद्र बोस के जीवन से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित कर कक्षा में सुनानी हैं। सूचनाएँ नेता जी की जीवनी, कार्य, देश से बाहर का उनका संघर्ष, कांग्रेस में कार्य इत्यादि कुछ भी हो सकती हैं।
- यह कार्य दो या तीन दिन पूर्व दिया जाए।
- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से दिया जाए।
- निर्धारित समय पर सभी विद्यार्थी एकत्रित सूचनाएँ कक्षा में 1-1 मिनट में सुनाएँगे।
- अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक योजना

विषय सामग्री / संकलित सूचनाएँ

2



प्रस्तुतीकरण	1
भाषायी दक्षता	1
आत्म विश्वास	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रति पुष्टि

- जिन विद्यार्थियों ने सुभाषचन्द्र बोस के जीवन के विषय में प्रयासपूर्वक सूचनाएँ एकत्रित की हैं, उनकी सराहना की जाए।
- जिनकी सूचनाएं अधूरी एवं नगण्य हैं उन्हें सूचना स्रोतों की जानकारी देकर सूचनाएं एकत्र करवाने की प्रेरणा दी जाए।
- पुस्तकालय से किताबें लेकर दी जा सकती हैं।

प्रदत्त कार्य - 5. 'चौराहों पर मूर्ति लगाना उचित है।' वाद विवाद

- विचार विश्लेषण की दक्षता विकसित करना।
- तार्किकता एवं चिंतन क्षमता का विकास करना।
- विद्यार्थियों के श्रवण-वाचन कौशलों का विकास करना।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य कराया जाएगा।
- सर्वप्रथम शिक्षक विषय की पूरी जानकारी देंगे।
- कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- दो समूह पक्ष में विषय तैयार करेंगे तथा दो समूह विपक्ष में।
- विषय पर चर्चा करके तैयार करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- अध्यापक इस दौरान प्रत्येक समूह में घूम-घूम कर छात्रों का मागदर्शन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- समूह चर्चा एवं विषय तैयार करने के उपरान्त प्रत्येक समूह का एक एक प्रतिनिधि छात्र विषय प्रस्तुत करेगा। (विद्यार्थी पहले ही तयकर लेंगे कि किसे बोलना है, किसे लिखना है।)
- प्रस्तुतीकरण के लिए 3-3 मिनट का समय प्रत्येक समूह को दिया जाएगा।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

1. भाषायी दक्षता (उच्चारण)	1
2. प्रस्तुतीकरण एवं विषय वस्तु	2
3. समग्र प्रभाव	1
4. सटीक तर्क एवं उदाहरण	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- जिस समूह ने विषय की पूरी जानकारी तर्क सहित तथा उदाहरण सहित दी है उनको प्रोत्साहित किया जाए।
- शिक्षक सभी प्रस्तुतीकरण समाप्त होने के उपरांत विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी करें।
- बोलने में संकोची छात्रों को आगे आने के लिए प्रेरित किया जाए।



बाल गोबिन भगत

रामवृक्ष बेनीपुरी

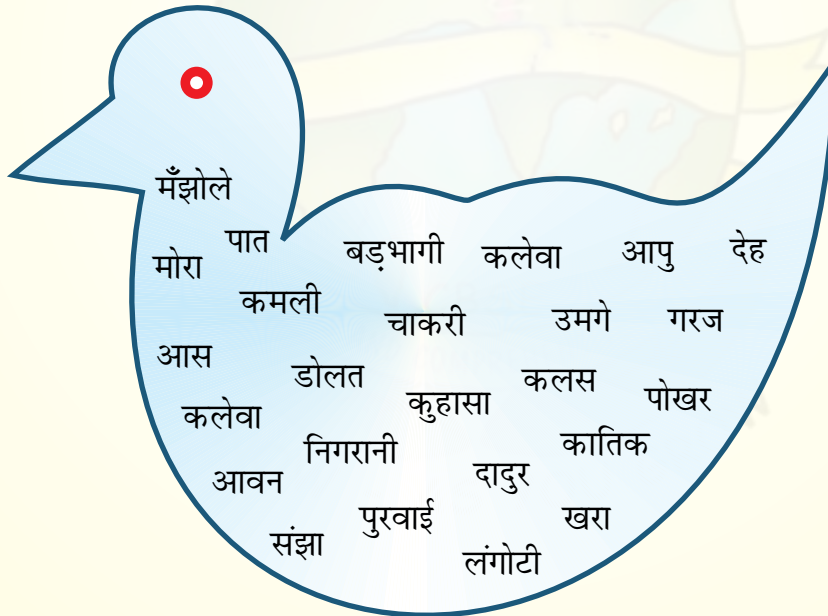
प्रदत्त कार्य 1. ग्राम्य जीवन पर लेखन

उद्देश्य

- ग्रामीण परिवेश की जानकारी
- उनके जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण।
- ग्राम्य जीवन के विकास के लिए सुझाव।
- ग्रामीण संस्कृति के प्रति चेतना

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक श्यामपट्ट पर गांव से सम्बन्धित बीस शब्द लिखेंगे और साथ-साथ उनका उच्चारण करेंगे।



- अध्यापक द्वारा बच्चों को निर्देश दिया जायेगा कि वे उन शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उत्तर पुस्तिका में लिखें।
- तत्पश्चात् उन्हें व्यक्तिगत स्वतन्त्रता दी जायेगी कि वे दिए गए शब्दों द्वारा कविता, कहानी, अनुच्छेद अथवा वाक्य निर्माण करें जिसमें ग्रामीण जीवन की झलक मिलती हो।
- इस कार्य के लिए 25 मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य संपन्न होने के उपरांत शिक्षक विद्यार्थियों के लेखन कार्य को एकत्रित कर सुविधानुसार मूल्यांकन कर लेंगे।



Unit 2

- ❖ मूल्यांकन आधार प्रारम्भ में ही श्याम पट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

शाब्दिक अर्थ की समझ	2
ग्रामीण जीवन की झांकी का वर्णन	2
भाषायी दक्षता।	

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक अन्य उपयुक्त बिन्दुओं के आधार पर स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि -

- ❖ अच्छे कार्य की प्रशंसा की जाए और उसे विद्यार्थी द्वारा कक्षा में पढ़कर सुनाया जाए।
- ❖ जो छात्र लिखने में असफल रहें उनका मार्गदर्शन किया जाए और कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- ❖ उनसे लेखन कार्य का अभ्यास करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य 2. कबीरदास से एक मुलाकात - भेंटवार्ता

उद्देश्य

1. भेंटवार्ता विधा से परिचित कराना।
2. कबीर के विषय में और अधिक जानकारी देना।
3. कल्पनाशीलता का विकास करना।
4. रचनात्मकता का विकास करना।
5. वाचन, पठन, लेखन व श्रवण कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम विषय का स्पष्टीकरण करेगा कि किस प्रकार अपनी कल्पना के आधार पर कबीरदास जी से भेंटवार्ता लिखेंगे। स्वयं भेंटवार्ता को उदाहरण देकर स्पष्ट कर दें।
- ❖ यह व्यक्तिगत कार्य होगा।
- ❖ अध्यापक कबीरदास के पद स्वयं भी कक्षा में सुनाएँ तथा विद्यार्थियों को भी पढ़ने के लिए कहें तभी भेंटवार्ता अच्छी बनेगी। भेंटवार्ता या सक्षात्कार कैसे लेना है, यह भी विद्यार्थियों को समझाया जाए।
- ❖ इसके लिए एक या दो दिन का समय लिखने के लिए दिया जाए।
- ❖ निर्धारित कालांश में सभी विद्यार्थी 2-3 मिनट में अपनी-अपनी काल्पनिक भेंटवार्ता सुनाएँगे।
- ❖ यह प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।



- ❖ अध्यापक साथ-साथ मूल्यांकन अंक लगा सकता है।
- ❖ मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
भेंटवार्ता की गुणवत्ता	2
कल्पनाशीलता	1
रोचकता	1
उच्चारण	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ रोचक एवं प्रभावशाली लेखन की सराहना की जाए।
- ❖ साधारण रचना करने वाले विद्यार्थी को अच्छा लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अध्यापक स्वयं उदाहरण देकर उनका मार्ग दर्शन करें।

प्रदत्त कार्य 3. लोकगीत संकलन एवं गायन

उद्देश्य

- ❖ गायन कौशल का विकास करना
- ❖ लोकगीतों का महत्व समझाना
- ❖ भारतीय संस्कृति से परिचित कराना
- ❖ खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।

प्रक्रिया

- ❖ यह सामूहिक कार्य है।
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम लोकगीतों का महत्व समझाते हुए कोई लोकगीत भी उदाहरणार्थ बता देंगे। (गाकर सुनाया जा सकता है)
- ❖ पांच-पांच विद्यार्थियों के समूह बनाए जायेंगे तथा संभव हो तो विभाजन 'क्षेत्र विशेष' के रूप में भी हो सकता है।
- ❖ यह कार्य प्रक्रिया से एक सप्ताह पूर्व दिया जाएगा ताकि छात्र लोकगीतों का संकलन कर सकें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।



Unit 2

- ❖ इस बीच शिक्षक छात्रों से कार्य के विषय में जानकारी लेते रहेंगे।
- ❖ गतिविधि के समय प्रत्येक समूह प्रस्तुतीकरण देगा एक या एक से अधिक छात्र मिलकर गीत प्रस्तुत कर सकते हैं। (समूह पहले से प्रत्येक सदस्य को कार्य आवंटित कर देगा।)
- ❖ इस कार्य में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

लोकगीत चयन	1
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, लय)	2
समग्र प्रभाव	2

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे लोकगीत चयन एवं गायन के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अच्छे गीत गायन को विद्यालय मंच पर भी प्रस्तुत कराया जा सकता है।
- ❖ सामान्य प्रस्तुति देने वालों को संगीत शिक्षक से सहायता दिलवाई जा सकती है।

प्रदत्त कार्य - 4. 'मेरी दिनचर्या' अनुच्छेद लेखन एवं पठन।

उद्देश्य

- ❖ लेखन कौशल का विकास करना।
- ❖ रचनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ आत्माभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना।
- ❖ पठन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से होगा।
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देते हुए छात्रों को पूरी दिनचर्या लिखने की प्रेरणा देंगे। (अधिकतम 10 वाक्य हो सकते हैं)
- ❖ प्रत्येक छात्र को एक पूरे दिन की दिनचर्या लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूम कर सभी छात्रों को प्रेरित करेंगे।
- ❖ लिखने के पश्चात् सभी छात्र क्रमांक के अनुसार एक-एक करके पढ़ेंगे।



- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्याम पट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
मौलिकता	1
विषयवस्तु पूर्णता	2
प्रस्तुतीकरण (भाषा, हाव-भाव, आत्म विश्वास)	2

प्रतिपुष्टि

- ❖ पूर्ण तथा सही जानकारी देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ जो छात्र स्वयं के विषय में लेखन करते समय झिझकते हैं उन्हें डायरी का महत्व समझाते हुए लिखने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य -5. विधवा जीवन एक अभिशाप - वार्ता

- नारी जीवन की समस्याओं के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना।
- नारी जीवन के प्रति संवेदना उत्पन्न करना।
- करुणा जैसे कोमल भाव उत्पन्न करना।
- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- लेखन और वाचन कौशल का विकास करना।
- वार्ता विधा से परिचित कराना।

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक क्रिया
- ❖ अध्यापक पूरी कक्षा को पांच-पांच विद्यार्थियों के समूह में विभक्त कर देंगे।
- ❖ प्रक्रिया कराने के लिए अध्यापक स्वयं कक्षा के सामने विषय का स्पष्टीकरण करेगा।
- ❖ सभी समूहों को सोचने के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ 15-20 मिनट के समय में सभी समूहों का एक-एक प्रतिनिधि वार्ता प्रस्तुत करेगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार अध्यापक पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	2
सटीक तर्क एवं उदाहरण	2
प्रस्तुति	1



टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- उदाहरण सहित प्रभावशाली प्रस्तुति देने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- साधारण या सामान्य वार्ता वाले विद्यार्थियों को अच्छे व प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया जाए।
- अध्यापक उदाहरण देकर स्वयं या अच्छी वार्ता प्रस्तुत करने वाले छात्रों की सहायता से उचित मार्गदर्शन दें।



लखनवी अंदाज

यशपाल

प्रदत्त कार्य : 1. उर्दू शब्दों का संग्रह

उद्देश्य

- उर्दू शब्दों का ज्ञान और उनसे अवगत कराना।
- शब्द भंडार में वृद्धि करना।
- भाषा की स्वाभाविकता की जानकारी देना।
- भाषा के मूल स्वरूप को समझाना।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत कार्य।
- अध्यापक द्वारा कुछ उर्दू के शब्द श्यामपट् पर लिखे जायेंगे।
- तत्पश्चात् विद्यार्थियों को निर्देश दिया जायेगा कि वे दस से पन्द्रह उर्दू के शब्द खोजे और उत्तर पुस्तिका में लिखें।
- उन शब्दों के समक्ष वे उनका हिन्दी रूपान्तर लिखें और उनका अर्थ भी लिखें।



- विद्यार्थी उपर्युक्त शब्दों में से 10-15 शब्दों के रूपान्तर व अर्थ लिखेगा जिसमें 15 मिनट लग सकते हैं।
- अध्यापक प्रत्येक शब्द का हिन्दी रूपान्तर व अर्थ कक्षा में बताएगा तथा सभी विद्यार्थी तदनुसार अपने-अपने कार्य का मूल्यांकन करेंगे।



Unit 3

रचनात्मक मूल्यांकन - लखनवी अंदाज

- ❖ अध्यापक उनके द्वारा बताए गए अंकों का रिकार्ड रखेगा अथवा उनसे पेपर लेकर उनकी सच्चाई की सत्यता भी जाँची जा सकती है।
- ❖ यह प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन बिन्दु

अंक विभाजन

प्रत्येक तीन सही शब्दों के लिए 1 अंक

❖ 15 सही शब्दों के लिए	5
❖ 12	4
❖ 9	3
❖ 6	2
❖ 3	1

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सभी सही शब्द लिखने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ बहुत कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को काम में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अध्यापक विद्यार्थियों को अन्य भाषाओं के शब्दों की जानकारी रखने के लिए प्रेरित करें।

प्रदत्त कार्य - 2. यात्रा के साधन पर कार्य प्रपत्र।

उद्देश्य

- ❖ यात्रा मनोरंजन का साधन इस मनोवृत्ति का विकास।
- ❖ यात्रा की उपयोगिता एवं मानव जीवन पर उसका प्रभाव।
- ❖ आधुनिक युग में पर्यटन के प्रति सजगता।
- ❖ पर्यटन स्थलों की जानकारी।
- ❖ लेखन कौशल में सक्षमता लाना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।



- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक इस कार्य प्रपत्रकी प्रति सब छात्रों को बांट देगा अथवा श्याम पट्ट पर लिख देगा और विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में लिख लेंगे।

कार्य प्रपत्र

1. यात्रा का साधन
2. गंतव्य स्थान का निर्णय
3. टिकट का आरक्षण
4. यात्रा से पहले की तैयारी
5. आवास का प्रबन्ध
6. स्थानीय पर्यटन स्थल
7. घूमने का साधन
8. खान पान की व्यवस्था
9. स्थलों की विशिष्ट बातें
10. यात्रा के दौरान घटित कुछ खट्टी मीठी यादें

- ❖ इस दौरान अध्यापक कक्षा में घूम-घूम कर निरीक्षण करेंगे।
- ❖ इस कार्य के लिए एक कालांश का समय पर्याप्त होगा।
- ❖ अध्यापक सबके कार्य प्रपत्र एकत्रित करके सुविधानुसार जाँचेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

10-9	सही होने पर	5
8-7	सही होने पर	4
6-5	सही होने पर	3
4-3	सही होने पर	2
2-1	सही होने पर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ ठीक लिखने वाले छात्रों को प्रोत्साहन देना।
- ❖ जो विद्यार्थी कार्य पूर्ण नहीं कर पाएँ उन विद्यार्थियों का मार्ग-दर्शन कर अन्य छात्रों की सहायता से कार्य पूर्ण कराएँ।
- ❖ अध्यापक विद्यार्थियों को यात्रा के समय आने वाली समस्याओं के निदान के प्रयास के लिए प्रेरित करें।



प्रदत्त वाक्य : 3. गर्मियों के मौसमी फल, फूल, सब्जियाँ, फसलें एवं उनकी उपादेयता - समूह चर्चा एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य

- ❖ ग्रीष्म ऋतु के खानपान की ओर सचेत करना
- ❖ मौसमी फसलों की जानकारी देना
- ❖ फल, सब्जी एवं फसलों का महत्व समझाना
- ❖ सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना
- ❖ विभिन्न प्रदेशों की जलवायु से परिचित कराना।

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य कराया जाएगा।
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक विषय पर चर्चा करेगा।
- ❖ कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह को एक-एक विषय (फल, सब्जियाँ, फूल, फसलें) समूह चर्चा एवं लेखन के लिए दिया जाएगा।
- ❖ इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ समूह चर्चा के पश्चात् प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक समूह का एक प्रतिनिधि प्रस्तुत करेगा।
- ❖ इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार

अंक विभाजन

विषय वस्तु की पूर्ण जानकारी

3

उनकी उपादेयता का ज्ञान

2

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ मौसम के फल, सब्जियों, फसलों आदि की पूर्ण जानकारी देने वाले छात्रों को अवश्य प्रोत्साहित करें।
- ❖ यदि विद्यार्थियों को इन उत्पादनों के महत्व की पूर्ण जानकारी नहीं है तो शिक्षक चर्चा करके इसकी जानकारी उन्हें दे दें।



प्रदत्त कार्य : 4. अपने किसी परिचित सनकी / वहमी व्यक्ति का शब्द चित्र।

उद्देश्य

- सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।
- व्यक्ति विशेष की जानकारी प्राप्त करना।
- बारीकी से निरीक्षण करने की प्रवृत्ति विकसित करना।
- उदाहरण देकर बात कहने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- शब्द चित्र विधा से परिचित कराना।

प्रक्रिया

- यह व्यक्तिगत कार्य है।
- सर्वप्रथम अध्यापक विषय को समझाते हुए कुछ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे जैसे - कुछ व्यक्तियों को बार-बार हाथ धोने की सनक, सफाई होते हुए भी बार-बार सफाई करने का उपक्रम करना, अपने आपसे बड़-बड़ करते रहना, दूसरों के घर कुछ न खाने का वहम करना इत्यादि।
- प्रत्येक छात्र को सोचकर लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा। छात्र पाँच से दस वाक्यों में शब्द चित्र खींच सकते हैं।
- मूल्यांकन के आधार अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- सोचकर लिखने के पश्चात् सभी छात्र अपने-अपने अनुभवों का प्रस्तुतीकरण देंगे प्रत्येक छात्र को 1/2 से 1 मिनट तक का समय लगेगा।

मूल्यांकन आधार बिन्दू	अंक विभाजन
सटीक उदाहरण सहित विषय प्रतिपादन	2
प्रभावशाली शब्द चित्र	2
भाषायी दक्षता (उच्चारण, शब्द)	1

टिप्पणी :

- मूल्यांकन के लिए शिक्षक अन्य बिन्दुओं को भी आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए।
- जो विद्यार्थी अच्छी प्रकार से कार्य नहीं कर पा रहे उनकी सहायता की जाए।
- किसी भी प्रकार की सनक अथवा वहम से दूसरों को असुविधा हो सकती है उसकी चर्चा अध्यापक विद्यार्थियों के साथ अवश्य करें।



प्रदत्त कार्य - 5. बुरी से बुरी बात को भी कैसे सुंदर ढंग से कहा जा सकता है - प्रबन्धन।

उद्देश्य

- ❖ बोलने की कला को विकसित करना।
- ❖ सकारात्मक सोच उत्पन्न करना।
- ❖ एक शिष्ट एवं प्रिय लहजे का विकास करना।
- ❖ सुसंस्कृत एवं मृदुभाषी बनाना।
- ❖ भाषा पर अधिकार कराना।
- ❖ धैर्य एवं समस्या सुलझाने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ वाचन एवं श्रवण दक्षता का प्रयोग।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक विषय को अच्छी तरह समझाएगा तथा उदाहरण देकर विषय का स्पष्टीकरण कराएगा।
 - * जैसे अंधे को अंधा न कहकर 'सूरदास' कहना।
 - * किसी श्यामवर्णी बच्चे को देखकर कहना कि तुम भगवान कृष्ण का साक्षात् रूप हो।
 - * किसी स्थूलकाय महिला को कहना कि वह गजगामिनी है।
 - * किसी विद्यार्थी की परीक्षा में असफल होने पर कहना कि इस कक्षा को अभी आपकी एक वर्ष और आवश्यकता है।
 - * जैसे दुर्घटना ग्रस्त हो जाने पैर की हड्डी टूटने पर डॉक्टर कहे - ईश्वर का शुक्रिया अदा करिए कि आप बिल्कुल ठीक हो, बस आपके पांव की हड्डी सारा धक्का सहन नहीं कर पाई, उसके टुकड़े ज़रूर हो गए।
 - * किसी के बहुत बोलने पर कहना - आप बहुत अच्छा बोलते हैं पर मौन का भी आनंद लीजिए।
 - * किसी प्रिय और कीमती वस्तु के खोने पर कहना कि प्रिय चीजों का दूर जाना उनसे हमारे प्यार को दर्शाता है।
- ❖ पूरी गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।
- ❖ सभी विद्यार्थी इसी तरह के दो दो वाक्य या उदाहरण लिखेंगे।
- ❖ यह व्यक्तिगत स्तर पर कराया जाएगा।
- ❖ उन्हें सोचने व लिखने के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ सभी विद्यार्थी अपना अपना कार्य कक्षा में सुनाएँगे।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।
- ❖ पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।



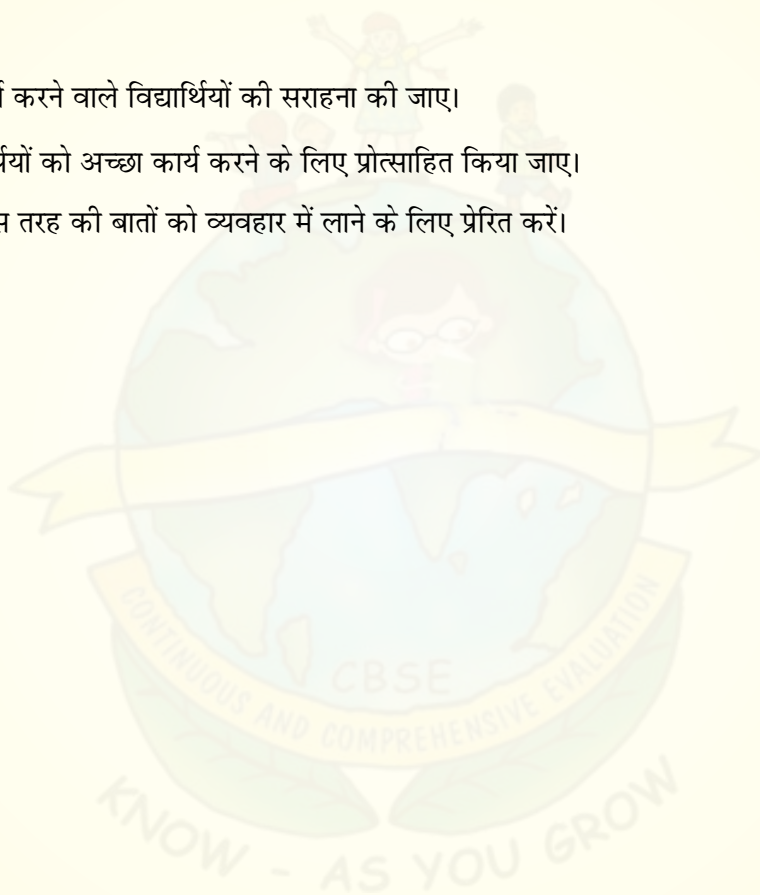
मूल्यांकन का आधार	अंक विभाजन
प्रभावोत्पादक शब्द	2
भाषा का कसाव	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन बिन्दु स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ मौलिक कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ अन्य विद्यार्थियों को अच्छा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अध्यापक इस तरह की बातों को व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित करें।





मानवीय करुणा की दिव्य चमक ✨

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

प्रदत्त कार्य : 1. साइकिल की सवारी - संस्मरण

उद्देश्य :

- ❖ साइकिल के प्रति सहज स्वाभाविक आकर्षण को पुर्नजीवित करना।
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास करना।
- ❖ संस्मरण विधा से परिचित कराना।
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल को समृद्ध करना।
- ❖ आनंदानुभूति कराना।
- ❖ हास्य व्यंग्य में प्रवीणता दिलाना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में प्रश्न पूछकर साइकिल की सवारी का प्रसंग उपस्थित करेगा।
- ❖ यह प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर कराई जाएगी।
- ❖ विद्यार्थी इसे हास्य-व्यंग्य, कटाक्ष, मधुर स्मृति, डर-भय किसी भी रूप में लिख सकता है।
- ❖ इसे सोचने लिखने व सुनाने के लिए 20-25 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ यह प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।
- ❖ मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

वर्णित विषय	2
भाषायी दक्षता	1
प्रस्तुति (वाचन)	2

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक अपनी बुद्धि से भी मूल्यांकन आधार बना सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन - मानवीय करुणा की दिव्य चमक



Unit 4

प्रतिपुष्टि

- सराहनीय संस्मरण को कक्षा के प्रदर्शन पट पर लगवा दिया जाए जिससे अन्य विद्यार्थी भी उसका आनंद ले सकें।
- अति सामान्य लिखने वालों को बेहतर लेखन के लिए प्रेरित किया जाए।
- साईकिल की सवारी का स्वास्थ्य पर प्रभाव विषय पर संक्षिप्त चर्चा की जाए।

प्रदत्त कार्य 2. वतन की याद में (एक पत्र)

उद्देश्य

- जन्मभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।
- देश भक्त होने की प्रेरणा देना।
- देश के लिए जीवन दान की भावना उत्पन्न करना।
- हृदय में राष्ट्र के प्रति संवेदना उत्पन्न करना।
- पत्र लेखन की विधा सिखाना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम छात्रों को निर्देश दिया जायेगा कि वे कल्पना करें कि वे विदेश में हैं, उन्हें अपने वतन की बहुत याद आ रही है।
- छात्र अपने मित्र अथवा भाई को पत्र लिखें।
- उस पत्र में अपने देश के प्रति प्रेम भाव उत्पन्न करते हुए अपने विचार व्यक्त करें।
- शीघ्र न आने की असमर्थता बताते हुए देश की यादों का वर्णन करें।
- इस प्रक्रिया के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
- मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
- लेखन के पश्चात् शिक्षक सभी छात्रों से उत्तर पुस्तिका एकत्र करके सुविधानुसार मूल्यांकन कर लेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
लेखन विधा	2
प्रस्तुतीकरण	1





टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य आधार बिन्दु बनाकर स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वोत्तम पत्र को कक्षा में पढ़कर सुनाया जाए।
- ❖ कार्य करने में असमर्थ विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन किया जाए।
- ❖ जिन विद्यार्थियों ने अच्छा लिखा है उनकी सराहना की जाए।
- ❖ व्यावहारिक जीवन में पत्र लिखने की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य 3. फादर कामिल बुल्के के जीवन पर 'कार्य प्रपत्र'

उद्देश्य

- ❖ सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना
- ❖ स्मरण शक्ति को बढ़ावा देना
- ❖ मानवीय संवेदनाएँ उत्पन्न करना

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विषय की जानकारी देंगे। यह कार्य पाठ को पढ़ने के उपरांत दिया जाएगा।

कार्य प्रपत्र

1. फादर बुल्के कौन तथा कहाँ के रहने वाले थे?

.....

2. वे भारत किस प्रकार आए?

.....

3. भारत में उनके शिक्षा स्थल

.....

4. फादर का व्यक्तित्व

.....

Unit 4

रचनात्मक मूल्यांकन - मानवीय करुणा की दिव्य चमक

5. लोगों के लिए उनका व्यवहार
.....
6. लेखक के साथ फादर का व्यवहार
.....
7. हिंदी के लिए फादर का योगदान
.....
8. फादर के शोध प्रबंध का नाम
.....
9. फादर के रचनात्मक कार्य
.....
10. फादर की मृत्यु का कारण
.....

- ❖ उपर्युक्त कार्य प्रपत्र को शिक्षक श्यापट्ट पर लिख देंगे तथा छात्र ध्यानपूर्वक अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे। (यह कार्य छाया प्रतिलिपि के माध्यम से भी किया जा सकता है।)
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15 से 20 मिनट दिए जाएंगे।
- ❖ प्रपत्र भरने के बाद छात्रों से प्रपत्र एकत्रित कर लिए जाएंगे।
- ❖ मूल्यांकन शिक्षक सुविधानुसार कर सकते हैं अथवा कक्षा में छात्रों की सहायता से कराया जा सकता (छात्र एक दूसरे का प्रपत्र मूल्यांकित कर सकते हैं)
- ❖ मूल्यांकन छात्रों से कराया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9 से 10 प्रविष्टियाँ सही होने पर	5
7 से 8 प्रविष्टियाँ सही होने पर	4
5 से 6 प्रविष्टियाँ सही होने पर	3
3 से 4 प्रविष्टियाँ सही होने पर	2
1 से 2 प्रविष्टियाँ सही होने पर	1

टिप्पणी

- ❖ सभी प्रविष्टियाँ सही भरने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ जो छात्र ठीक से कार्य नहीं कर पाए उनका कार्य अन्य छात्रों की सहायता से पूर्ण कराया जाएगा।





प्रदत्त कार्य 4. मुहावरे दार कहानी (शरीर के अंगों पर आधारित) मुहावरे

- ❖ कथा लेखन के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- ❖ भाषा में मुहावरों का प्रयोग सिखाना।
- ❖ विषय-वस्तु से परिचित कराना।
- ❖ मानवीय मूल्यों को समझाना।
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक शरीर के अंगों से सम्बन्धित बीस मुहावरे श्यामपट्ट पर लिखेगा।
- ❖ तत्पश्चात् विद्यार्थियों को कहा जायेगा कि वे लिखित मुहावरों को अपनी उत्तर पुस्तिकाओं में लिखें।
- ❖ कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- ❖ उपयुक्त भाषा द्वारा मुहावरों का प्रयोग करते हुए कहानी का निर्माण करें
- ❖ अन्त में उस कथा को नैतिक मूल्यों से जोड़ें।

आँख की किरकरी, आंख दिखाना, नाक में दम करना, कान पर जूँ न रेंगना, कान भरना, नाक काटना, नाक भौं सिकोड़ना, पैरों तले जमीन खिसकना, हाथ मलना, हाथ मारना, मुँह की खाना, मुँह में पानी भर आना, कंधे उचकाना, हथेली पर सरसों जमाना, अंगूठा दिखाना, उंगली टेढ़ी करना, सिर पर बिठाना, दाँत खट्टे करना, दाँतों तले उंगली दबाना, कान में रुई देना।

- ❖ कहानी निर्माण के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा उसके पश्चात् प्रत्येक समूह का प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा।
- ❖ मूल्यांकन बिन्दु अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
मुहावरों का सटीक प्रयोग	2
नैतिक मूल्य	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ उत्तम कार्य की प्रशंसा की जायेगी।
- ❖ कमजोर विद्यार्थियों को मुहावरों के सही प्रयोग की जानकारी दी जाए।

प्रदत्त कार्य 5. पाठ से चुने हुए विशेष्यों के विशेषण बनाना

उद्देश्य

- भाषा के स्वरूप को समझाना।
- व्याकरण की समझ उत्पन्न करना
- शुद्ध भाषा प्रयोग पर बल देना।
- व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि करना।
- निरीक्षण शक्ति का विकास करना।
- पठन, लेखन एवं वाचन क्षमताओं को समृद्ध करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक पाठ से निम्नलिखित विशेष्यों के लिए विशेषण लगाने के लिए देगा। विशेषण भी पाठ से ही छाँटना होगा।
- यह प्रक्रिया व्यक्तिगत होगी।



- किन्हीं 25 विशेषणों को छांट कर लिखेंगे।
- यह कार्य एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

21-25	5
15-20	4
11-14	3



6-10	2
1-5	1

प्रतिपुष्टि

- शत प्रतिशत सही करने वालों की सराहना की जाए।
- सही न करने वालों को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- अन्य छात्रों की सहायता से कमजोर छात्रों का कार्य पूर्ण कराया जा सकता है।



रचनात्मक मूल्यांकन - मानवीय करुणा की दिव्य चमक





एक कहानी यह भी

मन्तू भंडारी

प्रदत्त कार्य - 1. 'तारीफ सुनने की चाह' एक-दूसरे की तारीफ करते हुए संवाद लेखन एवं वाचन।

उद्देश्य

- सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर उन्मुख करना
- आत्माभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- आनंद अनुभव करना
- वाचन कौशल का विकास करना
- मौलिक अभिव्यक्ति का विकास करना।
- तनाव मुक्ति के लिए प्रेरित करना
- व्यवहार कुशलता का ज्ञान विकसित करना

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत एवं समूहगत दोनों ही रूप में होगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे तथा एक दूसरे विद्यार्थी की सकारात्मक तारीफ करने के लिए प्रेरित करेंगे।
- चार-चार विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँगे।
- प्रत्येक समूह के प्रत्येक विद्यार्थी एक दूसरे की तारीफ में एक दो वाक्य संवाद रूप में सोचकर लिखेंगे (व्यक्तिगत रूप से)
- इस गतिविधि के लिए उन्हें अधिकतम पांच मिनट का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- संवाद लेखन के उपरान्त सभी समूह संवाद प्रस्तुतीकरण देंगे।
- इस पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

अच्छे एवं सार्थक संवाद	2
प्रस्तुतीकरण (हावभाव, भाषा)	2
समग्रप्रभाव	1



टिप्पणी

- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे सार्थक संवाद प्रस्तुतीकरण के लिए सराहना अवश्य की जाए।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को यह समझाए कि जिस प्रकार वह अपनी तारीफ सुनकर खुश होते हैं वैसे ही दूसरे भी। अतः उचित समय एवं सार्थक तारीफ करना अच्छी बात है। इससे मनुष्य की नकारात्मक सोच समाप्त होती है और वह तनावमुक्त होता है। साथ ही यह भी स्पष्ट करे कि किसी की झूठी तारीफ न करें इसका गलत असर भी पड़ सकता है।

प्रदत्त कार्य - 2. किसी की शिकायत पर जब पिताजी ने मुझे डांटा - अनुभव सुनाना।

उद्देश्य

- ❖ वाचन कौशल का विकास करना
- ❖ श्रवण कौशल का विकास करना
- ❖ मौलिकता की ओर उन्मुख कराना
- ❖ आत्माभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ावा देना
- ❖ स्मरण शक्ति का विकास कराना

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम विषय से परिचित कराएंगे। किसी पड़ोसी, मित्र या अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा आपकी शिकायत करने पर जब आपके पिताजी ने अथवा माता जी ने आपको डांटा हो या डांट के डर से जो अनुभव आपने किया हो वह सुनाने की प्रेरणा दें तथा इसी प्रकार का कोई अनुभव कक्षा में उदाहरणार्थ सुना दें ताकि विद्यार्थी सहजता से अनुभव सुना सकें।
- ❖ विद्यार्थियों को सोचने के लिए 2 मिनट का समय दिया जाए। उसके बाद एक एक विद्यार्थी अपने अनुभव सुनाएगा। प्रत्येक विद्यार्थी को लगभग 1 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

निस्संकोच / बेझिझक प्रस्तुतीकरण

2

हावभाव / रसानुभूति

2

समग्र प्रभाव

1





टिप्पणी

- अध्यापक अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- सत्य एवं बेझिझक अनुभव सुनाने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- जिन विद्यार्थियों को इस प्रकार का अनुभव न हो तो उन्हें परिवार के किसी अन्य सदस्य या मित्र आदि के अनुभव सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

प्रदत्त कार्य - 3. रंग रूप व्यक्तित्व विकास में बाधक - वाद-विवाद

उद्देश्य

- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास करना
- तार्किकता का विकास करना
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- वाचन कौशल का विकास करना
- श्रवण कौशल का विकास करना
- विचार विश्लेषण क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विषय की जानकारी देंगे।
- कक्षा को दो समूहों में विभाजित किया जाएगा।
- एक समूह पक्ष में चर्चा करके सबके विचार लिखेगा तथा दूसरा समूह विपक्ष में।
- साथ ही दोनों समूह अपने विपक्षी समूह से प्रश्न पूछने के लिए अधिकतम पांच प्रश्न भी तैयार करेंगे (प्रश्न संख्या कम भी हो सकती है)
- इस कार्य के लिए 10 से 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- समूह चर्चा के समय अध्यापक कक्षा में घूमकर यह देखेंगे कि सभी विद्यार्थी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
- मूल्यांकन के आधार अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- समूह चर्चा के बाद प्रस्तुतीकरण के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा जो भी समूह प्रस्तुतीकरण देगा उसका विपक्षी समूह विषय पर प्रश्न कर सकता है तथा उन प्रश्नों के उत्तर समूह के अन्य छात्र (जिन्होंने प्रस्तुतीकरण न दिया हो) देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय से संबद्धता	2
तार्किकता	2
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, भाषा)	1

टिप्पणी

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को भी मूल्यांकन के आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे विचार प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- शिक्षक सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागी होने के अवसर प्रदान करे (जैसे कुछ छात्र प्रश्न करें अन्य उत्तर दें)
- शिक्षक विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी अवश्य करें।

प्रदत्त कार्य - 4. वन संरक्षण, विभिन्न व्यसनों (तम्बाकू, सिगरेट इत्यादि) का निषेध, पॉलीथीन निषेध, साक्षरता अभियान विषयों पर रैली के लिए नारे तैयार करना।

उद्देश्य

- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना
- वाचन कौशल का विकास करना
- समाज सेवा के प्रति उन्मुख करना
- जागरुकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
- रैलियों के महत्व को समझाना

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विभिन्न अवसरों पर निकाली जाने वाली रैलियों के विषय में जानकारी देंगे तथा उनके महत्व पर चर्चा करेंगे।
- कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा। प्रत्येक समूह को उपर्युक्त एक एक विषय पर नारे लिखने के लिए दिए जाएंगे।
- नारे लिखने के लिए चार्ट पेपर का इस्तेमाल किया जा सकता है।
- इस कार्य के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।



- ❖ इस दौरान अध्यापक प्रत्येक समूह में घूम-घूमकर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ लेखन कार्य पूर्ण होने के पश्चात् प्रस्तुतीकरण के लिए एक एक समूह कक्षा में सामने आकर रैली के रूप में खड़े होकर नारे बोलेंगे तथा दर्शाएंगे।
- ❖ इस गतिविधि के लिए प्रत्येक समूह को पाँच-पाँच मिनट का समय दिया जा सकता है।
- ❖ इस गतिविधि की सूचना शिक्षक एक दिन पूर्व ही दे देंगे ताकि छात्र संबंधित सामग्री चार्ट पेपर, स्केच पेन आदि ला सकें तथा मानसिक रूप से तैयारी कर सकें।
- ❖ प्रत्येक छात्र का प्रतिभागी होना आवश्यक है।
- ❖ मूल्यांकन के आधार अध्यापक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय से संबद्धता	2
लिखावट	1
प्रस्तुतीकरण (भाषा, जोश, हावभाव)	2

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी रचनाओं के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ अध्यापक चाहे तो यह रैलियां विद्यालय के मैदान में भी आयोजित कराई जा सकती हैं।
- ❖ सुंदर नारों को विद्यालय की दीवारों पर, प्रदर्शन पट्ट पर लगवाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य 5. मेरे बचपन का पसंदीदा खेल जिसे मैं आज भी खेलना चाहूँगा / चाहूँगी संस्मरण लेखन

उद्देश्य

- ❖ लेखन कौशल का विकास करना
- ❖ मौलिक चिंतन के लिए प्रेरित करना
- ❖ आत्माभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- ❖ सृजनात्मकता की क्षमता का विकास करना
- ❖ स्मरण शक्ति का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।



- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे। बचपन में सभी छोटे-छोटे खेल रुचिपूर्वक खेलते हैं कुछ खेल हमें हमेशा याद रहते हैं। बच्चों के खेल जैसे - डॉ. बनकर खेलना, घर-घर खेलना, अध्यापक बनकर खेलना, स्टापू खेलना, लट्टू चलाना, गिट्टे खेलना, रस्सी कदूना, आंख मिचौली इत्यादि। शिक्षक बचपन में खेले जाने वाले किसी खेल को स्मरण करके अनुभव के साथ खेल की प्रक्रिया लिखने को कहेंगे।
- ❖ लिखने के लिए छात्रों को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ संस्मरण लेखन के उपरांत अध्यापक छात्रों से सभी संस्मरण संग्रहीत कर लेंगे तथा सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

मौलिकता	2
भाषायी दक्षता	2
लिखावट	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक चाहें तो मूल्यांकन के आधार बिन्दु स्वयं सुनिश्चित कर सकते हैं।
- ❖ अच्छे एवं मौलिक लेखन के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ अच्छी रचनाओं को कक्षा में अवश्य पढ़ाया जाए।



स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रदत्त कार्य - 1. पौराणिक कथाओं का संकलन

उद्देश्य:

- ❖ विचार संकलन मनोप्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- ❖ तथ्यों की पुष्टि करने की जानकारी देना।
- ❖ पौराणिक कथाओं के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- ❖ नैट पर सूचना एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- ❖ लेखन कौशल एवं वाचन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को चार समूहों में विभक्त करेगा।
- ❖ उन्हें किसी एक वीरांगना एवं गरिमामयी नारी की कहानी सुनाई जायेगी।
- ❖ मूल्यांकन के आधार श्याम पट्ट पर लिखे जाएँगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को अलग-अलग प्रसंग दिए जाएँगे जैसे सत्यवान-सावित्री , सती अनुसूया, लक्ष्मीबाई इत्यादि।
- ❖ इस तरह चार कथाओं का संकलन करेंगे और सभी समूह कथा पढ़कर सुनाएँगे। इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
- ❖ एक समूह का मूल्यांकन दूसरे से, दूसरे का तीसरे से, तीसरे का चौथे से तथा चौथे का पहले से कराया जाए।
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

तथ्यों की जानकारी

2

प्रस्तुतीकरण

2

भाषा

1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतन्त्र रूप से भिन्न मूल्यांकन आधार बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

- सर्वोत्तम शैली में लिखित कथा को कक्षा में भित्ति पर प्रदर्शित किया जाए।
- जो छात्र इस गतिविधि में भाग नहीं ले पा रहे हैं उन्हें प्रोत्साहन देकर प्रेरित किया जाए।
- क्रियाशील विद्यार्थियों को शाबासी दी जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. आधुनिक शिक्षा प्रणाली (वाद विवाद)

उद्देश्य

- वाचन कौशल का विकास करना।
- आज की शिक्षा प्रणाली से परिचित कराना।
- इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का संक्षिप्त परिचय देना।
- सौ प्रतिशत स्त्री शिक्षा पर बल देना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।
- वाद विवाद के नियमों को समझाना।
- गतिविधियाँ शिक्षा को रोचक बनाती हैं, जानकारी देना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर को स्पष्ट करेगा।
- स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है ऐसा प्रचार गांव गांव में होना चाहिए यह छात्रों को बताया जायेगा।
- विद्यार्थियों को दो समूहों में विभक्त किया जायेगा व दो तीव्र बुद्धि छात्रों को निर्णायक बनाया जायेगा।
- समूह चर्चा एवं तैयारी के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- एक समूह पक्ष में और दूसरा विपक्ष में बोलेगा।
- एक समूह से कम से कम 3 छात्र अवश्य बोलेंगे।
- इस बीच अध्यापक कक्षा का निरीक्षण करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
प्रस्तुतीकरण	2
समग्र प्रभाव	1





टिप्पणी

- इसके अतिरिक्त शिक्षक अपनी इच्छानुसार भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे वक्ताओं को शाबासी देकर उनका उत्साह वर्धन किया जायेगा।
- जो छात्र उचित ढंग से नहीं बोल पाए उन्हें उत्साहित किया जायेगा।
- अच्छे वक्ताओं को विद्यालय के मंच पर बोलने को प्रेरित किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-3. स्वतन्त्रता पूर्व की प्रसिद्ध महिलाएँ (सूची बनाना) स्वतन्त्रता प्राप्ति में उनका योगदान।

उद्देश्य

- नैट पर जानकारी लेने की विधा समझाना।
- कुछ प्रसिद्ध महिलाओं की विशेषताओं का वर्णन करना।
- स्वतन्त्रता पूर्व देशवासियों के दृष्टिकोण को समझाना।
- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना।
- देश को स्वाधीन कराने में नारियों के योगदान की चर्चा करना।
- खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- उपरोक्त उद्देश्यों के माध्यम से शिक्षक प्रसिद्ध महिलाओं की चर्चा करेगा जिन्होंने देश के लिए अपना तन मन दिया।
- छात्रों को व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के लिए कहा जायेगा।
- वे कम से कम दस महिलाओं का उल्लेख करेंगे जिन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति में योगदान दिया।
- तत्पश्चात् विद्यार्थियों को अपनी विषय वस्तु पढ़ने के लिए कहा जायेगा।
- इस दौरान अध्यापक कक्षा में घूम घूम कर निरीक्षण करेंगे।
- मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायें।
- इस कार्य लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सूची संकलन	2
विषय की जानकारी	2
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- शिक्षक आवश्यकतानुसार स्वयं बनाए गए आधार बिन्दुओं द्वारा मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- सही सूची बनाने वाले छात्रों को उत्साहित किया जायेगा।
- जो छात्र असमर्थ रहें उन्हें अच्छा कार्य करने की प्रेरणा दी जायेगी।
- उन महिलाओं की सूची कक्षा प्रदर्शन पट्ट पर लगाई जाए।
- अध्यापक की सुविधा के लिए कुछ प्रसिद्ध महिलाओं की सूची दी जा रही है -
 - सरोजिनी नायडू -
 - सुभद्रा कुमारी चौहान
 - लक्ष्मी बाई
 - अरुणा आसिफ अली
 - दुर्गा भाभी

प्रदत्त कार्य - 4. भारत के प्रसिद्ध मन्दिर (प्रपत्र)

उद्देश्य

- भारत वर्ष की संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना।
- इनकी (मन्दिरों) की भौगोलिक स्थिति की जानकारी देना।
- विभिन्न धर्मों के प्रति आस्था उत्पन्न करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।
- इन दर्शनीय मन्दिर स्थलों पर भ्रमण करने की प्रवृत्ति को उत्साहित करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम उन्हें विभिन्न मन्दिरों की जानकारी दी जायेगी।
- सम्पूर्ण कक्षा को नीचे लिखे हुए प्रपत्र की प्रति दी जायेगी और छात्र उसे भरेंगे।





प्रपत्र

1. स्थिति / नाम
2. राज्य
3. नगर
4. किसने बनवाया
5. क्यों बनवाया
6. विशेषता / इष्टदेव
7. कलात्मक सौन्दर्य
8. प्राकृतिक सौन्दर्य
9. प्रसिद्ध मेले से सम्बन्ध
10. जुड़ी हुई कथा

❖ मूल्यांकन आधार बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जाएँ।

❖ इस क्रिया के लिए एक कालांश का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

एक से दस सही जोड़े होने पर	5
एक से आठ सही जोड़े होने पर	4
एक से छ सही जोड़े होने पर	3
एक से चार सही जोड़े होने पर	2
एक से दो सही जोड़े होने पर	1

टिप्पणी

❖ शिक्षक अपने स्वतन्त्र दृष्टिकोण द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सुन्दर ढंग से बने प्रपत्रों को कक्षा में लगाया जाए।
- ❖ विषय कुशल विद्यार्थियों को इस विषय से सम्बन्धित कोई अन्य कार्य भी दिया जा सकता है।
- ❖ कमजोर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया जाए ताकि वह बेहतर कार्य कर सकें।

प्रदत्त कार्य - 5. राजा राम मोहन राय (समाज सुधारक) एक परिचर्चा

उद्देश्य

- प्राचीन रूढ़ियों का खंडन कराने की सीख देना।
- वाचन कौशल का विकास करना।
- तर्क शक्ति को विकसित करना।
- अच्छा वक्ता तथा श्रोता बनने के लिए प्रेरित करना।
- अन्य समाज सुधारकों के विषय में जानकारी देना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम कक्षा को चार समूहों में बांट दिया जाएगा।
- चारों समूहों को क्रमानुसार चार तत्कालीन ज्वलंत समस्याएं दी जाएंगी जिनका प्रतिकार राजा राम मोहन राय ने किया था।
- अध्यापक निम्नलिखित चारों समस्याएं श्याम पट पर लिख देगा।
 - सती प्रथा
 - बाल विवाह
 - विधवा विवाह
 - नारी शिक्षा
- छात्र उपरोक्त समस्याएं अपनी उत्तर पुस्तिका पर लिखेंगे और परिचर्चा करने के पश्चात् अपने विचार केवल पचास शब्दों में व्यक्त करेंगे। (समूह का कोई एक छात्र)
- इस गतिविधि के दौरान अध्यापक प्रत्येक समूह का निरीक्षण करेंगे।
- पूर्ण प्रक्रिया के लिए एक कालांश का समय प्रदान किया जाएगा।
- मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट पर लिखे जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय की जानकारी	2
तार्किक कुशलता	2
सम्पूर्ण प्रभाव	1

टिप्पणी

- इसके अलावा शिक्षक यदि चाहे तो स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

- मौलिकता को ध्यान में रखते हुए जिन छात्रों ने अपने विचारों का प्रस्तुतीकरण किया है उन्हें शाबासी दी जाएगी।
- जो छात्र विषय को नहीं समझ पाए उन छात्रों को कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- अध्यापक उपर्युक्त विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी अवश्य करें।







नौबतखाने में इबादत

यतीन्द्र मिश्र

प्रदत्त कार्य - 1. ननिहाल के अनुभव सुनाना

उद्देश्य

- अपनी प्रिय जगह को सही पहचानना।
- रिश्तों के महत्व को समझना।
- नानी या दादी के प्रति आदर तथा सम्मान का भाव उत्पन्न करना।
- निरीक्षण एवं परीक्षण की प्रवृत्ति का विकास करना।
- बालक में 'प्रेम की शक्ति' के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- भावाभिव्यक्ति में पारंगत बनाना।
- श्रवण एवं वाचन शक्ति का विकास करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा में प्रक्रिया के विषय को स्पष्ट करेगा।
- विद्यार्थियों को सोचने एवं लिखने के लिए 15 मिनट का समय देगा।
- यह प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर होगी।
- प्रत्येक विद्यार्थी एक एक मिनट में अपने अनुभव सुनाएगा।
- अध्यापक मूल्यांकन आधार श्याम पट्ट पर पहले ही लिख देगा।
- कक्षा का वातावरण सहज एवं अनौपचारिक बनाया जाए।
- यह प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

अनुभव की विश्वसनीयता	2
प्रस्तुति या वाचन शैली	2
भाषा (उच्चारण शुद्धि)	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधार अपने हिसाब से तय कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ कक्षा में सहज और अपनत्व भरे वातावरण की सृष्टि होगी।
- ❖ सहज, स्वाभाविक व भावना प्रधान प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ भावाभिव्यक्ति में हिचकने वाले विद्यार्थियों की सहायता की जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. प्रसिद्ध वाद्य यंत्रों के प्रसिद्ध वादक कलाकारों पर प्रपत्र

उद्देश्य

- ❖ वाद्य संगीत के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- ❖ वाद्य संगीत कलाकारों के जीवन से अवगत करना।
- ❖ संगीत के प्रभाव को मन से ग्रहण करने की योग्यता उत्पन्न करना।
- ❖ श्रवण एवं वाचन क्षमताओं का परिष्कार करना।
- ❖ सामान्य ज्ञान को विकसित करना।
- ❖ ध्वनि विशेष के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा अथवा कक्षा की मेज पर तबले की तरह थाप देते हुए वाद्य संगीत के विषय में विद्यार्थियों को समझा सकता है।
- ❖ अगले चरण में अध्यापक व्यक्तिगत स्तर पर प्रक्रिया शुरू कराते हुए निम्नलिखित प्रपत्र वाद्य संगीत के कलाकारों के विषय में देगा।

कार्य प्रपत्र

1. वाद्य यंत्र
2. कलाकार का नाम
3. कलाकार का जन्म स्थान
4. कलाकार की संगीत की शिक्षा
5. उस वाद्य यंत्र के प्रति आकर्षण का कारण
6. संगीत के घराने से संबंधित
7. किस 'सम्मान' से सम्मानित
8. किन समारोहों में भाग लिया



9. क्या विदेशों में प्रदर्शन किया, कहाँ
10. क्या कोई पुस्तक कलाकार पर छपी है
- ❖ अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी को पहले ही बता देगा कि वह अलग अलग कलाकारों के विषय में जानकारी इकट्ठी करें।
- ❖ जानकारी के लिए इंटरनेट पर देखने का सुझाव भी दिया जा सकता है।
- ❖ कार्य प्रपत्र की जानकारी प्राप्त करने के लिए दो दिन का समय दिया जाए।
- ❖ यह कार्य प्रपत्र विद्यार्थी घर पर भरने के लिए ले जा सकते हैं।
- ❖ अध्यापक कार्य प्रपत्र की छाया प्रति विद्यार्थियों में बाँट दें।
- ❖ निर्धारित कालांश में सभी विद्यार्थियों को अपना कार्य प्रपत्र कक्षा में सुनाना होगा।
- ❖ मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्द

अंक विभाजन

9-10 सही जानकारी के लिए	5
7-8 सही जानकारी के लिए	4
5-6 सही जानकारी के लिए	3
3-4 सही जानकारी के लिए	2
1-2 सही जानकारी के लिए	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ सही और सटीक जानकारी लाने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ अपूर्ण जानकारी लाने वाले विद्यार्थियों की सहायता की जाए और प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 3. अपने प्रिय कलाकार से एक मुलाकात - भेंटवार्ता / साक्षात्कार

उद्देश्य

- ❖ साक्षात्कार विधा से परिचित कराना।
- ❖ कल्पनाशीलता की उर्वरता को विकसित करना।
- ❖ आत्माभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना।
- ❖ श्रवण, वाचन, लेखन एवं पठन कौशलों को समृद्ध करना।
- ❖ मौलिक चिंतन एवं अनुसंधानपरक दृष्टिकोण विकसित करना।



प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक विद्यार्थियों को साक्षात्कार या भेंटवार्ता विधा से परिचित कराएगा।
- दो दो विद्यार्थियों का समूह बनाकर एक को कलाकार व एक को भेंटकर्ता बनाएगा।
- इस बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए दो दिन का समय दिया जाएगा।
- सभी विद्यार्थी अपने अपने समूह में प्रस्तुति देंगे।
- एक समूह के दो दो मिनट का समय दिया जाएगा।
- प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न की जाएगी।
- मूल्यांकन आधार पहले ही श्याम पट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	2
कल्पनाशीलता	1
पूछने का ढंग	1
प्रश्न उत्तर की भाषा	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी तरह से कार्य सम्पन्न करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को अध्यापक स्वयं सहायता दे सकते हैं।
- अध्यापक विद्यार्थियों को लता मंगेशकर, अलका याज्ञनिक, अनु मलिक, अमजद अली खाँ, हरि प्रसाद चौरसिया, जाकिर हुसैन इत्यादि कलाकारों का अभिनय या इंटरव्यू लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य - 4. 'भारत रत्न' से विभूषित व्यक्तियों की सूची

उद्देश्य

- 'भारत रत्न' भारत सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार, उसका महत्व समझाना।
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
- 'भारत रत्न' पाने के योग्य बनने की लालसा उत्पन्न करना।
- ऐसे महान भारतीयों के बारे में जानना जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।



- ❖ जिज्ञासा व खोज की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल में प्रवीणता लाना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में भारत रत्न का महत्व बतलाते हुए कुछ भारत रत्न प्राप्त व्यक्तियों के नामों का उल्लेख करेगा।
- ❖ दो दिन पूर्व विद्यार्थियों को इंटरनेट के माध्यम से या पुस्तकालय से भारत रत्न प्राप्त व्यक्तियों के नाम जानने के लिए कहेगा।
- ❖ कक्षा में अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी से 10-10 ऐसे व्यक्तियों के नाम लिखने के लिए कहेगा जिन्हें भारत रत्न प्राप्त हो चुका है।

भारत रत्न से विभूषित भारतीयों की सूची (अध्यापक के लिए)

- ❖ सी. राज गोपालाचार्य
- ❖ सी वी रमन
- ❖ डा. राधाकृष्णन
- ❖ भगवान दास
- ❖ विश्वेश्वरैया
- ❖ गोविंद वल्लभ पंत
- ❖ पं जवाहर लाल नेहरू
- ❖ श्रीमती इंदिरा गांधी
- ❖ श्री विधान चंद्र रॉय
- ❖ पुरुषोत्तम दास टंडन
- ❖ लाल बहादुर शास्त्री
- ❖ डा. जाकिर हुसैन
- ❖ वि.वि. गिरि
- ❖ मदर टेरेसा
- ❖ विनोबा भावे
- ❖ पं. रवि शंकर
- ❖ बिस्मिल्ला खाँ



- ❖ अमर्त्य सेन
- ❖ भीम सेन जोशी
- ❖ सत्यजीत रॉय
- ❖ लता मंगेशकर
- ❖ सुब्बु लक्ष्मी
- ❖ चिदंबरम सुब्रह्मण्यम इत्यादि

कुल 40 भारतीयों व 1 विदेशी नेल्सन मंडेला को यह सम्मान अब तक प्राप्त हो चुका है।

- ❖ लिखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ फिर कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी से सुना जाए।
- ❖ कार्य व्यक्तिगत स्तर पर होगा।
- ❖ एक कालांश में प्रक्रिया सम्पन्न हो जाएगी।
- ❖ मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।
- ❖ किसे और क्यों दिया गया अवश्य लिखा जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
सही नाम	2
क्षेत्र	2
प्रभावशाली वाचन	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी सही उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य पूरा न करने वालों को दिशा निर्देश देकर जानकारी एकत्रित कराई जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. लोकगीतों का संकलन

उद्देश्य

- ❖ भारतीय संस्कृति का लोक रूप दिखाना।
- ❖ लोक संस्कृति के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- ❖ लोक जीवन की मिठास एवं सहजता से परिचित करना।
- ❖ समूह में मिलजुल कर कार्य करने की आदत का विकास करना।
- ❖ खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ श्रवण, वाचन एवं गायन शक्ति का विकास करना।



प्रक्रिया

- अध्यापक प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व स्वयं भी गुनगुनाकर किसी लोकगीत के द्वारा कक्षा में एक सकारात्मक वातावरण का सृजन कर सकता है।
- लोक गीतों के विषय में विद्यार्थियों को समझाएगा।
- विद्यार्थियों को समूहों में बांटकर अलग अलग क्षेत्रों के 4-4 लोकगीतों का संग्रह कराया जाए।
- इस प्रक्रिया के लिए पहले ही एक या दो दिन का समय दिया जाए।
- निर्धारित कालांश में सभी समूह अपनी अपनी प्रस्तुति देंगे और लोकगीतों के बारे में जानकारी भी देंगे।
- विद्यार्थियों द्वारा लोकगीतों का गायन या सस्वर वाचन हो सकता है। प्रत्येक समूह को 5-7 मिनट दिए जाएं।
- संकलित कार्य को कक्षा के प्रदर्शन पट्ट पर भी लगाया जा सकता है।
- मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

लोकगीतों का चयन	2
वाचन एवं गायन	2
प्रभावपूर्ण प्रस्तुति (स्पष्ट उच्चारण, लय)	1

टिप्पणी

- मूल्यांकन आधारों में अध्यापक स्वतंत्रतापूर्वक परिवर्तन भी कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को अच्छे संकलन व प्रस्तुतीकरण के लिए प्रोत्साहित किया जाए।





संस्कृति

भदंत आठंद कौसल्यायन

प्रदत्त कार्य - 1. वैज्ञानिक उपकरण (पहेली रचना)

उद्देश्य

- छात्रों में मौलिकता उत्पन्न करना।
- उनकी कल्पना शीलता का विकसित करना।
- जीवन मूल्यों को समझना।
- वैज्ञानिक उपकरणों का मानव जीवन से सम्बन्ध, इसकी चर्चा करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक वैज्ञानिक उपकरण सम्बन्धी एक पहेली कक्षा में बोलेगा और छात्र उसका उत्तर बताएंगे।
गोदी में रहूँ
सबका प्यार पाऊँ
विश्व में घुमाऊँ
हाथ हटाओ तो
मैं सो जाऊँ (लैपटॉप)
- कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जायेगा।
- प्रत्येक समूह को एक वैज्ञानिक उपकरण पर दो पहेलियों की रचना करने के लिए कहा जायेगा जैसे मोबाइल, कम्प्यूटर, कैमरा, मिक्सर
- सब समूह विचार विमर्श के बाद दो दो पहेलियाँ लिखेंगे। प्रत्येक समूह पूरी कक्षा से पहेली का उत्तर पूछेगा।
- मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जाएँगे।
- इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

मौलिकता	2
स्पष्टीकरण	2
समग्र प्रभाव	1



टिप्पणी

- इसके अतिरिक्त अध्यापक इच्छानुसार भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी रचना की प्रशंसा की जायेगी और बाकी छात्रों को प्रोत्साहित किया जायेगा।

प्रदत्त कार्य - 2. तृष्णा, ईर्ष्या, लिप्सा, दर्प, क्रोध-आधुनिक सभ्यता की देन (एक परिचर्चा)

उद्देश्य

- छात्रों को इन संवेगों के दुष्परिणामों की जानकारी देना।
- इनसे सम्बन्धित जीवन कौशलों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करना।
- योग के माध्यम से उन्हें शान्त करना सिखाना।
- कल्याणकारी भावनाओं को अपनाने की प्रेरणा देना।
- वाचन कौशल व लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक इन भावनाओं की भूमिका बताएगा।
- तत्पश्चात् कक्षा को पांच समूहों में विभक्त किया जायेगा।
- प्रत्येक समूह को तृष्णा, ईर्ष्या, लिप्सा, दर्प, क्रोध क्रमशः यह विषय लिखने के लिए दिए जाएँगे।
- छात्र परस्पर परिचर्चा करेंगे और समूह का नेता इनसे होने वाली हानियों के विषय में लिखेगा। और अंत में प्रस्तुत करेगा।
- इस गति विधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
- मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
प्रस्तुतीकरण	2
सम्पूर्ण प्रभाव	1

टिप्पणी

- इसके अतिरिक्त शिक्षक यदि चाहे तो अपने ढंग से अन्य मूल्यांकन बिंदुओं द्वारा मूल्यांकन कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

- अध्यापक कक्षा में घूमते हुए निरीक्षण करेगा और परिचर्चा सुनेगा।
- जिस समूह ने विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण सही ढंग से किया है उनकी प्रशंसा की जायेगी।
- सही ढंग से न कर पाने वाले समूह को उत्साहित किया जायेगा कि वे भी अच्छा करने के लिए प्रेरित हों।

प्रदत्त कार्य - 3. पर्यटन उद्योग (भारतवर्ष के रमणीय स्थलों का सूचना संकलन)

उद्देश्य

- किसी विशेष स्थान की सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी देना।
- पर्यटन की व्यापकता से परिचित करवाना।
- पर्यटन और मनोरंजन का सहसम्बन्ध बताना।
- पर्यटन का स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव समझना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम शिक्षक कुछ स्थलों के नाम स्वयं बताएगा।
- तत्पश्चात् कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- चारों समूहों को भारत के पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण राज्यों में स्थित प्रसिद्ध स्थलों की सूची बनाने के लिए कहा जाएगा।
- छात्र इसके लिए मानचित्र और पत्रिकाओं की सहायता ले सकते हैं।
- चारों समूह क्रमानुसार प्रस्तुतीकरण देंगे।
- इस प्रक्रिया के लिए एक कालांश का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु की जानकारी	2
अधिकतम स्थल	2
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं के आधार पर भी मूल्यांकन कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

- अच्छे छात्रों के कार्य को कक्षा में प्रदर्शित किया जायेगा उन्हें सराहा जायेगा। (प्रदर्शन पट पर लगाया जा सकता है।)
- जो छात्र कार्य नहीं कर पाए उन्हें प्रोत्साहन दिया जायेगा जिससे वे कार्य कर सकें।

प्रदत्त कार्य - 4. आधुनिक एवं प्राचीन संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन - एक संवाद

उद्देश्य

- अच्छे आदर्शों को ग्रहण करने की प्रेरणा देना।
- प्राचीन संस्कृति के अनुभव प्रदान करना।
- छात्रों की ज्ञान - पिपासा शान्त करना।
- पाश्चात्य संस्कृति की अन्धाधुन्ध दौड़ के दुष्परिणामों से अवगत कराना।
- वाचन कौशल एवं लेखन कौशल को समृद्ध करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा को दो समूहों में विभक्त करेगा।
- दोनों समूह परिचर्चा करेंगे और प्रत्येक समूह में से दो या तीन छात्र आत्म कथन के रूप में पांच-पांच संवाद पक्ष और विपक्ष में बोलेंगे।
- शिक्षक द्वारा उदाहरण दिया जायेगा।
- प्राचीन संस्कृति - मैं मातृ, पितृ, गुरु देव बनने की प्रेरणा देती हूँ। (पक्ष) मैं छात्रों की आकांक्षाओं को दबाती हूँ (विपक्ष)
- इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
- मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

पक्ष के दो संवाद	2
विपक्ष के दो संवाद	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार इस विषय को अन्य ढंग से भी कार्य करवा के अंक दे सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे वक्ता को शाबासी देकर उनका उत्साह वर्धन किया जायेगा।
- जो छात्र ठीक नहीं बोल पाया उसका मार्ग दर्शन किया जायेगा।



प्रदत्त कार्य - 5. योग और प्रयोग

उद्देश्य

- ❖ योग के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- ❖ योग के विभिन्न सरल आसनों से परिचित कराना।
- ❖ तनाव पूर्ण जीवन को तनाव मुक्त करने में योग का प्रभाव जानना।
- ❖ 'स्वस्थ तन तो स्वस्थ मन' इस सिद्धान्त को समझाना।
- ❖ वाचन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक द्वारा योग के महत्व के विषय में बताया जाएगा।
- ❖ एक कालांश का समय लगेगा।
- ❖ कुछ सरल आसनों की चर्चा की जायेगी जो छात्रों के लिए लाभकारी है जैसे ताड़ासन, पवनमुक्त और भुजंगासन।
- ❖ कुछ छात्र प्रतिनिधियों को बुलाकर निर्देश दिए जाएंगे।
- ❖ बाकी छात्र उन्हें देखकर निर्देशानुसार करेंगे।
- ❖ अंत में प्रत्येक विद्यार्थी योग से होने वाले एक-एक लाभ का उल्लेख करेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

- ❖ शिक्षक छात्रों द्वारा किए गए योग-प्रयोग को देखकर अंक लगाएगा। कुल अंक-5

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक इनके अतिरिक्त कुछ दूसरे सरल योग - आसनों द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ जो छात्र योग करने में समर्थ हैं वे अपने साथियों को सिखाएंगे।
- ❖ अध्यापक ऐसे छात्रों की सहायता करेगा जो योग - आसन सफलतापूर्वक कर पाने में असफल रहे।







प्रदत्त कार्य - 1. छात्र अपने मोबाइल द्वारा मित्र को एक संदेश भेजेंगे।

उद्देश्य

- सृजनात्मक कौशल का विकास करना।
- सकारात्मक सोच को प्रोत्साहन देना।
- लेखन एवं वाचन कौशल की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना।
- लाघव कौशल एवं संक्षिप्तता की दक्षता विकसित करना।
- विविध अवसरों, त्योहारों पर बधाई संदेश की कला एवं किसी विशेष परिस्थिति में विशेष संदेश जैसे (जन्म-दिन) लिखने की प्रेरणा देना।

प्रक्रिया

- अध्यापक छात्रों को संदेश की विषय वस्तु देंगे, समझायेंगे और छात्र उसके अनुसार संदेश का निर्माण करेंगे।
- इस गतिविधि के लिए पांच से दस मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस प्रक्रिया के मध्य अध्यापक निरीक्षण करेंगे और प्रत्येक छात्र के कार्य की जांच करेंगे।
- अध्यापक प्रत्येक छात्र को एस एम एस पढ़ने को कहेंगे और अन्य छात्र उस संदेश को ध्यान से सुनेंगे।
- पूरी प्रक्रिया में एक कालांश लगेगा।
- अध्यापक देखेंगे कि इस प्रक्रिया में छात्र रुचिपूर्वक भाग ले रहे हैं अथवा नहीं।
- मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
वाचन कौशल	1
लेखन कौशल	1
संदेश की प्रभावशीलता एवं लघुता	2

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार मान कर अंक विभाजन कर सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वाधिक उत्तम संदेश को श्यामपट्ट पर लिखा जा सकता है।
- ❖ दिए गए समयानुसार कार्य न करने वाले छात्र को उत्साहित करें।
- ❖ समय से पूर्व और लघु एवं सार्थक संदेश लिखने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. सूरदास के पदों का संकलन एवं गायन

उद्देश्य

- ❖ गायन / संगीतात्मकता के प्रति रुझान कराना।
- ❖ शब्दों के उच्चारण का ज्ञान कराना।
- ❖ ब्रज भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- ❖ खोज परक शैली का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य।
- ❖ काव्य रचना पढ़ाने से पूर्व ही अध्यापक छात्रों से सूरदास के पद संकलन की प्रेरणा देगा तथा पदों को पढ़ाते समय गायन शैली समझा देगा।
- ❖ पढ़ाने के पश्चात् यह गतिविधि होगी।
- ❖ दो विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह के छात्रों को गायन के लिए 1 मिनट का समय दिया जाएगा। दोनों छात्र मिलकर भी पद गा सकते हैं।
- ❖ शिक्षक चाहे तो पद पूरा अथवा चार पंक्तियां भी गाने के लिए कह सकते हैं।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ इस गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सस्वर गायन	2
उच्चारण (लहजा)	2
भावाभिव्यक्ति	1



टिप्पणी

- अध्यापक स्वयं मूल्यांकन के आधार निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छा सस्वर गायन करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- जो विद्यार्थी भाषा का उच्चारण ठीक प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं उनको सही उच्चारण का ज्ञान कराएं।

प्रदत्त कार्य - 3. राजधर्म, प्रजाधर्म, मुनिधर्म विषयों पर समूह चर्चा।

उद्देश्य

- वाचन कौशल का विकास करना।
- तार्किक क्षमता का विकास करना।
- सहनशीलता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- जनता के अधिकारों और कर्तव्यों को समझाना।

प्रक्रिया

- समूहगत कार्य।
- सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को विषय की पूर्ण जानकारी देंगे।
- कक्षा को तीन भागों में विभाजित किया जायेगा।
- प्रत्येक समूह को उपर्युक्त विषयों में से एक एक विषय चर्चा करने के लिए दिया जाएगा।
- समूह चर्चा के लिए प्रत्येक समूह को 10 मिनट का समय दिया जायेगा।
- जब एक समूह चर्चा करेगा तो अन्य समूह उसको सुनेंगे। प्रत्येक छात्र की भागीदारी आवश्यक है।
- मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय संबद्धता	2
तार्किकता	2
भावाभिव्यक्ति	1



टिप्पणी

- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु स्वयं निर्धारित कर सकते हैं

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे तर्क देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करे।
- ❖ जो छात्र खुलकर विचार व्यक्त नहीं कर पाते उन्हें अवसर प्रदान करें ताकि वह भी रुचिपूर्वक चर्चा में भाग ले सकें।
- ❖ अध्यापक उपर्युक्त विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी अवश्य करे।

प्रदत्त कार्य - 4. नव रसों पर आधारित कवि सम्मेलन

उद्देश्य

- ❖ रसों का ज्ञान करवाना।
- ❖ साहित्य में वर्णित भिन्न भिन्न प्रकार की भावनाओं को समझना
- ❖ कविता की सौन्दर्यानुभूति कराना
- ❖ विद्यार्थी की श्रवण एवं वाचन क्षमताओं का विकास करना
- ❖ विद्यार्थी की सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक पूरी कक्षा को नौ समूहों में विभक्त कर देगा तथा नौ रसों के विषय में सोदाहरण समझाएगा।
- ❖ इस आयोजन की पूर्व तैयारी करनी पड़ेगी अतः एक सप्ताह पूर्व इसकी जानकारी दे दी जाए।
- ❖ अध्यापक विद्यार्थियों को बता दें कि समूह में कुछ विद्यार्थी श्रृंगार, हास्य, वीर, वात्सल्य, रौद्र, करुण, भयानक, वीभत्स, शांत इत्यादि रसों की कविताओं का संकलन करेंगे।
- ❖ समूह का एक विद्यार्थी सबके सामने अपनी कविता का सस्वर वाचन करेगा।
- ❖ अध्यापक इस बात का ध्यान रखें कि सभी रसों का प्रतिनिधित्व अवश्य हो। अतः अध्यापक प्रत्येक समूह को स्वयं रस विशेष वितरित कर दें। कविताएं बहुत लंबी न हों।
- ❖ एक कालांश में प्रक्रिया पूरी हो सकती है।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।
- ❖ कविताएं आधुनिक या प्राचीन किन्हीं भी कवियों की हो सकती है।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय से संबद्धता	1
विषय वस्तु	1
उच्चारण (भाषा)	1
प्रवाह (लय, सस्वर वाचन)	1
हाव भाव	1

टिप्पणी

- ❖ मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ कवि सम्मेलन में अपना अमिट प्रभाव छोड़ने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ संकोची व शर्मीले विद्यार्थियों को आगे आकर बोलने की प्रेरणा व प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. श्रीकृष्ण की किसी लीला का मंचन

उद्देश्य

- ❖ श्रीकृष्ण के जीवन से परिचित कराना।
- ❖ श्रीकृष्ण के जीवन की गरिमा एवं महिमा समझाना।
- ❖ अभिनय कला में अभिरुचि उत्पन्न करना।
- ❖ मंचन के लिए आवश्यक उपकरणों की महत्ता समझाना।
- ❖ काव्य की सौंदर्यानुभूति कराना।
- ❖ मौलिक गुणों का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक विद्यार्थियों को समझा दें कि श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं में से किसी पर भी मंचन किया जा सकता है। यथा - बाललीला, कालिया नाग लीला, बकासुर वध, गोवर्धन पर्वत, रास लीला, कंस वध, माखन चोरी, द्रोपदी की सहायता, सुदामा मिलन, अर्जुन की मैत्री इत्यादि कोई भी प्रसंग हो सकता है।
- ❖ यह प्रक्रिया सामूहिक होगी।
- ❖ सभी समूह अलग अलग प्रसंगों पर लीला करेंगे।



- इसकी तैयारी की सूचना एक सप्ताह पूर्व दे दी जाए जिससे विद्यार्थियों को तैयारी का समय मिल जाए।
- अध्यापक कक्षा के आकार के अनुसार समूह बना सकता है।
- एक कालांश में प्रक्रिया सम्पन्न हो जायेगी।
- मूल्यांकन आधार प्रक्रिया के प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

लीला का चयन	1
अभिनय या प्रस्तुति	2
संवादों का उच्चारण	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार अन्य मूल्यांकन आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक अच्छी प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों की सराहना अवश्य करें।
- अच्छी प्रस्तुति में ज्यादा सफल न होने वाले विद्यार्थियों को उनकी भूलें समझाते हुए बेहतर करने के लिए प्रेरित करें।



राम लक्ष्मण - परशुराम संवाद

तुलसीदास

प्रदत्त कार्य - 1. संवाद लेखन एवं वाचन

उद्देश्य

- ❖ लेखन कौशल का विकास करना
- ❖ कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ वाचन कौशल का विकास करना
- ❖ तार्किक क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ यह सामूहिक कार्य है।
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक विद्यार्थियों को विषय से परिचित कराएँगे
- ❖ कक्षा को आठ समूहों में विभाजित करके प्रत्येक समूह को नीचे दिए गए विषयों में से एक एक विषय संवाद लेखन के लिए दिया जाएगा।
 - * विषय माता-पिता तथा बालक के बीच संवाद
 - * गुरु शिष्य के मध्य संवाद
 - * दो या अधिक मित्रों के संवाद
 - * बहन भाईयों के बीच संवाद
 - * दुकानदार से संवाद
 - * सहभागी से संवाद
 - * डॉक्टर के साथ संवाद
 - * नौकर मालिक के बीच संवाद
- ❖ संवाद लिखकर तैयार करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए। संवाद लगभग दस वाक्यों के होने चाहिए।
- ❖ जब सभी समूह संवाद तैयार करेंगे तो शिक्षक सभी समूहों के बीच जाकर उनका मार्गदर्शन करेंगे।

रचनात्मक मूल्यांकन - राम लक्ष्मण - परशुराम संवाद



Unit 10

- मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।
- संवाद लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह प्रस्तुतीकरण करेगा। प्रत्येक समूह को दो-दो मिनट का समय प्रस्तुतीकरण के लिए दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय संबद्धता	1
भाषायी दक्षता	1
सटीकता	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे एवं सटीक संवाद के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- और अच्छे लेखन एवं प्रस्तुतीकरण की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. चौपाई कण्ठस्थ करके सुनाना

उद्देश्य

- गायन कौशल का विकास करना
- भारतीय संस्कृति में चौपाई का महत्व समझाना।
- स्मरण शक्ति में अभिवृद्धि करना
- कण्ठस्थ करके सुनाने की प्रवृत्ति को सकारात्मक गुण बनाना।

प्रक्रिया

- व्यक्तिगत रूप से यह कार्य कराया जाएगा।
- सर्वप्रथम अध्यापक चौपाई का महत्व बताते हुए एक चौपाई गाकर सुनाएगा। चौपाई गायन के विभिन्न तरीके बताए जा सकते हैं।
- यह कार्य गतिविधि से दो दिन पूर्व किया जाए ताकि विद्यार्थी अपनी रुचि की चौपाई को कण्ठस्थ कर सकें।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।



- गतिविधि के समय प्रत्येक छात्र एक एक चौपाई गाकर सुनाएगा इसके लिए प्रत्येक छात्र को आधा से एक मिनट का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

प्रवाहमयता	2
उच्चारण	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- जो छात्र प्रभावशाली प्रवाह के साथ चौपाई गाएँ उनको प्रोत्साहित किया जाए।
- छात्रों का मनोबल बढ़ाने के लिए शिक्षक प्रार्थना सभा में भी अच्छे गायक छात्रों से चौपाई सुनवा सकते हैं।
- जो छात्र अच्छा प्रस्तुतीकरण न दे पाएँ अन्य छात्रों की सहायता से उनमें सुधार किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 3. 'राम आज के युग में प्रासंगिक हैं' वाद विवाद

उद्देश्य

- तर्कशक्ति एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- ज्ञान भंडार में वृद्धि।
- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- मंच प्रस्तुतीकरण की प्रेरणा।
- मंडन एवं खंडन का अभ्यास।

प्रक्रिया

- वाद-विवाद कला से अवगत कराया जाएगा।
- मूल्यांकन का आधार स्पष्ट करना।
- सम्पूर्ण कक्षा को दो वर्गों में विभाजित किया जायेगा एक वर्ग पक्ष तथा दूसरा विपक्ष में बोलेगा।
- विषय तैयार करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जायेगा।
- प्रत्येक समूह में प्रतिनिधि वक्ता अपने विचार प्रस्तुत करेगा।



Unit 10

- एक प्रस्तुति के समय अन्य विद्यार्थी विचारों को ध्यान से सुनेंगे और प्रतियोगिता के पश्चात् परिचर्चा करेंगे
- कुछ निर्वाचित छात्रों को मूल्यांकन करने के लिए कहा जायेगा और वे अध्यापक का सहयोग करेंगे।
- इस पूरी गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी दक्षता	1
अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण	1
दृष्टान्तों द्वारा तर्क की पुष्टि	1

टिप्पणी

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार मान कर भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सभी बिन्दुओं पर न बोल पाने वाले छात्रों को उत्साहित करना एवं सुझाव देना।
- उत्तम छात्रों की सराहना करना।
- कुछ अच्छी पंक्तियों को श्यामपट्ट पर लिखना।

प्रदत्त कार्य - 4. 'क्रोध प्रबन्धन' विषय पर परिचर्चा

उद्देश्य

- भावात्मक आवेगों को नियंत्रित करना सिखाना।
- क्रोध के नकारात्मक स्वरूप के दुष्परिणामों को समझाना।
- सहनशील बनने की प्रेरणा देना।
- श्रवण क्षमता का विकास करना।
- क्रोध को सकारात्मक स्वरूप देना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति विकसित करना।
- गुरुजनों के प्रति शिष्ट एवं संयत व्यवहार की सम्मति देना।
- मौलिक चिंतन एवं विश्लेषण प्रवृत्ति का विकास।



प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक पहले ही कक्षा को स्पष्ट कर देगा कि क्रोध एक ऐसा आवेग है जिसे नियंत्रित न किया जाए तो बहुत नुकसान हो सकते हैं अतः इसके प्रबंधन के लिए कक्षा में परिचर्चा कराई जाएगी।
- ❖ परिचर्चा के लिए कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
 - * पहला समूह - क्रोध क्या है और कब आता है।
 - * दूसरा समूह - क्रोध के दुष्परिणाम।
 - * तीसरा समूह - क्रोध के नियंत्रण करने के उपाय।
 - * चौथा समूह - क्रोध का सकारात्मक स्वरूप।
- ❖ अध्यापक विद्यार्थियों को सोचने के लिए 10 मिनट का समय देगा और सभी समूहों का मार्ग दर्शन भी करेगा।
- ❖ प्रत्येक समूह अपने अपने प्रकरण पर परिचर्चा करेंगे।
- ❖ अध्यापक सभी की परिचर्चा ध्यान से सुनेगा
- ❖ 15 मिनट परिचर्चा होगी।
- ❖ अंत में अध्यापक प्रत्येक समूह के मुख्य विचार बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख देगा।
- ❖ मूल्यांकन आधार और अंक पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।
- ❖ यह प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय संबंधी तर्क	2
उचित उदाहरणों का प्रयोग	2
प्रभावशाली अभिव्यक्ति	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ ठोस प्रमाण द्वारा अपनी बात पर स्पष्ट विचार करने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ अपना स्पष्ट मत न रखने वाले विद्यार्थियों को विषय समझने में सहायता दी जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. राम के जीवन के विभिन्न प्रसंगों का मंचन

उद्देश्य

- ❖ श्री राम के जीवन के विभिन्न प्रसंगों से परिचित करना।
- ❖ श्रीराम के चरित्र की महानता के प्रति आदर व श्रद्धा उत्पन्न करना।



Unit 10

- ❖ अभिनय कला को निखारना।
- ❖ विद्यार्थी की सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।
- ❖ उनकी वाचन एवं श्रवण कुशलता को बढ़ाना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक पूर्व निर्धारित कालांश में विद्यार्थियों को राम के जीवन प्रसंगों की जानकारी देगा।
- ❖ कविता पढ़ाने से पूर्व उन्हें एक या दो दिन का समय तैयारी के लिए दिया जाएगा।
- ❖ समूहगत कार्य होगा।
- ❖ प्रत्येक समूह पूर्व निर्धारित प्रसंग का कक्षा में मंचन करेगा।
- ❖ प्रत्येक समूह को प्रस्तुति के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ यह सम्पूर्ण प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न हो जाएगी।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार व अंक विभाजन पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

प्रसंग का चयन	1
अभिनय या प्रस्तुति	2
संवादों का उच्चारण	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निश्चित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी प्रस्तुति व अभिनय करने वालों की सराहना की जाए।
- ❖ संकोची, शर्मीले व आलसी विद्यार्थियों को खुलकर बोलने की प्रेरणा दी जाए।



सवैया एवं कवित्त

देव

प्रदत्त कार्य - 1. पक्षियों - मोर, तोता व कोयल पर प्रपत्र

उद्देश्य

- ❖ प्राकृतिक जगत के प्रति जिज्ञासा व संवेदना उत्पन्न करना।
- ❖ पक्षियों के प्रति कोमल भाव जागृत करना।
- ❖ वस्तुओं को वैज्ञानिक ढंग से जानना सिखाना।
- ❖ पशु-पक्षियों को संरक्षित रखने की भावना उत्पन्न करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक पूरी कक्षा में इस कार्य प्रपत्र की की एक-एक छाया प्रति बाँट देगा अथवा श्यामपट्ट पर लिख देगा और विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में लिख देंगे।
- ❖ अध्यापक कार्य प्रपत्र एकत्र करके सुविधानुसार जांचेगा।

कार्य प्रपत्र

1. पक्षी का नाम
2. उसका आकार
3. उसका रंग रूप
4. उसके रहने का स्थान
5. उसकी बोली
6. उसका प्रिय खाद्य पदार्थ
7. उड़ने की गति
8. उसकी विशेषता (एक)
9. उसका प्रिय कार्य
10. उसकी लोकप्रियता का आधार

रचनात्मक मूल्यांकन - सवैया एवं कवित्त



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

10-9 सही जानकारी	5
8-7 सही जानकारी	4
6-5 सही जानकारी	3
4-3 सही जानकारी	2
2-1 सही जानकारी	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ बिल्कुल सही लिखने वाले विद्यार्थियों को शाबासी देकर प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अन्य विद्यार्थियों की सहायता की जाए अथवा कराई जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. समूह में ऋतुओं पर परिचर्चा एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य

- ❖ रचनात्मक अभिव्यक्ति व मानसिक योग्यता का विकास।
- ❖ प्रकृति के प्रति जागरूकता और ऋतुओं में बदलाव की जानकारी
- ❖ विभिन्न ऋतुओं का मानव जीवन पर प्रभाव।
- ❖ मौलिक कल्पना शक्ति को विकसित करना।
- ❖ ग्लोबल वार्मिंग का ऋतुओं पर प्रभाव।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कक्षा को चार समूहों में विभक्त करेंगे और प्रत्येक समूह को सर्दी, गर्मी, वर्षा और वसन्त किसी एक ऋतु पर परिचर्चा करने के लिए कहेंगे और उसे सुनेंगे। इसमें 10-15 मिनट लगेंगे।
- ❖ गतिविधि प्रारंभ करने से पूर्व आवश्यक निर्देश छात्रों को दिए जाएंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह ऋतु से सम्बन्धित कविता लिखेगा और चित्र बनाएगा।
- ❖ समूह का नेता कविता पढ़ेगा और अन्य छात्रों को चित्र दिखाएगा।
- ❖ छात्र विशेष ऋतु में होने वाली फसल, फल, सब्जी और फूलों की सूची बनाएंगे।
- ❖ अध्यापक की सहायता द्वारा प्रत्येक समूह (ग्लोबल वार्मिंग) वैश्विक तापमान में वृद्धि पर चर्चा करेगा एवं सुनामी, चक्रवात इत्यादि के विषय में जानकारी प्राप्त करेगा।
- ❖ यह प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न नहीं हो पाएगी अतः दो कालांशों को मिलाकर कराई जाएगी।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
समूह द्वारा परिचर्चा	1
कविता रचना	2
चित्र रचना	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ किसी अन्य मूल्यांकन बिन्दु को आधार मानकर अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ श्रेष्ठ कविता को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- ❖ शब्द चयन और मौलिक अभिव्यक्ति के लिए छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- ❖ जो छात्र गतिविधि में क्रियाशील नहीं हैं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य - 3. दूल्हा-दुल्हन के रूप व श्रृंगार का वर्णन लिखना व पढ़कर सुनाना।

उद्देश्य

- ❖ विद्यार्थियों में रीति रिवाजों के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना।
- ❖ भारतीय संस्कृति की विविधता एवं बहुरंगी स्वरूप का ज्ञान कराना।
- ❖ परिधान के प्रति चेतना व जागरुकता उत्पन्न करना।
- ❖ प्राचीन और आधुनिक वेशभूषा की समानता व अंतर को पहचानना।
- ❖ विद्यार्थियों के पढ़ने, लिखने, बोलने व सुनने के कौशलों को परिष्कृत करना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक सारी कक्षा को समूहों में विभक्त कर देगा।
- ❖ प्रत्येक समूह दूल्हा-दुल्हन के रूप-रंग, वेशभूषा लिखेगा।
- ❖ प्रत्येक समूह को लिखने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ सुनाने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ अंत में मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार व अंक प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।



Unit 11

रचनात्मक मूल्यांकन - सवैया एवं कवित्त

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

रूप और श्रृंगार की बारीकियों का वर्णन
लेखन कौशल
प्रभावशाली वाचन
विषय का विस्तार

अंक विभाजन

2
1
1
1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- विषय की सुंदर अभिव्यक्ति व प्रस्तुति के लिए सराहना की जाए।
- खानापूति न होकर विषय में रुचिपूर्वक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 4. टोने टोटके पर वाद विवाद 'आज का युग टोने टोटकों से मुक्त है।

उद्देश्य

- विचार विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- पाश्चात्य संस्कृति में समाए टोने टोटकों से परिचित कराना।
- तार्किकता एवं वैज्ञानिक चिंतन का विकास करना।
- धैर्यपूर्वक विपक्षी के तर्कों को सुनना और समझना।
- विद्यार्थियों के श्रवण व वाचन कौशलों का विकास करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में वाद विवाद के विषय में पक्ष और विपक्ष को कक्षा में स्पष्ट कर देगा।
- पूरी कक्षा को दो समूहों में बांट दिया जाए।
- फिर उन्हें सोचने के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाए।
- तत्पश्चात् विद्यार्थियों का पक्ष वाला समूह अपनी बात कहेगा।
- विपक्ष वाले अपने तर्क रखेंगे। इस प्रकार यह प्रक्रिया 15 मिनट तक चलाई जाए।
- सबसे अच्छे वक्ता और तर्क सम्मत बात कहने वाले विद्यार्थी से वाद विवाद पर टिप्पणी कर उसे समाप्त किया जाए।



- ❖ पक्ष विपक्ष के ठोस तर्क व प्रमाण श्यामपट्ट पर बिंदु रूप में लिखे जा सकते हैं।
- ❖ सभी विद्यार्थियों की सहभागिता अनिवार्य हो।
- ❖ मूल्यांकन के आधार अध्यापक श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय से संबद्धता	1
अकाट्य तर्क व प्रमाण	2
आत्मविश्वास व प्रभाव	2

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ ठोस तर्क एवं प्रभावशाली प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ अन्य विद्यार्थियों को खुलकर अपनी बात कहने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. पर्यायवाची शब्दों की वर्ग पहेली

उद्देश्य

- ❖ खोजपरक प्रवृत्ति को उभारना
- ❖ नए नए शब्दों से परिचित कराना
- ❖ पर्याय शब्द भंडार बढ़ाना
- ❖ एकाग्रता की प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विषय की जानकारी देते हुए पाठ से चयनित निम्नलिखित शब्द तथा वर्ग पहेली श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा नीचे दी गई वर्ग पहेली से प्रत्येक शब्द के लिए तीन तीन पर्यायवाची शब्द ढूँढने के लिए निर्देश देंगे।

शब्द - पट, दीपक, जग, पल्लव, सुमन, पवन, मदन, महीप, उदधि, आरसी



व	स	न	का	म	दे	व	सं	पद	पु
स्	मी	दी	म	क	म	ल	सा	र	ष्
त्र	र	प	र्ण	अ	म्	ब	र	त	प
सा	ग	र	आ	फू	कु	सु	म	द	र
ब	दि	या	द	ल	क	न्	द	र्प	ब
ह	वा	प्र	र	ति	ज	ग	ती	ण	त
न	यु	जा	चि	रा	ग	म	आ	म	सि
प्र	भ	प	ना	पा	त	हा	ई	ख	न्
भू	प	ति	र	त	शी	रा	ना	सु	धु
र	ति	प	ति	ल	शा	ज	ल	धि	क

- ❖ वर्ग पहेली से शब्द ढूँढकर छात्र उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।
- ❖ शिक्षक सभी के लिखित प्रपत्र एकत्र कर लेंगे, चाहें तो छात्रों में वितरित करके भी मूल्यांकन करा सकते हैं (ध्यान रहे पेपर दूसरे छात्रों का ही होना चाहिए स्वयं का नहीं)।
- ❖ इस प्रक्रिया के लिए 20-25 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख दें।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
9-10 सही होने पर	5
7-8 सही होने पर	4
5-6 सही होने पर	3
3-4 सही होने पर	2
1-2 सही होने पर	1

टिप्पणी

- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ जिन विद्यार्थियों ने पूरे पर्यायवाची ढूँढ कर लिखें हो उनकी सराहना की जाए।
- ❖ श्यामपट्ट पर पर्यायवाची लिख दिए जाएँ।
- ❖ जो छात्र यह कार्य नहीं कर पाएँ, उनकी अन्य विद्यार्थियों की सहायता से मदद की जाए।
- ❖ शिक्षक की सुविधा हेतु पर्यायवाची शब्दों की सूची दी जा रही है -
 पट - वस्त्र, वसन, अम्बर
 दीपक - दीप, दिया, चिराग
 जग - संसार, जगत, जगती
 पल्लव - पर्ण, पात, दल
 सुमन - कुसुम, पुष्प, फूल
 पवन - वायु, समीर, हवा
 महीप - प्रजापति, भूपति, महाराज
 मदन - कामदेव, रतिपति, कन्दर्प
 उदधि - सागर, जलधि, सिन्धु
 आरसी - आईना, शीशा, दर्पण





आत्म कथ्य

जयशंकर प्रसाद

प्रदत्त कार्य - 1. आज की भागती दौड़ती जिंदगी - परिचर्चा

उद्देश्य

- स्वयं को समय देने की प्रवृत्ति का विकास करना
- तार्किकता की प्रवृत्ति का विकास करना
- अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
- समय का महत्व समझाना
- वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देते हुए समझाएँगे कि आज की भागती दौड़ती जिंदगी में समयाभाव के कारण हम बहुत सी जरूरी चीजों को नजर अंदाज कर देते हैं।
- कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को चर्चा के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- जब एक समूह चर्चा करेगा तो अन्य समूह तथा शिक्षक उसको ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

तार्किकता	2
अभिव्यक्ति क्षमता	2
विषय संबद्धता	1

टिप्पणी

- शिक्षक अन्य उचित मूल्यांकन के आधार भी निश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी तार्किक क्षमता वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।



Unit 12

- जो विद्यार्थी ठीक प्रकार से विचार व्यक्त न कर पाएं उन्हें बेहतर अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. किसी सपने का वर्णन

उद्देश्य

- स्वप्न और यथार्थता के अन्तर को समझाना।
- स्वप्न एवं दिवासवप्न में भिन्नता
- व्यथा को भूलने की प्रक्रिया (स्पष्टीकरण)
- कल्पनाशीलता का विकास
- भावाभिव्यक्ति में कुशलता

प्रक्रिया

- अध्यापक कुछ संकेत श्यामपट्ट पर लिख देंगे जिसके द्वारा कक्षा में परिचर्चा की जायेगी।
- उन संकेतों की सहायता से विद्यार्थियों को आवश्यक निर्देश दिए जाएंगे।
- तत्पश्चात् विद्यार्थियों को 100 से 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जाएगा।

संकेत

- आप रात्रि के किस प्रहर में सपना देखते हैं?
- क्या आपके सपने सत्य होते हैं?
- किस प्रकार के सपने देखते हैं?
- अधिकतर सपने याद रहते हैं अथवा भूल जाते हैं?
- अध्यापक लेखन सामग्री एकत्र करेगा और सुविधानुसार देखेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

शब्दों की सीमा	1
शब्दों का चयन	1
वर्णन / लेखन कौशल	2
उपसंहार	1

टिप्पणी

- अध्यापक निजी मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।



प्रतिपुष्टि

- उत्तम छात्रों को शाबासी देकर सराहना की जायेगी।
- अन्य छात्रों को उत्साहित किया जाएगा।
- जिन छात्रों को स्वप्न स्मरण नहीं है अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए लिखेंगे।

प्रदत्त कार्य - 3. 'मेरी दिनचर्या' डायरी निर्माण एवं लेखन

उद्देश्य

- डायरी लेखन की जानकारी देना
- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करकना
- आत्मभिव्यक्ति की प्रवृत्ति का विकास
- स्वलेखन प्रवृत्ति का विकास करना।

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम डायरी लेखन विधा का परिचय देगा।
- सभी विद्यार्थी एक छोटी सी डायरी बनाएंगे जिसमें दो तीन पन्ने सजाकर लगाए जा सकते हैं तथा उसका आवरण पृष्ठ भी सजाया जा सकता है।
- डायरी वास्तविक डायरी के अनुरूप होगी जिसमें ऊपर दिनांक व दिन लिखा होगा तथा नीचे खाली पृष्ठ होगा।
- खाली छोड़े गए पृष्ठ पर विद्यार्थी अपनी दिनचर्या लिखेंगे।
- इस कार्य के लिए चार दिन का समय दिया जाए विद्यार्थी घर पर डायरी निर्माण करेंगे किन्तु दिनचर्या कक्षा में लिखी जाएगी।
- गतिविधि के समय लिखने के लिए 20-25 मिनट का दिया जाएगा।
- लेखन के पश्चात् डायरी संग्रहीत की जाएगी तथा उसके बाद अध्यापक डायरी का मूल्यांकन सुविधानुसार करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

साज सज्जा	2
विषय वस्तु (आत्माभिव्यक्ति)	2
लिखावट	1



Unit 12

रचनात्मक मूल्यांकन - आत्म कथ्य

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी डायरी निर्माण करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित अवश्य करें।
- कुछ अच्छी डायरियाँ विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर लगाई जा सकती हैं।

प्रदत्त कार्य - 4. चाँदनी रात में नौका विहार अनुच्छेद लेखन

उद्देश्य

- प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद लेना
- कल्पनाशक्ति में वृद्धि करना।
- हृदय के कोमल पक्ष को जगाना।
- सौन्दर्यानुभूति कराना।
- लेखन कला का विकास कराना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा चाहे तो चित्र भी दिखा सकता है।
- व्यक्तिगत रूप से कार्य कराया जाएगा।
- 15 मिनट का समय विद्यार्थियों को लिखने के लिए दिया जाएगा।
- 15 मिनट में सभी विद्यार्थी पढ़कर सुनाएंगे।
- मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
प्रभावशाली वर्णन	2
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।



प्रतिपुष्टि

- अच्छे अनुच्छेद लेखन करने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को बेहतर लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. स्वयं की पहचान - कार्य प्रपत्र

उद्देश्य

- स्वयं को पहचानकर सद्गुणों का विकास करना।
- अपने गुण और दोषों को परखने के लिए आत्मविश्लेषण प्रवृत्ति का विकास।
- सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास।
- अनुसंधानपरक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक सबसे पहले समझाए कि दूसरों को पहचानना हमारे लिए आसान है परन्तु स्वयं के गुण दोषों को पहचानना कठिन है। अतः विद्यार्थी कार्य प्रपत्र के माध्यम से स्वयं को पहचानने का प्रयास करेगा।

कार्य प्रपत्र

- नाम
- लिंग
- आयु
- कक्षा
- परिवार के सदस्य
- परिवार की सामाजिक स्थिति
- परिवार की आर्थिक स्थिति
- भाई बहनों का क्रम
- प्रिय परिधान
- प्रिय भोजन
- प्रिय मित्र
- प्रिय कार्य



Unit 12

रचनात्मक मूल्यांकन - आत्म कथ्य

- ❖ जीवन का सपना
- ❖ अपनी कमजोरी
- ❖ अपने गुण
- ❖ अध्यापक सभी विद्यार्थियों को कार्य प्रपत्र की एक एक छाया प्रति देगा अथवा श्यामपट्ट पर कार्य प्रपत्र बना देगा जिसे विद्यार्थी अपनी कार्यपुस्तिका पर लिख लेगा।
- ❖ 20-25 मिनट का समय विद्यार्थी को भरने के लिए दिया जाएगा।
- ❖ कार्य पूरा होने पर अध्यापक प्रपत्र एकत्र करके अपनी सुविधानुसार जांचेगा।
- ❖ मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
स्वयं संबंधी जानकारी की पूर्णता	2
आत्माभिव्यक्ति	2
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ पूरी और सही जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ अन्य विद्यार्थियों को सही और सटीक जानकारी देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।



उत्साह, अट नहीं रही है ✨

सूर्यकांत त्रिपाठी ठिथाला

रचनात्मक मूल्यांकन - उत्साह, अट नहीं रही है

प्रदत्त कार्य - 1. ऋतुओं का महत्व - अभिनय एवं संवाद

उद्देश्य

- ❖ प्रकृति के प्रति रुझान कराना
- ❖ ऋतुओं का महत्व समझाना
- ❖ अभिनय कौशल का विकास करना
- ❖ सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ तार्किक क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य सामूहिक है।
- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम विषय को समझाते हुए प्रत्येक ऋतु (चार ऋतुएं, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और वसन्त) के महत्व पर प्रकाश डालेंगे।
- ❖ गतिविधि के समय कक्षा को चार भागों विभक्त में किया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह उपर्युक्त एक-एक ऋतु का प्रतिनिधित्व करेगा।
- ❖ समूह चर्चा एवं तैयारी के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ इस प्रक्रिया के दौरान अध्यापक प्रत्येक समूह में घूम-घूम कर निरीक्षण तथा मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ विषय चर्चा एवं तैयारी के उपरांत प्रत्येक समूह के ऋतु प्रतिनिधि विद्यार्थी अपने-अपने महत्व को दर्शाते हुए संवाद प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ संवाद प्रस्तुत करते समय ऋतुओं के प्रतिनिधि तर्क वितर्क भी कर सकते हैं।
- ❖ प्रस्तुतीकरण के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ अध्यापक ध्यान रखें कि प्रत्येक समूह प्रतिनिधि अपनी बात पूर्णतः रख सकें।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय की जानकारी

2

तार्किकता

1



Unit 13

रचनात्मक मूल्यांकन - उत्साह, अट नहीं रही है

प्रस्तुतीकरण (अभिनय, हावभाव)	1
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन के आधार निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे तर्क देते हुए अपनी (ऋतुओं की) महत्ता बताने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागी होने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. तुकान्त शब्दों का संकलन

उद्देश्य

- शब्द संपदा में वृद्धि करना
- सुर, ताल, लय सम्बन्धी विशेषताओं का विकास करना
- श्रवण से जुड़ी हुई दक्षताओं का विकास करना
- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक उचित आरोहावरोह सहित किसी एक कविता का वाचन करेगा और उसकी विशेष ध्वनियों पर बल दिया जायेगा।
- तत्पश्चात् छात्रों की प्रतिक्रिया पूछी जायेगी और उनसे कविता से सम्बन्धित तुकान्त शब्दों की जानकारी ली जायेगी।
- अगले चरण में कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिखें जायेंगे और विद्यार्थियों को निर्देश दिए जायेंगे कि वे मिलती-जुलती ध्वनि वाले तीन-2 अथवा चार-2 शब्द और लिखें।
- इसके लिए पांच मिनट का समय दिया जाएगा। किन्हीं पांच शब्दों के तुकान्त शब्द बनाने हैं।

डाला, भाव, लाल, मुस्कान, फूल, थिरकन, धर्म, छाया, रात,
तान, सही, सरल, दल, कुल, गायक

- शब्द निर्माण के पश्चात् प्रत्येक छात्र प्रस्तुतीकरण देगा।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	आधार बिंदु
पांच शब्दों के तुकान्त शब्द	5
चार शब्दों के तुकान्त शब्द	4
तीन शब्दों के तुकान्त शब्द	3
दो शब्दों के तुकान्त शब्द	2
एक शब्द का तुकान्त शब्द	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ कुछ छात्र उर्पयुक्त शब्दों की सहायता से कविता रचना भी कर सकते हैं। इस गतिविधि के लिए अन्य छात्रों का मार्ग दर्शन किया जा सकता है।
- ❖ छात्र द्वारा उत्तम शब्द निर्माण के लिए उसे शाबासी दी जाए।
- ❖ जो छात्र शब्द लिखने में असमर्थ रहे, उन्हें प्रोत्साहित किया जाए।

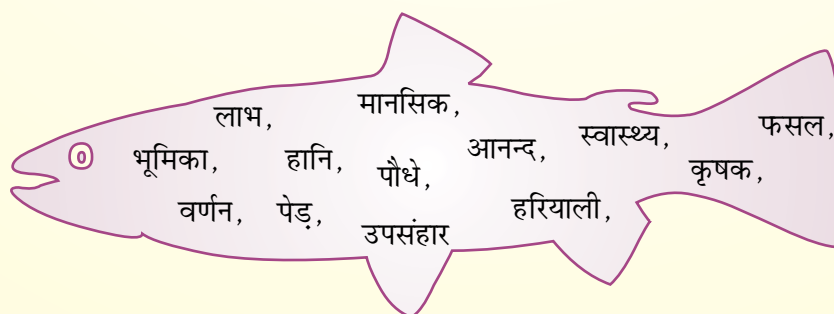
प्रदत्त कार्य - 3. वर्षा का एक दिन - अनुच्छेद लेखन

उद्देश्य

- ❖ प्राकृतिक सौन्दर्य बोध कराना
- ❖ ऋतुओं की विविधता का ज्ञान कराना।
- ❖ ऋतु सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी देना।
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास कराना।
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगतकार्य है - सर्वप्रथम अध्यापक छात्रों को समझाएगा और संकेत श्यामपट्ट पर लिखेगा।



Unit 13

रचनात्मक मूल्यांकन - उत्साह, अट नहीं रही है

- ❖ अध्यापक निरीक्षण करेंगे कि छात्र अनुच्छेद सही ढंग से लिख रहे हैं अथवा नहीं।
- ❖ जो छात्र नहीं लिख पा रहे हैं उन्हें सहयोग दिया जाएगा।
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश दिया जायेगा।
- ❖ मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।
- ❖ मूल्यांकन शिक्षक अपनी सुविधानुसार कर लेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
लेखन कौशल	2
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- ❖ इसके अतिरिक्त अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा उनका मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वोत्तम कार्य करने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- ❖ चार पांच अच्छे अनुच्छेदों को कक्षा में पढ़ा जाए।
- ❖ कार्य न करने वाले छात्रों का उत्साह वर्धन किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 4. 'संदेश भेजने के माध्यम - प्राचीन एवं वर्तमान काल के संदर्भ में-' परिचर्चा

उद्देश्य

- ❖ सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना
- ❖ भारतीय संस्कृति से परिचित कराना
- ❖ संदेश एवं संदेश वाहक के महत्व का ज्ञान कराना
- ❖ तार्किकता की क्षमता का विकास करना
- ❖ श्रवण कौशल की क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाएगा।
- ❖ अध्यापक विषय को समझाते हुए संदेश भेजने के प्राचीन एवं वर्तमान तरीकों पर प्रकाश डालेगा।
- ❖ कक्षा को दो भागों में विभक्त किया जाएगा।



- ❖ एक समूह प्राचीन काल के संदेश वाहकों एवं संदेश भेजने के तरीकों पर चर्चा करेगा तथा दूसरा समूह वर्तमान काल के।
- ❖ शिक्षक यह भी स्पष्ट कर दें कि संदेश के तरीकों में क्या खामियाँ तथा क्या अच्छाईयाँ थी इस पर भी विद्यार्थी चर्चा करें तथा उदाहरण सहित तर्क देकर अपनी बात स्पष्ट करें।
- ❖ सभी विद्यार्थियों की सहभागिता अनिवार्य है।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को परिचर्चा के लिए 15-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ जब एक समूह परिचर्चा करेगा उस समय दूसरा समूह ध्यानपूर्वक सुनेगा एवं शिक्षक अवलोकन करेंगे।
- ❖ इस गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय सुसंबद्धता	2
तार्किकता	1
उपयुक्त उदाहरण	1
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी सूचना, तर्क एवं जानकारी देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ सभी विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. प्रकृति से संबंधित कविताएँ संकलन / लेखन तथा वाचन

उद्देश्य

- ❖ सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ वाचन कौशल का विकास करना
- ❖ खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देना
- ❖ प्रकृति के प्रति सचेत करना
- ❖ वाचन दक्षता का विकास करना



Unit 13

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम प्रकृति से संबंधित कुछ कविताओं का परिचय दे दें।
- यह कार्य गतिविधि से दो दिन पूर्व दिया जाएगा।
- छात्रों को स्वयं कविता रचना की प्रेरणा दी जा सकती है।
- मूल्यांकन के आधार अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दें।
- गतिविधि के समय प्रत्येक छात्र एक-एक करके कविता पाठ करेंगे।
- इस पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, लय)	2
कविता का चयन / स्वरचित	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन के आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि

- जो छात्र स्वरचित कविता पाठ करें उनकी सराहना की जाए तथा अन्य छात्रों को भी इसकी ओर प्रेरित किया जाए।
- जो छात्र ठीक से वाचन नहीं कर पाए उनकी इस कार्य में मदद की जाए।

रचनात्मक मूल्यांकन - उत्साह, अट नहीं रही है



यह दंतुरित मुस्कान, फसल

नागार्जुन

प्रदत्त कार्य - 1. हंसना स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। अनुभूति एवं अनुभव लेखन।

उद्देश्य

- हंसी के महत्व का बोध कराना।
- हंसी का स्वास्थ्य के साथ सम्बन्ध समझाना।
- वातावरण को प्रफुल्लित बनाना।
- तनाव दूर करना।
- श्रवण की दक्षता का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में हंसते हुए प्रवेश करेगा इस प्रकार छात्र भी मुस्कुरा कर उत्तर देंगे।
- तत्पश्चात् शिक्षक छात्र को निर्देश देगा कि आज हम सब मिलकर हंसेंगे। सब छात्र हाथ उपर की ओर करके पहले बिना आवाज के फिर आवाज के साथ खुलकर हँसेंगे।
- हंसी द्वारा स्वास्थ्य पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव की चर्चा कक्षा में की जाएगी। इसके बाद प्रत्येक छात्र को इस गतिविधि के विषय में अपने अपने अनुभव एक अनुच्छेद में लिखने के लिए कहा जाएगा। वे कृत्रिम एवं वास्तविक हंसी के अन्तर को भी समझेंगे।
- इस पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
- इसके साथ-साथ छात्रों का मार्गदर्शन भी किया जायेगा।
- मूल्यांकन आधार बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जाएँगे।
- शिक्षक अपनी सुविधानुसार मूल्यांकन कर लेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

मौलिकता	2
प्रामाणिकता	2
समग्र प्रभाव	1

रचनात्मक मूल्यांकन - यह दंतुरित मुस्कान, फसल



- ❖ अध्यापक अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं को आधार मानकर भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ कक्षा के वातावरण को सदैव खुशहाल बनाया जाए।
- ❖ छात्रों की समस्या का निदान करके उनके तनाव को दूर किया जाए।
- ❖ यह प्रक्रिया प्रतिदिन कक्षा लेने से पूर्व की जा सकती है।

प्रदत्त कार्य - 2. 'अतिथि देवो भवः' वाद विवाद

उद्देश्य

- ❖ चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ तार्किकता की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ विचार विश्लेषण की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास करना
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विषय की जानकारी देंगे तथा प्राचीन काल में अतिथि का महत्व तथा आज के युग में अतिथि सत्कार पर चर्चा करेंगे।
- ❖ कक्षा को दो समूहों में विभाजित किया जाएगा एक समूह विषय के पक्ष में तथा दूसरा विपक्ष में।
- ❖ समूह चर्चा एवं लेखन के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ इस दौरान शिक्षक दोनों समूहों में घूमकर छात्रों का मार्गदर्शन करेगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।
- ❖ समूह चर्चा के पश्चात् प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक समूह के प्रतिनिधि को 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
प्रस्तुतीकरण (सटीक तर्क भाषा)	2
उपयुक्त उदाहरण	1



टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे प्रस्तुतीकरण के लिए सराहना की जाए।
- सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागी होने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 3. दाँतों की सफाई और उसका स्वास्थ्य पर प्रभाव - परिचर्चा

उद्देश्य

- दाँतों की सफाई का महत्व समझाना
- दाँतों की सफाई स्वास्थ्य पर किस तरह प्रभाव डालती है, इसे बारीकी से समझाना।
- दाँतों की सुंदरता का व्यक्तित्व से संबंध समझाना।
- वाचन की दक्षता में वृद्धि करना
- सामूहिकता व मेल जोल की भावना का विकास करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक परिचर्चा के विषय को कक्षा में स्पष्ट कर देगा।
- प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व अध्यापक कक्षा को समूहों में बांट देगा।
- प्रत्येक समूह को सोचने के लिए 5-10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- अगले चरण में सभी समूहों को आपस में परिचर्चा के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- अध्यापक सभी समूहों की परिचर्चा ध्यान से सुनेंगे।
- सभी समूहों के मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखवा दिया जाएगा।
- मूल्यांकन बिन्दु पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

तर्क एवं प्रमाण	2
विषय वस्तु	2
प्रस्तुति	1



- ❖ मूल्यांकन आधार अध्यापक स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

- ❖ सामान्य या अतिसामान्य प्रस्तुति करने वाले विद्यार्थियों का उचित मार्ग दर्शन देकर प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ प्रतिभासंपन्न विद्यार्थियों की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य - 4. जल ही जीवन है (स्लोगन) नारे लिखना व बुलवाना

उद्देश्य

- ❖ विचारों की सजगता का ज्ञान कराना
- ❖ निरीक्षण शक्ति में वृद्धि करना
- ❖ लेखन दक्षता का विकास करना
- ❖ श्रवण शक्ति सामर्थ्य की परख कराना

प्रक्रिया

- ❖ दो नारे अध्यापक श्यामपट्ट पर लिख देगा और छात्रों से कहा जायेगा कि वे उससे कुछ अलग लिखें।
- ❖ अध्यापक दस मिनट छात्रों को सोचने का समय देगा कि वे 'जल ही जीवन है' पर नारा सोचें तथा लिखें।
- ❖ उदाहरण - 'जल बिन सब सून'
'अब पता चला पानी क्या वस्तु है।' यह कह कर अध्यापक विद्यार्थियों को जल का महत्त्व समझाएगा।
- ❖ प्रत्येक छात्र दो-दो नारे लिखेंगे। अध्यापक द्वारा छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा।
- ❖ लिखने के उपरान्त सभी छात्र नारे प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा और मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सटीक शब्द चयन	1
सार्थकता	2
समग्र प्रभाव	1
तुकबंदी	1



प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वोत्तम दो नारे श्यामपट्ट पर लिखे जाएं और उन छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- ❖ योजनानुसार कार्य करने वाले विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन किया जाए।
- ❖ अच्छे नारों को विद्यालय प्रदर्शन पट्ट पर लगाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य - 5. नदियों के नाम और क्षेत्र मानचित्र पर दर्शाना।

उद्देश्य

- ❖ नदियों और भारतीय संस्कृति का संबंध बतलाना।
- ❖ तीर्थ स्थानों की जानकारी देना
- ❖ संसार के मानचित्र पर अन्य नदियों की जानकारी
- ❖ भौगोलिक ज्ञान की वृद्धि करना।

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य।
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में नदियों के नाम पूछेगा। छात्र द्वारा बोले गए नाम श्यामपट्ट पर लिखेगा।
- ❖ नदी के नाम के सामने वह किस क्षेत्र में प्रवाहित होती है लिख दिया जायेगा जैसे
 - * गंगा - हरिद्वार, कानपुर, इलाहाबाद
 - * यमुना - दिल्ली, मथुरा
 - * व्यास - पंजाब
 - * कृष्णा - दक्षिण भारत
- ❖ भारत के मानचित्र द्वारा नदियों का क्षेत्र दर्शाया जायेगा।
- ❖ प्रत्येक छात्र को भारतवर्ष का मानचित्र दिया जाएगा और वे नदियों का नाम और क्षेत्र दर्शाएंगे।
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जाएगा एवं मूल्यांकन बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जायेगा।



Unit 14

रचनात्मक मूल्यांकन - यह दंतुरित मुस्कान, फसल

- अध्यापक सुविधानुसार मूल्यांकन कर लेंगे।

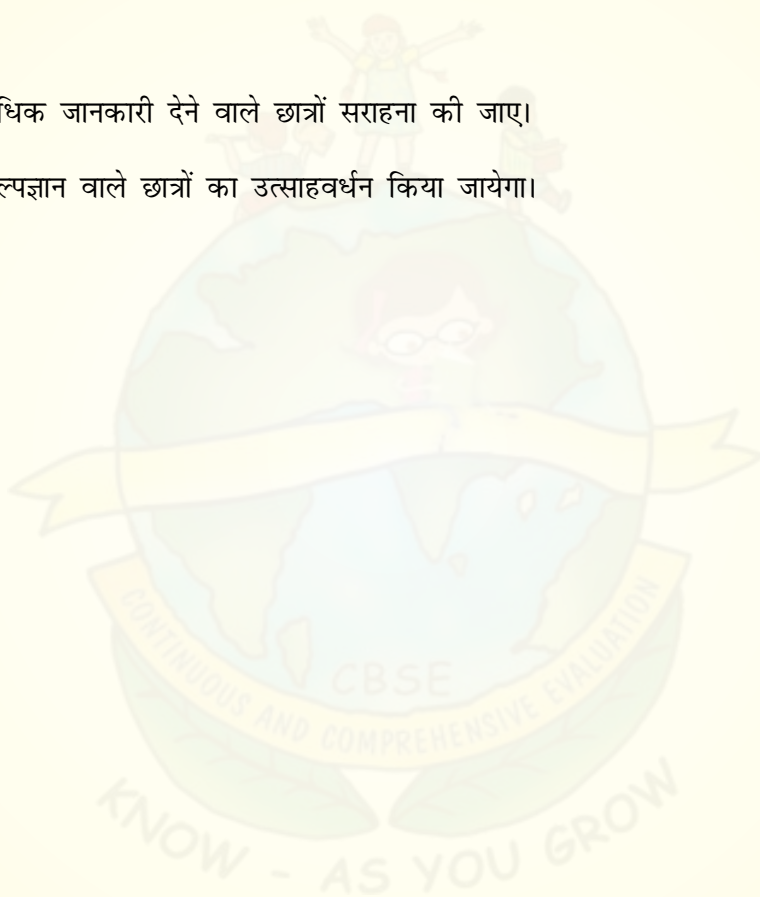
मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय की जानकारी	2
मानचित्र भरना	2
समग्र प्रभाव	1

प्रतिपुष्टि

- अधिक जानकारी देने वाले छात्रों सराहना की जाए।
- अल्पज्ञान वाले छात्रों का उत्साहवर्धन किया जायेगा।



छाया मत छूना

गिरिजा कुमार माथुर

प्रदत्त कार्य - 1. 'छाया' शब्द के अनेकार्थी प्रयोग

उद्देश्य

- शब्द भंडार में वृद्धि कराना
- चिंतन शक्ति का विकास करना
- पल्लवन क्षमता का विकास करना
- लेखन का कौशल विकसित करना
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास करना
- सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक 'छाया' शब्द के कुछ अर्थ स्पष्ट करेगा। जैसे -
 - * छाया - यानी परछाई, व्यक्ति की छाया
 - * छाया - घेरा जैसे पेड़ की छाया
 - * छाया - जैसे ग्रहों की छाया, दुष्प्रभाव
 - * छाया - छायाकृति जैसे शैडो
 - * छाया - छायाचित्र - फोटो
 - * छाया - असर, गुरुजनों की छाया उसके कार्य पर दिखाई देती है।
 - * छाया - संरक्षण, जैसे माता पिता की छाया
 - * छाया - एक अंधविश्वास जैसे उस व्यक्ति की बुरी छाया
 - * छाया - फैलना, जैसे सब ओर छा जाना
 - * छाया - प्रतिबिंब, जैसे दर्पण या पानी में दिखना
- प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व अध्यापक कक्षा को दो-दो के समूहों में विभक्त करेगा।
- सभी समूह छाया के अनेक अर्थों पर विचार कर उन पर वाक्य बनाएँगे।
- अध्यापक 15 मिनट का समय सभी विद्यार्थियों को अपने अपने वाक्य और छाया के अनेक अर्थ सुनाने के लिए दे सकता है।

रचनात्मक मूल्यांकन - छाया मत छूना



Unit 15

रचनात्मक मूल्यांकन - छाया मत छूना

- ♦ अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

शब्दों के अधिकतम अर्थ	2
शब्द का सही प्रयोग	2
प्रस्तुति	1

टिप्पणी

- ♦ अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्मित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ♦ अधिक और अच्छे अर्थ बताने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ♦ अन्य छात्रों का मार्गदर्शन कर उन्हें प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. सुखद - दुखद स्मृतियाँ (प्रपत्र)

उद्देश्य

- ♦ स्मरण शक्ति का विकास।
- ♦ सुखद स्मृतियों द्वारा आनन्द का आभास।
- ♦ एक दूसरे के दुख बाँटना एवं हिम्मत बढ़ाना।
- ♦ लेखन दक्षता में प्रवीणता।

प्रक्रिया

- ♦ अध्यापक प्रपत्र के संकेतों को श्यामपट्ट पर लिखेगा और छात्र उसके अनुसार प्रपत्र भरेंगे।
- ♦ बीच बीच में अध्यापक द्वारा बच्चों को मार्ग दर्शन किया जायेगा।

प्रपत्र

- घटना जो घटी
- कब हुई
- कहाँ हुई
- कैसे हुई
- क्यों हुई
- उसका प्रभाव



7. परिणाम
8. दूसरी घटना से सहसम्बन्ध
9. वर्तमान में याद आने का कारण
10. मानस पटल पर उसका प्रतिबिम्ब

❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जाएगा एवं मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।

❖ अध्यापक प्रपत्र एकत्र कर सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

एक से दस सही होने पर	5
एक से आठ सही होने पर	4
एक से छ सही होने पर	3
एक से चार सही होने पर	2
चार से कम	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ बुद्धिमान छात्रों के कार्य को सराहा जाए।
- ❖ अन्य छात्रों को अच्छा कार्य करने की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य - 3. फूलों के नाम (सूची बनाना) सामूहिक कार्य

उद्देश्य

- ❖ विभिन्न फूलों के नामों से परिचित करवाना।
- ❖ रंगों की विविधता की जानकारी।
- ❖ प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।
- ❖ फूलों के माध्यम से कोमल भाव जगाना।
- ❖ निरीक्षण एवं नाम जानने की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ जिज्ञासा भाव उत्पन्न करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम विद्यार्थियों को चार समूहों में विभक्त कर दिया जायेगा।
- ❖ अध्यापक प्रत्येक समूह से बीस फूलों के नाम लिखकर सूची बनाने को कहेंगे।



Unit 15

रचनात्मक मूल्यांकन - छाया मत छूना

- ❖ जो छात्र चित्र कला में प्रवीण हैं वे अपने समूह में पांच फूल बनाकर रंग भरेंगे। (एक समूह के लिए)
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश दिया जायेगा।
- ❖ मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
- ❖ अध्यापक कक्षा में फूलों के नाम लिखकर या बोलकर मूल्यांकन करवा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक बिंदु

सतरह से बीस फूल	5
तेरह से सोलह फूल	4
नौ से बारह फूल	3
पांच से आठ फूल	2
एक से चार फूल	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ अध्यापक देखेंगे कि समूह का प्रत्येक छात्र गतिविधि में भाग ले रहा है अथवा नहीं।
- ❖ समयानुसार कार्य न करने वालों का उत्साह वर्धन करें।
- ❖ समर्थ छात्रों को शाबासी दें।
- ❖ सर्वोत्तम दो फूलों के चित्र कक्षा में प्रदर्शन पट्ट पर लगाए जाएँ।

प्रदत्त कार्य - 4. आशु भाषण (दिए गए विषयों पर)

उद्देश्य

- ❖ चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ आत्मनिर्भरता का ज्ञान विकसित कराना।
- ❖ वाचन कौशल का विकास कराना।
- ❖ आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विषय की जानकारी देंगे।
- ❖ विद्यार्थियों की सहायता से निम्नलिखित विषयों को एक-एक पर्ची पर लिखकर मोड़कर रख दिया जाएगा। विषय जैसे - जीवन में यश की चाह, वैभव की चाह, सफलता की चाह, नेता बनने की चाह, समाज सेवी होने की चाह, विदेश जाने की चाह, सुख प्राप्ति की चाह इत्यादि।



- ❖ विद्यार्थी एक एक करके आएंगे एक पर्ची उठाएँगे तथा उस पर लिखे विषय के संबंध में अपने विचार व्यक्त करेंगे (पर्ची मोड़कर फिर से उसी स्थान पर रख दी जाएगी)।
- ❖ एक विद्यार्थी को अधिकतम 1 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ एक कालांश में प्रक्रिया संपन्न हो जाएगी।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय से संबद्धता	2
प्रस्तुतीकरण (भाषा उच्चारण)	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन के आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे एवं सार्थक भाषण की सराहना की जाए।
- ❖ शिक्षक सभी विद्यार्थियों को विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें, यदि छात्र नहीं कर पा रहा हो तो उसे और अवसर प्रदान करें।

प्रदत्त कार्य - 5. स्वरचित कविता / तुकबंदी

उद्देश्य

- ❖ मौलिकता का विकास करना।
- ❖ सृजनात्मकता का गुण उत्पन्न करना।
- ❖ काव्य सौन्दर्य को अनुभव करना।
- ❖ हृदय में सहृदयता उत्पन्न करना।
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में विषय को स्पष्ट करेगा।
- ❖ सभी विद्यार्थियों को लिखने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा। कविता का विषय कोई भी हो सकता है।



Unit 15

रचनात्मक मूल्यांकन - छाया मत छूना

- ❖ विद्यार्थियों के द्वारा लिखने के समय का अधिकतम उपयोग होना चाहिए।
- ❖ एक कालांश में प्रक्रिया संपन्न हो जाएगी।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिख देगा।
- ❖ अध्यापक सामग्री एकत्र कर सुविधानुसार मूल्यांकन कर सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
मौलिकता	2
प्रभावशाली लेखन	2
प्रस्तुति	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की सुंदर रचना के लिए सराहना की जाए।
- ❖ सामान्य या अति सामान्य रचना करने वाले विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन किया जाए।
- ❖ सामान्य तुकबंदी के लिए प्रोत्साहित करें।



कन्यादान

त्रधुतुराज

प्रदत्त कार्य - 1. नारी एक रूप अनेक - समूह - चर्चा और प्रस्तुति

उद्देश्य

- नारी जीवन को करीब से देखना।
- नारी जीवन की विशेषताओं को समझना।
- संवेदनशीलता उत्पन्न करना।
- सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- वाचन, लेखन, श्रवण एवं पठन की क्षमताओं को परिष्कृत करना।

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम अध्यापक पूरी कक्षा को विषय समझाएगा।
- प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व कक्षा को पांच समूहों में बांटा जाएगा।
- सभी समूह आपस में 5-10 मिनट के लिए चर्चा करेंगे।
- प्रक्रिया के अगले चरण में समूह में से एक वक्ता अपने समूह के विचार सबके समक्ष रखेगा।
- इस प्रक्रिया में 15 मिनट लगेंगे।
- यह सारी प्रक्रिया एक कालांश में संपन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

परस्पर विचार विमर्श

1

तर्क एवं प्रमाण

2

प्रस्तुति

2

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन के आधार स्वयं भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी प्रस्तुति करने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- कार्य ठीक से न कर पाने वाले विद्यार्थियों को सही निर्देशन देकर प्रोत्साहित किया जाए।



Unit 16

प्रदत्त कार्य - 2. नारी सशक्तिकरण - सामूहिक वार्ता एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य

- ❖ नारी के प्रति संवेदनशील बनाना
- ❖ सामान्य ज्ञान का विकास कराना
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ भाषण कला-कौशल का विकास
- ❖ नारी के प्रति सम्मान भावना का विकास

प्रक्रिया

- ❖ यह सामूहिक कार्य है।
- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देते हुए यह भी संकेत करेंगे कि स्त्री के लिए आत्मभिरता के साथ आत्म रक्षा भी जरूरी है।
- ❖ पांच-छह विद्यार्थियों का समूह होगा। सभी समूहों को विचार विमर्श करके मुख्य बिंदुओं को लिखने के लिए मुख्य बिंदुओं को 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ इस बीच अध्यापक सभी समूहों के समीप जाकर छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।
- ❖ समूह चर्चा के पश्चात् प्रत्येक समूह का प्रतिनिधि छात्र विचार व्यक्त करेगा। इस प्रक्रिया के लिए प्रत्येक समूह को 2-3 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय की पूर्ण जानकारी	2
प्रस्तुतीकरण (भाषा, उच्चारण)	1
तार्किकता	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उचित मूल्यांकन के आधार बिन्दु निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ विषय से संबद्ध पूर्ण जानकारी देने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।
- ❖ लड़कियों को 'आत्मरक्षा' की ट्रेनिंग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।



प्रदत्त कार्य - 3. आग हमारा मित्र भी शत्रु भी- एक परिचर्चा

उद्देश्य

- ❖ वाचन कौशल का विकास
- ❖ श्रवण शक्ति को बढ़ाना
- ❖ भारतीय संस्कृति में अग्नि का स्थान, जानकारी देना।
- ❖ सामान्य जीवन में अग्नि से सावधानी।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक अग्नि के विषय में बताएगा, तत्पश्चात् छः छः विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएंगे। अग्नि के दोनों पक्षों को अध्यापक स्पष्ट करेगा।
- ❖ समूहों से कहा जाएगा कि वे इस विषय पर परिचर्चा करें, एक दूसरे की बात सुनें और समूह का एक छात्र दस वाक्यों में उसे संकलित करे।
- ❖ इस दौरान अध्यापक निरीक्षण करेगा और समूह की गतिविधि के अनुसार साथ-साथ मूल्यांकन करता जायेगा।
- ❖ इस गति विधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा। मूल्यांकन बिंदु श्याम पट्ट पर लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

वाचन कौशल

2

लेखन कौशल

2

सम्पूर्ण प्रभाव

1

प्रतिपुष्टि

- ❖ सर्वश्रेष्ठ पंक्तियों को पढ़कर सुनाया जाए और उस समूह को शाबासी दी जाए।
- ❖ कमजोर विद्यार्थियों / समूह का मार्ग दर्शन किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 4. भारतीय नारी 'परम्पराबद्ध-परम्परा मुक्त' वाद विवाद

उद्देश्य

- ❖ 'आज के युग में नारी का योगदान' इसे समझाना।
- ❖ नारी के प्रति समाज की सोच में बदलाव, एक जानकारी।
- ❖ परिवार में नारी की स्थिति जानना।



Unit 16

रचनात्मक मूल्यांकन - कन्यादान

- आज की नारी एवं पचास साल पहले की नारी की तुलना करना।
- विद्यार्थियों में संवेदनशीलता उत्पन्न करना।
- तुलनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास।
- वाचन कौशल का विकास।

प्रक्रिया

- अध्यापक छात्रों को दो समूहों में बांट देगा। एक समूह परम्पराबद्ध और दूसरा समूह परम्परामुक्त नारी के विषय में बोलेगा।
- दो छात्रों को निर्णायक बनाया जायेगा जो वक्ता की योग्यतानुसार अंक देंगे।
- अध्यापक यह ध्यान रखेगा कि प्रत्येक छात्र को कुछ वाक्य बोलने का अवसर मिले। इस गतिविधि के लिए एक कालांश दिया जायेगा और मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
प्रस्तुतीकरण	2
भाषायी दक्षता	1

प्रतिपुष्टि

- उचित ढंग से बोलने वाले और अच्छी सामग्री देने वाले छात्रों की सराहना की जायेगी।
- संकोची छात्रों को बोलने के लिए प्रेरित किया जायेगा।

प्रदत्त कार्य - 5. विवाह का निमंत्रण पत्र तैयार करना।

उद्देश्य

- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- पत्र लेखन कौशल का विकास करना
- कलात्मकता की ओर रुझान कराना
- मौलिक चिंतन की ओर उन्मुख करना

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देगा। कविता पढ़ाने से पूर्व ही विभिन्न प्रकार के निमंत्रण पत्र की ओर ध्यान रखने के लिए संकेत देगा। जिससे विद्यार्थी मानसिक रूप से गतिविधि के लिए तैयार रहें।



- गतिविधि से एक दिन पूर्व संबंधित सामग्री लाने के लिए कहा जाएगा (सामग्री जैसे - रंगीन चार्ट पेपर, गोटा, डोरी, रंग आदि सजावट का सामान)।
- गतिविधि के समय सभी छात्र कक्षा में किसी लड़की या लड़के (भाई-बहन) के विवाह का निमंत्रण पत्र अपनी इच्छानुसार डिजाइन में काट कर सजाएँगे तथा उस पर संदेश लिखेंगे।
- इस दौरान अध्यापक कक्षा में घूम-घूम कर विद्यार्थियों का निरीक्षण करेंगे।
- इस पूरी प्रक्रिया के लिए एक कालांश का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- निमंत्रण पत्र तैयार होने पर अध्यापक उनका संग्रह करेंगे तथा सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

साज सज्जा	2
विषय वस्तु	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सुन्दर तथा आकर्षक निमंत्रण पत्र की सराहना की जाए।
- अच्छी कृतियों को विद्यालय प्रदर्शन बोर्ड पर लगाया जा सकता है।





संगतकार

मंगलेश डबराल

प्रदत्त कार्य - 1. पर्दे के पीछे कार्य करने वाले कलाकारों की भूमिका बताना।

उद्देश्य

- सामान्य ज्ञान का विकास करना।
- सहभागिता की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- कार्य में रोचकता उत्पन्न करना।
- कार्य संकलन प्रक्रिया का विकास करना।
- लेखन / पठन कला का विकास करना।

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा में इन कलाकारों की भूमिका के विषय में जानकारी देगा और छात्रों से किसी विशेष कला से सम्बन्धित कलाकारों के कार्यों का उल्लेख करने के लिए कहा जायेगा।
- छात्रों को आठ समूहों में विभक्त किया जायेगा, प्रत्येक समूह कलाकार के कार्य के विषय में लिखेगा उसके कार्यों का संकलन करके सूची तैयार करेगा। विषय नीचे दिए जा रहे हैं।

संगीतकार, निर्देशक, वेशभूषा-सज्जाकार, कहानीकार, श्रृंगार प्रसाधक, छायाकार, नृत्य निर्देशक, ध्वनि नियंत्रक।

- उपर्युक्त संकेतों को श्याम पट्ट पर लिखा जायेगा।
- समूह चर्चा एवं लेखन के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इसके साथ-साथ मूल्यांकन बिन्दु भी श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
- लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह का प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सामान्य ज्ञान

2

संकलन

1

सामूहिक प्रयास

1



Unit 17

संगतकार - मूल्यांकन रचनात्मक

प्रस्तुतीकरण	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- इस प्रक्रिया के लिए शिक्षक स्वतन्त्र रूप से मूल्यांकन आधार बना भी सकता है।

प्रतिपुष्टि

- शिक्षक प्रत्येक समूह में जाकर छात्रों का सामान्य ज्ञान परखेंगे।
- छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा।
- शिक्षक सभी छात्रों को प्रतिभागी होने की प्रेरणा अवश्य दें।
- सर्वोत्तम संकलन सूची को प्रदर्शित किया जायेगा।
- सभी छात्रों को सक्रिय रहने की प्रेरणा दी जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. सहायक कलाकारों की भूमिका - सामूहिक गान

उद्देश्य

- संगीत का सामान्य ज्ञान देना।
- मिलजुल कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- संगीत के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाना।
- वाचन एवं श्रवण दक्षताओं का परिष्कार करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक सर्वप्रथम कक्षा में समझाएगा कि मुख्य कलाकार - गायक का ही महत्व नहीं होता है बल्कि उसकी आवाज में प्रभावोत्पादकता लाने के लिए वाद्य यंत्रों को बजाने वाले, उसके पीछे से आलाप लेने वालों की भी भूमिका महत्वपूर्ण होती है।
- इसी बात को स्पष्ट करने के लिए 'समूह गान' कराया जाएगा जिसमें सभी की आवाज एक होकर गूँजेगी। अध्यापक चार समूह बना सकता है।
- अध्यापक अपनी इच्छा से कोई भी गीत विद्यार्थियों को दे सकता है। देशभक्ति, मानवता, समाज सेवा, भजन इत्यादि।
- इसके लिए विद्यार्थियों को दो दिन पहले बताना होगा।
- सभी विद्यार्थियों की प्रतिभागिता अनिवार्य है।



- कुछ विद्यार्थी वाद्य यंत्र भी बजा सकते हैं
- संगीत की बारीकियों की अपेक्षा सुर में सुर मिलाकर गाने को प्रधानता दी जाए।
- यह प्रक्रिया एक आनंददायक प्रक्रिया होगी।
- इसके मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लग सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
सक्रिय प्रतिभागिता	1
गीत का चयन	1
प्रस्तुतीकरण (लय, उच्चारण)	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- सुमधुर गायन करने वाले समूह की सराहना की जाए।
- अन्य समूहों को खुलकर मिलकर गाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- संगीत शिक्षक से मार्ग दर्शन दिलाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य - 3. अन्त्याक्षरी

उद्देश्य

- कविता के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- ध्यानपूर्वक श्रवण की आदत डालना।
- स्मरणशक्ति का विकास करना।
- गायन / सस्वर वाचन में अभ्यस्त कराना।
- श्रवण एवं वाचन कौशल का परिष्कार।

प्रक्रिया

- अन्त्याक्षरी प्रारंभ करने से पूर्व अध्यापक अन्त्याक्षरी के नियम कक्षा में स्पष्ट कर देगा।
- प्रक्रिया प्रारंभ करने से पूर्व अध्यापक कक्षा को दो दलों में विभक्त कर देगा।



Unit 17

संगतकार - रचनात्मक मूल्यांकन

- दोनों दल क्रमवार कविता गाएँगे।
- 20 मिनट में कम से कम 10 चक्र चलाए जा सकते हैं।
- अध्यापक मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
कविता का चयन	1
कविता की प्रभावशाली प्रस्तुति	1
भाषा	1
लय तथा हाव-भाव	1
समय (त्वरित)	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकेंगे।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी और सुंदर भावाभिव्यक्ति के लिए सराहना की जाए।
- अन्य विद्यार्थियों को अच्छे प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहित किया जाए।
- स्वतः तुरंत कविता बोलने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 4. पसंदीदा वाद्य यंत्र का सचित्र वर्णन

उद्देश्य

- वाद्य यंत्रों से परिचित कराना
- सामान्य ज्ञान की वृद्धि कराना
- विचाराभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न करना
- रचनात्मकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- शिक्षक कविता पाठन से पूर्व ही विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों की चर्चा करेंगे। साथ ही अपनी पसंद के वाद्य यंत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करने का संकेत देंगे। (इंटरनेट पुस्तकालय)
- कविता पठन के उपरान्त यह गतिविधि कराई जाएगी।



- प्रत्येक विद्यार्थी को चार्ट पेपर काटकर (लगभग (6 X 6) विद्यार्थी की सहायता से कटवाया जा सकता है।) कक्षा में बांटे जायेंगे।
- विद्यार्थी चार्ट पेपर पर अपनी पसंद का वाद्य यंत्र पेन्सिल या स्कैच पेन से चित्रित करेंगे तथा कुछ वाक्य उसके विषय में चित्र के नीचे लिखेंगे।
- इस प्रक्रिया के लिए 25 से 30 मिनट का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- प्रक्रिया समाप्त होने के पश्चात् शिक्षक सबके पेपर एकत्र कर लेंगे तथा सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।
- सभी छात्रों के पेपर मूल्यांकन के पश्चात् कक्षा प्रदर्शन पट्ट में लगाए जाएंगे ताकि सभी विद्यार्थी उन्हें पढ़ लें।
- अध्यापक चाहे तो उन्हें कक्षा में पढ़वा भी सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
चित्रांकन	2
विषय की जानकारी	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छा कार्य करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- शिक्षक छात्रों को विभिन्न वाद्य यंत्रों की जानकारी देंगे तथा इंटरनेट पर खोज करने की प्रेरणा देंगे।

प्रदत्त कार्य - 5. दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले संगीत के 'रियालिटी शो' पर समीक्षा।

उद्देश्य

- आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना
- विषय पर गहरी जानकारी रखने की प्रवृत्ति का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- वाचन कौशल का विकास
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास



Unit 17

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विषय से संबंधित जानकारी देगा।
- कक्षा को आठ समूहों में विभाजित किया जाएगा।
- समूह चर्चा तथा लेखन के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूम कर छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- समूह चर्चा एवं लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह का प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा।
- प्रत्येक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए 3 मिनट का समय दिया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

विषय से संबद्धता	2
विचार विश्लेषण	2
प्रस्तुतीकरण / समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- शिक्षक मूल्यांकन के आधार बिन्दु स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे विचार एवं तर्क देने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।
- संगीत के अतिरिक्त अन्य विषयों से संबंधित दूरदर्शन 'रियलिटी - शो' पर चर्चा की जा सकती है।



माता का आँचल

शिवपूजन सहाय

प्रदत्त कार्य - 1. आंचलिक शब्दों का चयन और उनके अर्थ बताना

उद्देश्य

- भाषा ज्ञान में अभिवृद्धि करना।
- आंचलिक शब्दों की सहज, स्वाभाविक स्थिति को समझाना।
- आंचलिक शब्द प्रयोग से वातावरण सृष्टि होती है, स्पष्ट करना।
- शब्दों के अर्थ, प्रयोग, विविधता आदि का ज्ञान कराना।
- विद्यार्थियों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- भावग्रहण क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक आंचलिक शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग को पाठ के आधार पर स्पष्ट करेगा।
- प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए कक्षा को दो समूहों में विभक्त कर देगा।
- एक समूह शब्द बोलेगा दूसरा पक्ष उसका अर्थ बताएगा।
- यह क्रम अदल-बदल सकता है। यानी पूछने और बताने की प्रक्रिया एक पक्ष से दूसरे पक्ष में बदली जा सकती है।
- इस प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।
- मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक बिन्दु

शब्दों का उच्चारण	2
अर्थ का स्पष्टीकरण	2
उच्चारण की स्पष्टता	1

टिप्पणी

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- स्पष्ट उच्चारण व सही अर्थ बताने वाले विद्यार्थियों की प्रशंसा की जाए।



Unit 18

- सक्रिय प्रतिभागिता न लेने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 2. बाल मंडली के खेल

उद्देश्य

- बचपन के खेलों का महत्व समझाना।
- खेलों द्वारा उत्पन्न मेलजोल, परिचय, प्रगाढ़ता की ओर ध्यान दिलाना।
- बचपन की प्रत्येक प्रक्रिया की सूक्ष्म पहचान और योगदान को जानना।
- हृदय में कोमल भावनाओं को जगाना।
- शारीरिक सक्रियता व स्वास्थ्य के लिए आवश्यकता बताना।
- मिलजुलकर कार्य करने की प्रेरणा देना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा के वातावरण को सजीव एवं प्रसन्नतादायक बनाने के लिए कक्षा के कुछ विद्यार्थियों से बचपन में बाल मंडली द्वारा किए जाने वाले खेलों का प्रदर्शन कराएगा।
- तालियाँ बजा बजाकर 'पोशम पा भई पोशम पा' इत्यादि गाना गाकर खेलना और वैसा ही अभिनय करना।
- जमीन पर लकीरें खींचकर स्टापू खेलना।
- गुड्डे गुड़िया का खेल खेलना।
- घर घर खेलना।
- डॉक्टर और मरीज का खेल।
- अध्यापक बनकर औरों को पढ़ाना, रौब जमाना, डाँटना, पीटना आदि।
- रेत का घर बनाना और तोड़कर भाग जाना।
- अध्यापक कक्षा में कुछ समूह बनाकर प्रत्येक समूह से एक एक बचपन का खेल करा सकता है।
- कक्षा में एक आनंददायक वातावरण तैयार होगा जिससे पाठ समझने में सुगमता होगी।
- अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।
- यह प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सहज स्वाभाविक अभिनय	2
संवाद-प्रस्तुति	2
समग्र प्रभाव	1



टिप्पणी

- अध्यापक अन्य मूल्यांकन आधार भी निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- सभी विद्यार्थियों की प्रतिभागिता के लिए सराहना की जाए।
- सुस्त एवं शिथिल विद्यार्थियों को आनंद लेकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 3. 'आज की शिक्षा बचपन को निगल रही है' विषय पर कक्षा में वाद विवाद

उद्देश्य

- आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बचपन की कोमलता पर पुस्तकों का व विद्यालय का दबाव समझाना।
- विषय के पक्ष और विपक्ष में बोलने की क्षमता का विकास करना।
- तार्किकता एवं प्रभावशीलता उत्पन्न करना।
- वाचन कौशल का विकास।
- प्रत्युत्पन्नमति का गुण विकसित करना।
- धैर्य एवं सहनशीलता के गुण का विकास करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा।
- प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए दो समूह बनाएगा पक्ष और विपक्ष।
- दोनों समूहों को सोचने के लिए पांच मिनट का समय दिया जाएगा।
- उस समय अध्यापक सभी विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रेरित करेगा।
- अध्यापक 20-25 मिनट के समय में वाद विवाद कराएगा।
- प्रत्येक समूह के एक-एक वक्ता को बोलना अनिवार्य होगा।
- मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।
- एक कालांश में प्रक्रिया पूरी हो जाएगी।



Unit 18

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

सटीक तर्क	2
विषय से सम्बद्धता	1
प्रस्तुति में प्रवाह	1
उच्चारण	1

अंक विभाजन

टिप्पणी

- अध्यापक स्वयं भी मूल्यांकन आधार निर्धारित कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- प्रभावशाली ढंग से अपने पक्ष में तर्क देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- संकोची व चुप रहने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 4. “बचपन में दुत्कार, जीवन हो बेकार। बचपन में दुलार, जीवन करे सत्कार।”

समूह चर्चा और प्रस्तुति

उद्देश्य

- बचपन में मां-बाप के प्यार का महत्व बतलाना।
- बचपन में अगर प्यार न मिले तो जीवन भटक जाता है, यह समझाना।
- वात्सल्य और लाड़ दुलार का भावनात्मक महत्व समझाना।
- प्यार की कमी असुरक्षा और अपराध को जन्म देती है।
- मिलजुलकर कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास।
- चिंतन-मनन की क्षमता को उद्दीप्त करना।
- वाचन एवं श्रवण कौशलों की अभिवृद्धि।

प्रक्रिया

- अध्यापक विषय को स्पष्ट करेगा और समझाएगा कि बचपन में मां बाप का प्यार हर बच्चे का अधिकार है।
- कक्षा को समूहों में विभाजित कर देगा।
- प्रत्येक समूह को परस्पर चर्चा के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- अध्यापक उस अंतराल में सभी विद्यार्थियों की चर्चा को ध्यानपूर्वक उनके समूह में जाकर सुनेगा।



- तत्पश्चात् 15-20 मिनट का समय प्रत्येक समूह के प्रस्तुतीकरण को सुनने के लिए दिया जाएगा
- एक कालांश में कार्य हो जाएगा।
- मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

1. विषय वस्तु का विवरण	2
2. सटीक तर्क एवं प्रमाण	1
3. उच्चारण	1
4. समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार मूल्यांकन आधार निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- तर्कों द्वारा अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की सराहना अवश्य की जाए।
- सभी प्रतिभागियों की प्रतिभगिता अनिवार्य हो, किसी न किसी स्तर पर अवश्य भाग लें।
- सामान्य से कम स्तर की प्रस्तुति देने वाले विद्यार्थियों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य - 5. लोक कथाओं का संकलन

उद्देश्य

- लोक जीवन के स्वरूप से परिचित कराना।
- लोक संस्कृति का महत्व समझाना।
- क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा, रहन सहन की विविधता से परिचित करना।
- लोक कथाओं की मिठास और मिट्टी से जुड़ाव अनुभव कराना।
- लोक भाषा, आंचलिकता की सहजता व अपनत्व से जोड़ना।
- खोजबीन, जिज्ञासा एवं संकलन के गुणों का विकास करना।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा में विषय को अच्छी तरह स्पष्ट कर देगा।
- कक्षा को समूहों में बांट देगा।



Unit 18

रचनात्मक मूल्यांकन - माता का औचल

- प्रत्येक समूह को संकलन के लिए तीन चार दिन पहले बता दिया जाएगा।
- निर्धारित तिथि को प्रत्येक समूह अपनी संकलित लोक कथा को कक्षा में प्रस्तुत करेगा।
- प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह को 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- यह क्रिया एक कालांश में पूरी हो जाएगी।
- मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

लोक कथा का विवरण	1
कथा की रोचकता	1
क्षेत्रीय प्रभाव	1
प्रभावशाली वाचन	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी प्रस्तुति की सराहना अवश्य की जाए।
- निम्नस्तरीय प्रस्तुति के लिए सुधार की संभावना समझाते हुए प्रोत्साहित किया जाए।



जॉर्ज पंचम की नाक

कमलेश्वर

प्रदत्त कार्य - 1. नाक पर मुहावरे बनवाना

उद्देश्य

- मुहावरों के प्रयोग में कुशल बनाना।
- कल्पनाशक्ति को तीव्र करना।
- भाषा के व्यावहारिक स्वरूप को समझाना।
- वाक्य प्रयोग में दक्षता लाना।
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा में दो दो विद्यार्थियों के समूह बनाकर नाक संबंधी चार चार मुहावरे ढूंढने तथा उनके वाक्य प्रयोग करने के लिए देगा।
- सोचने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- लिखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- 15 मिनट अपने अपने मुहावरे वाक्य प्रयोग के साथ सुनाने के लिए दिए जाएंगे।
- मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सही मुहावरों की खोज	2
सही वाक्य प्रयोग	2
सही वाचन	1

प्रतिपुष्टि

- अध्यापक सही कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना करें।
- अतिसामान्य कार्य करने वालों को और प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- अध्यापक के लिए नाक संबंधी मुहावरों की सूची
 - * नाक भौं चढ़ाना
 - * नाक काटना



Unit 19

नाक की पंचम जॉर्ज - रचनात्मक मूल्यांकन

- * नाक रख लेना
- * नाक में दम करना
- * नाक पर मक्खी न बैठने देना
- * नाक कटा कर घूमना
- * नाकों चने चबवाना
- * नाक रगड़ना
- * नाक में बोलना

प्रदत्त कार्य - 2. जॉर्ज पंचम के बारे में सूचनाएँ एकत्र करना।

उद्देश्य

- ❖ इतिहास के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- ❖ सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
- ❖ खोजबीन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ जिज्ञासा बढ़ाना।
- ❖ लेखन एवं वाचन क्षमताओं में निष्णात करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक जॉर्ज पंचम के बारे में जानकारी देगा तथा विद्यार्थियों को इंटरनेट व पुस्तकालय की सहायता से जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।
- ❖ यह सामूहिक प्रक्रिया होगी।
- ❖ प्रत्येक समूह अलग अलग स्रोतों से जानकारी लेगा।
- ❖ एक समूह तस्वीरें लाएगा।
- ❖ दूसरा समूह डाक टिकटों की जानकारी लाएगा।
- ❖ तीसरा समूह तत्कालीन सिक्कों को एकत्रित करेगा।
- ❖ चौथा या पांचवाँ समूह उनके जीवन से संबंधित घटनाओं और जीवन से संबंधित ब्यौरा एकत्रित करेगा।
- ❖ इसके लिए चार दिन का समय दिया जाएगा।
- ❖ निर्धारित कालांश में सभी समूह अपनी एकत्रित सामग्री लाएंगे और कक्षा में अपनी प्रस्तुति देंगे। प्रत्येक समूह को 5-5 मिनट मिलेंगे।
- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख देगा।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
संकलित सामग्री	2
प्रामाणिकता	1
प्रस्तुति	1
भाषायी दक्षता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे व संग्रहणीय कार्य की सराहना भी की जाए तथा कक्षा के प्रदर्शन पट्ट पर भी लगाया जाए।
- ❖ जिनका काम स्तरीय नहीं है उन्हें प्रयासपूर्वक करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 3. विदेश में रहने का आकर्षण - एक प्रपत्र

उद्देश्य

- ❖ अपने सपनों का वैज्ञानिक आधार पर निरीक्षण एवं परीक्षण सिखाना।
- ❖ तर्क बुद्धि से काम लेना सिखाना।
- ❖ विदेशों में जाकर बसने की भावना को कमजोर करना।
- ❖ देश सेवा और समाजसेवा सिखाना।
- ❖ लाभ हानि के आधार पर योजना बनाना सिखाना।
- ❖ लेखन कौशल में प्रवीणता लाना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कक्षा में विषय का स्पष्टीकरण करेगा तथा विषय संबंधी प्रपत्र की प्रति विद्यार्थियों को भरने के लिए देगा।
- ❖ यह प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर होगी।
- ❖ इस प्रक्रिया में लगभग 20-25 मिनट का समय लगेगा।
- ❖ अध्यापक चाहे तो इनका मूल्यांकन बाद में कर सकता है।
- ❖ मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।



Unit 19

नाक की पंचम जोर्ज मूल्यांकन - रचनात्मक

कार्य प्रपत्र

1. किस देश में जाना चाहते हैं?
2. क्यों जाना चाहते हैं ?
3. क्या वहां की शिक्षा का स्तर भारत से बेहतर है?
4. क्या वहाँ कार्य की गुणवत्ता का स्तर ऊँचा है?
5. क्या वहाँ धन दौलत कमाने के अवसर अधिक हैं?
6. क्या आप अपने माता पिता के प्रति उत्तरदायित्व से कतराना चाहते हैं?
7. क्या वहाँ के जीवन का आकर्षण तीव्र है?
8. क्या भारत में पक्षपात व भेदभाव है?
9. क्या आप मातृभूमि के उपकारों को भुला रहे हैं?
10. क्या हर योग्य व्यक्ति को विदेश में बसना चाहिए?

नोट : प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

9-10 सही उत्तर के लिए	5
7-8 सही उत्तर के लिए	4
5-6 सही उत्तर के लिए	3
3-4 सही उत्तर के लिए	2
1-2 सही उत्तर के लिए	1

प्रतिपुष्टि

- सही और स्पष्ट उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- अधिक उत्तर सही न लिखने वालों को सही दिशा निर्देश दिए जाएँ।

प्रदत्त कार्य - 4. चाटुकारिता का बढ़ता चलन - परिचर्चा

उद्देश्य

- सच्ची प्रशंसा एवं चाटुकारिता में अंतर पहचानना।
- चाटुकारिता के बढ़ते प्रभाव के प्रति ध्यान आकर्षित करना।
- चाटुकारिता करने व करवाने से दूर रहना।



- ❖ निरीक्षण शक्ति का विकास करना।
- ❖ चिंतन मनन की क्षमता का विकास करना।
- ❖ सहभागिता के महत्व को समझाना।
- ❖ तार्किकता एवं प्रामाणिकता के प्रति आग्रह उत्पन्न करना।

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम कक्षा में विषय को स्पष्ट करेगा।
- ❖ सम्पूर्ण कक्षा को चार या पांच समूहों में विभक्त कर देगा।
- ❖ प्रत्येक समूह प्रदत्त विषय पर आपस में चर्चा करेंगे।
- ❖ अध्यापक प्रत्येक समूह की गतिविधि का निरीक्षण करेगा।
- ❖ इस प्रक्रिया में 20-25 मिनट लगेंगे।
- ❖ अंत में परिचर्चा से उभरने वाले मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखाया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
तर्क एवं प्रमाण	2
सहभागिता	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक मूल्यांकन आधार स्वयं भी बना सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ जिस समूह ने पूरी निष्ठा एवं लगन से परिचर्चा की उनकी सराहना की जाए।
- ❖ अन्यो को परिचर्चा में पूरे उत्साह से सहभागिता के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. पत्रकारिता प्रजातंत्र का चौथा खंभा है - आशु भाषण

उद्देश्य

- ❖ पत्रकारिता के महत्व को जानना।
- ❖ प्रजातंत्र के अर्थ को समझाना।
- ❖ भाषण कला में प्रवीणता प्राप्त करना।
- ❖ वाचन-कला-दक्षता में कुशलता प्राप्त करना।



Unit 19

नाक की पंचम जोर्ज मूल्यांकन - रचनात्मक

प्रक्रिया

- यह प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर होगी।
- अध्यापक विषय को स्पष्ट करेगा।
- 5 मिनट का समय सोचने के लिए दिया जाएगा।
- सभी बच्चों को कक्षा के सामने 1-1 मिनट बोलने के लिए कहा जाएगा।
- सभी भाषणों के मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।
- मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
सुसम्बद्ध तर्क व प्रमाण	2
भाषा तथा उच्चारण	1

टिप्पणी

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार मूल्यांकन आधार तय करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छे वक्ता तथा आशुभाषण देने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- संकोची एवं तथ्य निरूपित न कर पाने वाले विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन किया जाए।





साना साना हाथ जोड़ें

मधु कांकरिया

प्रदत्त कार्य - 1. किसी प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाकर हिन्दी, अंग्रेजी के महीनों के नाम एवं तिथियां दर्शाते हुए कैलेंडर तैयार करना।

उद्देश्य

- ❖ रचनात्मकता की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- ❖ प्रकृति प्रेम की भावना विकसित करना।
- ❖ हिन्दी की तिथियों एवं महीनों का ज्ञान कराना।
- ❖ कल्पना शक्ति का विकास करना।
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ लेखन कौशल की अभिवृद्धि करना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विषय की पूर्ण जानकारी देंगे।
- ❖ गतिविधि से दो दिन पूर्व शिक्षक छात्रों से कैलेंडर बनाने की सूचना देंगे तथा कक्षा को 12 समूहों में विभक्त कर देंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को एक एक महीने का कैलेंडर बनाने के लिए कहा जाएगा। जनवरी से दिसम्बर तक के महीने। एक-एक महीने के हिसाब से छात्रों को बता दिए जायेंगे तथा सभी विद्यार्थी संबंधित महीनों की तिथियां देख कर या उत्तर पुस्तिका में लिख कर लाएंगे ताकि गतिविधि के दिन उन्हें तिथियां लिखने में आसानी हो। कैलेंडर बनाने की आवश्यक सामग्री जैसे पेपर, स्केच पैन, रंग इत्यादि विद्यार्थी गतिविधि के दिन लेकर आएंगे।
- ❖ गतिविधि के समय प्रत्येक समूह अपने निर्धारित माह के लिए एक प्राकृतिक दृश्य चित्रित करेगा तथा नीचे तिथियां, हिन्दी तथा अंग्रेजी और महीनों के नाम दर्शाए जाएंगे।
- ❖ इस गतिविधि के लिए 30 मिनट का समय दिया जाएगा। सभी विद्यार्थियों का प्रतिभागी होना आवश्यक है। (चित्र के साथ तिथियां अलग से पेपर पर लिखकर लगाई जा सकती है इससे समय की बचत होगी) अलग-अलग विद्यार्थी अलग-अलग कार्य करेंगे।
- ❖ कैलेंडर तैयार करने के बाद प्रत्येक माह के कैलेंडर कक्षा में लगा दिए जाएंगे।
- ❖ गतिविधि के दौरान शिक्षक छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जायेंगे।

Unit 20

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय से संबंधित चित्रण	1
साज सज्जा	1
माह एवं तिथियां	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी रचना के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- छात्रों को हिन्दी तथा अंग्रेजी महीनों के अन्तर स्पष्ट किए जाएँ।
- हिन्दी माह जहां से भी शुरू हो छात्र वहीं से अपने अपने कैलेंडर में लिखें तथा पिछले माह को भी पूरा कराया जाए जैसे यदि हिन्दी माह 15 तारीख से प्रारम्भ होता है तो 1 से 14 पर भी हिन्दी तिथियां लिखाई जाएँगी।

प्रदत्त कार्य - 2. यदि मैं फौजी होता-अनुच्छेद लेखन एवं वाचन

उद्देश्य

- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास करना
- देश भक्ति की भावना का विकास करना
- फौजियों के प्रति संवेदनशील बनाना
- मौलिकता की प्रवृत्ति का विकास करना
- कल्पनाशीलता को बढ़ावा देना

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे। फौजियों के जीवन पर चर्चा करेंगे।
- प्रत्येक छात्र अपनी उत्तर पुस्तिका में उपर्युक्त विषय पर कल्पनाशीलता से एक अनुच्छेद लिखेगा।
- सोचने तथा लिखने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस दौरान अध्यापक छात्रों का निरीक्षण करेंगे।



- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ लेखन के पश्चात् सभी छात्रों से लेखों को पढ़कर सुनाने के लिए कहा जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय से संबद्धता	2
क्रमबद्ध विचाराभिव्यक्ति	2
भाषायी दक्षता तथा लिखावट	1

टिप्पणी

- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी रचनाओं के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ शिक्षक अच्छी रचनाओं को कक्षा में पढ़वाए जिससे उन छात्रों को भी प्रेरणा मिले जो ठीक प्रकार से विचाराभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं।

प्रदत्त कार्य - 3. विभिन्न राज्यों की जानकारी-कार्य-प्रपत्र

उद्देश्य

- ❖ सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना
- ❖ सृजनात्मकता का विकास कराना
- ❖ खोजपरक प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ विभिन्न राज्यों के प्रति जुड़ाव महसूस कराना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- ❖ विषय की जानकारी दो दिन पूर्व दी जाएगी तथा छात्रों को विभिन्न राज्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- ❖ गतिविधि के समय निम्नलिखित कार्य प्रपत्र शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे (यह कार्य प्रपत्र छाया प्रतिलिपि (फोटो स्टेट) द्वारा भी भरवाया जा सकता है)
- ❖ सभी छात्र ध्यानपूर्वक उत्तरपुस्तिका में लिख लेंगे।



कार्य प्रपत्र

रचनात्मक मूल्यांकन - साक्षात्कार - साक्षात्कार

1. किसी एक राज्य एवं उसकी राजधानी का नाम
.....
2. राज्य की प्रमुख वेशभूषा
.....
3. खान-पान
.....
4. वहां की प्रमुख भाषा (बोली)
.....
5. प्रसिद्ध लोक नृत्य
.....
6. प्रसिद्ध पर्यटन स्थल
.....
7. प्राकृतिक सौन्दर्य
.....
8. जलवायु
.....
9. खेती, उपज
.....
10. प्रसिद्ध व्यक्ति
.....

❖ उपर्युक्त कार्य प्रपत्र भरने के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।

❖ शिक्षक कार्यप्रपत्र भरवाने के पश्चात् उन्हें एकत्र कर सुविधानुसार मूल्यांकित करेंगे या छात्रों से मूल्यांकन कक्षा में ही कराया जा सकता है।

❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

दो प्रविष्टियां सही होने पर	1
चार प्रविष्टियां सही होने पर	2
छह प्रविष्टियां सही होने पर	3
आठ प्रविष्टियां सही होने पर	4
दस प्रविष्टियां सही होने पर	5

प्रतिपुष्टि

- सभी जानकारीयां सही होने पर विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- शिक्षक सभी राज्यों के विषय पर संक्षिप्त चर्चा करें ताकि विद्यार्थी अधिक से अधिक राज्यों की जानकारी प्राप्त कर सकें।
- जिन छात्रों का कार्य संतुष्टिजनक नहीं हुआ हो उनकी अन्य छात्रों की सहायता से मदद की जाए।

प्रदत्त कार्य - 4. पर्यटक एवं पर्यटन गाइड के बीच संवाद वाचन

उद्देश्य

- पर्यटन की ओर रुचि बढ़ाना
- वाचन कौशल का विकास करना
- सामान्य ज्ञान का विकास करना
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विषय पर चर्चा करेंगे तथा पर्यटन में गाइड का महत्व समझाएँगे।
- दो दो छात्रों का समूह बनाया जाएगा। एक छात्र पर्यटक तथा दूसरा गाइड की भूमिका निभाएगा।
- इस गतिविधि की सूचना एक दिन पूर्व दी जाएगी।
- विद्यार्थी अपने शहर में देखे हुए किसी स्थल विशेष पर संवाद तैयार करेंगे जैसे यदि दिल्ली में हैं तो कुतुबमीनार, इंडियागेट, लालकिला आदि हो सकते हैं अन्यथा आपका विद्यालय, बाजार, घर का रास्ता आदि विषय भी हो सकते हैं गाइड बना विद्यार्थी संबंधित विषय के संबंध में गाइड करेगा तथा दूसरा पर्यटक बना छात्र प्रश्न पूछेगा।



Unit 20

- संवाद पांच से दस वाक्यों में हो सकते हैं।
- संवाद तैयार करने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- शिक्षक इस बीच सभी छात्रों की गतिविधि का निरीक्षण करेंगे
- मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।
- संवाद तैयार करने के पश्चात् प्रस्तुतीकरण के लिए 1-1 मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय की जानकारी	2
स्पष्ट एवं सार्थक संवाद	2
भाषा / प्रस्तुतीकरण / हाव भाव	1

प्रतिपुष्टि

- अच्छे एवं सार्थक संवाद करने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- छात्रों को शिक्षक यह जानकारी भी अवश्य दें कि पर्यटन को किस प्रकार आजीविका का साधन बनाया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य - 5. पाठ पर आधारित वाक्यांशों पर सही / गलत के निशान लगाना।

उद्देश्य

- विषय की पूर्ण जानकारी देना
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास करना
- निर्णय क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- यह गतिविधि शिक्षक पाठ को पढ़ाने के पश्चात् कराएँगे।
- छात्रों को प्रारम्भ में ही इसके संकेत दे दिए जाएँ।
- अध्यापक नीचे दिए गए वाक्यांशों को श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा छात्रों से सावधानी पूर्वक उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहा जाएगा। वाक्यांश के सामने बने बॉक्स में सही के सामने ($\sqrt{\quad}$) तथा गलत के सामने (X) का चिन्ह लगाने के लिए कहा जाएगा।



❖ यह कार्य छाया प्रतिलिपि (फोटो स्टेट) के माध्यम से भी कराया जा सकता है।

1. गैंगटॉक शहर इतिहास और वर्तमान के संधि स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाहों का शहर है। ☐
2. जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाती है, उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएं फहरा दी जाती हैं। ☐
3. कवी-लॉग स्टॉक में लेपचा और भुटिया सिक्किम की स्थानीय जातियों का संधि स्मारक एक पत्थर है। ☐
4. सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल एक प्रसिद्ध स्थान का नाम है। ☐
5. लायुंग झेलम नदी के तीर पर बसा लकड़ी का एक छोटा सा घर है। ☐
6. 'कटाओ' भारत का स्विट्जरलैंड माना जाता है। ☐
7. कवी-लॉग स्टॉक में फिल्म 'आलमआरा' की शूटिंग हुई थी। ☐
8. सिक्किमी युवती का स्वयं को इंडियन कहना देशद्रोही होने का प्रतीक है। ☐
9. धर्म चक्र (प्रेयर व्हील) घुमाने से मनुष्य अमर हो जाता है। ☐
10. जल संचय के लिए प्रकृति बर्फ के रूप में जल संग्रह कर लेती है। ☐

❖ उपरोक्त कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15 मिनट का समय दिया जाएगा।

❖ इस प्रक्रिया के दौरान शिक्षक कक्षा में घूम कर निरीक्षण करेंगे।

❖ कार्य पूर्ण होने पर अध्यापक सभी विद्यार्थियों से प्रपत्र एकत्र कर लेंगे तथा फिर से विद्यार्थियों के बीच इस प्रकार वितरित करेंगे जिससे किसी दूसरे का प्रपत्र ही सबको मिले।

❖ विद्यार्थियों की सहायता से इसका मूल्यांकन कराया जा सकता है। शिक्षक सबका उत्तर बताएं तथा विद्यार्थी प्रत्येक सही प्रविष्टि पर 1 अंक के हिसाब से अंक देंगे (अध्यापक सुविधानुसार भी मूल्यांकन कर सकते हैं)

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

❖ प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक

प्रतिपुष्टि

❖ सभी उत्तर सही देने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।

❖ विद्यार्थियों से मूल्यांकन कराने के लिए अध्यापक चाहे तो जिस समय विद्यार्थी प्रपत्र भरें उस समय कोई गुप्त नम्बर भी दे सकते हैं जिसकी जानकारी केवल अध्यापक को ही होगी।



Unit 20

रचनात्मक मूल्यांकन - साना साना हाथ जोड़ि

❖ अध्यापक की सुविधा के लिए वाक्यांशों के सही विकल्प दिए जा रहे हैं।

1.	☒	2.	☒	3.	☒	4.	☐	5.	☐
6.	☒	7.	☐	8.	☐	9.	☐	10.	☒



एही ढैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

शिवप्रसाद मिश्रा 'रूढ़'

प्रदत्त कार्य - 1. स्वरचित रचनाओं से कक्षा 'पत्रिका' तैयार करना।

उद्देश्य

- सृजनात्मकता का विकास करना।
- विभिन्न विधाओं से परिचित कराना
- मौलिकता की प्रवृत्ति का विकास करना
- कल्पनाशीलता का विकास करना
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- पठन कौशल का विकास करना
- कलात्मकता की ओर उन्मुख करना

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से किया जाएगा लेकिन प्रस्तुतीकरण सामूहिक होगा।
- शिक्षक सर्वप्रथम विषय की पूर्ण जानकारी गतिविधि से एक दिन पूर्व देंगे।
- प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी पसंदीदा (हिन्दी साहित्यिक विधाओं में) किसी एक विधा नाटक, कहानी, कविता, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त, चुटकुले, आलेख आदि पर स्वरचित रचना लिखने के लिए दी जाएगी।
- विद्यार्थियों को यह भी निर्देश दिया जाए कि वह अपनी कृति कलात्मक ढंग से लिख सकते हैं तथा साज सज्जा भी कर सकते हैं।
- लेखन कार्य के लिए 25 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम कर निरीक्षण करेंगे।
- शिक्षक लेखन कार्य में समानता लाने के लिए सभी विद्यार्थियों को लिखने के लिए एक ही तरह का पेपर वितरित कर सकते हैं। (चार्ट पेपर का इस्तेमाल किया जा सकता है)
- शिक्षक मूल्यांकन के आधार श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- लेखन कार्य समाप्त होने पर सभी की कृतियाँ संगृहीत करके एक फाइल में विद्यार्थियों की मदद से लगाई जाएँगी।
- सुविधानुसार शिक्षक उसका मूल्यांकन करेंगे।

रचनात्मक मूल्यांकन - एही ढैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!



Unit 21

रचनात्मक मूल्यांकन - एही ढैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

प्रभावशाली भाषा	1
कलात्मकता	1
मौलिकता	1
भाषा	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- शिक्षक अन्य उचित बिन्दुओं को मूल्यांकन के आधार मान सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- अच्छी एवं मौलिक रचनाओं की सराहना की जाए।
- अच्छी कृतियों को विद्यालय पत्रिका में अवश्य छपाया जाए।
- शिक्षक पत्रिका को वास्तविक रूप देने के लिए कुछ विद्यार्थियों को मुख्य पृष्ठ सज्जा, संपादकीय आदि लिखने को दे सकते हैं उनका मूल्यांकन उन्हीं के आधार पर किया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य - 2. क्षेत्रीय स्तर पर मनाए जाने वाले त्यौहार - लेखन एवं वाचन

उद्देश्य

- सामान्य ज्ञान की वृद्धि करना
- भारतीय संस्कृति से परिचित करना
- संवेदनशीलता की प्रवृत्ति का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति विकसित करना
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास करना

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।
- विषय की जानकारी गतिविधि से एक दिन पूर्व दी जाएगी। शिक्षक कक्षा में मुख्य त्यौहारों से हटकर कुछ क्षेत्र विशेष से संबंधित त्यौहारों का परिचय देंगे। उदाहरणार्थ - तीज, बड़मावस, गणगौर, वसंत पंचमी, गणेश चतुर्थी, नागपंचमी, ऋषि पंचमी, धनतेरस, भैया दूज, गोवर्धन पूजा, अनंत चौदस, शीतलाष्टमी, अहोई अष्टमी, जन्माष्टमी, छठ पूजा, करवा चौथ, शबे बारात, अलविदा जुमा, हजरत अली जन्म दिन इत्यादि।



- गतिविधि के समय कक्षा को चार समूहों में विभाजित किया जाएगा।
- प्रत्येक समूह अपनी जानकारी के अनुसार त्यौहारों के नाम तथा उनका महत्व लिखेंगे।
- इस कार्य के लिए उन्हें 10 से 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस बीच अध्यापक सभी समूहों में जाकर देखेंगे कि सभी विद्यार्थी अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं।
- लेखन कार्य के उपरान्त प्रत्येक समूह का एक प्रतिनिधि छात्र प्रस्तुतीकरण देगा। एक समूह को प्रस्तुतीकरण के लिए पांच मिनट का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	2
विषय की जानकारी	2
प्रस्तुतीकरण	1
(पांच त्यौहारों की संख्या अवश्य होनी चाहिए।)	

टिप्पणी

- मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सही जानकारी देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- शिक्षक विद्यार्थियों को उदाहरणार्थ 3 से चार त्यौहारों के नाम ही बताएँ अन्य छात्र स्वयं लिखेंगे। त्यौहारों की सूची शिक्षक की सुविधा के लिए दी गई है।

प्रदत्त कार्य - 3. विदेशी वस्त्रों / वस्तुओं का त्याग एवं स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की प्रेरणा देते हुए नुक्कड़ नाटक ।

उद्देश्य

- अभिनय कौशल का विकास करना
- वाचन कौशल का विकास करना
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- देश प्रेम की भावना जागृत कराना
- सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का विकास करना

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से कराया जाएगा।



Unit 21

रचनात्मक मूल्यांकन - एही ढैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

- ❖ कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- ❖ इस गतिविधि की सूचना एक सप्ताह पूर्व दी जाएगी। शिक्षक विषय की जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को आवश्यक निर्देश देंगे।
- ❖ विद्यार्थी अपने समूह के साथ मिलकर इसकी तैयारी करेंगे।
- ❖ बीच बीच में शिक्षक छात्रों की सहायता करते हुए निरीक्षण करते रहेंगे तथा सभी छात्रों को प्रतिभागी होने के लिए प्रेरित करेंगे।
- ❖ गतिविधि के समय चारों समूह प्रस्तुतीकरण करेंगे, प्रत्येक समूह को पांच से सात मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय सुसंबद्धता	2
प्रस्तुतीकरण (भाषा, संवाद)	1
अभिनय	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उचित आधार बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए तथा विद्यालय के मंच पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है।
- ❖ मूल्यांकन के लिए शिक्षक अन्य शिक्षकों की मदद ले सकते हैं।
- ❖ नाटक के लिए बाहरी उपकरणों की आवश्यकता नहीं है। विद्यालय गणवेश में ही विद्यार्थी नाटक प्रस्तुत कर सकते हैं।

प्रदत्त कार्य - 4. जीवन में उपहारों का महत्व - अनुच्छेद लेखन।

उद्देश्य

- ❖ मानवीय संवेदनाओं की अनुभूति कराना
- ❖ आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति का विकास करना
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना
- ❖ सामाजिक व्यवहार की जानकारी देना
- ❖ लेखन में मौलिकता लाने का प्रयास करना



प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- ❖ अध्यापक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे। विद्यार्थियों के साथ उपहारों के महत्व पर चर्चा करेंगे। उदाहरण के लिए जैसे उपहार प्रेम और आशीर्वाद प्रकट करने के लिए दिए जाते हैं। उपहार लेना हमें बहुत खुशी देता है इत्यादि।
- ❖ विद्यार्थी इस विषय पर अपने अपने अनुभव एवं विचार उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।
- ❖ इस कार्य के लिए उन्हें 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ लेखनक 'प' शचात् शिक्षकस भी विद्यार्थियोंके लेखनकार्यको एक कत्रितक रल 'गेत' थासुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
भाषायी दक्षता	1
मौलिकता	1
उपयुक्त उदाहरण	1
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक मूल्यांकन के आधार स्वयं निश्चित कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी रचनाओं को प्रोत्साहित अवश्य करें तथा कक्षा में पढ़कर सुनाया जाए।
- ❖ जो छात्र खुलकर विचार व्यक्त न कर पाएँ, उन्हें प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य - 5. संपादक के रूप में विद्यालयी गतिविधियों की रिपोर्ट तैयार करना।

उद्देश्य

- ❖ पत्रकारिता के विषय में जानकारी देना
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना
- ❖ वाचन कौशल का विकास करना
- ❖ विषयों को बारीकी से जानना
- ❖ एकाग्रता की प्रवृत्ति को विकसित करना



Unit 21

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक 'रिपोर्ट' गद्य विद्या से परिचित कराएंगे। इस विषय की जानकारी पाठ पढ़ाने के उपरान्त तथा गतिविधि से एक दिन पूर्व दी जाएगी।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को एक दिन पूर्व निर्देश देंगे कि अगले दिन विद्यालय में प्रवेश करने के बाद से गतिविधि के समय तक विद्यालय में होने वाली गतिविधियों की रिपोर्ट तैयार करेंगे।
- ❖ रिपोर्ट एक अनुच्छेद या 10 वाक्यों की हो सकती है।
- ❖ इस कार्य के लिए उन्हें 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ इस बीच शिक्षक छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिन्दु शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- ❖ रिपोर्ट लेखन के बाद सभी विद्यार्थी एक एक करके पढ़कर सुनाएँगे।
- ❖ इस पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

मौलिकता	1
वाक्य संरचना	2
भाषायी दक्षता	1
प्रस्तुतीकरण	1

टिप्पणी

- ❖ शिक्षक अन्य उचित मूल्यांकन बिन्दुओं को भी मूल्यांकन के आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छी रचना के लिए विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ जो विद्यार्थी ठीक से कार्य नहीं कर पाए उनकी सहायता की जाए। शिक्षक विद्यार्थियों को समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने की प्रेरणा अवश्य दें।

रचनात्मक मूल्यांकन - एही हैयों झुलनी हेरानी हो रामा!



मैं क्यों लिखता हूँ

अज्ञेय

प्रदत्त कार्य - 1. चिकित्सालयों में जाकर रोगों सम्बन्धी सूचना संगृहीत करना।

उद्देश्य

- निरीक्षण, विश्लेषण एवं निष्कर्षीकरण की क्षमता का विकास
- भाषायी दक्षता का विकास
- लेखन कौशल में वृद्धि और सुधार लाना
- रोगियों के प्रति सेवा भाव उत्पन्न करना

प्रक्रिया

- छात्र अपने अध्यापक अथवा अभिभावक गण के साथ घर या विद्यालय के समीपस्थ अस्पताल जाकर सूचना एकत्र करेंगे।
- कक्षा को चार समूहों में विभक्त किया जाएगा और उन्हें परिचर्चा के लिए दस मिनट का समय दिया जायेगा।
- प्रथम समूह रोगों की सूची एवं कारण लिखेगा।
- दूसरा समूह रोगों की सूची एवं लक्षण लिखेगा।
- तीसरा समूह रोगों की सूची एवं निदान लिखेगा।
- चतुर्थ समूह हम स्वयं को स्वस्थ कैसे रखें लिखेगा।
- अध्यापक प्रत्येक समूह के पास जाकर उनके कार्य का निरीक्षण करेगा।
- तत्पश्चात् प्रत्येक समूह से एक प्रतिनिधि छात्र अपने लिखे हुए कार्य की प्रस्तुति करेगा।
- इस गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।
- मूल्यांकन आधार श्यामपट पर लिखे जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

लेखन कला	2
विषय की जानकारी	2
सम्पूर्ण प्रभाव	1

रचनात्मक मूल्यांकन - मैं क्यों लिखता हूँ



- ❖ अध्यापक स्वतन्त्र रूप से अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

- ❖ जिन विद्यार्थियों ने अच्छा कार्य किया उनकी सराहना की जायेगी।
- ❖ अन्य छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा जिससे वह भी सही कार्य संपन्न कर सकें।

प्रदत्त कार्य - 2. प्रातः कालीन भ्रमण

उद्देश्य

- ❖ सुबह के प्राकृतिक वातावरण और दृश्यों को देखकर उन्हें अनुभव करने की प्रेरणा देना।
- ❖ लेखन कौशल में प्रवीण बनाना।
- ❖ सुबह की सैर स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है और रोगों से मुक्त रखती है, जानकारी देना।
- ❖ सृजनात्मक क्षमता की श्री वृद्धि करना।
- ❖ सुबह जल्दी उठने के लिए प्रोत्साहित करना।
- ❖ अवकाश के दिनों में छात्र सुबह सैर करने जाएँ, इसके लिए प्रेरित करना।

प्रक्रिया

- ❖ सामूहिक कार्य।
- ❖ अध्यापक कक्षा को चार समूहों में विभक्त करेंगे।
 1. एक समूह ऐसा बनाया जायेगा जो चित्रकला में रुचि रखते हो उन्हें प्रातः कालीन दृश्य चित्रित करने के लिए दिया जाएगा।
 2. एक समूह को प्रातः कालीन भ्रमण अथवा दृश्य पर कविता लिखने को कहा जायेगा।
 3. एक समूह प्रातः कालीन भ्रमण के लाभ लिखते हुए एक अनुच्छेद लिखेगा।
 4. अन्तिम समूह मित्र को पत्र लिखेगा जिसमें प्रातः कालीन भ्रमण के लिए प्रेरित किया जायेगा।
- ❖ सभी समूहों को प्रक्रिया पूर्ण करने के लिए 25 मिनट दिए जाएँगे
- ❖ इस प्रक्रिया के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा एवं मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।



मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	2
प्रस्तुतीकरण	2
सम्पूर्ण प्रभाव	1

टिप्पणी

- इस गतिविधि के लिए शिक्षक अपनी इच्छानुसार किन्हीं और बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- सर्वोत्तम समूह के कार्य को कक्षा में लगाया जाए।
- उनके कार्य की प्रशंसा की जाए।
- सबसे कम अंक पाने वाले समूह को प्रोत्साहन दिया जाए कि वह बेहतर कार्य करके दिखाएँ।

प्रदत्त कार्य - 3. घरेलू उपचार - एक चर्चा

उद्देश्य

- छोटे-छोटे रोगों के विषय में चर्चा करना।
- उनके निदान/उपचार जो हमारे घर में ही उपलब्ध हैं, बताना।
- हमारा रसोईघर अनेक रोगों से सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण करता है इसकी जानकारी देना।
- निरीक्षण एवं परीक्षण क्षमताओं का विकास।
- सौंफ, अजवायन, हल्दी, पुदीना, मेथी दाना, करेला, आंवला, तुलसी, शहद इत्यादि के विषय में चर्चा करना।
- वाचन कौशल को समृद्ध करना।

प्रक्रिया

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम कक्षा को चार अथवा पांच समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को कुछ सामान्य बीमारियों जिनका इलाज घर में हो सकता है के नाम दिए जायेंगे जैसे पेट दर्द, जुकाम, खाँसी, चोट लगना और उल्टी आना।
- प्रत्येक समूह चर्चा करेगा और सम्बन्धित रोग के लिए क्या उपचार होना चाहिए, बताएगा।
- शिक्षक प्रत्येक समूह के पास जाकर निरीक्षण करेगा और मार्ग दर्शन करेगा।



Unit 22

- ❖ मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे और इस गतिविधि के लिए चालीस मिनट का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

रोगों के नाम	2
निदान	2
समूह का समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- ❖ इसके अतिरिक्त शिक्षक स्वतन्त्र रूप से भी मूल्यांकन आधार तैयार कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ प्रत्येक समूह को उत्साहित करते हुए उन्हें सराहा जायेगा।
- ❖ सक्रिय भाग न लेने वाले छात्रों को सुझाव दिए जायेंगे जिससे उनके कार्य में सुधार आए।

प्रदत्त कार्य - 4. आलस्य पर विजय - लेखन कार्य

उद्देश्य

- ❖ आलस्य के दुर्गुणों के विषय में चर्चा एवं जानकारी देना।
- ❖ जीवन में कार्य के महत्व को समझाना।
- ❖ मानव जीवन एक अनमोल उपहार, इसकी सार्थकता पर विचार करना
- ❖ गीता के उपदेशों पर मनन करना
- ❖ लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कक्षा को चार समूहों में विभक्त करेंगे।
- ❖ प्रत्येक समूह को पृथक शीर्षक दिए जायेंगे जिसके द्वारा आलस्य पर विजय पाई जा सकती है।
 - * अपना हाथ जगन्नाथ
 - * उद्योगी पुरुष को लक्ष्मी प्राप्त होती है।
 - * जो सोता है उसका भाग्य भी सो जाता है।
 - * आलसी मनुष्य पशु के सदृश है।
- ❖ समूह पहले चर्चा करेगा और महत्वपूर्ण तथ्य लिखेगा।



- ❖ तत्पश्चात् समूह का नेता 100 से 150 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखेगा।
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
- ❖ मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।
- ❖ अध्यापक सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	2
प्रस्तुतीकरण	2
भाषा	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वेच्छा पूर्वक किन्हीं अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- ❖ जिस समूह ने सर्वोत्तम लिखा उनकी सराहना की जायेगी तथा कक्षा में पढ़कर सुनाया जा सकता है।
- ❖ अन्य समूह के छात्रों को प्रोत्साहन दिया जाएगा जिससे उनका कार्य बेहतर हो सके।

प्रदत्त कार्य - 5. डायरी लेखन

उद्देश्य

- ❖ डायरी लेखन विधा से परिचित कराना।
- ❖ अपने कार्य को योजनाबद्ध ढंग से लिखना सिखाना।
- ❖ स्वयं के विचारों को सुनियोजित रूप देना सिखाना।
- ❖ समय, तिथि, घटनाओं को स्मरण रखने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- ❖ एकाकी क्षणों में डायरी पढ़ने का आनन्द लेना।
- ❖ लेखन कौशल का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ यह कार्य अध्यापक द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक विद्यार्थी को दिया जायेगा।
- ❖ अध्यापक कुछ संकेत श्यामपट्ट पर लिखेगा जैसे स्थान, समय, कारण इत्यादि।
- ❖ छात्र अपने जीवन से जुड़ी किसी घटना का उल्लेख तिथि समयानुसार करेंगे।



Unit 22

१८६ में क्यों लिखता - रचनात्मक मूल्यांकन

- छात्र किसी आंखों देखी घटना का वर्णन भी कर सकते हैं जिसका प्रभाव उनके मानस पटल पर काफी गहरा है।
- लेखन के पश्चात् शिक्षक सबसे सामग्री एकत्र करके सुविधानुसार मूल्यांकन करेंगे।
- इस कार्य के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
- मूल्यांकन आधार बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जायेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
लेखन कौशल	2
भाषायी दक्षता	2
समग्र प्रभाव	1

टिप्पणी

- अध्यापक अन्य आधार बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकता है।

प्रतिपुष्टि

- जो छात्र लिखने में असमर्थ हैं, उन्हें अध्यापक द्वारा मार्ग दर्शन दिया जाएगा।
- प्रतिभाशाली छात्रों की सराहना की जायेगी।
- किसी रोचक घटना को कक्षा में पढ़कर भी सुनाया जा सकता है।





प्रदत्त कार्य - संयुक्त क्रिया - एक प्रपत्र

उद्देश्य

- ❖ संयुक्त क्रिया की परिभाषा से अवगत कराना।
- ❖ संयुक्त क्रिया के शब्दों के उदाहरण देना।
- ❖ सरल एवं संयुक्त क्रिया के अन्तर को समझाना।
- ❖ व्याकरण के ज्ञान से लेखन कौशल का विकास।

प्रक्रिया

- ❖ यह गतिविधि प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से कक्षा में करने के लिए दी जायेगी।
- ❖ दो उदाहरण विद्यार्थियों को बताए जायेंगे जैसे बैठ जाओ, आकर बैठ जाओ, चौंका, चौंक पड़ा।
उपर्युक्त में 'आकर' और 'पड़ा' क्रमशः क्रियाएँ हैं जो वाक्य में जुड़कर एक दूसरे वाक्य की रचना करती हैं।
छात्रों को प्रपत्र दिया जाएगा जिसमें वह संयुक्त क्रियाएँ भरेंगे।
- ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।
- ❖ मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।

प्रपत्र

1. पिता जी आए
2. वह चिल्लाया
3. सीमा सोई
4. शिकारी ने जानवर को मारा
5. उसने खाना बनाया
6. छात्र दौड़ता है
7. इस पत्र को दे दो।
8. वह जाती है।



Unit 23

क्रिया - रचनात्मक मूल्यांकन

9. मैं खाना खाता हूँ।

.....

10. विवेक खेलता है।

.....

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सही दस वाक्य

5

सही आठ वाक्य

4

सही छह वाक्य

3

सही चार वाक्य

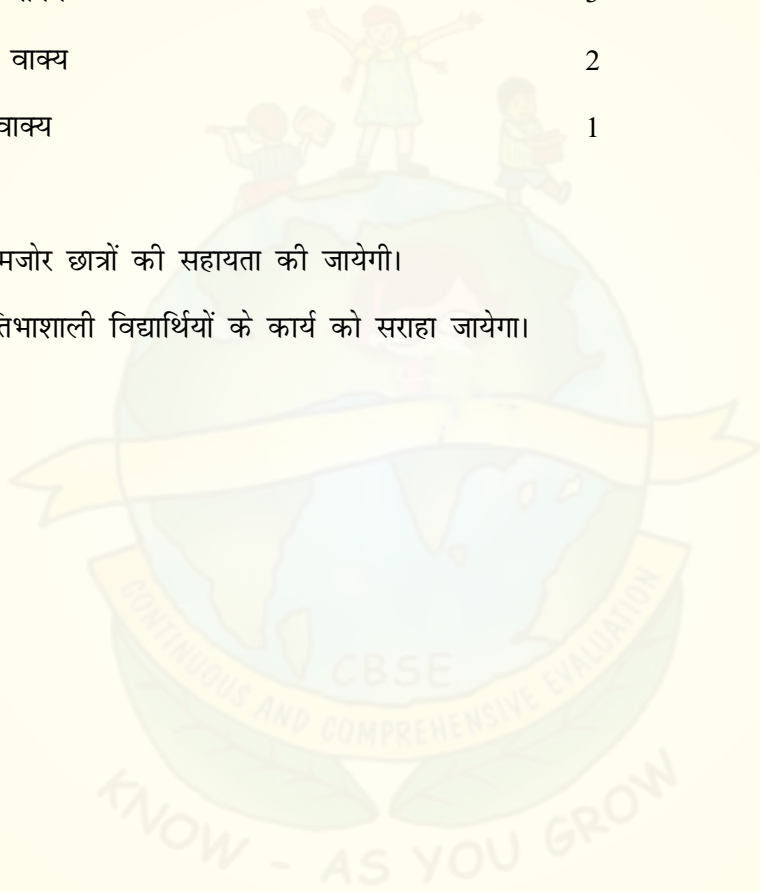
2

सही दो वाक्य

1

प्रतिपुष्टि

- कमजोर छात्रों की सहायता की जायेगी।
- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के कार्य को सराहा जायेगा।



विशेषण

प्रदत्त कार्य - विशेषण / विशेष्य (खेल प्रश्नोत्तरी)

उद्देश्य

- ❖ विशेषण एवं विशेष्य दोनों के अन्तर को समझाना।
- ❖ कल्पना शक्ति का विकास।
- ❖ शब्द ज्ञान में वृद्धि।
- ❖ विशेषण शब्द भाषायी दक्षता में सहायक, जानकारी देना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कक्षा को दो समूहों में बांटेगा।
- ❖ इसके पश्चात् एक खेल खेला जायेगा इसके लिए दो नेता चुन लिए जायेंगे जो श्याम पट पर साथ साथ अंक भी लगायेंगे।
- ❖ दोनों समूहों को इस खेल के लिए दस दस मिनट का समय दिया जायेगा।
- ❖ पहले एक समूह प्रश्न पूछेगा और दूसरा समूह विशेषण शब्द लगाकर उत्तर देगा।
 - * जैसे आकाश कैसा है?
 - * उत्तर - आकाश नीला है या विस्तृत है अथवा स्वच्छ है।
- ❖ इस प्रकार प्रत्येक समूह पूछे गए दस प्रश्नों के उत्तर देगा।
- ❖ प्रश्नों की सूची पहले से तैयार की जा सकती है।
- ❖ अध्यापक के सहयोग से समूह नेता अंक श्यामपट्ट पर लिखते जायेंगे प्रत्येक प्रश्न का आधा अंक होगा।
- ❖ इसके लिए एक कालांश का समय पर्याप्त होगा।

प्रतिपुष्टि

- ❖ अधिक अंक पाने वाले समूह की एवं क्रियाशील प्रतिभागी की प्रशंसा की जायेगी।
- ❖ दूसरे समूह को उत्साहित किया जायेगा ताकि वे अच्छा कर सकें।



- ❖ विद्यार्थियों के समझने की शक्ति को विकसित करना।
- ❖ लेखन कुशलता का विकास करना।
- ❖ विशेषण और विशेष्य के अन्तर को स्पष्ट करना।
- ❖ कल्पना शक्ति का विकास करना।

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम कक्षा को चार समूहों में बाँटा जायेगा।
 - ❖ प्रत्येक समूह को अलग-अलग कार्य दिया जायेगा।
1. पहला समूह दिए गए विशेषण शब्दों के स्थान पर दूसरे विशेषण शब्द लगाएगा।
मंझोला कद, सफेद चेहरा, मूसलाधार बरसात, सुशील बहु, खाली डिब्बा, भूरी आँखें, अन्तिम गली, खेलते हुए बच्चे, साफ सुथरा कमरा, संगीत प्रेमी व्यक्ति
 2. दूसरा समूह नीचे दिए गए शब्दों के स्थान पर (रेखांकित शब्द) दूसरे शब्द (विशेष्य) लिखेगा।
स्वच्छ आकाश, काली टोपी, रंगीन बल्ब, उमसभरी सांय, सफेद बादल, बुद्धिमान व्यक्ति, निर्लज्ज आदमी, निर्गुण भक्ति, चांदनी रात, अशुद्ध जल
 3. तीसरे समूह को निम्न शब्दों से विशेषण बनाने को कहा जायेगा।
लालच, मिठास, भूल, घर, जंगल, सुगंध, बनारस, अपमान, पाप, भारत
 4. चौथा समूह विशेषणों के वचन बदल कर लिखेगा।
चमकीला, अच्छे, हठीला, कँटीला, सस्ता, बूढ़ा, चिकना, शर्मीला, ऊँचे, पुराने
- ❖ अध्यापक विद्यार्थियों से लेखन सामग्री एकत्र कर सुविधानुसार जाँचेगा।
 - ❖ मूल्यांकन बिन्दु श्याम पट्ट पर लिखे जाएंगे।
 - ❖ इस गतिविधि के लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

दस शब्द	5
आठ शब्द	4
छ शब्द	3



चार शब्द	2
दो शब्द	1

टिप्पणी

- ❖ अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं द्वारा भी मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि

- ❖ जिन छात्रों को समझ में नहीं आया है उनका मार्ग दर्शन किया जायेगा।
- ❖ सफल विद्यार्थियों की प्रशंसा की जायेगी।

प्रदत्त कार्य - क्रिया विशेषण के भेद (सामूहिक कार्य)

उद्देश्य

- ❖ क्रिया विशेषण की सही जानकारी देना।
- ❖ विद्यार्थियों की भाषा को व्याकरण सम्मत बनाना।
- ❖ क्रिया और क्रिया विशेषण शब्दों के अन्तर को स्पष्ट करना।
- ❖ लेखन कला का विकास करना
- ❖ व्याकरण में रुचि उत्पन्न करना

प्रक्रिया

- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक द्वारा कक्षा को चार समूहों में बांटा जायेगा
- ❖ उन्हें स्थान वाचक, काल वाचक, रीति वाचक और परिमाण वाचक क्रिया विशेषण नाम दिए जाएँगे।
- ❖ प्रथम समूह को स्थानवाचक विशेषण सम्बन्धी दस वाक्य लिखने के लिए दिए जाएँगे।
- ❖ दूसरा समूह काल वाचक विशेषण संबंधी दस वाक्य लिखेगा।
- ❖ तीसरा समूह रीति वाचक क्रिया विशेषण सम्बन्धी दस वाक्य लिखेगा।
- ❖ चौथे समूह को परिमाण वाचक क्रिया विशेषण संबंधी दस वाक्य लिखने के लिए कहा जायेगा।
- ❖ अध्यापक कुछ उदाहरण श्याम पट्ट पर लिख देगा ताकि छात्र समझ जाएँ।
- ❖ इसके लिए एक कालांश का समय दिया जायेगा एवं मूल्यांकन बिन्दु भी श्यामपट्ट पर लिखे जायेंगे।
- ❖ सभी समूह परस्पर चर्चा करेंगे और लिखना प्रारम्भ करेंगे।



Unit 24

रचनात्मक मूल्यांकन - क्रिया विशेषण

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

दस सही वाक्य

आठ सही वाक्य

छ सही वाक्य

चार सही वाक्य

दो सही वाक्य

अंक विभाजन

5

4

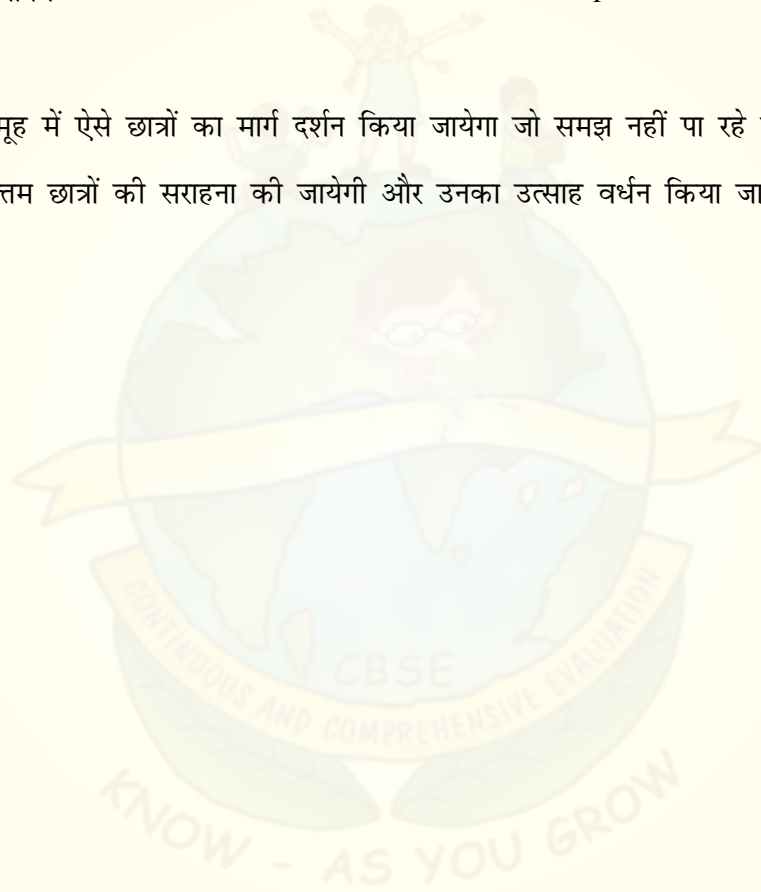
3

2

1

प्रतिपुष्टि

- समूह में ऐसे छात्रों का मार्ग दर्शन किया जायेगा जो समझ नहीं पा रहे हैं।
- उत्तम छात्रों की सराहना की जायेगी और उनका उत्साह वर्धन किया जायेगा।



पद परिचय

प्रदत्त कार्य - पद परिचय का नाटकीकरण

उद्देश्य

- व्याकरण को मनोरंजक बनाना।
- पद परिचय के हर चरण का रोचक तरीके से ज्ञान।
- प्रत्येक विद्यार्थी की सहभागिता होना।
- लेखन, वाचन, श्रवण, पठन सभी कौशलों का विकास होगा।

प्रक्रिया

- अध्यापक 'पद परिचय' की स्पष्ट अवधारणा विद्यार्थियों के मन में बैठाने के लिए सम्पूर्ण कक्षा के सहयोग से उसे नाटकीकृत कराएगा।
- पूरी कक्षा पहले आठ समूहों में बंटेगी नीचे दिखाई गई तालिका के अनुसार
- पद परिचय के सभी भेदों से विद्यार्थी पूर्व परिचित है।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, योजक, समुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक और इनके भेद। व्याकरण के प्रत्येक अंग को एक पात्र बनाकर कक्षा में वितरित कर दिया जाएगा।
- अब अध्यापक चार वाक्य पद परिचय के लिए श्यामपट्ट पर लिखेगा।

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया	क्रिया विशेषण	संबंध बोधक	समुच्चय बोधक	विस्मयादि बोधक
व्यक्ति वाचक	पुरुष वाचक	गुण वाचक	अकर्मक	रीति वाचक		समानाधिकरण	विस्मय
जाति वाचक	निश्चय वाचक	परिमाण वाचक	सकर्मक	परिमाण वाचक		व्यधिकरण	शोक
भाववाचक	अनिश्चय वाचक	संख्या बोधक	काल वाचक	काल वाचक			हर्ष



Unit 25

पद परिचय - व्याकरण - रचनात्मक मूल्यांकन

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया	क्रिया विशेषण	संबंध बोधक	समुच्चय बोधक	विस्मयादि बोधक
कारक	प्रश्न वाचक	सार्वनामिक		स्थान वाचक			तिरस्कार
लिंग	संबंध वाचक						संवदेना
वचन	निज वाचक						भय
							चेतावनी
							क्रोध

❖ अब प्रत्येक विद्यार्थी अपने अपने पात्र के अनुसार अपनी जगह से उठकर उत्तर बताएगा।

जैसे वाक्य है - हम देहरादून घूमने गए।

अब जो विद्यार्थी सर्वनाम बना है वह खड़ा होगा। फिर उसका भेद पुरुषवाचक सर्वनाम खड़ा होगा। तत्पश्चात् देहरादून के परिचय के लिए संज्ञा खड़ा होगा। फिर उसका भेद व्यक्तिवाचक संज्ञा खड़ा होगा। इसी प्रकार इनके कारक, लिंग और वचन खड़े होंगे। घूमने गए के लिए क्रिया और उसका भेद खड़ा होगा।

❖ इस विधि से विद्यार्थी खेल ही खेल में पद परिचय सीख लेगा

❖ यह प्रक्रिया एक कालांश में सम्पन्न हो जाएगी।

❖ मूल्यांकन आधार पहले ही लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

सही पहचान	2
सही उच्चारण	2
तत्काल उत्तर	1

प्रतिपुष्टि

❖ सही एवं तत्काल उत्तर देने वाले छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए उनकी सराहना की जाए।

❖ सही उत्तर न देने वालों को पुनः समझाया जाए।



व्याकरण - वाक्य के भेद

प्रदत्त कार्य - रचना के आधार पर भेद - व्यक्तिगत कार्य

उद्देश्य

- व्याकरण को सरल एवं रोचक बनाना।
- रचना के आधार स्पष्ट करना।
- विद्यार्थियों की भाषा को व्याकरण सम्मत करना।
- व्याकरण जानने की इच्छा उत्पन्न करना।
- लेखन एवं वाचन कौशल में दक्षता।

प्रक्रिया

- अध्यापक कक्षा को वाक्य के भेदों की जानकारी देगा।



- अध्यापक बताएँगे कि वाक्य परिवार का मुखिया है। उसकी दो संतानें हैं रचना और अर्थ। रचना की तीन संतानें हैं - सरल, संयुक्त और मिश्र। अर्थ के आठ संतानें हैं - विधि, विधान, प्रश्न, निषेध, संभावना, आज्ञा, इच्छा, विस्मय आदि। आज हम रचना की संतानों के विषय पर कार्य करेंगे।



Unit 26

रचनात्मक मूल्यांकन - वाक्य के भेद

- ❖ अध्यापक श्यामपट्ट पर दस वाक्य लिख देगा।
- ❖ अध्यापक को इस सब कार्य में 10-15 मिनट का समय लगेगा।
- ❖ विद्यार्थी प्रत्येक वाक्य का रचना के आधार पर वर्गीकरण कर उसका नाम लिखेंगे।
- ❖ इसमें 10-15 मिनट का समय लगेगा।
- ❖ मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।
- ❖ यह प्रक्रिया 20-25 मिनट में पूरी हो जाएगी।
- ❖ अध्यापक सही उत्तर बताकर साथ के साथ मूल्यांकन करा सकता है।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी सही उत्तर पर स्वयं अंक लगाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
9-10 सही उत्तर	5
7-8 सही उत्तर	4
5-6 सही उत्तर	3
3-4 सही उत्तर	2
1-2 सही उत्तर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ सभी उत्तर सही देने वाले विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- ❖ जिस विद्यार्थी के ज्यादातर उत्तर सही न हो उसे फिर से वर्गीकरण समाझाने का प्रयास किया जाए।



वाक्य रचनांतरण - व्याकरण

प्रदत्त कार्य - समूह कार्य - वाक्य रचनांतरण

उद्देश्य

- ❖ वाक्यों के प्रकारों से परिचित कराना
- ❖ वाक्य परिवर्तन में प्रवीणता लाना
- ❖ वाक्य रचना में कुशलता प्रदान करना
- ❖ मिल जुलकर काम करने की भावना का विकास करना
- ❖ भाषायी दक्षता में वृद्धि करना
- ❖ श्रवण एवं वाचन क्षमताओं का विकास करना
- ❖ विश्लेषण क्षमता में प्रखरता लाना

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक कक्षा में वाक्य के भेद अच्छी तरह समझा देगा। तत्पश्चात् वे कितना समझे हैं यह जानने के लिए सम्पूर्ण कक्षा को तीन समूहों में बांट देगा जो इस प्रकार होगा।

सरल वाक्य समूह

संयुक्त वाक्य समूह

मिश्र वाक्य समूह

- ❖ पहले सरल वाक्य समूह एक सरल वाक्य का संयुक्त एवं मिश्र वाक्य रचनांतरण दोनों समूहों से बनवाएगा।
- ❖ फिर संयुक्त वाक्य समूह दोनों समूहों से एक संयुक्त वाक्य का सरल व मिश्र वाक्य बनवाएगा।
- ❖ तत्पश्चात् मिश्र वाक्य समूह एक मिश्र वाक्य का सरल और संयुक्त रूप बनवाएगा।
- ❖ इस प्रकार प्रत्येक समूह अपने अपने वाक्य भेद के अनुसार दूसरे समूहों से वाक्य परिवर्तन करवाएगा।
- ❖ यह प्रक्रिया प्रत्येक समूह को पांच - पांच वाक्य परिवर्तन कराने का अवसर देगी।
- ❖ कम से कम 15 वाक्यों का रचनांतरण एक कालांश में करके विद्यार्थी विषय को अच्छी तरह हृदयंगम कर लेंगे।



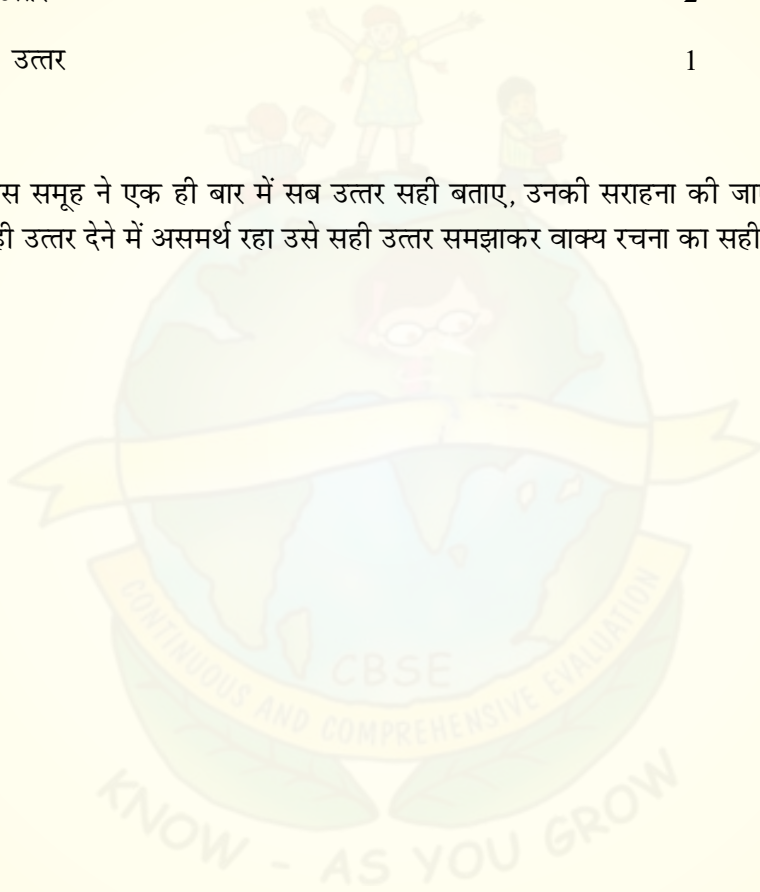
Unit 27

- ❖ मूल्यांकन आधार पहले ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक विभाजन
पांच सही उत्तर	5
चार सही उत्तर	4
तीन सही उत्तर	3
दो सही उत्तर	2
एक सही उत्तर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ जिस समूह ने एक ही बार में सब उत्तर सही बताए, उनकी सराहना की जाए। जिस समूह का विद्यार्थी सही उत्तर देने में असमर्थ रहा उसे सही उत्तर समझाकर वाक्य रचना का सही स्वरूप समझाया जाए।



वाक्य के आधार पर

वाक्य रूपान्तरण - समूह कार्य

उद्देश्य

- ❖ क्रिया के तीनों वाच्यों का ज्ञान
- ❖ क्रिया में कर्ता, कर्म और भाव की प्रधानता की अवधारणा का स्पष्टीकरण
- ❖ व्याकरण ज्ञान में वृद्धि
- ❖ आत्म विश्वास में वृद्धि
- ❖ व्यावहारिक ज्ञान एवं सहयोग भावना का विकास
- ❖ विश्लेषण क्षमता का विकास

प्रक्रिया

- ❖ अध्यापक प्रदत्त कार्य के लिए कक्षा में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य व भाव वाच्य समझाएगा।
- ❖ सम्पूर्ण कक्षा को तीन समूहों में बांटा देगा।
 - * कर्तृवाच्य समूह
 - * कर्मवाच्य समूह
 - * भाव वाच्य समूह
- ❖ अब अध्यापक श्यामपट्ट पर 10 वाक्य लिख देगा और जिस वाच्य में परिवर्तन करना होगा। वही समूह उसका सही स्वरूप बताएगा।
- ❖ दूसरे चरण में प्रत्येक समूह चार-चार वाक्य अपने प्रतिद्वंद्वी समूहों से बदलवाएगा जैसे -
 - कर्तृवाच्य समूह - कर्मवाच्य, भाव वाच्य से
 - कर्मवाच्य - कर्तृवाच्य, भाववाच्य से
 - भाववाच्य - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य बनवाएगा
- ❖ इस तरह पूरी कक्षा को एक ही कालांश में तीनों वाच्य परिवर्तन की अवधारणा स्पष्ट हो जाएगी।
- ❖ मूल्यांकन आधार श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

- ❖ प्रत्येक सही उत्तर पर एक अंक दिया जाएगा। अधिकतम अंक 10 होंगे।

प्रतिपुष्टि

- ❖ पहली ही बार में सही उत्तर देने वाले विद्यार्थी / समूह की सराहना की जाए।
- ❖ अगर अधिकतर विद्यार्थी सही उत्तर नहीं दे पाए तो पुनः विषय स्पष्ट किया जाए और अभ्यास कराया जाए।





अलंकार

प्रदत्त कार्य - खाली स्थानों में संबंधित अलंकार का नाम लिखिए। कार्य-प्रपत्र

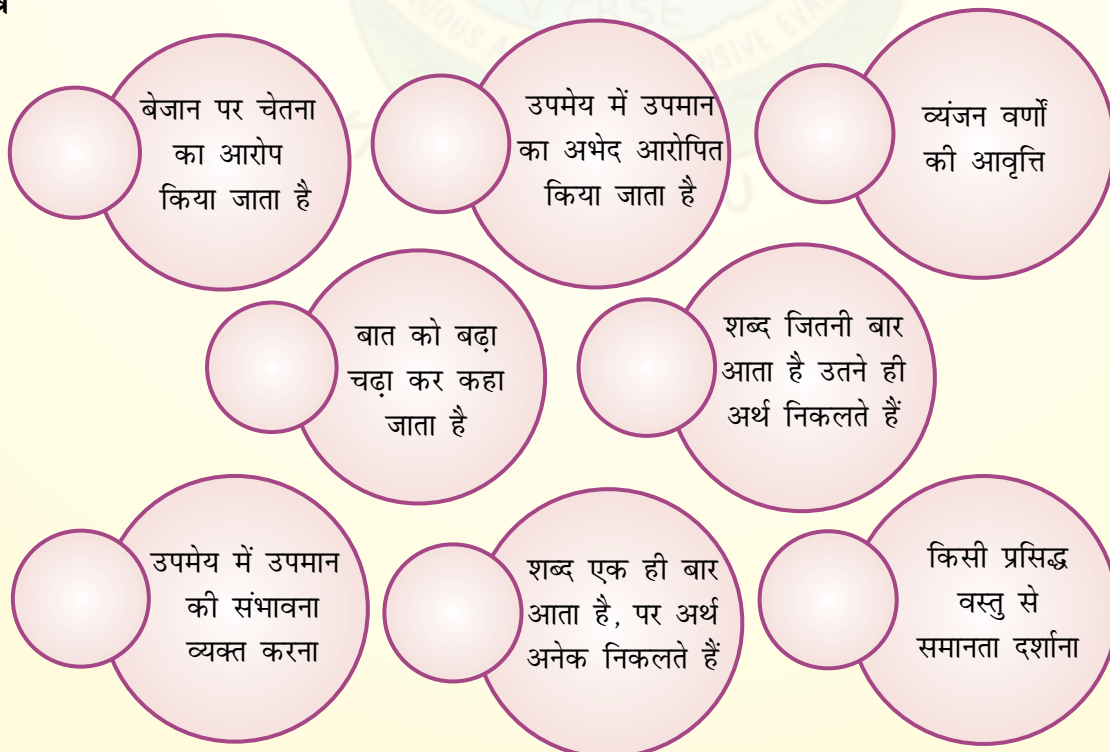
उद्देश्य

- अलंकारों की पहचान करना
- विचार विश्लेषण की दक्षता का विकास करना
- लेखन क्षमता का विकास करना
- अलंकारों के प्रयोग में प्रवीणता लाना।

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक अलंकार पढ़ाने के बाद यह गतिविधि कराएँगे। नीचे दिए गए गोले श्यामपट्ट पर अध्यापक बना देंगे तथा सभी छात्रों से अपनी उत्तर पुस्तिका में बनाने के निर्देश देंगे। यह कार्य छाया प्रतिलिपि (फोटो स्टेट) द्वारा भी कराया जा सकता है।
- सभी छात्रों को खाली स्थान भरने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- अध्यापक इस बीच छात्रों का निरीक्षण करेंगे।
- लेखन कार्य करने के बाद कार्य प्रपत्र एकत्र कर लिए जाएंगे तथा अध्यापक सुविधानुसार अथवा छात्रों की मदद से उसका मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार प्रारम्भ में ही बता दिए जाएंगे।

प्रपत्र



Unit 29

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

कोई दो सही होने पर	1
कोई चार सही होने पर	2
कोई छह सही होने पर	3
कोई आठ सही होने पर	4

प्रतिपुष्टि

- जिन विद्यार्थियों ने सभी रिक्त गोले सही भरे हों उनकी सराहना की जाए।
- जो विद्यार्थी कार्य पूर्ण नहीं कर पाए शिक्षक अलंकार समझने में उनका मार्ग दर्शन करें।

प्रदत्त कार्य - दिए गए वाक्यों में अलंकार के सही विकल्प पर सही का निशान लगाना।

उद्देश्य

- अलंकारों का ज्ञान कराना
- चिंतन मनन की क्षमता में वृद्धि करना
- निर्णय क्षमता का विकास कराना
- अलंकारों के प्रयोग में प्रवाह लाना।

प्रक्रिया

- यह कार्य व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
- अध्यापक सर्वप्रथम विषय की पूर्ण जानकारी देंगे।
- निम्नलिखित में कोई न कोई अलंकार निहित है तथा उनके सामने तीन तीन विकल्प दिए गए हैं सही विकल्प पर सही का निशान लगाना है।

1. चारु चंद्र की चंचल किरणे खेल रही है जल थल में
(यमक अलंकार, उपमा, अनुप्रास)
2. अंबर-पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी
(रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा)
3. आए महंत बसंत
(उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक)
4. सिर फट गया उसका मानो अरुण रंग का घड़ा हो
(उपमा, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा)



5. मुख बाल रवि सम लाल होकर ज्वाल सा बोधित हुआ
(उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक)
6. बढ़त-बढ़त संपत्ति सलिल, मन सरोज बढ़ि जाय
(रूपक, अनुप्रास, उपमा)
7. कालिंदी कूल कदंब की डारन
(अनुप्रास, श्लेष, यमक)
8. वह बांसुरी की धुनि कानि परै कुल कानि हियो तजि भाजति है
(उपमा, श्लेष, यमक)
9. मधुवन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी कलियाँ
(यमक, श्लेष, उपमा)
10. “पीपर-पात सरिस मन डोला”
(उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा)
11. कहे कवि बेनी बेनी, व्याल की चुराई लीनी
(पुनरुक्ति प्रकाश, यमक, अनुप्रास)
12. मंगन को देख पट देत बार-बार
(अनुप्रास, यमक, श्लेष)
13. मेघ आए बड़े बन ठन के सँवर के
(उपमा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण)
14. तरु पल्लव चन्द्रकला से धुले
(उत्प्रेक्षा, उपमा, श्लेष)
15. गांव में, हृदय में, वन में, तरु में तथैव तड़ाग में
(यमक, अनुप्रास, श्लेष)
16. तब तो बहता समय शिला सा जम जाएगा
(अनुप्रास, यमक, उपमा)
17. रती रती शोभा सब रती के शरीर की
(अनुप्रास, यमक, श्लेष)



18. लंबा होता ताड़ का वृक्ष जाता, मानो नभ छूना चाहता वह तुरंत ही

(उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक)

19. मधुबन की छाती को देखो सूखी इसकी कितनी कलियाँ

(रूपक, श्लेष, उपमा)

20. चरण कमल बंदौ हरिराई

(उपमा, रूपक, श्लेष)

❖ इस गतिविधि के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।

❖ अध्यापक इस दौरान कक्षा का निरीक्षण करेंगे।

❖ गतिविधि के उपरान्त शिक्षक सभी छात्रों से प्रपत्र एकत्रित कर लेंगे तथा छात्रों की मदद से मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

❖ चार विकल्प सही होने पर 1 अंक दिया जाएगा इस प्रकार जिस छात्र के सभी उत्तर सही होंगे उन्हें 5 अंक दिए जाएँगे।

प्रतिपुष्टि

❖ जिन छात्रों के सभी विकल्प सही होंगे उनकी सराहना अवश्य की जाए।

❖ जिन विद्यार्थियों का कार्य सही नहीं था अथवा ठीक से कर नहीं पाए उनकी समझने में सहायता की जाए।



निबन्ध

प्रदत्त कार्य - 'विद्यार्थी-जीवन' निबन्ध लेखन एवं वाचन

उद्देश्य

- सृजनात्मकता का विकास करना
- चिंतन एवं मनन की प्रवृत्ति का विकास करना
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास करना
- विचाराभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना
- तार्किकता की क्षमता का विकास करना

प्रक्रिया

- यह कार्य सामूहिक रूप से किया जाएगा।
- शिक्षक सर्वप्रथम विषय की जानकारी देंगे।
- कक्षा को छह समूहों में विभाजित किया जाएगा।
- सभी समूहों को निम्नलिखित विषयों पर विचार विमर्श करके लिखने के लिए कहा जाएगा। एक समूह को एक विषय दिया जाए। विषय - प्रस्तावना, विद्यार्थी जीवन में ज्ञानार्जन, विद्या तथा चरित्र का महत्व, विद्यार्थी के आवश्यक गुण, प्राचीन विद्यार्थी और आधुनिक विद्यार्थी, विद्यार्थी के कर्तव्य एवं उपसंहार।
- समूह चर्चा एवं लेखन के लिए 15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस बीच अध्यापक सभी समूहों का निरीक्षण करेंगे और देखेंगे कि सभी विद्यार्थी अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं।
- अपने अपने विषयों पर लेखन के पश्चात् सभी समूहों से एक छात्र प्रतिनिधि प्रस्तुतीकरण देगा यह कार्य निबन्ध के अनुसार क्रम से होगा।
- मूल्यांकन के आधार शिक्षक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
- इस निबन्ध लेखन की पूरी प्रक्रिया में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु

अंक विभाजन

विषय वस्तु की जानकारी	2
भाषायी दक्षता	2
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण आदि)	1



टिप्पणी

- ❖ मूल्यांकन के आधार शिक्षक स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

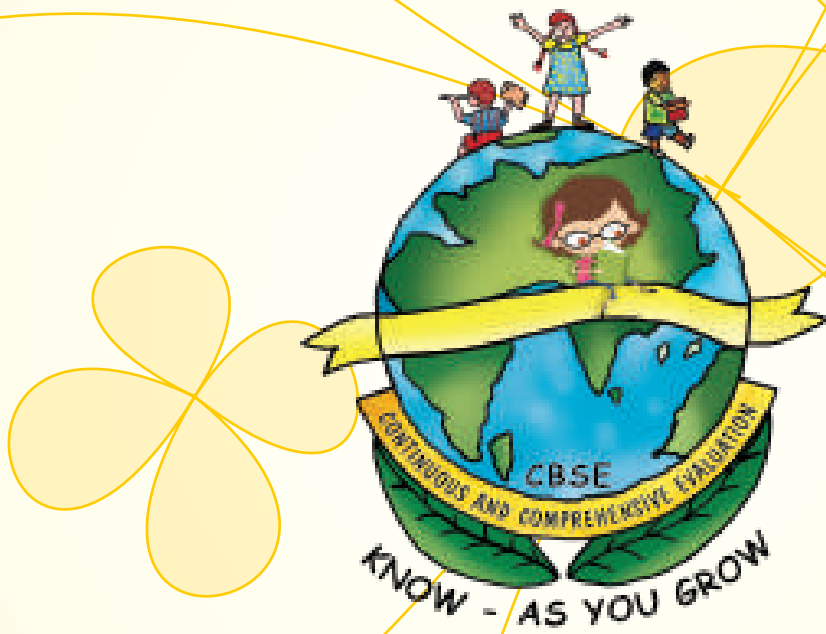
प्रतिपुष्टि

- ❖ अच्छे विचारों के लिए छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ जो विषय (विचार) विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नहीं किए गए हों अध्यापक उनको स्पष्ट करें ताकि निबंध प्रभावशाली बन सके।





हिन्दी पाठ्यक्रम 'ब'



हिन्दी पाठ्यक्रम 'ब'
कक्षा-दसवीं
रचनात्मक मूल्यांकन

		स्पर्श (गद्य)	स्पर्श (पद्य)	संचयन	व्याकरण
FA-1	रचनात्मक मूल्यांकन-1 (अप्रैल-मई) भार विभाजन-10% प्रदत्त कार्य	1. बड़े भाई साहब 2. डायरी का एक पन्ना	1. कबीर (साखी) 2. मीरा(पद)	1. हरिहर काका	शब्द, पद, पदबंध, पद परिचय, मुहावरे और लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग
FA-2	रचनात्मक मूल्यांकन-2 (जुलाई-अगस्त) भारविभाजन-10% प्रदत्त कार्य	3. तँतारा वामीरो कथा 4. तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र	3. सुमित्रानंदन पंत (पर्वत प्रदेश में पावस) 4. वीरेन डंगवाल (तोप)		मिश्र व संयुक्त वाक्य, स्वर संधि, पत्र व अनुच्छेद तत्पुरुष, कर्मधारय समास मुहावरे, लोकोक्तियाँ
SA-1	सितम्बर भारविभाजन 20%				
FA-1	रचनात्मक मूल्यांकन-3 (अक्टूबर-दिसंबर) भारविभाजन-10% प्रदत्त कार्य	5. गिरगिट 6. अब कहां दूसरे के दुख से दुखी होने वाले	5. बिहारी (दोहे) 6. मैथिलीशरण गुप्त (मनुष्यता) 7. महादेवी वर्मा (मधुर-मधुर मेरे दीपक जल)	2. सपनों के से दिन	पदबंध, मिश्र व संयुक्त वाक्य, समास मुहावरे एवं लोकोक्तियां



		स्पर्श (गद्य)	स्पर्श (पद्य)	संचयन	व्याकरण
FA4	रचनात्मक मूल्यांकन-4 (जनवरी-फरवरी) भारविभाजन-10% प्रदत्त कार्य	7. पतझड़ में टूटी पत्तियाँ 8. कारतूस	8. कैफी आजमी (कर चले हम फ़िदा) 9. रवींद्रनाथ ठाकुर (आत्मत्राण)	3. टोपी शुक्ला	पद परिचय, स्वर संधि, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ, अशुद्ध वाक्यों का शोधन, अनुच्छेद लेखन

दसवीं (ब)	1	2	3	4	5
FA1					
बड़े भाई साहब	वाद विवाद	समय नियोजन पर परिचर्चा	समय सारिणी तैयार करना	कम अंक प्राप्त करने का स्वअनुभव	कहानी का नाट्य मंचन
डायरी का एक पन्ना	डायरी लेखन	स्वतंत्रता सेनानी का चरित्रांकन	परियोजना कार्य	प्रचार-प्रसार माध्यमों पर विचाराभिव्यक्ति	विज्ञापन निर्माण
कबीर (साखी)	दोहा गायन (पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त)	परिचर्चा : अहंकार अज्ञानता का सूचक	अनुभव- प्रस्तुतीकरण - आलोचना का प्रभाव	तुकबंदी से दोहा रचना	मीठी वाणी - प्रस्तुतीकरण, लेखन एवं वाचन
मीरा (पद)	कार्य प्रपत्र-क्षेत्र विशेष	पद गायन (पाठ से अतिरिक्त)	प्रसंग सुनाना	परियोजना कार्य-दशावतार	कृष्णलीला मंचन
हरिहर काका (संचयन)	कहानी का मौलिक अंत	विचारा- भिव्यक्ति - धन का प्रभाव	एकांकी मंचन	समाज में अकेले व्यक्तियों की दशा- विचारा- - भिव्यक्ति	परिचर्चा- मीडिया का जनजीवन पर प्रभाव



FA2					
तैतारा वामीरो कथा	मौलिक कहानी लेखन	लोककथा पर नाटक मंचन	लोकगीत गायन	परिचर्चा - सामाजिक रूढ़ियां	क्रोध पर स्व अनुभव- प्रस्तुतीकरण
तीसरी कसम...	राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्मों की सूची	परिचर्चा-पहले और अब की फिल्मों में समानता-अंतर	साहित्यिक रचनाओं पर कार्य प्रपत्र	परियोजना कार्य - गीतों का संकलन	फिल्म समीक्षा
पर्वत प्रदेश में पावस	कविता-पाठ (ऋतुओं पर)	स्वरचित कविता	घटना वर्णन	कार्य प्रपत्र-पर्वतीय प्रदेश	पंत जी की अन्य कविता का गायन
तोप	कार्य प्रपत्र (ऐतिहासिक इमारतें)	देश भक्तों का पात्र चरित्रांकन	परियोजना कार्य-युद्ध का प्रभाव	संस्मरण वाचन/लेखन	नुक्कड़ नाटक लेखन/प्रस्तुति
FA3					
गिरगिट	संपादक को पत्र	कहानी का नाट्य मंचन	चित्र के आधार पर कहानी लेखन व वाचन	वर्ग-पहेली (पशु-पक्षी)	भ्रष्टाचार पर विचार लेखन व प्रस्तुति
अब कहां दूसरे के दुख...	वाद विवाद	स्लोगन (वृक्षारोपण)	परिचर्चा (विलुप्त प्रजातियां)	स्वरचित कविता	चित्र के आधार पर अनुच्छेद लेखन
बिहारी (दोहे)	ग्रीष्म ऋतु पर स्वरचित कविता	विषय विशेष पर दोहों का संकलन एवं गायन	परिचर्चा-बाह्य आडंबर	परियोजना कार्य-भारतीय वाद्य यंत्र	विचाराभिव्यक्ति -दोहों की प्रासंगिकता



मधुर-मधुर मेरे...	संस्मरण/रेखाचित्र की समीक्षा	कविता गायन/वाचन (पाठ से अतिरिक्त)	कार्य प्रपत्र-जीव जंतुओं पर प्रकृति का प्रभाव	स्वरचित कविता	स्वानुभव अभिव्यक्ति
सपनों के से दिन	विचाराभिव्यक्ति (आदर्श शिक्षक)	वाद-विवाद	स्वानुभव (मानव व्यवहार)	नाट्य मंचन	कार्य प्रपत्र (विद्यालय की जानकारी)
पतझड़ में टूटी पत्तियां	परिचर्चा (जीवन में तनाव)	वाद-विवाद	मानचित्र (चाय उत्पादक राज्य)	विचाराभिव्यक्ति (आदर्शवादी लोगों के आदर्श)	सूची निर्माण
कारतूस	एकाकी मंचन	चित्र के आधार पर कहानी लेखन/वाचन	साहसिक कारनामे का वर्णन	मुहावरों पर कार्य-प्रपत्र	कार्यप्रपत्र (स्वतंत्रता)
करचले हम फिदा	देशभक्ति गीतों का गायन	विचार-प्रस्तुति- फिल्मों का समाज पर प्रभाव	परियोजना कार्य (जल, थल, वायु सेना से संबंधित)	देशभक्ति पर आधारित एकांकी मंचन	सैनिक से साक्षात्कार
आत्मत्राण	प्रार्थना गीत गायन (पाठ से अतिरिक्त)	परिचर्चा (विपदा की घड़ी)	स्वरचित कविता	ठाकुर जी की अन्य रचना का वाचन/गायन	परियोजना कार्य (शांति निकेतन)
टोपी शुक्ला	विचाराभिव्यक्ति (मित्रता व जाति)	संस्मरण (दादा-दादी, नाना-नानी) यादें	विचाराभिव्यक्ति (मेरा मित्र इसलिए सबसे अच्छा है क्योंकि....)	स्वानुभव (अच्छा परिणाम न आने पर)	स्वानुभव (जब आप अकेले होते हैं तो.....)





बड़े भाई साहब

प्रेमचंद

प्रदत्त कार्य-1 (वाद-विवाद)

विषय : सतत एवं समग्र मूल्यांकन (CCE) प्रणाली और मेरा नजरिया

उद्देश्य :

- ❖ नवीन शिक्षा प्रणाली के प्रति जागरुकता
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ सकारात्मक व आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास
- ❖ चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ आत्मविश्वास व धारा प्रवाह अभिव्यक्ति

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को कुछ समूहों में बांट कर विषय के संदर्भ में संक्षेप में समझाएं।
- ❖ प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी पक्ष में और एक विपक्ष में अपने-अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को पूर्व में ही बता दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ शिक्षक इस दौरान विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।
- ❖ पक्ष व विपक्ष के मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण	1
भाषायी दक्षता एवं सुसंबद्धता	1
विषय वस्तु	1
तार्किक क्षमता	1
उपयुक्त उदाहरण (तर्क के लिए पुष्टि)	1

टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक स्वतंत्र रूप से अन्य उचित बिंदु को आधार बनाकर भी अंक प्रदान कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ प्रत्येक वक्ता को अभिप्रेरित एवं प्रोत्साहित करना।
- ♦ अच्छे प्रस्तुतीकरण की सराहना।
- ♦ मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखना।
- ♦ शिक्षक सभी विद्यार्थियों की भागीदारी को सुनिश्चित करें।

प्रदत्त कार्य-2 'समय नियोजन की आवश्यकता क्यों?' विषय पर विचार एवं प्रस्तुतीकरण।

उद्देश्य :

- ♦ समय नियोजन के महत्व से परिचित करवाना
- ♦ समय प्रबंधन का ज्ञान
- ♦ व्यवहार कुशल बनाना
- ♦ अभिव्यक्ति कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ♦ व्यक्तिगत कार्य
- ♦ सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों के समक्ष प्रश्न रखेंगे कि अगर विद्यालय में विभिन्न विषयों के लिए निश्चित कालांश न हो तो क्या होगा....
- ♦ विद्यार्थी आपसी विचार-विमर्श के पश्चात् जिस नतीजे पर पहुंचे उस पर चर्चा की जाएगी व छात्रों के समक्ष ऐसी स्थिति रखी जाएगी कि अगर हम जीवन में समय नियोजन न करें तो क्या होगा।
- ♦ मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को पहले ही स्पष्ट कर दिए जायेंगे।
- ♦ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दस मिनट का समय दिया जाएगा।
- ♦ प्रत्येक समूह/वक्ता को विचाराभिव्यक्ति के लिए एक मिनट का समय दिया जाएगा।
- ♦ विद्यार्थियों के विचार-विमर्श के समय शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे।
- ♦ एक वक्ता की प्रस्तुति के समय अध्यापक एवं अन्य छात्र उनका मूल्यांकन करेंगे।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
शब्द चयन एवं वाक्य रचना	1
सहभागिता एवं सक्रिय योगदान	1
आत्मविश्वास एवं हाव-भाव	1
प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य मूल्यांकन बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ मुख्य एवं अच्छे विचार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ गलतियों एवं अशुद्धियों का निदान किया जाए।
- ❖ समय नियोजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ अच्छी प्रस्तुति की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-3 समय-सारिणी तैयार करना (सम्पूर्ण दिनचर्या हेतु) एवं स्वमूल्यांकन**उद्देश्य :**

- ❖ समय नियोजन के महत्व से परिचित करवाना
- ❖ समय प्रबंधन का ज्ञान
- ❖ दैनिक क्रियाकलापों में लगने वाले समय का ज्ञान
- ❖ विचार-मंथन एवं चिंतन

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी को विस्तार से विद्यार्थियों को समझाएं।
- ❖ शिक्षक उदाहरण स्वरूप एक समय-सारिणी श्यामपट्ट पर बनाकर समझा सकते हैं।
- ❖ विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय अवश्य दें।
- ❖ अपनी दिनचर्या में वे क्या सुधार करना चाहते हैं और क्यों? इस विषय पर कम से कम 3-4 पंक्तियाँ अवश्य लिखें।



- इस दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।
- कार्य पूर्ण होने के पश्चात् शिक्षक मौखिक या लिखित किसी रूप में मूल्यांकन कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

मौलिकता	1
व्यावहारिकता	1
भाषा शुद्धता (वर्तनी)	1
क्रमबद्धता	1
समग्र प्रस्तुति (विचार, स्वमूल्यांकन)	1
	5

टिप्पणी :

- शिक्षक अन्य किसी उपयुक्त बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- मौलिक, व्यावहारिक व प्रभावशाली कार्य की सराहना।
- दिनचर्या की समय सारिणी में किस कार्य के लिए कितना समय देना उचित है इस बारे में विद्यार्थियों को शिक्षक सुझाव अवश्य दें।
- कार्य पूर्ण न करने वाले विद्यार्थियों को सहायता प्रदान कर कार्य पूरा करवाएं।

प्रदत्त कार्य-4 “जब आपके कम अंक आए तो.....” स्वानुभव

उद्देश्य :

- चिंतन-मनन की क्षमता का विकास
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास
- स्वमूल्यांकन की क्षमता का विकास
- आत्मविश्लेषण की क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक स्वानुभव छात्रों को सुनाएगा ‘जब बचपन में उसकी कमियों पर उसे नसीहतें दी गईं।’ साथ ही स्वयं पर क्या प्रभाव पड़ा इसपर भी विचार व्यक्त करें।
- प्रत्येक विद्यार्थी को लिखने व तैयारी के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।



- प्रत्येक वक्ता को बोलने के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- एक वक्ता की प्रस्तुति के समय अध्यापक व अन्य छात्र उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
मौलिकता	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
सटीक वाक्य रचना व क्रमबद्धता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य उपयोगी बिन्दुओं को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सशक्त प्रस्तुतीकरण की सराहना व विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।
- कमजोर/औसत प्रस्तुतीकरण को प्रोत्साहन।
- उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को छात्रों की सहायता से दूर करने का प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 'बड़े भाई साहब' का नाट्य मंचन

उद्देश्य :

- अभिनय क्षमता का विकास
- शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास
- ग्रहणशीलता की क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

- समूह कार्य (प्रत्येक समूह में सात-आठ छात्र हो सकते हैं)
- यह कार्य पूरा पाठ पढ़ाने और समझाने के पश्चात् दिया जाएगा।



- ♦ अध्यापक द्वारा नाटक प्रस्तुतीकरण में मुख्य आधारों का विवरण देना।
- ♦ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखना (प्रत्येक नाटक की प्रस्तुति का समय 5-7 मिनट)
- ♦ तैयारी के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाएगा।
- ♦ अध्यापक सप्ताह के बीच-बीच में छात्रों से उनके कार्य की प्रगति पर बातचीत करके प्रोत्साहित करते रहेंगे।
- ♦ नियत दिन पर प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व कक्षा के अन्य समूह उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

भाषा प्रयोग (शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना)	1
संवाद शैली	1
अभिनय शैली	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हावभाव)	1
	5

टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना
- ♦ अभिनय विशेष की सराहना
- ♦ कमजोर अभिनय व प्रस्तुति को प्रोत्साहन





डायरी का एक पन्ना

सीताराम सेक्सरिया

प्रदत्त कार्य-1 डायरी-लेखन

उद्देश्य :

- डायरी लेखन विधा से परिचय
- आत्मविश्लेषण क्षमता का विकास
- लेखन कौशल का विकास
- निरीक्षण एवं स्मरण शक्ति का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- शिक्षक सर्वप्रथम विद्यार्थियों को डायरी-लेखन विधा के विषय में बताएं।
- डायरी लेखन के लिए आवश्यक तथ्यों को समझाया जाए। जैसे - दिनांक, विवरण, मौलिकता, निष्पक्षता, स्पष्टता एवं सत्यता आदि।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु पहले ही बता दिए जाएँ।
- इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को कम से कम दो दिन पूर्व ही सूचित कर दिया जाए।
- विद्यार्थी अपने पूरे दिन की दिनचर्या को संक्षेप में लिखें।
- शिक्षक लिखित पत्र की जांच कर मूल्यांकन कर सकते हैं अथवा लिखित पत्र को विद्यार्थी कक्षा में सुना भी सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	2
डायरी लेखन प्रारूप	1
भाषा, वर्तनी	1
समग्र प्रस्तुति	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयोगी बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली कार्य की सराहना की जाए।
- अधूरे कार्य को पूर्ण करने हेतु थोड़ा और समय दिया जाए।
- महत्वपूर्ण बिन्दुओं के चयन हेतु मार्गदर्शन किया जाए।
- अशुद्धियों का सुधार कर शुद्ध लेखन के लिए प्रेरित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 स्वतंत्रता सेनानी का चरित्रांकन

स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले किसी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में छात्र-प्रस्तुति

उद्देश्य :

- देशभक्ति की भावना का संचार
- स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति गौरव व आदर भाव
- अभिनय क्षमता व संवाद शैली का विकास
- मंच भय से मुक्ति
- स्वाध्याय की प्रेरणा

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक स्वयं किसी स्वतंत्रता सेनानी के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करते हुए छात्रों को कार्य से परिचित कराएं।
- दो दिन पूर्व छात्रों को स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में जानकारी एकत्रित करने का निर्देश दिया जाए।
- कार्य से पूर्व शिक्षक छात्रों से चर्चा कर उनका मार्गदर्शन करें तथा जानकारी प्राप्त करने हेतु स्रोत के विषय में भी बताएं।
- प्रस्तुति हेतु प्रत्येक विद्यार्थी को 2-3 मिनट का समय दिया जाए। 8-10 वाक्यों में छात्र विषय को प्रस्तुत करें।
- कार्य का मूल्यांकन छात्र व अध्यापक दोनों मिलकर कर सकते हैं।
- कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार व अंक श्याम-पट्ट पर लिखें।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु (जीवन व कार्य के विषय में जानकारी)	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह, प्रवाहशीलता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ शिक्षक आवश्यकतानुसार अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता व प्रस्तुति के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ उत्कृष्ट प्रस्तुति की प्रशंसा की जाए।
- ❖ कार्य में कमी होने पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें तथा सुधार हेतु सुझाव दें।
- ❖ प्रस्तुति के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों के नाम की सूची श्याम-पट्ट पर बनवाई जा सकती है।
- ❖ छात्रों के सहयोग से सर्वश्रेष्ठ वक्ता का चयन किया जा सकता है।
- ❖ स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र भी संकलित करवाए जा सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-3 परियोजना कार्य

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

उद्देश्य :

- ❖ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान
- ❖ स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान का ज्ञान
- ❖ देशभक्ति की भावना का संचार
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक लक्ष्मीबाई, चन्नमा, सरोजिनी नायडू आदि महिला स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उनके जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालेंगे।



- कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाते हुए दो दिन पूर्व ही उन्हें आवश्यक जानकारी एकत्रित करने का निर्देश दें। इसके लिए पुस्तकालय, सामाजिक ज्ञान के शिक्षक का सहयोग लिया जा सकता है।
- कार्य से पूर्व शिक्षक छात्रों से चर्चा कर उनका मार्गदर्शन करें।
- किसी एक महिला स्वतंत्रता सेनानी के विषय में जानकारी एकत्रित करके संपूर्ण विवरण कॉपी में लिखें व संबंधित चित्र भी चिपकाएं।
- छात्रों को इस कार्य के लिए 2-3 दिनों का समय दिया जाए।
- कार्य के पश्चात् शिक्षक व छात्र दोनों मिलकर विभिन्न प्रस्तुतियों का मूल्यांकन करेंगे।
- कार्य से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार पर श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु**अंक विभाजन**

विषय वस्तु	2
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना	1
प्रस्तुतीकरण (चित्रों का संकलन)	1
भाषा संबंधी शुद्धता	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता व प्रस्तुति के संदर्भ में छात्रों की सराहना की जाए।
- उत्कृष्ट प्रस्तुति की प्रशंसा की जाए।
- सभी प्रस्तुतियों को प्रदर्शनी रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रदत्त कार्य-4

प्रचार-प्रसार माध्यमों के प्रकार व उपयोगिता-लेखन व अभिव्यक्ति।

उद्देश्य :

- प्रचार-प्रसार माध्यमों का ज्ञान व महत्व
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- लेखन व वाचन क्षमता का विकास
- वैचारिक मंथन, विश्लेषण, निरीक्षण क्षमता का विकास



प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक समाचार पत्रों की दैनिक जीवन में उपयोगिता व महत्ता बताते हुए प्रचार-प्रसार माध्यमों से परिचित करवाएँ।
- ❖ यह कार्य पाठ समाप्ति के पश्चात् करवाया जाए।
- ❖ प्रत्येक समूह को निर्देश दिया जाए कि वे प्रचार-प्रसार माध्यमों की सूची बनाएँ तथा संक्षेप में उनकी उपयोगिता भी लिखें।
- ❖ इस कार्य के लिए प्रत्येक समूह को 15-20 मिनट का समय दिया जाए। इस कार्य के दौरान शिक्षक छात्रों का मार्गदर्शन भी करें तथा निरीक्षण भी करें।
- ❖ प्रत्येक समूह से एक छात्र कार्य को प्रस्तुत करें। इस समय अन्य समूह तथा शिक्षक मूल्यांकन करें।
- ❖ समूह के आधार पर प्रत्येक छात्र हेतु अंक निर्धारण किया जाए।
- ❖ कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधारों तथा अंकों से छात्रों को सूचित करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

अधिकतम प्रचार प्रसार माध्यमों की जानकारी	2
प्रस्तुतीकरण (उपयोगिता, हाव-भाव, आरोह-अवरोह सटीक वाक्य रचना व शब्द चयन)	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ शिक्षक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ समूह में सफलतापूर्वक कार्य करने के संदर्भ में छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य में कमी होने पर छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए अन्य समूहों के सहयोग से कार्य पूर्ण करने की प्रेरणा दें।
- ❖ छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले समूह का चयन भी किया जा सकता है।
- ❖ प्राप्त जानकारी को लिपिबद्ध कर कक्षा के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जा सकता है।



Unit 2

पन्ना एक का डायरी - रचनात्मक मूल्यांकन

प्रदत्त कार्य-5

विज्ञापन निर्माण

उद्देश्य :

- ♦ जनसंचार माध्यम के प्रति रुझान
- ♦ रचनात्मकता का विकास
- ♦ लेखन-कौशल का विकास
- ♦ विचार-विश्लेषण एवं तथ्यों का संकलन

प्रक्रिया :

- ♦ सामूहिक कार्य
- ♦ शिक्षक द्वारा बहुचर्चित विज्ञापनों को पढ़कर या विज्ञापनों के विषय में चर्चा करके छात्रों को विज्ञापन निर्माण के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- ♦ विद्यार्थियों को विज्ञापन निर्माण से संबंधित नियमों, शब्द-चयन, भाषा, आदि से परिचित कराया जाएगा।
- ♦ चार-पांच छात्रों का एक समूह बनाकर सम्पूर्ण कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँट दिया जाएगा।
- ♦ विद्यार्थियों को पल्ल पोलियो, रक्तदान, साक्षरता, एड्स एवं भारतीय संस्कृति की धरोहर की रक्षा आदि विषय दिए जाएंगे।
- ♦ विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार विषय का चयन करें।
- ♦ चुने गए विषय से संबंधित सामग्री हस्तलिखित होनी चाहिए।
- ♦ मूल्यांकन के आधार पहले से ही छात्रों को बता दिए जाएं।
- ♦ गतिविधि पूर्ण होने तक शिक्षक छात्रों के कार्य पर ध्यान दें व आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय सामग्री का चयन	2
शब्द चयन एवं प्रभावशाली भाषा	1
तुकबंदी	1
कलात्मक प्रस्तुति	1

5

टिप्पणी :

अध्यापक किसी अन्य बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।



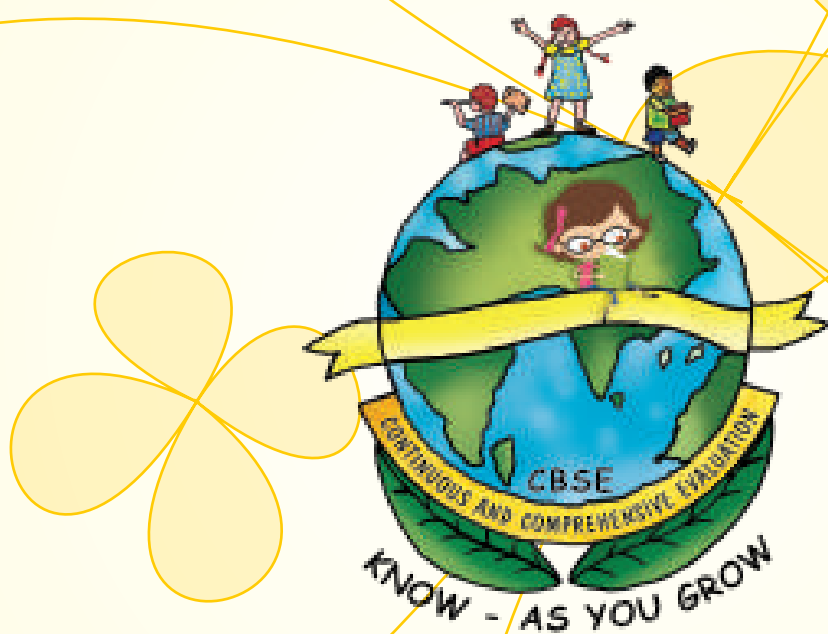
प्रतिपुष्टि :

- कक्षा में निर्मित सभी विज्ञापनों की प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- कार्य में कुछ कमी होने पर विद्यार्थियों को उससे परिचित करवाते हुए उसमें सुधार के लिए सुझाव दिए जाएं।
- सभी विद्यार्थियों के कार्य को कक्षा के सूचनापट्ट पर या विद्यालय के सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।



रचनात्मक मूल्यांकन - डायरी का एक पन्ना







कबीर

प्रदत्त कार्य-1 दोहा गायन (पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त पांच दोहों का संकलन एवं गायन)

उद्देश्य :

- ❖ श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ आत्मविश्वास की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ अध्यापक पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य दोहों का सस्वर वाचन विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करें।
- ❖ विद्यार्थियों को कबीर के पांच दोहों को छांटकर सस्वर गायन की प्रेरणा दें।
- ❖ चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाए।
- ❖ तैयारी के लिए 2 दिन का समय दिया जाए।
- ❖ प्रत्येक समूह को प्रस्तुति के लिए 2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही छात्रों को बता दिए जाएं।
- ❖ एक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व अन्य समूह-मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

दोहा चयन	1
उच्चारण	1
सस्वर गायन	1
आत्मविश्वास	1
स्मृति	1
	5



टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु का भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- अशुद्ध उच्चारण का सही उच्चारण बताएं।
- जो ठीक से गा नहीं पाए हैं शिक्षक उनकी सहायता करें।

प्रदत्त कार्य-2 'अहंकार अज्ञानता का सूचक है' परिचर्चा

उद्देश्य :

- विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास
- मानवीय मूल्यों का विकास
- शब्द भंडार के अनुप्रयोग की प्रेरणा
- वाचन क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक अहंकार से होने वाली हानियों के विषय में चर्चा करें।
- उपरोक्त कार्य के विषय में विस्तार से छात्रों को समझाएं।
- सम्पूर्ण कक्षा को 5-6 छात्रों के समूह में विभाजित किया जाए।
- प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।
- प्रस्तुति हेतु प्रत्येक समूह को 2-3 मिनट का समय दिया जाए।
- शिक्षक इस बात का ध्यान रखे कि समूह का प्रत्येक विद्यार्थी परिचर्चा में हिस्सा लें।
- एक समूह द्वारा विचार प्रस्तुति के समय अन्य विद्यार्थी तथा शिक्षक कार्य का मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु

1



तर्क द्वारा विचारों की पुष्टि	1
विचार विश्लेषण का स्तर	1
प्रस्तुतीकरण - आत्मविश्वास, स्वर की स्पष्टता	1
समूह कार्य में सक्रियता	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकता है।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ उत्कृष्ट विचाराभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- ❖ विचाराभिव्यक्ति में कमी होने पर अन्य विद्यार्थियों की सहायता से उसे दूर करने का प्रयास किया जाए।
- ❖ उच्चारण की शुद्धता के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य-3 किसी ऐसी घटना का वर्णन जिसमें अपनी आलोचना सुनने के पश्चात् आपने स्वयं को बदला (अनुभव प्रस्तुतीकरण)

उद्देश्य :

- ❖ स्मृति में बसे अनुभव को लिपिबद्ध करने की प्रेरणा
- ❖ मानवीय मूल्यों के प्रति रुझान
- ❖ वाचन क्षमता का विकास
- ❖ शब्द भंडार का अनुप्रयोग

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक अपने जीवन की किसी ऐसी घटना का वर्णन करे जब अपनी आलोचना सुनने के पश्चात् उसने अपने व्यवहार को बदला हो।
- ❖ कार्य से पूर्व विद्यार्थियों को गतिविधि के विषय में विस्तार से बताएँ
- ❖ निजी अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ अनुभव प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक छात्र को 1-2 मिनट का समय दिया जाए।



- प्रस्तुति के समय अध्यापक और अन्य छात्र ध्यान से सुनेंगे और मूल्यांकन करेंगे।
- कार्य से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार से छात्रों को परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु (विषयानुकूल व भावानुकूल)	1
भाषा की प्रवाहशीलता व क्रमबद्धता	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- अध्यापक ध्यान दें कि प्रत्येक विद्यार्थी रुचिपूर्वक गतिविधि में हिस्सा लें।
- विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- सामान्य अशुद्धियों को छात्रों की सहायता से दूर करने का प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 तुकबंदी कर (दोहा रचना)

दोहे में मात्रा संबंधी नियम का पालन आवश्यक नहीं

उद्देश्य :

- ज्ञान का विस्तार
- रचनात्मक क्षमता का विकास
- कल्पनाशीलता का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग की प्रेरणा
- वाचन क्षमता का विकास
- काव्य विधा के प्रति रुझान



प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को तुकबंदी के विषय में समझाते हुए तुकबंदी का एक उदाहरण प्रस्तुत करें, जैसे
“या जगत में संतन ने दी खरी बात बताए।
स्वर्ग-नरक इस जनम में ही कर्मानुसार मिल जाए।”
- ❖ विद्यार्थियों को इसी प्रकार दो पंक्तियों में तुकबंदी करने के लिए निर्देश दिया जाए।
- ❖ तुकबंदी के लिए कक्षा के सभी छात्रों को 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ जब छात्र अपना कार्य कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर छात्रों का निरीक्षण करेंगे व आवश्यकता पड़ने पर सहायता भी करेंगे।
- ❖ दोहा-वाचन के लिए प्रत्येक छात्र को आधा मिनट दिया जाएगा।
- ❖ प्रस्तुति के समय शिक्षक व अन्य छात्र वक्ता का मूल्यांकन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
शब्द चयन व तुकबंदी	1
प्रवाहशील अभिव्यक्ति	1
उच्चारण की शुद्धता	1
आत्मविश्वास, लय, हावभाव	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- ❖ सामान्य अशुद्धियों को शिक्षक द्वारा शुद्ध करके श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ सभी दोहों को सुंदर लेख में लिखवाकर कक्षा के सूचनापट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।



प्रदत्त कार्य-5 'मीठी वाणी का जीवन में महत्व'

अनुच्छेद लेखन एवं प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य :

- विचार विश्लेषण क्षमता का विकास
- नैतिक मूल्यों का विकास
- बौद्धिक क्षमता का विकास
- व्यवहार-सुधार की प्रेरणा
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास
- शब्द भंडार में अभिवृद्धि

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक आसपास के वातावरण से ऐसे लोगों का उदाहरण देगा जिनकी मीठी वाणी के कारण सभी लोग उन्हें पसंद करते हैं।
- कार्य संबंधी जानकारी विस्तार से दी जाए।
- छात्रों को विषय देकर तैयारी के लिए 1-2 दिन का समय दिया जाए।
- प्रत्येक छात्र को विषय संबंधी प्रस्तुति के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- प्रत्येक वक्ता के प्रस्तुतीकरण के समय अन्य छात्र एवं शिक्षक वक्ता की प्रस्तुति का मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
तर्क/उदाहरणों द्वारा कथन की पुष्टि	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1
	5



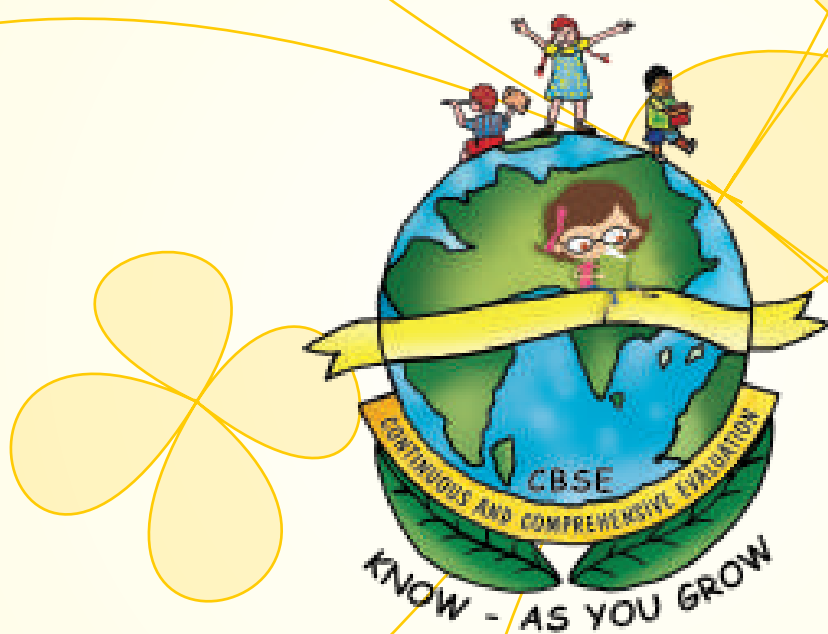
टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ उत्कृष्ट विषय वस्तु व प्रस्तुति की सराहना।
- ♦ सामान्य उच्चारण व अन्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध करना।
- ♦ कार्य पूरा न करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन और सहायता दी जाए।







मीरा

प्रदत्त कार्य-1 कार्य-प्रपत्र

राजस्थान से संबंधित जानकारीयों पर आधारित कार्य-प्रपत्र

उद्देश्य :

- ❖ देश के विभिन्न हिस्सों से जोड़ना
- ❖ राजस्थान के बारे में विशिष्ट जानकारीयां देना
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास
- ❖ लेखन-पठन कौशल का विकास
- ❖ पर्यटन के प्रति अभिरुचि जगाना

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य

कार्य-प्रपत्र

- ❖ राजस्थान के चार प्रमुख पर्यटन स्थलों के नाम
- ❖ परंपरागत वेशभूषा
- ❖ लोक कलाएं
- ❖ लोकगीत व लोकनृत्य
- ❖ कुछ प्रमुख बोलियां (कम से कम 2)
- ❖ खान-पान
- ❖ प्रमुख पशुओं के नाम

पद - रचनात्मक मूल्यांकन



Unit 4

पद - मूल्यांकन रचनात्मक

- पर्यावरण
- ऐतिहासिक किलों के नाम (कम से कम चार)
- राजस्थान की पृष्ठभूमि पर आधारित लोकप्रिय धारावाहिक (कोई 2)
- शिक्षक सर्वप्रथम अपने राज्य से संबंधित कुछ जानकारियां देते हुए कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएं।
- कार्य करवाने से दो दिन पूर्व शिक्षक छात्रों को निर्देश दें कि वे राजस्थान से संबंधित विविध जानकारियां एकत्रित करें।
- निर्धारित कालांश में प्रस्तुत कार्य करवाया जाए। इसके लिए 'कार्य प्रपत्र' भी दिया जा सकता है अथवा कार्य-प्रपत्र को श्याम-पट्ट पर लिखकर कार्य करवाया जा सकता है।
- कार्य-प्रपत्र पूर्ण करने के लिए छात्रों को 10-15 मिनट का समय दिया जाए। इस दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र की गतिविधियों पर दृष्टि रखें।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बताए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

10 जानकारियां देने पर	5
8-9 जानकारियां देने पर	4
6-7 जानकारियां देने पर	3
4-5 जानकारियां देने पर	2
2-3 जानकारियां देने पर	1

टिप्पणी :

- शिक्षक आवश्यकतानुसार राजस्थान पर आधारित कोई अन्य प्रश्न भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों की सहायता से सभी जानकारियां श्याम-पट्ट पर लिख दी जाएं।
- छात्रों को राजस्थान के जन-जीवन, लोक-संस्कृति तथा प्रसिद्ध स्थलों से संबंधित चित्र एकत्रित करने की प्रेरणा दें।



प्रदत्त कार्य-2 मीरा के किसी एक पद का गायन (पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त)

उद्देश्य :

- ❖ कविता गायन के प्रति अभिरुचि का विकास
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ ज्ञान में अभिवृद्धि
- ❖ संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न करना
- ❖ हिंदी की विविध बोलियों से परिचय

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ शिक्षक पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त मीरा के किसी अन्य पद की दो पंक्तियां गाकर छात्रों को सुनाएं।
- ❖ मीरा के पद कहां मिल सकते हैं उस स्रोत की जानकारी शिक्षक छात्रों को दें।
- ❖ पांच से छः विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाए और पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांट दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दो-तीन दिन का समय दिया जाए।
- ❖ प्रत्येक समूह प्रस्तुति करते समय किसी वाद्य यंत्र का प्रयोग भी कर सकता है। (ऐच्छिक)
- ❖ मूल्यांकन के आधार कार्य से पूर्व ही छात्रों को बता दिए जाएं।
- ❖ प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय शिक्षक एवं अन्य समूह मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

उच्चारण की शुद्धता	1
लय एवं ताल	1
सामूहिक तालमेल	1
आरोह-अवरोह	1
प्रस्तुतीकरण	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।



Unit 4

पद - रचनात्मक मूल्यांकन

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक छात्र इस गतिविधि में हिस्सा लें।
- ❖ अच्छे गायन एवं प्रस्तुतीकरण की सराहना।
- ❖ विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- ❖ विद्यार्थी तैयारी के लिए संगीत अध्यापक की सहायता ले सकते हैं।

प्रदत्त कार्य-3 श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित कोई एक प्रसंग सुनाना।

उद्देश्य :

- ❖ कृष्ण जीवन से परिचय
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति एवं स्वाध्याय
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' उक्ति सुनाकर कर्मयोगी श्रीकृष्ण के जीवन का कोई एक प्रसंग कक्षा में सुनाएं।
- ❖ विद्यार्थियों को श्री कृष्ण के जीवन का कोई भी एक प्रसंग जानकर कक्षा में सुनाने का निर्देश दें।
- ❖ तैयारी के लिए विद्यार्थियों को दो-तीन दिन का समय दिया जाए।
- ❖ प्रस्तुति के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

प्रसंग का चयन (विषय व भाव के अनुरूप)	2
शब्द चयन व सटीक वाक्य	1
शुद्ध उच्चारण, स्वर की स्पष्टता	1
प्रस्तुतीकरण (हाव-भाव, आत्मविश्वास व आरोह-अवरोह)	1

5



टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को छात्रों की सहायता से दूर करने का प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 परियोजना कार्य (भगवान विष्णु के दस अवतारों के विषय में जानकारी चित्र सहित)

उद्देश्य :

- संकलन करने की प्रवृत्ति
- स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास
- बौद्धिक विकास
- दशावतार से परिचय
- शब्द ज्ञान में अभिवृद्धि
- कलात्मक अभिरुचि का विकास
- लेखन एवं पठन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- 5-6 छात्रों का एक समूह बनाकर समस्त कक्षा को समूहों में विभक्त कर दिया जाए।
- शिक्षक कार्य की पूर्णता के लिए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें।
- कार्य पूर्ण करने के लिए विद्यार्थियों को तीन-चार दिन का समय दिया जाए।
- परियोजना कार्य का मूल्यांकन शिक्षक स्वयं करें।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

चित्रों का संकलन व समस्त जानकारी देने पर

2

कलात्मक प्रस्तुति

2



Unit 4

पद रचनात्मक मूल्यांकन -

शब्द चयन, सटीक वाक्य और शुद्ध वर्तनी

1

5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ परियोजना की सराहना की जाए।
- औसत व अपूर्ण कार्य करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाए।
- सभी परियोजना कार्यों की प्रदर्शनी लगाई जाए।

प्रदत्त कार्य-5 श्रीकृष्ण की किसी एक लीला का मंचन

उद्देश्य :

- कर्मयोगी कृष्ण के जीवन से परिचय
- भारतीय संस्कृति से जुड़ाव
- अभिनय क्षमता व संवाद प्रस्तुतीकरण का विकास
- पटकथा लेखन का ज्ञान
- श्रवण, वाचन, पठन, लेखन कौशल का विकास
- मंच भय से मुक्ति
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य (5-6 छात्रों का एक समूह)
- सर्वप्रथम शिक्षक कृष्ण लीला से संबंधित धारावाहिक का उल्लेख करते हुए छात्रों से चर्चा करेंगे।
- कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराते हुए विभिन्न लीलाओं के विषय में पूछेंगे तथा उसकी एक सूची श्यामपट्ट पर बनाएंगे। जैसे - माखन चुराना, कालिया मर्दन, कंस वध,..... गोवर्धन प्रसंग, कृष्ण-सुदामा चरित्र, शिशुपाल वध, पांडवों की ओर से संधि प्रस्ताव, विदुर के घर भोजन, दुर्योधन व अर्जुन का सहायता मांगना, कर्मयोग का अर्जुन को संदेश आदि....।
- मंचन की तैयारी हेतु छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- सप्ताह के बीच-बीच में कार्य की प्रगति के विषय में पूछकर छात्रों को प्रोत्साहित करें।



- ❖ मंचन हेतु प्रत्येक समूह को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय व भावानुरूप लीला का चयन	1
पटकथा	1
अभिनय व संवाद शैली	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1
सहभागिता व आत्मविश्वास	1
	5

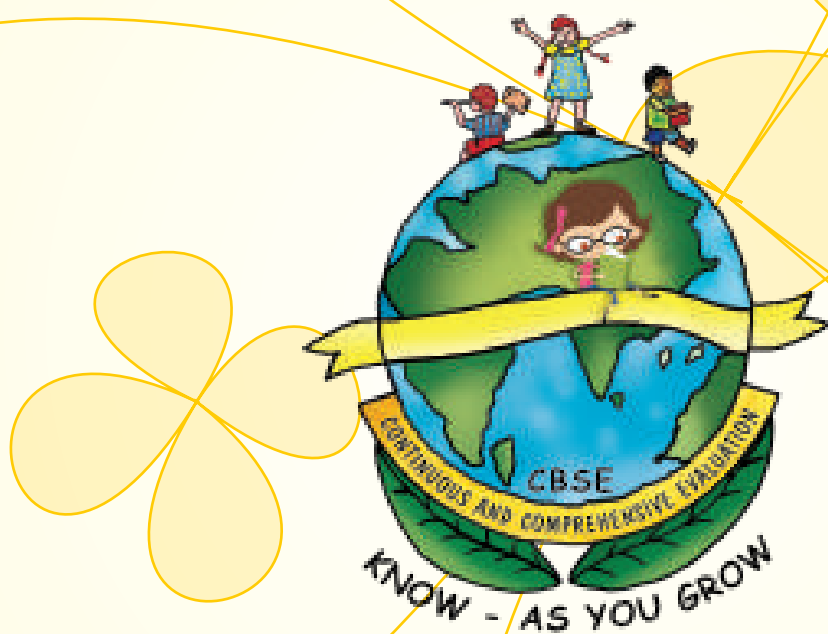
टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता तथा समूह में सक्रिय योगदान के लिए प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य में कमी रह जाने पर सुधारात्मक सुझाव दें।
- ❖ प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ समूह का चयन कर उनकी प्रशंसा की जाए।





हरिहर काका

मिथिलेश्वर

प्रदत्त कार्य-1 'हरिहर काका' कहानी का नवीन अंत

उद्देश्य :

- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ वैचारिक मंथन व चिंतन-मनन की प्रेरणा
- ❖ लेखन व वाचन कौशल का विकास
- ❖ रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ पाठ समाप्ति पर उपरोक्त कार्य करवाया जाए।
- ❖ सर्वप्रथम किसी अन्य कहानी के 'नवीन अंत' के विषय में बताते हुए शिक्षक छात्रों को कार्य से परिचित करवाएं।
- ❖ 'हरिहर काका' कहानी के किसी अन्य अंत के विषय में विचार करने के लिए छात्रों को 10 मिनट का समय दिया जाए तथा कुछ मुख्य बिंदु लिख लेने का निर्देश भी दिया जाए।
- ❖ प्रत्येक छात्र को विचाराभिव्यक्ति हेतु 2 मिनट का समय दिया जाए, वह 9-10 पंक्तियों में कहानी के नवीन अंत के विषय में बताए।
- ❖ गतिविधि के समय शिक्षक प्रत्येक छात्र के क्रियाकलापों पर ध्यान रखें। छात्राभिव्यक्ति के दौरान अन्य विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनें। छात्र व शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

मौलिकता व नवीनता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1
आत्मविश्वास	1
	5



टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति का चयन किया जाए।
- उच्चारण संबंधी त्रुटियों पर छात्रों का ध्यान केन्द्रित कर उन्हें दूर करने का सुझाव दें।

प्रदत्त कार्य-2 “आपसी संबंधों पर धन का प्रभाव”

विचाराभिव्यक्ति

उद्देश्य :

- चिंतन-मनन का विकास
- स्पष्ट व स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- कल्पनाशीलता का विकास
- वाचन कौशल का विकास
- श्रवण कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक दैनिक जीवन में धन की महत्ता पर उदाहरण देते हुए प्रकाश डालें तथा छात्रों को कार्य के स्वरूप से परिचित करवाएं।
- प्रत्येक छात्र को प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु 9-10 मिनट का समय दिया जाए, छात्र मुख्य विचार बिंदु लिखें। इस कतेह में इस समय शिक्षक धूम-धूमक रक त्र्यक निरीक्षणक रेंत थाअ आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक छात्र को 1-2 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अन्य छात्र ध्यानपूर्वक सुनें। छात्र तथा शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक श्यामपट्ट पर कार्य से पूर्व लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु (मौलिकता व व्यावहारिकता)

1

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

1



उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना
- ❖ उच्चारण दोष दूर करने के लिए सुझाव
- ❖ छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति तथा वक्ता का चयन
- ❖ विचाराभिव्यक्ति से संबंधित मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

प्रदत्त कार्य-3 कहानी का एकांकी में रूपांतरण व मंचन

उद्देश्य :

- ❖ एकांकी विधा से परिचय
- ❖ अभिनय क्षमता व संवाद शैली से परिचय
- ❖ पटकथा लेखन का ज्ञान व अभ्यास
- ❖ सहभागिता
- ❖ आत्मविश्वास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य (5-6 छात्रों का एक समूह)
- ❖ प्रस्तुत कार्य के साथ पाठ का आरंभ किया जा सकता है।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कार्य से छात्रों को परिचित करवाते हुए कहानी की पटकथा लेखन के संदर्भ में आवश्यक निर्देश दें तथा आधारों से अवगत कराएं।
- ❖ एकांकी रूपांतरण तथा मंचन की तैयारी हेतु छात्रों को एक सप्ताह का समय दें। सप्ताह के बीच-बीच में कार्य की प्रगति के विषय में पूछकर छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- ❖ नियत दिन पर प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व कक्षा के अन्य समूह उसका मूल्यांकन करेंगे। प्रत्येक समूह को प्रस्तुति हेतु 10-15 मिनट का समय दें।



- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक विभाजन गतिविधि से पूर्व श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

एकांकी रूपांतरण (विषय व भावानुरूप)	1
संवाद शैली (हाव-भाव, आरोह-अवरोह)	1
अभिनय शैली (शब्द चयन, सटीक वाक्च रचना उच्चारण)	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना
- ❖ अभिनय विशेष की सराहना
- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का छात्रों के सहयोग से चयन
- ❖ किसी भी दृष्टि से कमी होने पर सुधार हेतु सुझाव

प्रदत्त कार्य-4 समाज में अकेले व्यक्तियों की दशा-विचाराभिव्यक्ति

उद्देश्य :

- ❖ भावुकता व संवेदनशीलता का विकास
- ❖ समाज के प्रति दायित्व बोध जगाना
- ❖ चिंतन-मनन की प्रेरणा
- ❖ लेखन व वाचन क्षमता का विकास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक समाज में ऐसे व्यक्तियों की दुर्दशा पर प्रकाश डालेंगे जो अकेले तथा बुजुर्ग हैं। इसके लिए समाचार-पत्रों में प्रकाशित खबरों का उदाहरण भी दिया जा सकता है।



- ❖ छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे अपने आस-पास रहने वाले किसी ऐसे व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करें। उनके पास जाकर उनकी मानसिक, सामाजिक, आर्थिक दशा को जानने का प्रयास करें। इसके लिए वे किसी वृद्धाश्रम में भी जा सकते हैं।
- ❖ इस कार्य के लिए छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए। यह कार्य पाठ समाप्त होने पर करवाया जाए।
- ❖ प्रत्येक छात्र को विचाराभिव्यक्ति के लिए 2-3 मिनट का समय दिया जाए। कार्य के दौरान छात्र ध्यानपूर्वक सुनें तथा छात्र व शिक्षक मिलकर मूल्यांकन करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

मौलिकता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह, क्रमबद्धता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य में कमी रहने के संदर्भ में छात्र को प्रोत्साहित करते हुए सुधार हेतु सुझाव दें।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति का चयन कर उसकी प्रशंसा की जाए।
- ❖ कुछ चुनी हुई अभिव्यक्तियों का चयन कर लघु पत्रिका में उसे स्थान दें।

प्रदत्त कार्य-5 “मीडिया का जनजीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव” - (किसी भी विधा के माध्यम से विचाराभिव्यक्ति)

उद्देश्य :

- ❖ साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचय
- ❖ जनसंचार माध्यमों की महत्ता पर प्रकाश
- ❖ समाज के प्रति नैतिक दायित्व बोध जगाना



- ❖ किसी भी विषय के संदर्भ में स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास
- ❖ लेखन व वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कुछ पंक्तियों के माध्यम से मीडिया के कार्य छात्रों को अवगत करवाएँ। जैसे -

मीडिया का सकारात्मक प्रभाव -

मीडिया की देखो भैया आई ऐसी बहार
पल-पल की जानकारी से भरा पड़ा अखबार
भरा पड़ा अखबार न अब कोई अज्ञानी
हर चेहरे की असली सूरत सबने है पहचानी

मीडिया का नकारात्मक प्रभाव -

मीडिया की देखो भैया आई ऐसी बहार
अभद्र, अश्लील संस्कृति की चल पड़ी बयार
कुछ नहीं अब निजी रहा, हो गया सरे आम
अपनी रोटी सेंकना बस यही इनका काम

- ❖ छात्रों को उपरोक्त विषय पर विचार हेतु 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे अपनी इच्छानुसार किसी भी विधा जैसे कविता, संस्मरण, अनुभव आदि के माध्यम से विचार लिख लें। इस कार्य के दौरान शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करते तथा आवश्यकतानुसार छात्रों का मार्गदर्शन करें।
- ❖ विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक छात्र को 2-3 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अन्य छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा मूल्यांकन भी करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु (मौलिकता, भावानुरूपता)	1
शब्द-चयन, सटीक वाक्य रचना क्रमबद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1



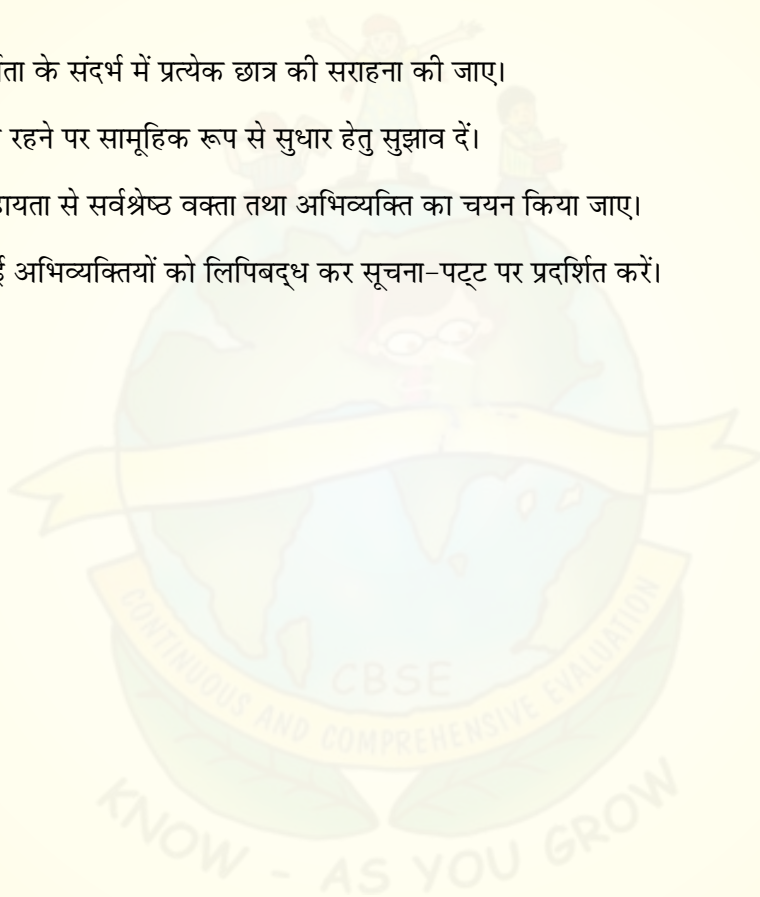
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1
आत्मविश्वास	1
	5

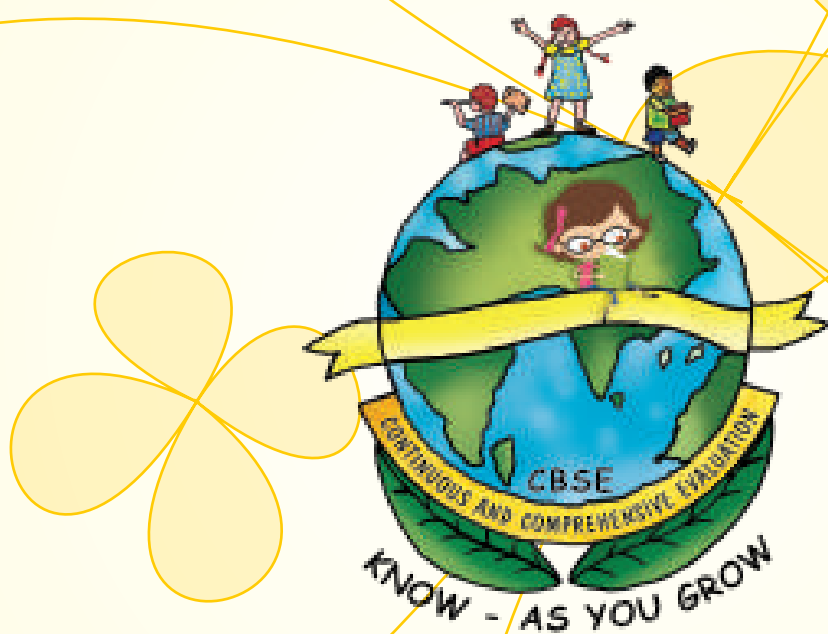
टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ♦ कार्य में कमी रहने पर सामूहिक रूप से सुधार हेतु सुझाव दें।
- ♦ छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ वक्ता तथा अभिव्यक्ति का चयन किया जाए।
- ♦ कुछ चुनी हुई अभिव्यक्तियों को लिपिबद्ध कर सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करें।







ततारा वामीरो कथा

लीलाधर मंडलोई

प्रदत्त कार्य-1 'शब्दों पर आधारित कहानी लेखन'

उद्देश्य :

- ❖ कल्पनाशक्ति का विकास
- ❖ लेखन कौशल का विकास
- ❖ वाचन कौशल का विकास
- ❖ नए शब्द भंडार से परिचय

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ कहानी लेखन के लिए कहानी विधा से परिचित करवाना।
- ❖ शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखे जाएंगे।
नियम, कुरीति, आजादी, पढ़ाई, समाज, बंधन, परंपरा, आत्मनिर्भर, खंडन, बेटी, विवाह, शादी, ससुराल, प्रथा, पुत्र, शिक्षा, रूचि, सुधार, आंदोलन, ज्ञान
- ❖ शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को उपरोक्त शब्दों की सहायता से किसी एक कहानी को लिखने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों को 100-150 शब्द सीमा दी जाएगी।
- ❖ विद्यार्थियों को कहानी लेखन के लिए 20 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ जब विद्यार्थी कार्य कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर विद्यार्थियों के कार्य का निरीक्षण व यथासंभव सहायता करेंगे।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी अपनी कहानी की प्रस्तुति स्वयं करेगा व शिक्षक तथा अन्य विद्यार्थी उसका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार

बिंदु अंक विभाजन

कल्पनाशीलता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
भाषा शैली	1
रोचकता	1
प्रस्तुतीकरण	1
	5

टिप्पणी :

अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- छात्रों की कल्पनाशीलता व सृजनशीलता की सराहना की जाएगी।
- सर्वश्रेष्ठ कहानियों की सराहना
- कमजोर लेखन को प्रोत्साहन एवं सहयोग
- सभी कहानियों को संकलित करके कक्षा के लघु कहानी संग्रह का निर्माण करवाया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2 लोककथा पर आधारित नाटक मंचन

उद्देश्य :

- अभिनय क्षमता का विकास
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- शिक्षक पाठ को पढ़ाकर उसे नाटकीय रूप देने के विषय में चर्चा करेंगे।
- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न समूहों में बांटा जाएगा व प्रत्येक समूह में पांच-छः विद्यार्थी हो सकते हैं।
- शिक्षक द्वारा कहानी को नाटकीय रूप प्रदान करने के लिए संवाद लेखन शैली का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाएगा।



- प्रत्येक समूह को किसी एक कहानी (लोककथा) को पढ़कर नाटक रूप में प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों को लोककथा छंटने, नाटकीय रूप प्रदान करने व प्रस्तुति के लिए 7-8 दिनों का समय दिया जाएगा।
- सप्ताह के दौरान शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों से कार्य की प्रगति पर बातचीत की जाएगी।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु विद्यार्थियों को पहले से ही स्पष्ट कर दिए जाए।
- नियत दिन प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के समय शिक्षक व अन्य समूह उनका मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु का चुनाव	1
संवाद लेखन क्षमता	1
अभिनय शैली	1
भाषा शैली	1
आत्मविश्वास व हाव भाव	1

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ कहानी व नाट्य रूपांतरण की सराहना
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना
- नाटक लेखन व प्रस्तुति की सामान्य कमियों पर शिक्षक की टिप्पणी एवं सुझाव
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति का विद्यालय के मंच पर प्रस्तुतीकरण।

प्रदत्त कार्य-3 लोकगीत गायन

उद्देश्य :

- लोकगीतों के प्रति ध्यान आकर्षित करना।
- संगीतात्मक अभिरूचि उत्पन्न करना।
- लोकभाषा के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना।
- संस्कृति से जोड़ना।



प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक कार्य से संबंधित पूर्ण जानकारी प्रदान करें
- लोकगीत के चयन एवं तैयारी हेतु विद्यार्थियों को एक सप्ताह पूर्व ही बता दिया जाए।
- कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित किया जाए।
- तय दिवस को विद्यार्थी पूरी तैयारी के साथ कक्षा में सामूहिक रूप से लोकगीत का गायन करें।
- आवश्यकतानुसार विद्यार्थी वाद्य यंत्रों का उपयोग कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

लोकगीत का चयन	1
लयात्मक प्रस्तुति	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण (स्वर की स्पष्टता)	1
समग्र प्रस्तुति (वाद्य यंत्र)	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली गायन की सराहना की जाएगी।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर प्रेरित किया जाए।
- अच्छी प्रस्तुति न कर पाने वाले समूह को एक अवसर और दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर परिचर्चा

उद्देश्य :

- समाज में व्याप्त अंधविश्वासों व रूढ़िवादिता से परिचित करवाना।
- चिंतन-मनन द्वारा बौद्धिक क्षमता का विकास।
- वर्तमान सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूकता।
- विचार अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।



प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक कुछ अंधविश्वासों व रूढ़ियों के विषय में बताकर उसका समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करें।
- कक्षा को कुछ समूहों में बांट दिया जाए।
- प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
- विषय की तैयारी हेतु उन्हें 10 से 15 मिनट का समय दिया जाए।
- विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक विद्यार्थी को 3-4 मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।
- विषय चुनाव में सहायता दें ताकि वे उन रूढ़ियों पर तैयारी करे जो समाज के विकास में बाधक हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
आत्मविश्वास	1
भाषा शैली, उच्चारण	1
तार्किक क्षमता	1
अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- भाषा संबंधी अशुद्धियों का शोधन करना।
- प्रस्तुतीकरण की कमियों को सुधारने हेतु सुझाव देकर प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 'क्रोध पर नियंत्रण' - स्वानुभव प्रस्तुतीकरण जब मुझे क्रोध आता है तब.....

उद्देश्य :

- विभिन्न मनोभावों से परिचय
- आत्मविश्लेषण की क्षमता का विकास



- लेखन व वाचन क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- पाठ समाप्ति पर कार्य करवाया जाए।
- सर्वप्रथम अध्यापक विभिन्न मनोभावों से परिचित कराते हुए कार्य के विषय में छात्रों को बताएं। यह भी बताएं कि विभिन्न मनोभावों का हम पर क्या प्रभाव पड़ता है जैसे चिंता, उत्साह इत्यादि....।
- प्रस्तुत विषय पर विचार हेतु विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य के दौरान शिक्षक छात्रों के कार्यों पर ध्यान रखें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- प्रत्येक छात्र को प्रस्तुतीकरण हेतु 1-2 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अन्य छात्र तथा अध्यापक मिलकर मूल्यांकन करें।
- कार्य से पूर्व मूल्यांकन के आधार तथा अंक श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
स्वाभाविक प्रस्तुतीकरण (रोचकता, हाव-भाव, आरोह-अवरोह)	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी होने पर छात्र को प्रोत्साहित करें तथा सुधारात्मक सुझाव दें।
- सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति व अनुभव का चयन कर उसे लिपिबद्ध करवाएं तथा सूचनापट्ट पर प्रदर्शित करें।





तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

प्रह्लाद अग्रवाल

प्रदत्त कार्य-1 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्मों की सूची बनाना

उद्देश्य :

- ❖ भारतीय फिल्मों के स्वरूप से परिचित करवाना।
- ❖ राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्मों का ज्ञान।
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक द्वारा कुछ राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्मों के नाम बताए जाएंगे। जैसे - अंकुर, अर्द्धसत्य, पाथेर पांचाली...
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा कम से कम दस फिल्मों के नाम चुने जाएंगे वे किसी भी भाषा की हो सकती हैं
- ❖ विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ कार्य पूरा करने के लिए एक दिन का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

8-10 फिल्मों के लिए	5
6-7 फिल्मों के लिए	4
4-5 फिल्मों के लिए	3
2-3 फिल्मों के लिए	2
1 फिल्म के लिए	1

15

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ बहुत सारी जानकारियां एक जैसी हो सकती हैं। विशिष्ट जानकारी की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य पूर्ण न करने वाले छात्रों को प्रेरणा एवं सहयोग।

प्रदत्त कार्य-2 परिचर्चा

पहले की फिल्मों और वर्तमान फिल्मों में समानता और अंतर

उद्देश्य :

- ❖ विश्लेषण की क्षमता का विकास।
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति व चिंतन-मनन की क्षमता का विकास
- ❖ फिल्म की सर्वश्रेष्ठता के संदर्भ में विभिन्न मापदंडों की पहचान।
- ❖ फिल्मों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास।
- ❖ अभिव्यक्ति कौशल का विकास।

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य (5-6 विद्यार्थियों का एक समूह)
- ❖ पाठ आरंभ करने से पूर्व यह कार्य करवाया जा सकता है।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कुछ पुरानी तथा कुछ नई फिल्मों के उदाहरण देकर छात्रों से उनके विषय में चर्चा करें तथा कार्य से अवगत कराएं।
- ❖ फिल्मों में समानता व अन्तर बताने के लिए छात्रों को विभिन्न आधार बताएं जैसे - गीत, संगीत, पटकथा, संवाद, अभिनय, अभिनेता, कलात्मकता इत्यादि...
- ❖ कार्य को करने के लिए प्रत्येक समूह को 10-15 मिनट का समय दिया जाए। अध्यापक कार्य का निरीक्षण करें तथा मार्गदर्शन भी करें।
- ❖ प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक समूह को 2-3 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ प्रत्येक समूह को एक विद्यार्थी वचाराभिव्यक्ति के रोड शीट पर मध्यम मूहव के छात्र तथा शिक्षक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट लिखकर दिए जाएं।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
अधिकतम समानता व अंतर	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
समूह में सहभागिता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ समूह में सक्रिय योगदान व कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक विद्यार्थी की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य की अपूर्णता के संदर्भ में छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए पूर्ण करने की प्रेरणा दें।
- ❖ समानता व अंतर को लिपिबद्ध कर सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित करें।
- ❖ समूह के कार्य की समग्रता के आधार पर अंक-निर्धारण करें।

प्रदत्त कार्य-3 कार्य-प्रपत्र**साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्मों की सूची****उद्देश्य :**

- ❖ साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्मों का ज्ञान
- ❖ फिल्म निर्माण में साहित्य के योगदान का परिचय
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास एवं ज्ञान का विस्तार
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ चिंतन एवं मनन

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कुछ ऐसी रचनाओं के विषय में बताएं जिन पर फिल्में बनी हैं।
- ❖ कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को दो दिन पूर्व ही दे दी जाए।



- कार्य-प्रपत्र का प्रारूप श्यामपट्ट पर लिख दिया जाए।

क्रम संख्या	फिल्म का नाम	साहित्यिक रचना	भाषा	रचनाकार
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				
6.				
7.				
8.				
9.				
10.				

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

9-10 सूचनाएं	5
7-8 सूचनाएं	4
5-6 सूचनाएं	3
3-4 सूचनाएं	2
1-2 सूचनाएं	1

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सम्पूर्ण सूचना सही देने वाले की सराहना की जाएगी।
- त्रुटियों को सुधारने का प्रयास किया जाएगा।
- विद्यार्थियों से प्राप्त सही जानकारी को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।

जैसे -

- निर्मला, गबन हिंदी प्रेमचंद



2. आंधी, काली आंधी हिंदी कमलेश्वर
3. कुली, कुली अंग्रेजी मुल्कराज आनंद
4. गाइड, गाइड अंग्रेजी आर. के. नारायण
5. पिंजर, पिंजर पंजाबी अमृता प्रीतम

प्रदत्त कार्य-4 परियोजना कार्य

- ❖ भारतीय संस्कृति को परिलक्षित करने वाले 10 फिल्मी गीतों (मुखड़ों) का संकलन

उद्देश्य :

- ❖ भारतीय संस्कृति से परिचय व जुड़ाव।
- ❖ फिल्मों के संदर्भ में भारतीय संस्कृति का स्थान व महत्ता से परिचय।
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास।
- ❖ लेखन व वाचन कौशल का विकास।
- ❖ जानकारीयां एकत्रित करने के प्रति अभिरुचि।

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ यह कार्य पाठ समाप्त होने पर करवाया जाए।
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक उदाहरण स्वरूप कुछ ऐसे गीतों का उल्लेख करे जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति का कोई पक्ष सामने आए जैसे - “है प्रीत जहां की रीत सदा.....।”
- ❖ दो दिन पूर्व विद्यार्थी को कार्य से परिचित करवाते हुए आवश्यक जानकारीयां एकत्रित करने का निर्देश दें। विद्यार्थी कार्य से संबंधित कुछ चित्र भी एकत्रित कर सकते हैं।
- ❖ दो दिन पश्चात् कक्षा में ही छात्रों से उपरोक्त कार्य करवाया जाए। इस कार्य के लिए उन्हें 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ यह कार्य एक पृष्ठ पर करवाया जाए। गतिविधि के दौरान अध्यापक प्रत्येक छात्र के कार्य पर दृष्टि रखें।
- ❖ कार्य से पूर्व छात्रों को मूल्यांकन के आधार तथा अंकों के विषय में अवगत करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

9-10 गीतों का संकलन करने पर	5
7-8 गीतों का संकलन करने पर	4
5-6 गीतों का संकलन करने पर	3



3-4 गीतों का संकलन करने पर	2
1-2 गीतों का संकलन करने पर	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने वाले सभी छात्रों की सराहना की जाए।
- कार्य में कमी रह जाने पर उसे पूर्ण करने हेतु छात्र को प्रोत्साहित करें।
- कुछ चुने हुए गीतों का गायन भी कक्षा में करवाया जा सकता है।
- श्रेष्ठ गीतों को लिपिबद्ध करवा कर सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करें।

प्रदत्त कार्य-5 'तीसरी कसम फिल्म की समीक्षा'

उद्देश्य :

- समीक्षा विधा से परिचय
- समालोचनात्मक दृष्टि का विकास
- चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक किसी भी फिल्म की समीक्षा बताते हुए समीक्षा की विद्या से परिचित करवाएंगे।
- कार्य के स्वरूप को विद्यार्थियों को स्पष्ट किया जाएगा।
- गतिविधि से पूर्व विद्यार्थियों को विद्यालय में फिल्म दिखाई जाए या उन्हें देखने के लिए प्रेरित किया जाए।
- विद्यार्थियों को कक्षा में ही 10 मिनट में फिल्म समीक्षा 10-15 पंक्तियों में लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।
- कार्य से पूर्व विद्यार्थियों को मूल्यांकन के आधार स्पष्ट कर दिए जाएं।
- कार्य के दौरान शिक्षक घूम-घूमकर विद्यार्थियों के कार्य का निरीक्षण व मार्गदर्शन करें।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
कथा वस्तु के अनुरूप प्रस्तुति	1
समीक्षा के तत्वों का समावेश	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
वर्तनी शुद्धता	1
प्रवाहशीलता व क्रमबद्धता	1

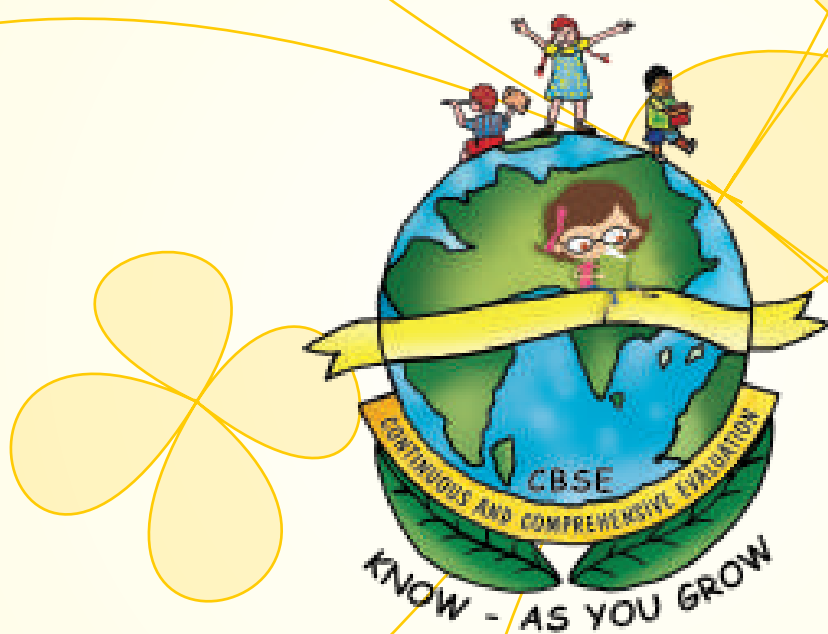
टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सर्वश्रेष्ठ समीक्षा का चयन एवं सराहना की जाएगी।
- ❖ समीक्षा की दृष्टि से कमी होने पर विद्यार्थी को उससे परिचित करवाते हुए सुझाव दें।
- ❖ भाषा संबंधी अशुद्धता को श्यामपट्ट पर अंकित करें।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षा को कक्षा के सूचनापट्ट पर अंकित करें।





पर्वत प्रदेश में पावस

सुमित्राणंदन पंत

प्रदत्त कार्य-1 कविता पाठ

छात्रों द्वारा विभिन्न ऋतुओं पर आधारित कविता पाठ

उद्देश्य :

- ❖ काव्य विधा के प्रति रुझान
- ❖ विभिन्न ऋतुओं का ज्ञान
- ❖ संवेदनशीलता का विकास
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ श्रवण व वाचन कौशल का विकास
- ❖ प्रकृति का मानव जीवन पर प्रभाव का ज्ञान

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक किसी भी ऋतु पर आधारित कविता की कुछ पंक्तियों का आदर्श वाचन करें तथा कार्य के विषय में छात्रों को बताएं। जैसे - हवा हूं हवा मैं, बसंती हवा हूँ.....।
- ❖ यह कार्य कविता आरंभ करने से पूर्व करवाया जाए।
- ❖ दो दिन पूर्व छात्रों को कविता का चयन करने का निर्देश दिया जाए। कविता ढूंढने के संदर्भ में छात्रों का मार्गदर्शन भी शिक्षक करें।
- ❖ छात्रों को विभिन्न ऋतुओं जैसे बसंत, ग्रीष्म, पतझड़, वर्षा, शिशिर, शरद पर आधारित कविता-पाठ हेतु 2-3 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक छात्र कार्य में रुचि पूर्वक हिस्सा लें। छात्र तथा शिक्षक दोनों मिलकर मूल्यांकन करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।



मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय व भावानुरूप कविता चयन	1
लयात्मक व भावात्मक प्रस्तुति	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य प्रस्तुति के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए सुझाव दें।
- प्रमुख कवियों व कविताओं के शीर्षक श्याम-पट्ट पर लिखें
- सर्वश्रेष्ठ काव्य-पाठ करने वाले विद्यार्थी का चयन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 स्वरचित कविता

उद्देश्य :

- काव्य विधा का ज्ञान व उसके प्रति अभिरुचि जगाना
- भावुकता व संवेदनशीलता जगाना
- प्रकृति व मानव के मध्य संबंधों को स्पष्ट करना
- कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास
- वाचन व लेखन, श्रवण कौशल का विकास
- जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास
- सहभागिता का विकास



सावन,	बादल,	मेघ,	किरन,	पर्वत,	झमझम,	काले,	पेड़ सूर्य,
शोर,	बिंदु,	मोती,	डाल,	शोर,	बूँद,	आना,	रिमझिम,
हरियाली,	फूल,	कजरारे,	धरती,	कुहासा,	प्यासी,	सरोवर,	पत्तें,
नदी							

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य (6 विद्यार्थियों का एक समूह)
- सर्वप्रथम अध्यापक ग्रीष्म ऋतु से संबंधित कुछ शब्द छात्रों से पूछकर श्यामपट्ट पर लिखें तथा चार पंक्तियां शब्दों के आधार पर बनाकर छात्रों को सुनाएँ।
- छात्रों को निर्देश दिया जाए कि ऊपर दिए गए चित्र तथा शब्दों की सहायता से स्वरचित कविता लिखने के लिए समूह में चर्चा करें। इसके उपरांत कम से कम 10 पंक्तियों की कविता लिखें। इस कार्य के लिए छात्रों को 25-30 मिनट का समय दिया जाए।
- काव्य रचना के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- कविता लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी कविता पाठ करे। इसके लिए प्रत्येक समूह को 2 मिनट का समय दिया जाए। छात्र तथा शिक्षक मिलकर मूल्यांकन करें।
- समूह के कार्य के आधार पर प्रत्येक छात्र को अंक दिए जाएं।
- मूल्यांकन के आधार पर अंक पूर्व में ही श्याम-पट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय व भावानुरूप कविता लेखन	1
मौलिकता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
क्रमबद्धता, सुसंबद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता, स्वर की स्पष्टता, आरोह-अवरोह, आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।



प्रतिपुष्टि :

- समूह में सक्रिय योगदान तथा कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ कविता का चयन करें।
- समूह में सक्रिय भूमिका न देने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- कविताओं को लघु पत्रिका में स्थान दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 घटना वर्णन जब अचानक मुझे गांव जाने का मौका मिला.....

उद्देश्य :

- भारतीय संस्कृति से परिचय
- आंचलिक परिवेश से परिचय
- ज्ञान का विस्तार
- विचारों का प्रस्तुतीकरण

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष ऐसी स्थिति रखी जाए कि किसी यात्रा के दौरान अचानक उन्हें किसी गांव में जाने का मौका मिला।
- विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे और यथासंभव सहायता करेंगे।
- प्रस्तुतीकरण के लिए प्रत्येक छात्र को 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।
- अध्यापक अन्य छात्रों की सहायता से मूल्यांकन करेंगे।
- विद्यार्थियों की सहायता के लिए शिक्षक द्वारा कुछ संबंधित शब्द दिए जाएंगे। जैसे -

गोधूलि, गाय, मिट्टी, झोंपड़ी, पगडंडी,
 पोखर, खेत, कुम्हार, पेड़, बैल, पाठशाला,
 पनघट, पटरी, झूला, कुआँ, मटके, हल,
 चक्की, ट्रैक्टर, चूल्हा, आँगनबाड़ी



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
शब्द चयन एवं सटीक वाक्य रचना	1
क्रमबद्धता एवं प्रवाहमयता	1
उच्चारण की शुद्धता	1
आत्मविश्वास (हाव-भाव)	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की सराहना की जाए।
- ❖ औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- ❖ सामान्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध किया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 पर्वतीय प्रदेशों की सामान्य जानकारी पर आधारित कार्य प्रपत्र

उद्देश्य :

- ❖ विभिन्न पर्वतीय स्थलों से परिचय
- ❖ देश के विभिन्न हिस्सों से जोड़ना
- ❖ पर्यटन के प्रति अभिरुचि जगाना
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ लेखन क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

कार्य प्रपत्र

- ❖ पर्यटन की दृष्टि से प्रसिद्ध तीन पर्वतीय स्थलों के नाम
- ❖ पर्वतीय प्रदेशों के प्राकृतिक सौंदर्य से संबंधित दो विशेषताएं
- ❖ वृक्षों की विशेषताएं



- ❖ दो प्रमुख पशुओं के नाम
- ❖ पहाड़ों में बोली जाने वाली दो बोलियों के नाम
- ❖ पर्वतीय प्रदेशों के घरों की विशेषताएं
- ❖ खेत किस प्रकार के होते हैं?
- ❖ पर्वतीय प्रदेशों में पाए जाने वाले प्रमुख फलों के नाम?
- ❖ पर्यावरण की विशिष्टता
- ❖ पर्वतीय प्रदेशों के लोगों की वेशभूषा (परंपरागत पोशाक)

प्रक्रिया

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक दक्षिण भारत के विषय में कुछ सामान्य जानकारी देते हुए कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएं
- ❖ उपरोक्त कार्य प्रपत्र द्वारा या श्याम-पट्ट पर लिखवाकर करवाया जा सकता है। एक अलग पृष्ठ पर यह कार्य करवाया जाए।
- ❖ जब छात्र कार्य करेंगे तब शिक्षक घूम-घूम कर निरीक्षण करेंगे तथा आवश्यकतानुसार छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- ❖ विद्यार्थियों को कार्य-प्रपत्र भरने के लिए 20 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

10 जानकारीयां देने पर	5
8-9 जानकारीयां देने पर	4
6-7 जानकारीयां देने पर	3
4-5 जानकारीयां देने पर	2
2-3 जानकारीयां देने पर	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।





प्रतिपुष्टि :

- कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- पूर्ण जानकारी न दे पाने वाले छात्रों का मार्गदर्शन करें ताकि वह कार्य पूर्ण कर सकें।
- कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों से चर्चा कर पूर्ण जानकारी श्यामपट्ट पर लिख दें।

प्रदत्त कार्य-5 कविता पाठ

- सुमित्रानंदन पंत की किसी अन्य कविता का सस्वर वाचन

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति अभिरुचि जगाना
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास
- कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- वाचन-श्रवण कौशल का विकास
- मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक स्वयं सुमित्रानंदन पंत की किसी अन्य रचना का आदर्श पाठ करें तथा कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराएं।
- 3-4 दिन पूर्व ही छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे पुस्तकालय अथवा इंटरनेट से पंत की अन्य कोई कविता ढूँढ कर लाएं।
- निर्धारित कालांश में छात्रों से कविता पाठ करवाया जाए। इस कार्य के लिए प्रत्येक छात्र को 2 मिनट का समय दिया जाए। इस दौरान प्रत्येक छात्र ध्यानपूर्वक सुने तथा अध्यापक के साथ मूल्यांकन भी करें।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

भावानुरूप तथा विषयानुरूप कविता चयन	1
सस्वर वाचन (लय, गेयता)	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1

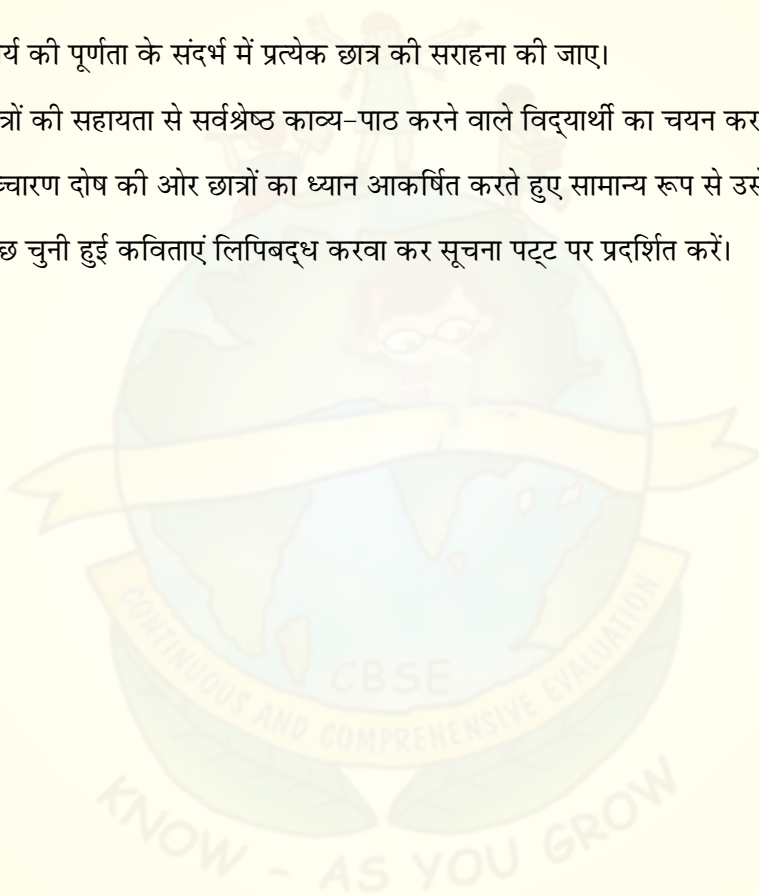
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ काव्य-पाठ करने वाले विद्यार्थी का चयन कर उसकी प्रशंसा करें।
- ❖ उच्चारण दोष की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करते हुए सामान्य रूप से उसे दूर किया जाए।
- ❖ कुछ चुनी हुई कविताएं लिपिबद्ध करवा कर सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करें।





वीरेन डंगवाल

प्रदत्त कार्य-1 कार्यप्रपत्र 'ऐतिहासिक इमारतों संबंधी'

उद्देश्य :

- ❖ भारतीय विरासत की जानकारी
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ स्मरण शक्ति का विस्तार
- ❖ सामान्य ज्ञान में वृद्धि

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक भारत में विभिन्न स्थलों पर हुए स्वतंत्रता संग्रामों व इतिहास पर चर्चा करेंगे।
- ❖ कविता पढ़ाने के बाद ही यह कार्य प्रपत्र दिया जाएगा।
- ❖ कार्य करने से पूर्व मूल्यांकन का आधार विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ कार्य के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।

ऐतिहासिक इमारत

क्षेत्र

1. लालकिला
2. गेटवे ऑफ इंडिया
3. चारमीनार
4. इंडिया गेट
5. ताजमहल
6. हवा महल
7. विक्टोरिया पैलेस
8. चित्तौड़ का किला
9. आमेर का किला
10. महाराजा पैलेस



मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

10 सही उत्तरों के लिए	5
8-9 सही उत्तरों के लिए	4
6-7 सही उत्तरों के लिए	3
4-5 सही उत्तरों के लिए	2
3 व 2 से कम उत्तरों के लिए	1

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी सक्रिय रूप से कार्य करें।
- सर्वप्रथम कार्य व सही कार्य के लिए सराहना की जाएगी।
- सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

प्रदत्त कार्य-2 देशभक्तों का पात्र चरित्रांकन

उद्देश्य :

- देशभक्ति की भावना का विकास
- ज्ञान में अभिवृद्धि
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास
- आत्मविश्वास में अभिवृद्धि
- मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- पात्र चरित्रांकन कैसे करें इसके विषय में अध्यापक छात्रों को जानकारी देंगे।
- कुछ देशभक्तों के नाम उदाहरण स्वरूप छात्रों को बताए जाएंगे जैसे शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि।
- अध्यापक किसी एक पात्र का चरित्रांकन प्रस्तुत कर सकते हैं
- तैयारी के लिए छात्रों को दो दिन का समय दिया जाए।



- ❖ प्रस्तुति के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
संवाद शैली	1
अभिनय क्षमता	1
शुद्ध-उच्चारण	1
आत्मविश्वास	1
वेशभूषा एवं प्रस्तुतीकरण	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ श्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- ❖ औसत/कमजोर प्रस्तुति को प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ श्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3

‘युद्धों से हमने क्या खोया-क्या पाया?’ विषय से संबंधित परियोजना कार्य

उद्देश्य :

- ❖ विश्व शांति की अनिवार्यता का महत्व समझाना
- ❖ चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ प्रस्तुतीकरण शैली का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ तोप कविता पढ़ाने के पश्चात् शिक्षक विद्यार्थियों से युद्ध के कारणों व परिणामों पर चर्चा करेंगे।
- ❖ पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांटा जाए।



- प्रत्येक समूह में चार-पांच विद्यार्थी हो सकते हैं।
- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को इतिहास में विश्व स्तर अथवा राष्ट्र स्तर पर हुए किन्हीं दो युद्धों से संबंधित संपूर्ण जानकारी (कारण व परिणाम) चित्र सहित तैयार करके परियोजना कार्य के रूप में दिया जाएगा।
- मूल्यांकन का आधार पूर्व में ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- विद्यार्थियों को परियोजना कार्य पूरा करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

प्रस्तुति की शैली	1
चित्र	1
विषय वस्तु	1
भाषा व वाक्य रचना	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक सभी के प्रयासों को सराहें।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों की विशेष सराहना।
- अपूर्ण व कम अच्छे स्तर के कार्य को सहयोग व प्रोत्साहन।
- सभी के कार्यों की कक्षा में प्रदर्शनी लगवाई जाए।

प्रदत्त कार्य-4 संस्मरण लेखन/वाचन

विषय : किसी ऐतिहासिक स्थल/इमारत के बारे में लिखकर बताएं जिसे आपने देखा हो।

उद्देश्य :

- संस्मरण लेखन/वाचन का अभ्यास
- ऐतिहासिक स्थल/इमारतों की ओर ध्यान आकर्षित करना
- स्थान विशेष के संबंध में जानकारी
- लेखन/वाचन कौशल का विकास



प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल/इमारत के विषय में संक्षेप में बताएं जिसे उन्होंने स्वयं देखा है।
- ❖ कार्य व मूल्यांकन की सम्पूर्ण जानकारी पहले ही दे दी जाए।
- ❖ पाठ को समझा लेने के पश्चात् यह कार्य कराया जाए।
- ❖ लिखित या मौखिक दोनों रूपों में कार्य कराया जा सकता है। मुख्य बिंदु लिखकर विद्यार्थी कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कर सकता है
- ❖ इस कार्य के लिए 10-15 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- ❖ इस दौरान शिक्षक आवश्यकता अनुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।
- ❖ प्रत्येक छात्र अपना संस्मरण प्रस्तुत करेगा।
- ❖ विद्यार्थी व शिक्षक दोनों मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

क्रमबद्ध एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति

2

विषयवस्तु

2

भाषा, वर्तनी, उच्चारण

1

5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सर्वाधिक सटीक जानकारी देने वाले व प्रभावशाली अभिव्यक्ति करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- ❖ औसत कार्य को प्रोत्साहन देकर अच्छा कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करें।
- ❖ जो कार्य पूरा नहीं कर पाए उन्हें अतिरिक्त समय दिया जाए।



प्रदत्त कार्य-5 'ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा जरूरी' - विषय से संबंधित नुक्कड़ नाटक का लेखन एवं प्रस्तुति

उद्देश्य :

- ❖ भारतीय ऐतिहासिक इमारतों का परिचय
- ❖ ऐतिहासिक इमारतों के प्रति संवेदनशीलता
- ❖ चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ संवाद शैली का विकास
- ❖ नुक्कड़ नाटक की विधा का परिचय
- ❖ कलात्मक अभिरूचि का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा कविता का पाठन करवाने के पश्चात् विद्यार्थियों से विभिन्न ऐतिहासिक इमारतों व उनकी वर्तमान स्थिति के बारे में बात की जाएगी।
- ❖ शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाए कि ऐतिहासिक इमारतों का संरक्षण आवश्यक है। इसी दिशा में लोगों में चेतना लाने हेतु पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांटा जाए।
- ❖ प्रत्येक समूह में छः-सात विद्यार्थी हो सकते हैं।
- ❖ प्रत्येक समूह को "ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा जरूरी" शीर्षक के अन्तर्गत एक नुक्कड़ नाटक लिखने व प्रस्तुत करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ सप्ताह के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों से उनकी कार्य संबंधी प्रगति के विषय में बातचीत करते रहेंगे व यथासंभव सहायता भी करेंगे।
- ❖ प्रत्येक प्रस्तुति को 5-6 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ जब एक समूह प्रस्तुति करेगा तब अन्य विद्यार्थी व शिक्षक उसका मूल्यांकन कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
संवाद शैली	1
अभिनय क्षमता	1



शब्द चयन व वाक्य प्रयोग	1
प्रस्तुतीकरण	1
	5

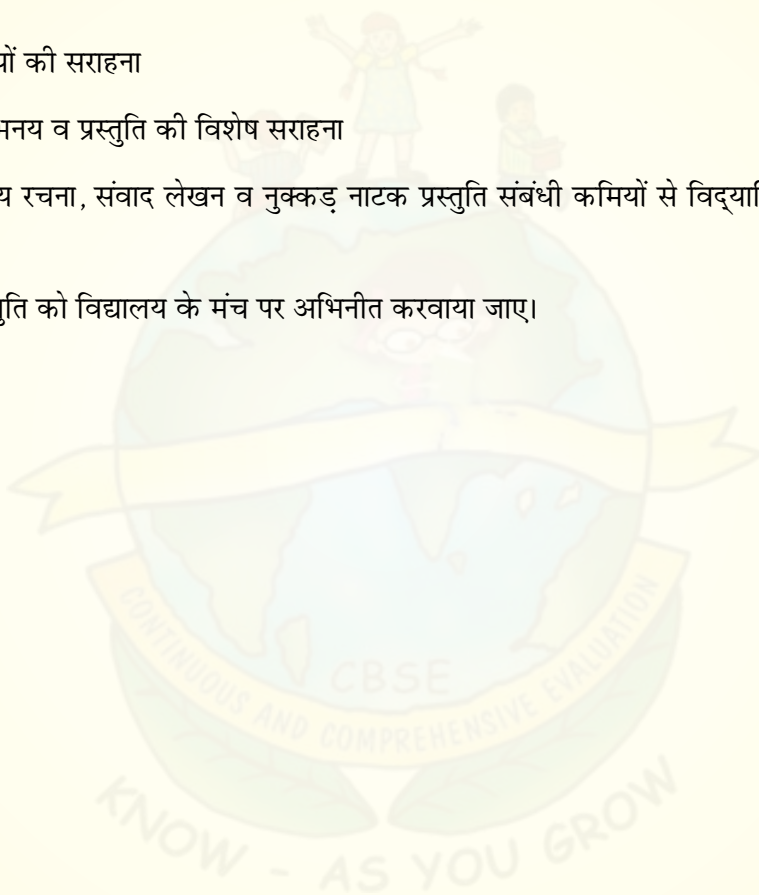
टिप्पणी :

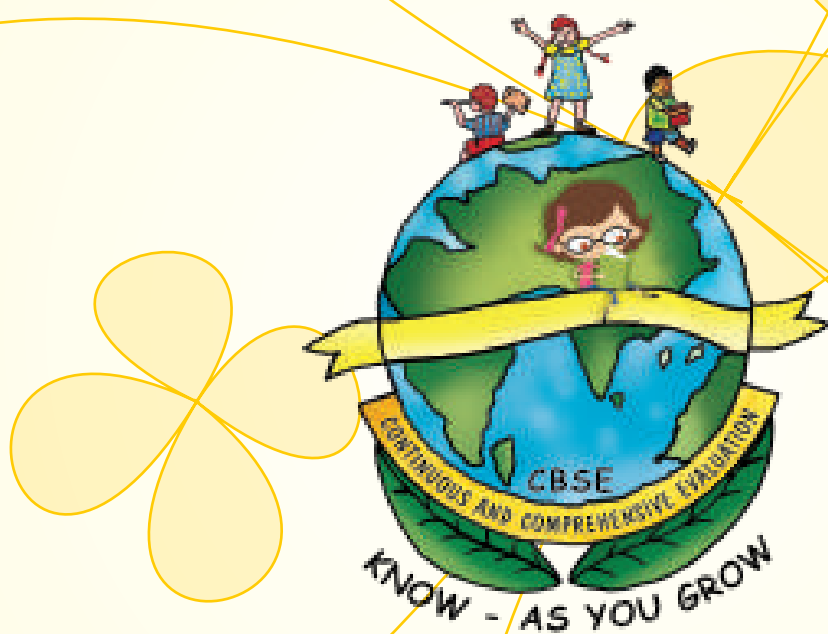
- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सभी प्रस्तुतियों की सराहना
- ❖ सर्वश्रेष्ठ अभिनय व प्रस्तुति की विशेष सराहना
- ❖ सामान्य वाक्य रचना, संवाद लेखन व नुक्कड़ नाटक प्रस्तुति संबंधी कमियों से विद्यार्थियों को परिचित करवाना।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर अभिनीत करवाया जाए।

तोप
-
मूल्यांकन
रचनात्मक







अंतोव चेरव

प्रदत्त कार्य-1

नवभारत टाइम्स के संपादक महोदय को सड़कों पर घूमते आवारा पशुओं के संदर्भ में पत्र लिखिए।

उद्देश्य :

- ❖ औपचारिक पत्र लेखन का प्रारूप समझाना
- ❖ सामाजिक दायित्वों का आभास
- ❖ पशुओं के प्रति संवेदना उत्पन्न करना
- ❖ विचारों के प्रस्तुतीकरण की शैली का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को औपचारिक पत्र लेखन के प्रारूप को स्पष्ट करेंगे।
- ❖ श्यामपट्ट पर पत्र लेखन के प्रारूप को लिखा जाए।
- ❖ शिक्षक द्वारा गलियों व सड़कों पर घूमने वाले पशुओं के कारण होने वाली समस्याओं पर चर्चा की जाएगी।
- ❖ शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रेरित किया जाए कि 'ऐसी समस्याओं का निदान कैसे किया जा सकता है' विषय से संबंधित पत्र संपादक महोदय को लिखें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार को पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों से यह कार्य कक्षा में ही करवाया जाए व इस कार्य को करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु विषयानुकूल व भावानुकूल

2

पत्र लेखन प्रारूप

2

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

1



Unit 10

गिरगिट - रचनात्मक मूल्यांकन

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक विद्यार्थी इस गतिविधि में हिस्सा ले।
- ❖ उत्कृष्ट लेखन की सराहना की जाएगी।
- ❖ सभी पत्रों का संकलन करके उन्हें कक्षा के सूचनापट पर लगाया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 'गिरगिट कहानी का नाट्य मंचन'

उद्देश्य :

- ❖ नाट्य शैली से परिचय
- ❖ ग्रहणशीलता की क्षमता का विकास
- ❖ अभिनय क्षमता का विकास
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ यह कार्य शिक्षक पाठ पढ़वाने के पश्चात् ही करवाएं।
- ❖ पाठ पढ़ाने के पश्चात् शिक्षक विद्यार्थियों को संवाद लेखन व नाटक प्रस्तुतीकरण के नियमों से परिचित करवाएं।
- ❖ पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांट दिया जाए। एक समूह में पांच से छः विद्यार्थी हो सकते हैं।
- ❖ नाटक लेखन से प्रस्तुतीकरण तक के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को पहले से विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ शिक्षक सप्ताह के बीच-बीच में विद्यार्थियों के कार्य की प्रगति पर बातचीत करके सहयोग व प्रोत्साहन देंगे।
- ❖ नियत दिन प्रत्येक समूह को 6-7 मिनट तक का समय प्रस्तुतीकरण के लिए देकर शिक्षक व विभिन्न समूहों द्वारा एक समूह के प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन किया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

संवाद शैली

1

अभिनय शैली

1



सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
भाषा प्रयोग (शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना)	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हाव-भाव)	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों की सराहना
- अभिनय विशेष की सराहना
- सामान्य संवाद लेखन व प्रस्तुतीकरण की कमियों से विद्यार्थियों को परिचित करवाना
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति

प्रदत्त कार्य-3 चित्रों के आधार पर कहानी लेखन व प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य :

- कहानी लेखन विधा से परिचय
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास
- ज्ञान का विस्तार
- काल्पनिकता का विकास
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को कहानी लेखन की विधा से परिचित करवाएंगे।
- विद्यार्थियों को चित्रों के आधार पर कहानी लेखन के लिए प्रेरित करना।



Unit 10

रचनात्मक मूल्यांकन - गिरगिट



- संपूर्ण कक्षा को विभिन्न समूहों में बांट दिया जाएगा व प्रत्येक समूह में चार-पांच विद्यार्थी हो सकते हैं
- विद्यार्थियों को कहानी लेखन व प्रस्तुतीकरण के लिए एक दिन का समय दिया जाएगा। प्रत्येक समूह में से एक वक्ता कक्षा के सम्मुख कहानी प्रस्तुत करेगा।
- मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- कहानी प्रस्तुति के लिए 1.5-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- एक प्रस्तुति के समय अन्य समूह व शिक्षक मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
सटीक वाक्य रचना एवं भाषा	1
रोचकता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1
प्रस्तुतीकरण	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के सूचनापट्ट पर लगाया जाए।
- सराहनीय प्रस्तुतियों को प्रेरणा का स्रोत बनाया जाए।
- औसत प्रस्तुतियों को सुझाव देकर प्रोत्साहित किया जाए।





प्रदत्त कार्य-4 वर्ग पहली (पशु-पक्षियों के नामों से संबंधित) वर्ग में दिए गए शब्दों में कुछ पशु-पक्षियों के नाम छिपे हैं जिन्हें ढूँढ़कर सूची तैयार कीजिए।

उद्देश्य :

- शब्द भंडार में वृद्धि
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- स्मरण शक्ति का विकास
- चिंतन प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- शिक्षक कार्य से संबंधित संपूर्ण जानकारी व नियम विद्यार्थियों को पहले से ही बता दें।
- कार्य प्रपत्र के माध्यम से या श्यामपट्ट पर लिखकर इस कार्य को करवाया जाए।
- पशु-पक्षियों के नाम ढूँढ़ने के लिए विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय दें।
- विद्यार्थी सूची तैयार कर सकते हैं या कार्य प्रपत्र में विभिन्न रंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं।
- कार्य के समय शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सहायता करें।

अ	को	य	ल	ब	स	ट	ढ	ड	हि
आ	इ	स	ट	शे	म	प	बं	द	र
न	प	अ	मो	र	ल	चि	च	ड	न
प	भा	म	प	स	ल	ड़ि	त	थ	प
म	लू	म	स	च	छ	या	अ	आ	च
क	ख	ग	घ	छ	थ	त	व	कौ	छ
घो	ड़ा	न	प	स	य	र	ल	आ	अ
आ	अ	च	छ	ज	प	फ	ट	य	आ
र	गैं	क	ख	हा	थी	ल	म	स	र
म	डा	च	छ	प	न	व	बि	ल्	ली
य	र	ल	व	फ	भ	फ	प	ट	स

Unit 10

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
10 से अधिक नाम छांटने पर	5
8-9 से अधिक नाम छांटने पर	4
6-7 से अधिक नाम छांटने पर	3
4-5 से अधिक नाम छांटने पर	2
2-3 से अधिक नाम छांटने पर	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ अधिकतम नाम छांटने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- ❖ जो कार्य पूरा न कर पाए उनकी सहायता की जाए।
- ❖ गलत व अपूर्ण कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सहायता व प्रेरणा।
- ❖ अंत में सभी पशु-पक्षियों के नाम श्यामपट्ट पर लिखे जाएं।

प्रदत्त कार्य-5 विचार लेखन व प्रस्तुतीकरण 'समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार'

उद्देश्य :

- ❖ नैतिक मूल्यों का विकास
- ❖ विचार विश्लेषण क्षमता का विकास
- ❖ तार्किक शैली का विकास
- ❖ विचार लेखन व प्रस्तुति का अभ्यास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ यह कार्य पाठ पढ़ाने के पश्चात् दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों से शिक्षक समाज की वर्तमान स्थिति की चर्चा करेंगे व विषय की प्रस्तुति करेंगे।
- ❖ विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाएगा।
- ❖ विद्यार्थियों को यह कार्य करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।



- जब छात्र अपने विचारों को लेखनीबद्ध कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे व विद्यार्थियों की यथासंभव सहायता करेंगे।
- प्रत्येक विद्यार्थी की प्रस्तुति के मुख्य बिंदुओं को शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखा जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
वैचारिक स्तर	1
भाषा शुद्धता	1
आत्मविश्वास (हाव-भाव)	1
तार्किकता का स्तर	1
	5

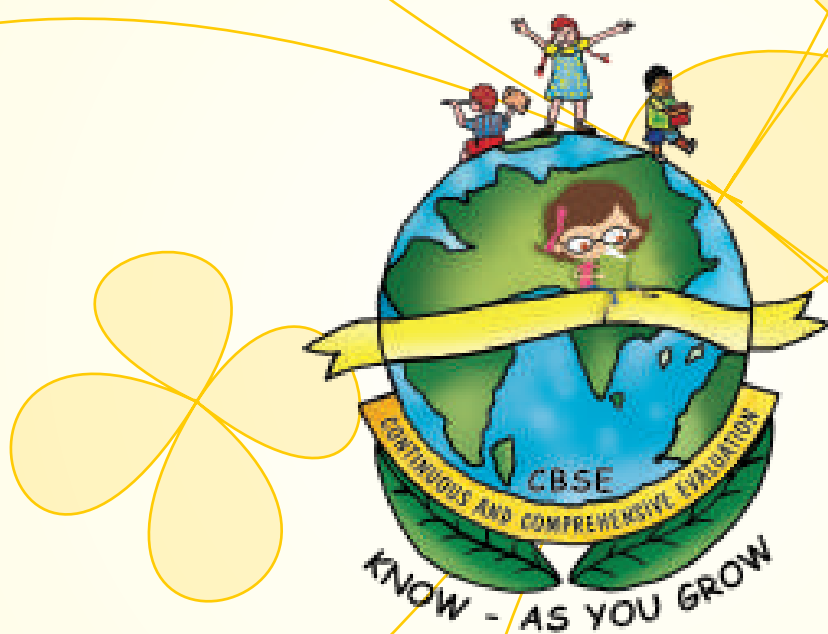
टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना
- सामान्य भाषा संबंधी अशुद्धि का शोधन करना
- कुछ नए शब्दों के प्रयोग से छात्रों का परिचय करवाना
- प्रस्तुतीकरण की कमियों को सुधारने के लिए उपाय सुझाना





अब कहां दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

ठिंदा फ़ाजली

प्रदत्त कार्य-1 “वैज्ञानिक उपकरण प्रदूषण का कारक” (वाद-विवाद)

उद्देश्य :

- ❖ तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास
- ❖ विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- ❖ मंडन एवं खंडन का अभ्यास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को वाद-विवाद कला से अवगत करवाते हुए विषय का परिचय दें।
- ❖ संपूर्ण कक्षा को दो वर्गों (एक पक्ष) दूसरा विपक्ष में बांटा जाए।
- ❖ चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह होगा व एक समूह से एक वक्ता अपने समूह का मत प्रस्तुत करें।
- ❖ तैयारी के लिए 15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ प्रस्तुति का समय 1.5-2 मिनट का होगा।
- ❖ तैयारी के समय शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर विभिन्न समूहों का निरीक्षण करें।
- ❖ मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ एक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व अन्य समूह मूल्यांकन का कार्य करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी क्षमता	1
अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण	1

रचनात्मक मूल्यांकन - अब कहां दूसरे के दुख से दुखी होने वाले



Unit 11

रचनात्मक मूल्यांकन - अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

उपयुक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि

1

5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे वक्ताओं की प्रस्तुति को मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाए।
- प्रस्तुति, अभिव्यक्ति एवं विषय वस्तु से संबंधित कमियों को शिक्षक दूर करने का प्रयास करें।

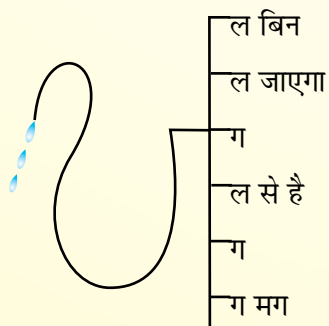
प्रदत्त कार्य-2 वृक्षारोपण (स्लोगन लेखन चित्र सहित)

उद्देश्य :

- पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता
- सृजनात्मक क्षमता का विकास
- कल्पनाशीलता का विकास
- लेखन, श्रवण व वाचन कौशल का विकास
- सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास
- जागरुकता की प्रवृत्ति

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- दो विद्यार्थियों द्वारा मिलकर कार्य किया जाए।
- सर्वप्रथम शिक्षक किसी अन्य विषय पर स्लोगन सुनाएं जैसे -



“जल बिन जल जाएगा जग

जल से है जग जगमग

इसके अतिरिक्त और स्लोगन लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।

- ❖ वृक्षारोपण के लिए स्लोगन लिखने व उससे संबंधित कुछ चित्र बनाने का निर्देश छात्रों को दें।
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ इस कार्य को विद्यार्थी एक चार्ट/पृष्ठ पर करें।
- ❖ गतिविधि के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें व आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- ❖ स्लोगन वाचन के लिए विद्यार्थियों को एक-एक मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
भाषा शुद्धता (वाक्य रचना, वर्तनी, विरामचिह्न)	1
शब्दों का चयन, तुकबंदी	1
स्लोगन की प्रभावशीलता	1
प्रस्तुतीकरण (उच्चारण, हाव-भाव)	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ उत्कृष्ट स्लोगन लेखन की प्रशंसा की जाए।
- ❖ जो विद्यार्थी स्लोगन नहीं बना पाए उनकी सहायता करना।
- ❖ वर्तनी एवं उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से दूर करना।
- ❖ उत्कृष्ट स्लोगन को सूचना-पट्ट पर प्रदर्शित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 विलुप्त होती प्रजातियों की समस्या का समाधान विषय पर परिचर्चा

उद्देश्य :

- ❖ पशुओं/पक्षियों के प्रति संवेदना उत्पन्न करना।



Unit 11

रचनात्मक मूल्यांकन - अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

- पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्वों का आभास करवाना।
- स्वानुभव को शब्दबद्ध करके अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास।
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं विचाराभिव्यक्ति का अभ्यास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य/सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक विलुप्त होती प्रजातियों के बारे में कक्षा में चर्चा करेंगे।
- समस्या के समाधान के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- कक्षा में कुछ समूह बनाकर भी कार्य करवाया जा सकता है। समूह से एक प्रतिनिधि अपनी बात प्रस्तुत करेगा।
- मूल्यांकन के आधार को पहले ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- तैयारी हेतु विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- विद्यार्थियों के विचार-विमर्श के समय शिक्षक प्रत्येक की गतिविधि पर ध्यान रखें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
वैचारिक स्तर	1
भाषा शुद्धता	1
आत्मविश्वास (हाव-भाव) प्रस्तुति	1
तर्क द्वारा कथन की पुष्टि (समाधान हेतु)	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना।
- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- सही समाधान हेतु शिक्षक अपने विचार प्रस्तुत करें।
- कार्य समाप्त होने के पश्चात् ही कमियों को बताकर सुधार हेतु सुझाव दिए जाएं।



प्रदत्त कार्य-4 स्वरचित कविता (विषय-परोपकार) लेखन एवं वाचन

उद्देश्य :

- मानवीय मूल्यों का विकास
- भावुकता एवं संवेदनशीलता का विकास
- कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास
- लेखन, वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास
- काव्य विधा के प्रति रुचि जागृत करना

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक कोई कविता (परोपकार से संबंधित) कक्षा में सुनाएं।
- कार्य से संबंधित संपूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को विस्तार से दी जाएगी।
- मूल्यांकन के आधार पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।
- कक्षा को कुछ समूहों में विभक्त किया जाए। प्रत्येक समूह से एक प्रतिभागी स्वरचित कविता-पाठ करेगा।
- शिक्षक चाहे तो कविता से जुड़े कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिख सकते हैं।
- कविता लेखन हेतु विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय अवश्य दें।
- इस समय शिक्षक आवश्यकतानुसार सभी विद्यार्थियों को सहायता दें। उदाहरणस्वरूप श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखे जा सकते हैं -

बलिदान, स्वभाव, दया, कष्ट, फल, त्याग, सहयोग, संतोष, जीवन, अमर, अनाज, मृत्यु, मनुष्य, जीवन, मनुष्य, नदी, धर्म, वृक्ष, जल, ईश्वर, शरण, साधु, भूमि, शक्ति

नोट - अन्य शब्द भी दिए जा सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
मौलिकता/कल्पनाशीलता	1
शब्द चयन	1
उच्चारण की शुद्धता	1
प्रस्तुतीकरण	1
	5



Unit 11

रचनात्मक मूल्यांकन - अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली रचना की सराहना एवं उसकी विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।
- औसत प्रस्तुतियों को अच्छा बनाने की प्रेरणा/प्रोत्साहन
- अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु सुझाव व अतिरिक्त समय दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 प्राकृतिक आपदाएं और हम चित्र के आधार पर - अनुच्छेद लेखन

उद्देश्य :

- प्रकृति व पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना
- चिंतन मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ज्ञान का विस्तार
- कल्पनाशीलता व रचनात्मकता का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा पाठ को पढ़ाया जाएगा व उसके पश्चात् इस चित्र को प्रपत्र के रूप में बांटा जाएगा।



- ❖ विद्यार्थी चित्र पर आधारित पर्यावरण के असंतुलन से संबंधित व उसके कारणों को स्पष्ट करते हुए अनुच्छेद लिखेंगे।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को लेखन के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ जब विद्यार्थी कार्य करेंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर निरीक्षण करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
भाषा शुद्धता	1
शब्दों का चयन	1
क्रमबद्धता व सुसंबंधता	1
सुलेख	1
	5

टिप्पणी :

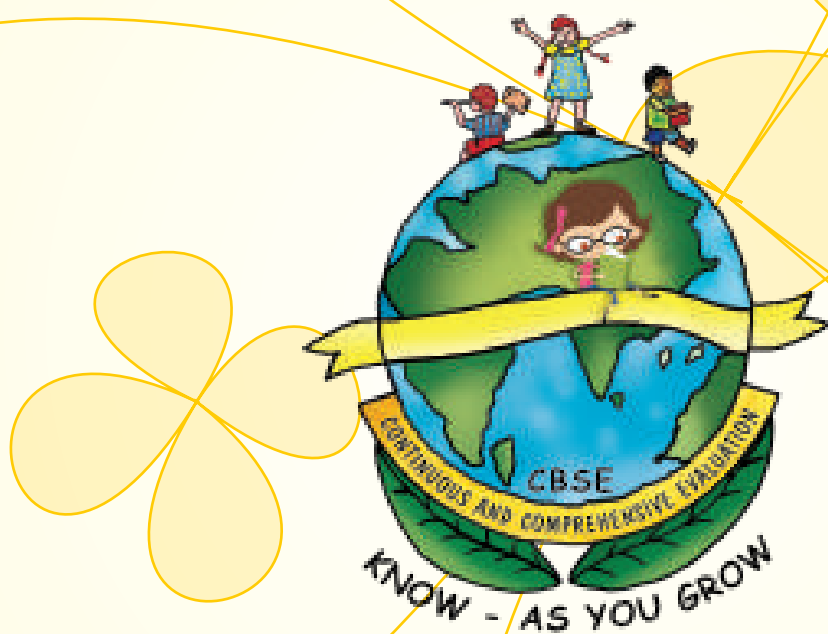
- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी चित्र को ही आधार बनाकर अपना अनुच्छेद लिखें।
- ❖ अनुच्छेद में क्रमबद्धता व सुबद्धता होनी आवश्यक है
- ❖ सामान्य अशुद्धियों का निवारण किया जाए
- ❖ विद्यार्थियों को एक दूसरे के कार्य को मूल्यांकन करने के लिए दिया जाए।

रचनात्मक मूल्यांकन - अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले





दोहे बिहारी

दोहे

रचनात्मक मूल्यांकन -

प्रदत्त कार्य-1 ग्रीष्म ऋतु की प्रचंडता का वर्णन करते हुए कविता लेखन व वाचन (कविता-लेखन)

उद्देश्य :

- ❖ काव्य विधा के प्रति रुझान
- ❖ कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास
- ❖ विभिन्न ऋतुओं का जड़-चेतन पर प्रभाव का ज्ञान
- ❖ कलात्मक अभिरुचि का विकास
- ❖ लेखन, वाचन, श्रवण, पठन कौशल का विकास
- ❖ सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास

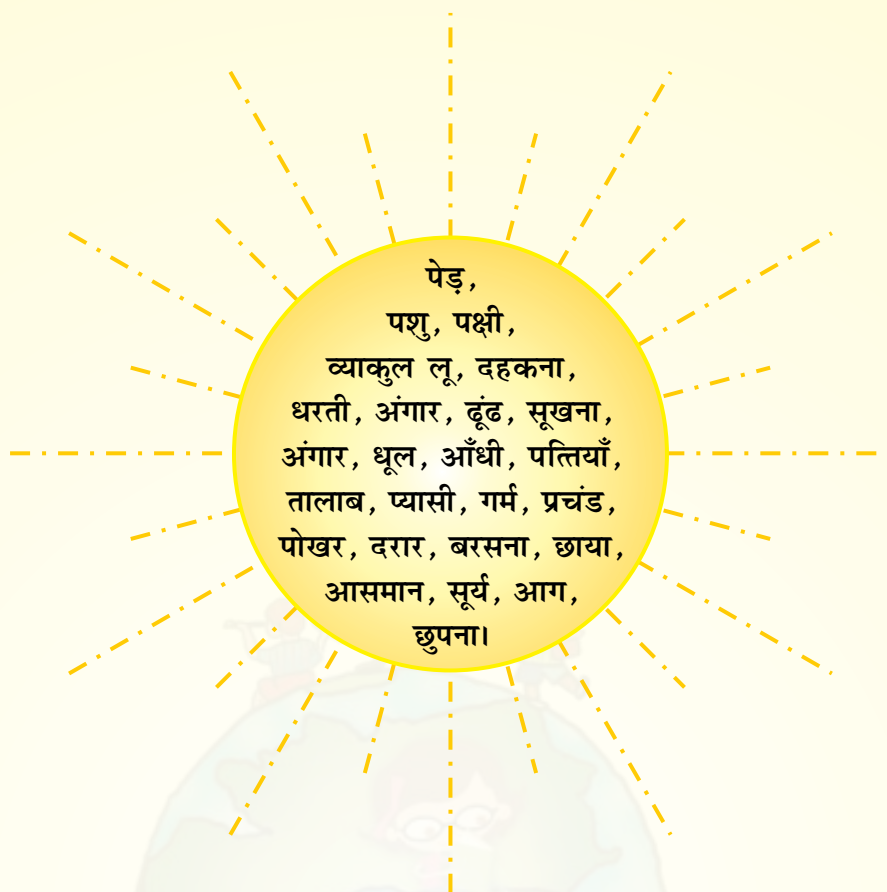
प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य (5-6 छात्रों का एक समूह)
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों से विभिन्न ऋतुओं के विषय में चर्चा करें तथा उनसे संबंधित कुछ शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें।
- ❖ शब्दों की सहायता से चार पंक्तियों की रचना कर अध्यापक स्वयं विद्यार्थियों को सुनाएं तथा कविता-लेखन की प्रेरणा दें।
- ❖ विद्यार्थियों की सहायता से कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर अध्यापक ग्रीष्म ऋतु की प्रचंडता का चित्रण करने के लिए छात्रों को निर्देश दें। छात्र समूह में चर्चा के उपरान्त कविता लिखेंगे। इस दौरान अध्यापक निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी करें।
- ❖ कविता लेखन के लिए छात्रों को 20-25 मिनट का समय दिया जाए। कम से कम 10 पंक्तियाँ लिखने का निर्देश दें।
- ❖ कविता लेखन के पश्चात् प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी कविता-पाठ करेगा। इसके लिए उन्हें 2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंकों से छात्रों को पूर्व में ही परिचित करवा दिया जाए।
- ❖ कविता लेखन के लिए कुछ शब्द छात्रों को सहायता हेतु दिए जाएँ।



Unit 12

देहि रचनात्मक मूल्यांकन -



मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय व भावानुरूप कविता लेखन	1
मौलिकता	1
क्रमबद्धता, सुसबद्धता	1
शुद्ध उच्चारण, स्वर की स्पष्टता	1
हाव-भाव, आरोह-अवरोह	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता तथा समूह में सक्रिय योगदान के लिए छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ कविता तथा वक्ता का चयन किया जाए।
- ❖ कविताओं को लिपिबद्ध करवा कर लघु पत्रिका बनवाई जाए।
- ❖ वर्तनी व उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए सुझाव दें।



प्रदत्त कार्य-2 विषय पर आधारित दोहों का संकलन तथा किसी एक का गायन

उद्देश्य :

- ❖ दोहों के स्वरूप एवं महत्ता से परिचय
- ❖ व्यावहारिक जीवन का ज्ञान
- ❖ काव्य विधा के प्रति अभिरुचि
- ❖ नैतिक गुणों का विकास
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- ❖ वैचारिक मंथन
- ❖ लेखन एवं वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य (6-6 विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाए)
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक किसी भाव विशेष से संबंधित दोहे के माध्यम से कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराए, जैसे -
“साधु ऐसा चाहिए जैसे सूप सुभाय
सार-सार को गहि लहै, थोथा देई उड़ाय”।
- ❖ दोहा संकलन हेतु शिक्षक विभिन्न विषय छात्रों को बताएं; जैसे - मीठी वाणी, मित्रता, बाह्य आडंबर, प्रेम की महत्ता, भक्ति प्रतिष्ठा, गुणों का महत्व आदि।
- ❖ दोहों के संकलन हेतु विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- ❖ छात्रों को निर्देश दिया जाए कि प्रत्येक विषय से संबंधित एक-एक दोहा अवश्य ढूँढकर लाएँ और उनसे संबंधित चित्र भी एकत्रित करें। यह कार्य परियोजना पुस्तिका में घर से करके लाएँ।
- ❖ कक्षा में प्रत्येक समूह से प्रत्येक विद्यार्थी एक-एक दोहे का गायन करे।
- ❖ कार्य से पूर्व अध्यापक मूल्यांकन के आधार छात्रों को बताएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

समग्र प्रस्तुति (दोहों का संकलन एवं चित्र)	2
कलात्मक प्रस्तुति	2
दोहा गायन	1
	5



Unit 12

देहि

रचनात्मक मूल्यांकन

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।
- अध्यापक दोहा संकलन के लिए अन्य विषय भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाए।
- सभी परियोजना कार्यों को कक्षा में प्रदर्शित किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 समाज में प्रचलित बाह्यआडंबरों पर परिचर्चा

उद्देश्य :

- समाज में व्याप्त बाह्य आडंबरों से परिचय
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास
- समाज के प्रति नैतिक दायित्व बोध
- वैचारिक मंथन
- वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- अध्यापक समाज में व्याप्त कुछ बाह्य आडंबरों के विषय में विद्यार्थियों से बातचीत करें।
- अध्यापक छात्रों से प्राप्त जानकारियों को श्यामपट्ट पर लिखें।
- 5-6 छात्रों का एक समूह तैयार किया जाए और सम्पूर्ण कक्षा को समूहों में बांट दिया जाए।
- प्रत्येक समूह कक्षा के समय में दिए गए विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करें।
- छात्रों को तैयारी के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थियों को प्रस्तुति के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व ही बता दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु

1

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना

1



शुद्ध उच्चारण	1
वैचारिक स्तर	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सशक्त विचार प्रस्तुति की सराहना।
- मुख्य विचार बिंदुओं का श्यामपट्ट पर लेखन।
- औसत व कमजोर प्रस्तुति के लिए सुझाव एवं प्रोत्साहन।

प्रदत्त कार्य-4 परियोजना कार्य

भारतीय वाद्ययंत्रों की चित्र सहित जानकारी

उद्देश्य :

- भारतीय वाद्ययंत्रों की जानकारी
- संगीत के प्रति अभिरुचि
- ज्ञान का विस्तार
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य (5-6 विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाएगा)
- सर्वप्रथम अध्यापक भारतीय शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता तथा विभिन्न दृष्टियों से महत्व पर चर्चा करें, जैसे - चिकित्सा के क्षेत्र में, मानसिक तनाव को दूर करने के संदर्भ में, अकेलेपन को दूर करने के लिए आदि।
- छात्रों को कार्य के स्वरूप से परिचित करवाते हुए विभिन्न भारतीय वाद्ययंत्रों के विषयों में चर्चा करेंगे। साथ ही छात्रों को निर्देश दिया जाए कि वे पुस्तकालय, इंटरनेट, संगीत अध्यापक आदि की सहायता से वाद्ययंत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त करें तथा चित्रित भी करें।



Unit 12

दोहे

रचनात्मक मूल्यांकन -

- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- ❖ निर्धारित दिन छात्र कक्षा में ही समूह के साथ मिलकर परियोजना पुस्तिका में यह कार्य करें।
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 25-30 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ सप्ताह के मध्य में शिक्षक कार्य के विषय में पूछकर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

अधिकतम जानकारी	2
कलात्मक प्रस्तुति	2
शब्द चयन, शुद्ध वर्तनी, वाक्य रचना	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ समूह में सक्रिय योगदान के लिए प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ परियोजना कार्य का चयन कर उसकी प्रशंसा की जाए।
- ❖ सभी परियोजना पुस्तिकाओं का कक्षा में प्रदर्शन किया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 विचाराभिव्यक्ति - “व्यावहारिक जीवन तथा आत्मिक गुणों के विकास में दोहों का महत्व”

उद्देश्य :

- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- ❖ वैचारिक मंथन, चिंतन-मनन की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ श्रवण-वाचन कौशल का विकास
- ❖ आत्मविश्वास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य (4-4 छात्रों का एक समूह)
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक किसी दोहे का उदाहरण देकर बताएं कि वे किस प्रकार व्यावहारिक जीवन में शिक्षा देकर आत्मिक दृढ़ता प्रदान करते हैं जैसे -



कहत रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।

बिपति कसौटी जे कसे, ते ही सांचे मीत॥

- ❖ छात्रों को कार्य से परिचित करवाते हुए प्रस्तुत विषय पर समूह में चर्चा करने का निर्देश दें। इस कार्य के लिए छात्रों को 10-12 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कार्य के दौरान शिक्षक छात्र के कार्यों पर दृष्टि रखें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी करें।
- ❖ प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी विचाराभिव्यक्ति करें इस कार्य के लिए उन्हें 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ छात्र व शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बताए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
भावानुरूप विषय की प्रस्तुति	1
मौलिकता	1
दोहों द्वारा पुष्टि	1
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, शुद्ध उच्चारण	1
समूह में योगदान	1
	5

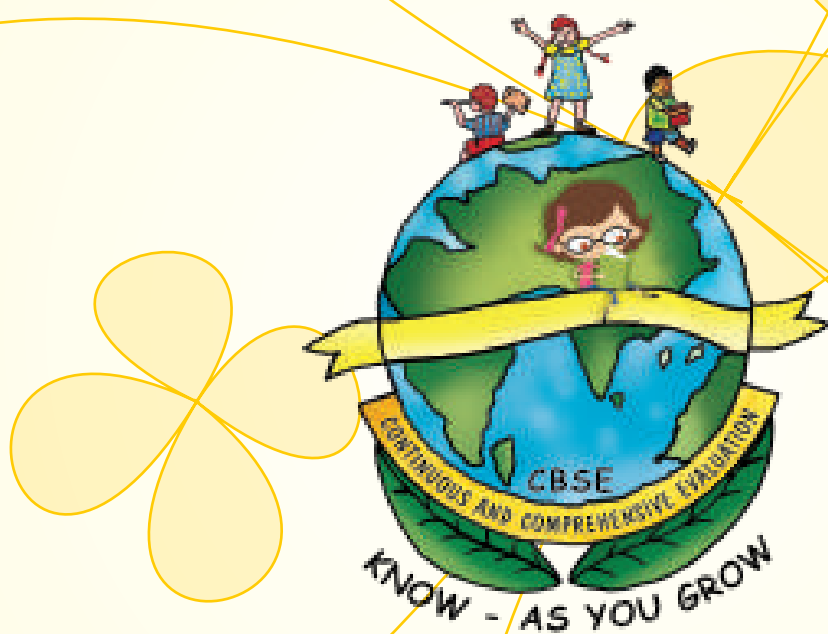
टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ समूह में सक्रिय योगदान के लिए प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति का चयन करें।
- ❖ कार्य में कमी रहने पर उसे दूर करने के लिए अन्य समूहों से सहायता लेने की प्रेरणा दें।





मनुष्यता

मैथिलीशरण गुप्त

प्रदत्त कार्य-1 कविता से संबंधित पौराणिक प्रसंगों व व्यक्तियों से संबंधित नाट्य मंचन (रति देव, दधीचि, राजा शिबि व कर्ण)

उद्देश्य :

- ❖ भारत की पौराणिक संस्कृति से परिचय
- ❖ आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ स्मरण शक्ति का विकास
- ❖ संवाद लेखन व नाटक मंचन शैली का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ शिक्षक द्वारा यह कार्य कविता पढ़ाने व समझाने के बाद किया जाएगा।
- ❖ पूरी कक्षा को विभिन्न समूहों में बांटा जाएगा व प्रत्येक समूह में चार-पांच विद्यार्थी हो सकते हैं।
- ❖ विद्यार्थियों को उपरोक्त चरित्रों के जीवन के विषय में और अधिक जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- ❖ विभिन्न समूहों को एक-एक चरित्र पर नाट्य मंचन तैयार करने के लिए कम से कम तीन-चार दिनों का समय दिया जाए व प्रत्येक प्रस्तुति के लिए 3-4 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

संवाद लेखन	1
प्रयुक्त भाषा	1
उच्चारण	1
मौलिकता व कल्पनाशीलता	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हाव-भाव)	1

5

रचनात्मक मूल्यांकन - मनुष्यता



Unit 13

रचनात्मक मूल्यांकन - मनुष्यता

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी की प्रस्तुतियों की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ अभिनय व प्रस्तुति की विशेष सराहना।
- नाट्य मंचन संबंधी/संवाद उच्चारण संबंधी सामान्य कमियों के विषय में शिक्षक विद्यार्थियों को अवगत करवाएँगे।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करवाना।

प्रदत्त कार्य-2 'कविता गायन- 'त्याग', 'बलिदान', सहयोग अथवा परोपकार - विषय से संबंधित किसी अन्य कविता का गायन।

उद्देश्य :

- नैतिक व मानवीय मूल्यों का विकास
- कलात्मक अभिरुचि का विकास
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- चिंतन मनन प्रवृत्ति का विकास
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- विद्यार्थियों को यह कार्य कविता पाठन के पश्चात् करवाया जाए।
- प्रत्येक विद्यार्थी को परोपकार, त्याग, बलिदान, सहयोग, समर्पण जैसे विषयों में से किसी एक विषय से संबंधित कोई एक कविता ढूँढकर गायन संबंधी कार्य दिया जाएगा।
- इस कार्य के लिए दो दिनों का समय दिया जाएगा।
- मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- एक प्रस्तुति के समय वक्ता के गायन का मूल्यांकन अन्य विद्यार्थियों व शिक्षक द्वारा किया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

कविता का चयन

1

उच्चारण क्षमता

1



लयबद्ध प्रस्तुति	1
स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य में सक्रिय भाग लें।
- ❖ सामान्य अशुद्धियों का शिक्षक द्वारा निवारण किया जाएगा।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ गायन की सराहना व विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति करवाई जाएगी।

प्रदत्त कार्य-3 कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा करना

उद्देश्य :

- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ रचनात्मकता/सृजनात्मकता का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ कविता विधा से परिचय
- ❖ कविता लेखन को प्रोत्साहन
- ❖ वाचन क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा को कविता लेखन में तुकबंदी व उसके महत्व के विषय में समझाकर उनके समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। जैसे -

“दया करुणा, क्षमा को जिसने धारण किया

अपने गुणों के बल पर धरा को वश में किया

युगों-युगों तक उसके गौरव की जलती रही ज्वाला

मनुष्य जन्म लेकर जिसने मानवता को मन में पाला।”

- ❖ शिक्षक द्वारा कविता की एक पंक्ति श्यामपट्ट पर लिखी जाएगी व छात्रों को अधूरी पंक्तियों को पूरा करने के लिए कहा जाएगा।



Unit 13

रचनात्मक मूल्यांकन - मनुष्यता

जहां नदियों में जीवन बहता है

.....

.....

.....

सबके हित के लिए जो निज स्वार्थ को तजता है

.....

.....

.....

मुश्किलों की आंधी से जब हुआ सामना

.....

.....

.....

- ❖ छात्रों को चार-चार के समूहों में बांटा जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह किसी एक पद्यांश की पंक्तियां पूरी करेगा।
- ❖ मूल्यांकन का आधार श्यामपट्ट पर लिख दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक समूह को कार्य पूरा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा। प्रत्येक समूह से एक वक्ता कविता वाचन करेगा।
- ❖ जब छात्र अपना कार्य कर रहे होंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर छात्रों का निरीक्षण करेंगे व आवश्यकता पड़ने पर छात्रों की सहायता भी करेंगे।
- ❖ एक समूह की प्रस्तुति के समय शिक्षक व अन्य छात्र मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
काव्य के अनुसार लयबद्धता	1
प्रवाहशील अभिव्यक्ति	1
उच्चारण की शुद्धता	1
आत्मविश्वास	1



टिप्पणी :

- ❖ किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी अध्यापक मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।
- ❖ अध्यापक पंक्तियाँ पूरी करने के लिए अन्य कोई पंक्तियाँ भी दे सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण की सराहना की जाए।
- ❖ सभी छात्रों द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण अपनी कॉपी में लिखा जाए।
- ❖ सामान्य अशुद्धियों को अध्यापक द्वारा शुद्ध किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-4 'कार्य प्रपत्र' महात्मा बुद्ध से संबंधित

उद्देश्य :

- ❖ महात्मा बुद्ध के जीवन व मूल्यों से परिचय
- ❖ अहिंसा व करुणा के मूल्यों का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से अहिंसा, त्याग, परोपकार व शांति जैसे मूल्यों के विषय में बातचीत करें।
- ❖ विद्यार्थियों को कार्य देने से पहले (कम से कम 10 दिन) महात्मा बुद्ध के विषय में पढ़ने के लिए प्रेरित करना।
- ❖ विद्यार्थियों को यह कार्य प्रपत्र करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ जब विद्यार्थी यह कार्य करेंगे तब शिक्षक घूम-घूमकर कक्षा में निरीक्षण करेंगे।
- ❖ विद्यार्थियों को मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।

1. महात्मा बुद्ध का वास्तविक नाम
2. जन्म स्थल
3. माता-पिता का नाम
4. पत्नी व संतान का नाम
5. संवेग उत्पत्ति के कारण



Unit 13

रचनात्मक मूल्यांकन - मनुष्यता

6. निर्वाण प्राप्ति का स्थान
7. सर्वप्रथम शिक्षा किसे दी
8. किस धर्म के प्रवर्तक थे
9. सुदत्त ने उपहार स्वरूप क्या दिया
10. प्रिय शिष्य का नाम

टिप्पणी : शिक्षक इच्छानुसार अन्य प्रश्न भी शामिल कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
पूरे 10 उत्तरों/जानकारी के लिए	5
8-9 उत्तरों/जानकारी के लिए	4
6-7 उत्तरों/जानकारी के लिए	3
4-5 उत्तरों/जानकारी के लिए	2
3 व 1 से कम उत्तरों/जानकारी के लिए	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक द्वारा सर्वप्रथम व सही कार्य पूरा करने वाले विद्यार्थियों की विशेष सराहना।
- ❖ सभी सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित अन्य प्रसंगों को भी सुनाना।

प्रदत्त कार्य-5 'विचाराभिव्यक्ति'

विषय : व्यक्ति व समाज परस्परालंबी है।

उद्देश्य :

- ❖ चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- ❖ पूर्व ज्ञान की परख व अनुप्रयोग
- ❖ वाचन कौशल का विकास



प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ यह कार्य शिक्षक कविता पाठन के पश्चात् ही करवाएँगे।
- ❖ शिक्षक 'व्यक्ति व समाज एक दूसरे के पूरक हैं' विषय पर विद्यार्थियों से विचार विमर्श करेंगे।
- ❖ विद्यार्थियों को सोचने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को विषय पर अपना मत प्रस्तुत करने के लिए 1.5-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार पहले ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
भाषा	1
उच्चारण	1
उदाहरणों का प्रयोग	1
प्रस्तुति	1
	5

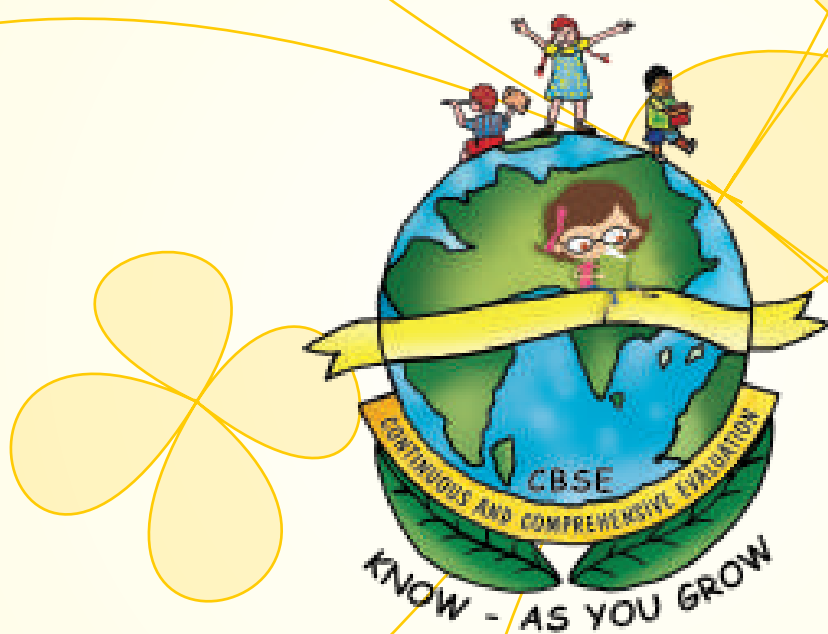
टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य में सक्रिय रूप से हिस्सा लें।
- ❖ सभी विद्यार्थियों के विचार सुनते समय मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ विचारों व प्रस्तुति की सराहना व विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति करवाई जाए।





मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

महादेवी वर्मा

प्रदत्त कार्य-1 महादेवी वर्मा के किसी एक संस्मरण/रेखाचित्र को पढ़कर उसकी संक्षेप में समीक्षा प्रस्तुत करना।

उद्देश्य :

- ❖ समीक्षा विधा से परिचय
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- ❖ वाचन कौशल, पठन कौशल, लेखन कौशल, श्रवण कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य/सामूहिक कार्य
- ❖ शिक्षक किसी संस्मरण/रेखाचित्र की समीक्षा कक्षा में सुनाकर कार्य व मूल्यांकन के आधार बिंदु को समझाएँगे।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को महादेवी वर्मा के संस्मरण/रेखाचित्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। संबंधित पुस्तकों की जानकारी दें।
- ❖ पढ़ने व समीक्षा तैयार करने हेतु विद्यार्थियों को 4-5 दिन का समय अवश्य दें।
- ❖ कक्षा में कुछ पुस्तकें उपलब्ध करवाकर, कुछ समूहों में बांटकर भी कार्य कराया जा सकता है।
- ❖ प्रत्येक समूह में 3-4 विद्यार्थी मिलकर एक समीक्षा तैयार करें और एक प्रतिभागी उसे प्रस्तुत करे।
- ❖ इस दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार उनकी सहायता करें।
- ❖ प्रत्येक को समीक्षा प्रस्तुति हेतु 3-4 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु के चयन	1
विषय वस्तु (संस्मरण/रेखाचित्र) के स्तर	1
शब्द चयन व वाक्य रचना	1

रचनात्मक मूल्यांकन - मधुर-मधुर मेरे दीपक जल



Unit 14

उच्चारण एवं स्वर की स्पष्टता	1
समीक्ष (समग्र प्रस्तुति) तथ्यों का संकलन	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली समीक्षा की सराहना की जाए।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करना।
- अपूर्ण कार्य को पूरा करने हेतु अतिरिक्त समय दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-2 पाठ्य-पुस्तक से अतिरिक्त कविता का वाचन/गायन (महादेवी वर्मा की अन्य कविता;

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति आकर्षण
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- ज्ञान का विस्तार
- वाचन व श्रवण कौशल का विकास
- भावुकता व संवेदनशीलता का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक महादेवी वर्मा की किसी कविता को कक्षा में सुनाएगा।
- शिक्षक कार्य व मूल्यांकन के विषय में पहले ही विद्यार्थियों को बताएंगे।
- 3-4 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर भी कार्य किया जा सकता है।
- महादेवी वर्मा की कविताओं को विद्यार्थी कहां से पढ़ सकते हैं यह शिक्षक बताएंगे। अगर संभव हो तो कुछ पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएं।
- कविता चयन के लिए विद्यार्थियों को दो दिन का समय अवश्य दिया जाए।
- निर्धारित दिन सभी विद्यार्थी/समूह का एक प्रतिभागी कविता पाठ करेगा।
- इस समय शिक्षक व अन्य विद्यार्थी मूल्यांकन करेंगे।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
कविता का चयन	1
उच्चारण क्षमता	1
लयबद्धता	1
स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे कार्य की सराहना की जाए।
- उच्चारण व लय संबंधी कमियों को सुझाव देकर ठीक करने का प्रयास किया जाए।
- कविता चयन न हो पाने व सही कविता चयन न होने पर अतिरिक्त समय दिया जाए ताकि वह कार्य पूरा कर सके।

प्रदत्त कार्य-3 कार्य-प्रपत्र

जीव-जंतुओं पर प्रकृति का प्रभाव

उद्देश्य :

- प्रकृति तथा प्राणी मात्र के संबंधों की जानकारी
- ज्ञान का विस्तार
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- लेखन कौशल का विकास
- प्रकृति के प्रति भावुक व संवेदनशील बनाना

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- कविता समाप्त होने के बाद यह कार्य करवाया जाए।



Unit 14



- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को बताएं कि विभिन्न ऋतुओं का मनुष्य पर क्या मानसिक प्रभाव पड़ता है?
- ❖ कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराते हुए उपरोक्त विषय से संबंधित कार्य-प्रपत्र पूर्ण करने के लिए दिया जाएगा।
- ❖ उपरोक्त कार्य 'कार्य-प्रपत्र' के माध्यम से अथवा श्याम-पट्ट पर लिखाकर भी करवाया जा सकता है।
- ❖ छात्रों को कार्य-प्रपत्र पूर्ण करने के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक कार्य से पूर्व श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

कार्य-प्रपत्र

प्रकृति के विभिन्न उपादानों का अथवा स्थिति विशेष में किस पक्षी, जीव-जंतु पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- ❖ काले बादलों के घिरने पर
- ❖ पूर्ण चांद को देखकर
- ❖ बसंत ऋतु के आगमन पर
- ❖ जलती लौ को देखकर
- ❖ आम तथा अमरूद के पकने पर
- ❖ फूलों के खिलने पर
- ❖ सर्दियों के आगमन पर गहरी नींद सो जाते हैं
- ❖ वर्षा ऋतु प्रारंभ होते ही स्वर सुनाई देते हैं
- ❖ फसल के पकने पर धावा बोलते हैं
- ❖ सूरज निकलते ही वातावरण मुखरित हो जाता है
- ❖ स्वाति नक्षत्र में बरसी बूंद को पाकर
- ❖ गोधूलि बेला होते ही

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

12 जानकारीयां सही देने पर	5
9-11 जानकारीयां सही देने पर	4
6-8 जानकारीयां सही देने पर	3
3-5 जानकारीयां सही देने पर	2
1-2 जानकारीयां सही देने पर	1

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- शिक्षक की सहायता के लिए उत्तर-कोयल, भौरा, चातक, चकोर, चीटियाँ, छिपकली, मेंढक, तितली, टिड्डे, गाय, मोर, पतंगा, तोते।
- कार्य पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य-प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् सभी जानकारीयों छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट पर लिखें।
- कार्य पूर्ण न कर पाने वाले छात्रों को प्रेरणा देकर कार्य पूरा करवाएं।

प्रदत्त कार्य-4 स्वरचित कविता (दीपक/दीप को प्रतीक के रूप में रखकर) लेखन एवं वाचन

उद्देश्य :

- काव्य विधा के प्रति रुझान
- कलात्मक एवं रचनात्मक अभिरुचि
- मौलिक कल्पनाशीलता का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि तथा उसके अनुप्रयोग की प्रेरणा
- काव्य में प्रतीकों के महत्व को समझना

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक दीपक (प्रतीक के रूप में) पर आधारित कोई अन्य रचना कक्षा में सुनाकर कार्य के विषय में विद्यार्थियों को समझाएं। जैसे -
है अंधेरी रात पर दीवा जलना कब मना है.....
- स्वरचित कविता भी सुनाई जा सकती है।
- विद्यार्थियों को कविता की प्रथम पंक्ति श्यामपट्ट पर लिखकर दी जा सकती है जिसे वह 6-8 पंक्ति में विस्तार देंगे।

जैसे - अंधकार को देकर मात

मधुर मधुर मेरे दीपक जल

.....

.....



Unit 14

रचनात्मक मूल्यांकन - मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

- ❖ स्वरचित कविता लेखन हेतु विद्यार्थियों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कक्षा को कुछ समूहों में बांटा जाएगा। हर समूह से एक प्रतिभागी स्वरचित कविता पाठ करेगा।
- ❖ कार्य के दौरान शिक्षक आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
शब्दों का चयन/तुकबंदी	1
मौलिक कल्पना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
प्रस्तुतीकरण - आत्मविश्वास, लय, हावभाव, क्रमबद्धता	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ प्रभावशाली कविता की सराहना।
- ❖ अधूरी कविता को सुझाव व मार्गदर्शन देकर पूरा करवाया जाए।
- ❖ कमियों को दूर करने हेतु प्रयास किया जाए।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ कविता को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाए।
- ❖ अच्छा कार्य करने वाले समूह की सराहना की जाए।

प्रदत्त कार्य-5 स्वानुभव अभिव्यक्ति - वह दृश्य जिसे देखते ही मेरा हृदय रो उठा.....।

उद्देश्य :

- ❖ भावुकता व संवेदनशीलता का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता व स्वाध्याय की प्रेरणा
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि
- ❖ श्रवण-वाचन कौशल का विकास



प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ अध्यापक स्वानुभव अभिव्यक्ति द्वारा छात्रों को कार्य के स्वरूप से परिचित कराएँ।
- ❖ छात्रों को विचार करने तथा मुख्य बिंदु लिखने हेतु 10 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ प्रत्येक छात्र को अभिव्यक्ति हेतु 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ अध्यापक ध्यान रखें कि प्रत्येक छात्र ध्यानपूर्वक कार्य में हिस्सा ले रहा है।
- ❖ छात्र तथा अध्यापक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय व भावानुरूप अभिव्यक्ति	1
मौलिकता व मार्मिकता	1
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
क्रमबद्धता, सुसंबद्धता तथा आत्मविश्वास	1
	5

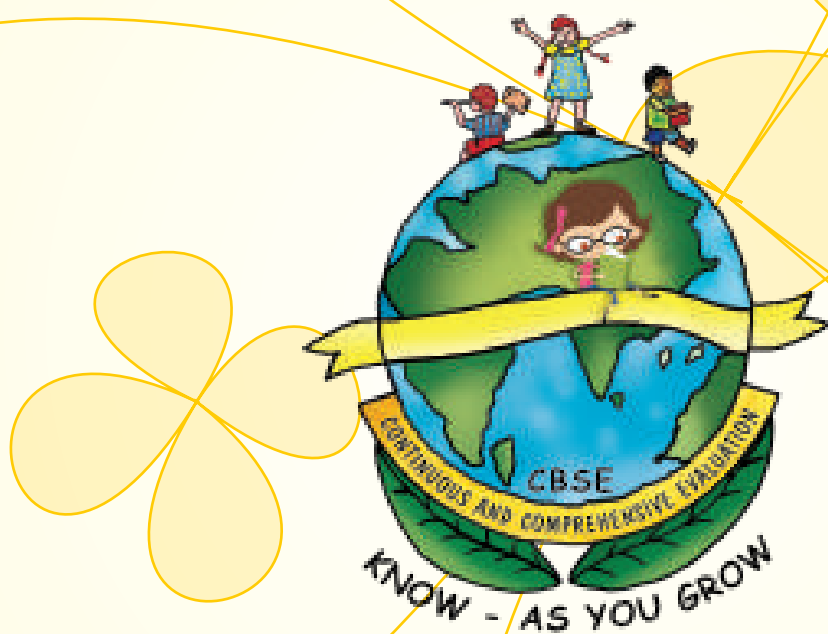
टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य पूर्ण करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य में कमी रहने पर छात्र की कमी दूर करने के लिए प्रेरित करें।
- ❖ उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर करने के लिए सामान्य रूप से सुझाव दें।





सपनों के से दिन

गुरुदयाल सिंह

प्रदत्त कार्य-1 विचाराभिव्यक्ति

विषय : आपकी कल्पना का आदर्श शिक्षक

उद्देश्य :

- ❖ विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास
- ❖ शिक्षक के प्रति आदर्श दृष्टिकोण का विकास
- ❖ वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास
- ❖ कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत अथवा सामूहिक दोनों प्रकार से कराया जा सकता है।
- ❖ शिक्षक सर्वप्रथम कार्य व मूल्यांकन के सभी बिंदुओं को स्पष्ट करेंगे।
- ❖ कक्षा के विद्यार्थियों को कुछ समूह में बांटा जाएगा।
- ❖ विचार करने एवं मुख्य बिंदुओं को लिखने हेतु विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक वक्ता 2-3 मिनट में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ शिक्षक उस समय जब विद्यार्थी तैयारी कर रहे हैं, यह ध्यान रखेंगे कि सभी विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
मौलिक व सटीक लेखन/प्रस्तुति	1
शब्द चयन	1
आत्मविश्वास	1
समग्र प्रस्तुति	1
	5



Unit 15

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छे विचारों व प्रस्तुति की सराहना
- अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय दिया जाए।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव दिए जाएँगे।

प्रदत्त कार्य-2 'अनुशासन के लिए दंड आवश्यक' वाद-विवाद

उद्देश्य :

- नैतिक मूल्यों का विकास
- स्वमूल्यांकन की क्षमता का विकास
- विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास
- मंच भय से मुक्ति।

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- शिक्षक विद्यार्थियों को वाद-विवाद कला के नियमों से परिचित करवाएंगे।
- संपूर्ण कक्षा को दो वर्गों (एक-पक्ष), (दूसरा-विपक्ष) में बांटा जाए।
- चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह होगा व एक समूह से एक वक्ता अपने समूह का मत प्रस्तुत करेगा।
- तैयारी के लिए एक दिन का समय दिया जाए।
- प्रत्येक वक्ता को 1.5-2 मिनट का समय दिया जाए।
- मूल्यांकन का आधार पहले से ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- एक समूह की प्रस्तुति के समय अन्य समूह व शिक्षक उनका मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी क्षमता	1



अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण	1
उपर्युक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे वक्ताओं को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करने का मौका दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 मनुष्य का व्यवहार छवि बनाता और बिगाड़ता है (स्वानुभव)।

उद्देश्य :

- ज्ञान का विस्तार
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण
- व्यावहारिक अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए प्रेरित करना
- लेखन-वाचन क्षमता का विकास
- संस्मरण विधा से परिचय

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक कुछ प्रश्नों के माध्यम से छात्रों को कार्य से परिचित करवा सकते हैं। जैसे - कोई व्यक्ति उन्हें क्यों अच्छा लगता है। विद्यार्थी अवश्य ही किसी ऐसी व्यक्ति से मिला होगा जिसने उसे प्रभावित किया होगा। जैसे - रिश्तेदार, मित्र, परिचित आदि।
- विद्यार्थियों को स्वानुभव लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।
- अनुभव को लिपिबद्ध करने के लिए विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।
- स्वानुभव प्रस्तुति के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- कार्य से पूर्व ही मूल्यांकन के आधार बिंदुओं से विद्यार्थियों को परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु - विषयानुकूल व भावानुकूल	1
प्रवाहशीलता - क्रमबद्धता, धाराप्रवाह अभिव्यक्ति	1



Unit 15

आत्मविश्वास	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट लेखन व वाचन की सराहना की जाए।
- विद्यार्थी को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- उच्चारण एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का निदान करवाया जाए।

प्रदत्त कार्य-4 कहानी का नाट्य रूपांतरण व मंचन

उद्देश्य :

- नाट्य विधा से परिचय
- संवाद लेखन की क्षमता का विकास
- लेखन एवं वाचन कौशल का विकास
- सहभागिता का विकास
- मंच भय से मुक्ति
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- पाठ को समझाने के पश्चात् शिक्षक इस कार्य के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी विस्तार से दें।
- कक्षा को कुछ समूहों में बांट दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।
- नाट्य लेखन एवं मंचन के अभ्यास के लिए एक सप्ताह का समय दिया जाए।
- नियत दिन पर प्रत्येक समूह नाटक का मंचन करेगा।
- प्रत्येक समूह को नाट्य मंचन के लिए 5-7 मिनट का समय दिया जाए।



- एक समूह की प्रस्तुति के समय अध्यापक व अन्य छात्र ध्यानपूर्वक अवलोकन एवं मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
संवाद (लेखन एवं प्रस्तुति)	1
भाषा प्रयोग (शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना)	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हावभाव)	1
अभिनय	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा।
- अभिनय, संवाद-विशेष की सराहना।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-5 अपने विद्यालय की समग्र जानकारी कार्य-प्रपत्र

उद्देश्य :

- आसपास के वातावरण के प्रति जागरूकता
- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ज्ञान का विस्तार
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों से उनके घर व आसपास के वातावरण के विषय में बातचीत करेगा।
- विद्यार्थियों को उनके विद्यालय के प्रति जागरूक बनाने के लिए एक कार्यप्रपत्र दिया जाएगा।



Unit 15

दिन से के सपनों - रचनात्मक मूल्यांकन

❖ विद्यार्थियों को कार्य करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।

1. आपके विद्यालय का कुल क्षेत्र
2. विद्यालय में लगे कुल वृक्षों की संख्या
3. विद्यालय में कुल कमरों की संख्या
4. विद्यालय में कुल शिक्षकों की संख्या
5. विद्यालय में प्रयोगशालाओं की संख्या
6. विद्यालय में छात्रों की संख्या
7. विद्यालय में कौन-कौन से फूलों के पौधे हैं
8. विद्यालय की प्रत्येक मंजिल पर कितने कमरे हैं
9. विद्यालय में कौन-कौन से खेल खिलाए जाते हैं
10. आपके विद्यालय की एक खास बात

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

पूरे सही 10 उत्तरों के लिए	5
8-9 सही उत्तरों के लिए	4
6-7 सही उत्तरों के लिए	3
4-5 सही उत्तरों के लिए	2
3 व 3 से कम उत्तरों के लिए	1

टिप्पणी :

❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि प्रत्येक विद्यार्थी इस प्रपत्र को ध्यानपूर्वक करें।
- ❖ सबसे पहले सही व पूर्ण कार्य की सराहना।
- ❖ संपूर्ण व सही जानकारी को विद्यालय के सूचनापट्ट पर लगाया जाए।



पतझर में टूटी पत्तियाँ

रवींद्र केलेकर

प्रदत्त कार्य-1 जीवन में तनाव का कारण - परिचर्चा

उद्देश्य :

- स्वानुभव को शब्दबद्ध करके अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग
- स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास
- समस्या पहचान उसके निदान हेतु उपाय ढूँढ़ने की क्षमता का विकास
- विचारों का प्रस्तुतीकरण
- श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक जीवन में तनाव के कारणों के विषय में चर्चा करेंगे।
- तनाव के कारणों के निदान के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- तीन-चार विद्यार्थियों का एक समूह बनाया जाएगा। समस्त कक्षा को समूहों में बांट दिया जाएगा।
- प्रत्येक समूह सामने आकर अपने विचार प्रस्तुत करेगा।
- अध्यापक और अन्य छात्र समूह की चर्चा का मूल्यांकन करेंगे।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।
- विद्यार्थियों को तैयारी के लिए दस मिनट का समय दिया जाएगा।
- तैयारी के समय अध्यापक घूम-घूमकर विद्यार्थियों का निरीक्षण करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
शब्द चयन एवं वाक्य रचना	1
सहभागिता एवं सक्रिय योगदान	1



Unit 16

आत्मविश्वास एवं हावभाव	1
प्रवाहशीलता, क्रमबद्धता, सुसम्बद्धता	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- मुख्य एवं अच्छे विचार बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- गलतियों एवं अशुद्धियों का निदान किया जाएगा।
- जीवन में तनाव दूर करने के श्रेष्ठ उपायों की सराहना की जाएगी।

प्रदत्त कार्य-2 'ऐसे वैसे जैसे भी, बस काम होना चाहिए' वाद विवाद

उद्देश्य :

- तार्किक व आलोचनात्मक दृष्टि का विकास
- विचार-विश्लेषण की क्षमता का विकास
- मंडन एवं खंडन का अभ्यास
- ज्ञान का विस्तार
- मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- शिक्षक विद्यार्थियों को वाद-विवाद कला से अवगत करवाते हुए विषय का परिचय दें।
- संपूर्ण कक्षा को दो वर्गों (एक-पक्ष), (दूसरा-विपक्ष) में बाँटा जाए।
- चार-चार विद्यार्थियों का एक समूह होगा व एक समूह से एक वक्ता अपने समूह का मत प्रस्तुत करेगा।
- तैयारी के लिए एक दिन का समय दिया जाए।
- प्रस्तुति के लिए 1.5-2 मिनट का समय दिया जाएगा।
- तैयारी के समय शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर विभिन्न समूहों का निरीक्षण करें।
- मूल्यांकन का आधार कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- एक समूह की प्रस्तुति के लिए अध्यापक व अन्य समूह मूल्यांकन का कार्य करेंगे।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
तार्किक क्षमता	1
भाषायी क्षमता	1
अभिव्यक्ति व प्रस्तुतीकरण	1
उपयुक्त उदाहरणों द्वारा तर्क की पुष्टि	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- प्रत्येक वक्ता को प्रोत्साहित किया जाए।
- अच्छे वक्ताओं की प्रस्तुति को मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाए।
- प्रस्तुति, अभिव्यक्ति एवं विषय वस्तु से सम्बन्धित कमियों को शिक्षक दूर करने का प्रयास करें।

प्रदत्त कार्य-3 मानचित्र के माध्यम से चाय उत्पादक राज्य के विषय में जानकारी

उद्देश्य :

- भारत के चाय उत्पादक राज्यों की जानकारी एवं स्थिति
- तथ्य संकलन की प्रेरणा
- मानचित्र में स्थान चिह्नित करने का अभ्यास
- स्वाध्याय की प्रेरणा
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- पाठ समाप्ति पर यह कार्य करवाया जाए।
- शिक्षक चावल, गेहूं या कपास उत्पादक राज्यों के विषय में बताते हुए कार्य के स्वरूप से विद्यार्थियों को परिचित करवाएं।



Unit 16

रचनात्मक मूल्यांकन - पतझर में टूटी पत्तियाँ

- ❖ विद्यार्थियों को एक दिन पूर्व ही भारत का मानचित्र लाने का निर्देश दिया जाए।
- ❖ निर्धारित दिन सभी विद्यार्थी मानचित्र पर चाय उत्पादक राज्यों की पहचान कर उसे चिह्नित करेंगे तथा अलग पृष्ठ पर उन राज्यों के विषय में दो-तीन पंक्तियां लिखेंगे।



- ❖ इस कार्य हेतु विद्यार्थियों को 30 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ कार्य के दौरान शिक्षक निरीक्षण करें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन भी करेंगे। मूल्यांकन के आधार पूर्व में ही बता दिए जाएं।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
सम्पूर्ण जानकारी देने पर (सभी राज्य)	2
राज्यों के विषय में सही जानकारी देने पर	2
शुद्ध वर्तनी, शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना	1
	5

टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ सम्पूर्ण कार्य सही करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- ♦ अधूरा कार्य पूरा करने हेतु अतिरिक्त समय दिया जाए।
- ♦ सही कार्य करने वाले छात्र अन्य छात्रों की सहायता कर उनका कार्य पूरा करा सकते हैं।

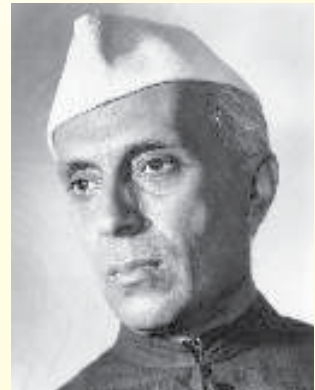
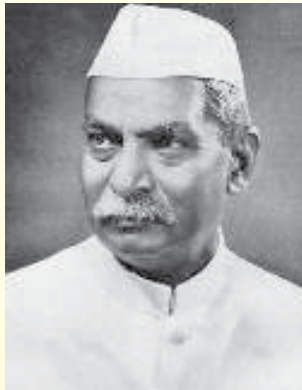
प्रदत्त कार्य-4 समाज के कुछ आदर्शवादी लोगों के आदर्शों पर विचार प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य :

- ♦ नैतिक मूल्यों का विकास
- ♦ सामाजिक दायित्वों का विकास
- ♦ आदर्शवादी मूल्यों की पहचान
- ♦ चिंतन प्रवृत्ति का विकास
- ♦ प्रस्तुतीकरण शैली का विकास

प्रक्रिया :

- ♦ व्यक्तिगत कार्य



Unit 16

- ❖ शिक्षक द्वारा ये तीनों चित्र दिखाकर उनके आदर्शों के विषय में विद्यार्थियों से चर्चा की जाएगी।
- ❖ अब विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा इन तीन चित्रों के अलावा किसी एक महान चरित्र के आदर्शों के बारे में जानकारी एकत्र करके 8-10 पंक्तियों में कक्षा को उनके आदर्शों के विषय में बताएंगे।
- ❖ विद्यार्थी को यह कार्य करने के लिए एक दिन का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी प्रस्तुति के लिए 1.5-2 मिनट तक का समय दिया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
शब्द चयन व वाक्य रचना	1
प्रवाहशीलता व क्रमबद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता	1
आत्मविश्वास व प्रस्तुति	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ प्रत्येक विद्यार्थी के विचारों को सुना जाएगा।
- ❖ मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- ❖ प्रत्येक प्रस्तुति का मूल्यांकन शिक्षक स्वयं करेंगे व अन्य विद्यार्थियों की सहायता भी ली जा सकती है।
- ❖ सभी विद्यार्थियों के विचारों को एकत्रित करके कक्षा के सूचनापट्ट पर लगाएं।
- ❖ अधूरा कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रेरित करके कार्य पूरा करवाएं।

प्रदत्त कार्य-5 सूची-निर्माण

विषय : 'वे कार्य जो सामाजिक व नैतिक दृष्टि से उचित होते हुए भी अक्सर हम नहीं करते।'

उद्देश्य :

- ❖ नैतिक मूल्यों की पहचान व विकास
- ❖ आत्म विश्लेषण
- ❖ स्वतंत्र दृष्टिकोण का विकास



- ❖ चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ तुलनात्मक वर्गीकरण कर सकने की क्षमता का विकास
- ❖ लेखन, वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ यह कार्य व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों से कराया जा सकता है
 - ❖ सूची बनाने के प्रारूप को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दे जिसे विद्यार्थी एक पृष्ठ पर उतारेंगे।
सत्य बोलना चाहिए परंतु मैं अक्सर.....
बड़ों की बातें माननी चाहिए परंतु मैं अक्सर.....
1.
 2.
 3.
 4.
 5.
 6.
 7.
 8.
 9.
 10.
- ❖ मूल्यांकन के आधार पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।
 - ❖ सूची तैयार करने हेतु विद्यार्थियों को 10-12 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
 - ❖ इस दौरान शिक्षक यह ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य को कर रहे हैं। प्रपत्र एकत्रित कर शिक्षक उसकी जांच करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

9-10 सही होने पर	5
7-8 सही होने पर	4
5-6 सही होने पर	3



Unit 16

3-4 सही होने पर	2
1-2 सही होने पर	1
	5

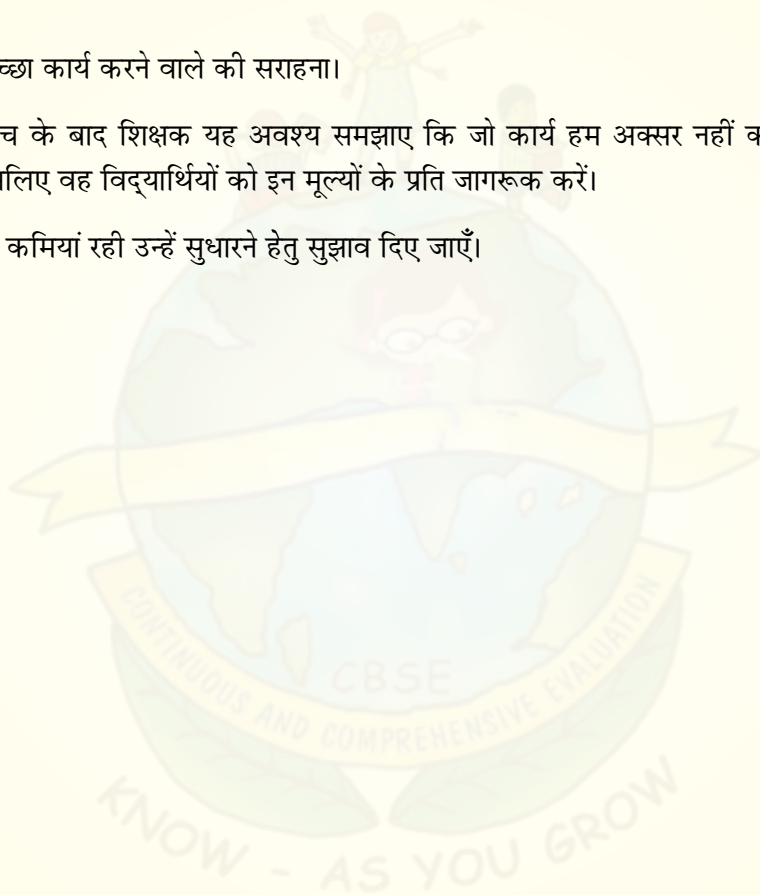
पतियाँ
में टूटी
पतझर - पतझर
मूल्यांकन -

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छा कार्य करने वाले की सराहना।
- जांच के बाद शिक्षक यह अवश्य समझाए कि जो कार्य हम अक्सर नहीं करते वे कितने महत्वपूर्ण हैं इसलिए वह विद्यार्थियों को इन मूल्यों के प्रति जागरूक करें।
- जो कमियां रही उन्हें सुधारने हेतु सुझाव दिए जाएँ।



कारतूस

हबीब तनवीर

प्रदत्त कार्य-1 एकांकी-मंचन

उद्देश्य :

- एकांकी विधा से परिचय
- अभिनय क्षमता का विकास
- प्रस्तुतीकरण शैली का विकास
- मंच भय से मुक्ति
- वाचन एवं श्रवण क्षमता का विकास
- सहभागिता का विकास
- संवाद लेखन क्षमता का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- पाठ को समझा लेने के पश्चात् शिक्षक इस कार्य के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी विस्तार से दें।
- मूल्यांकन के आधार बिंदु पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएँ।
- कक्षा को कुछ समूहों में बांट दिया जाए।
- अभ्यास हेतु विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय अवश्य दें।
- कहानी में थोड़े-बहुत फेर-बदल की छूट मान्य होनी चाहिए।
- नियत दिन पर प्रत्येक समूह नाटक का मंचन करेंगे। प्रत्येक समूह को नाट्य मंचन के लिए 5-7 निमट का समय दिया जाए।
- प्रत्येक समूह एक-दूसरे की प्रस्तुति का ध्यानपूर्वक अवलोकन एवं मूल्यांकन करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
संवाद लेखन एवं प्रस्तुति	1



Unit 17

रचनात्मक मूल्यांकन - कारतूस

भाषा प्रयोग (शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना)	1
प्रस्तुतीकरण (आत्मविश्वास व हावभाव)	1
अभिनय	1
	5

टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना।
- ♦ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा।
- ♦ अभिनय, संवाद-विशेष की सराहना।
- ♦ औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2 'चित्र के आधार पर वीरता व देशभक्ति की कहानी रचना व वाचन

उद्देश्य :

- ♦ सामाजिक दायित्वों का आभास
- ♦ ज्ञान का विस्तार
- ♦ काल्पनिकता का विकास
- ♦ चिंतन मनन प्रवृत्ति का विकास
- ♦ लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ♦ व्यक्तिगत कार्य





- ❖ सभी विद्यार्थियों को प्रपत्र द्वारा चित्र बांटे जाएंगे।
- ❖ विद्यार्थियों को कहानी लेखन संबंधी सभी नियमों की जानकारी पूर्व में ही दे दी जाएगी।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले से विद्यार्थियों को स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
चित्र से संबंधित	1
शब्द चयन व लेखन शैली	1
मौलिकता	1
कल्पनाशीलता	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के सूचनापट्ट पर लगाया जाए।
- ❖ सराहनीय प्रस्तुतियों को प्रेरणा का स्रोत बनाया जाए।
- ❖ औसत प्रस्तुतियों को सुझाव देकर प्रोत्साहित किया जाए।



Unit 17

प्रदत्त कार्य-3 अपने किसी साहसिक कारनामे का वर्णन (स्वानुभव)

उद्देश्य :

- व्यावहारिक अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए प्रेरित करना
- वाचन क्षमता का विकास
- साहस भाव जगाना
- संस्मरण विधा से परिचय
- लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम अध्यापक अपने किसी साहसिक अनुभव को कक्षा में सुनाएं।
- विद्यार्थियों को स्वानुभव लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।
- अनुभव को लिपिबद्ध करने के लिए विद्यार्थियों को 10 मिनट का समय दिया जाए।
- विद्यार्थी को स्वानुभव सुनाने के लिए 1-2 मिनट का समय दिया जाए।
- विद्यार्थियों को पूर्व में ही कार्य के मूल्यांकन के आधार बिंदुओं से परिचित करवाया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु - विषयानुकूल व भावानुकूल	1
प्रवाहशीलता-क्रमबद्धता, धारा प्रवाह अभिव्यक्ति	1
आत्मविश्वास	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1

5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्कृष्ट लेखन व वाचन की सराहना की जाए।
- विद्यार्थी को स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित किया जाए।
- अन्य विद्यार्थियों से उच्चारण एवं वर्तनी की अशुद्धियों के विषय में पूछा जाए तथा उन्हीं में उन अशुद्धियों का निदान करवाया जाए।



प्रदत्त कार्य-4 वर्ग पहेली (कार्य प्रपत्र)

वर्ग में दिए गए शब्दों में कुछ मुहावरे छुपे हैं जिन्हें ढूँढ़कर सूची तैयार करें।

उद्देश्य :

- ❖ मुहावरों की पहचान
- ❖ चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ समस्या-समाधान की प्रेरणा
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ पूर्वज्ञान के आधार पर शिक्षक छात्रों से कुछ मुहावरे पूछकर श्यामपट्ट पर लिखें तथा वाक्य में प्रयोग करवाएं।
- ❖ कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित कराकर प्रस्तुत कार्य 'कार्य प्रपत्र' के द्वारा या 'श्यामपट्ट' पर लिखकर करवाया जाए।
- ❖ नाम ढूँढ़कर सूची तैयार करने से लिए छात्रों को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ छात्र विभिन्न रंगों का इस्तेमाल करते हुए नामों को प्रदर्शित करते हुए सूची तैयार कर सकते हैं।
- ❖ गतिविधि के दौरान शिक्षक ध्यान रखें कि प्रत्येक छात्र कार्य में रुचि लें।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक कार्य से पूर्व ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

ब	ह	दां	तों	प	सी	ना	आ	ना	आं
च	व	क	र	खा	जा	ना	वि	क	खों
तू	का	म	त	मा	म	क	र	ना	में
ती	ब	टू	ट	जा	ना	बा	आ	आं	धू
बो	व	ढे	र	हो	ना	ट	वा	खों	ल
ल	का	न	भ	र	ना	जो	ज	से	झों
ना	र	सो	इ	या	चा	ह	उ	बो	क
चे	ह	रा	मु	र	झा	ना	ठा	ल	ना
च	जा	न	ब	ख	श	दे	ना	ना	च
क	ना	आ	डे	हा	थों	ले	ना	दे	ना



Unit 17

रचनात्मक मूल्यांकन - कारतूस

सूची

1.
2.
3.
4.
5.
6.
7.
8.
9.
10.
11.
12.
13.
14.
15.

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

14-15 मुहावरे छांट लेने पर	5
11-13 मुहावरे छांट लेने पर	4
8-10 मुहावरे छांट लेने पर	3
5-7 मुहावरे छांट लेने पर	2
2-4 मुहावरे छांट लेने पर	1

प्रतिपुष्टि

- ❖ कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों की सहायता से सभी मुहावरों की सूची श्याम-पट्ट पर अंकित की जाए।
- ❖ मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करने की प्रेरणा भी छात्रों को दी जाए।



- छात्रों की सहायता से मुहावरों के अर्थ भी श्यामपट्ट पर लिखे जा सकते हैं।

शिक्षकों के लिए मुहावरों की सूची :

हक्का बक्का रह जाना, तूती बोलना, दाँतों पसीना आना,
चक्कर खा जाना, आँखों से बोलना, हक्का बक्का रह जाना, ढेर होना,
कान भरना, जान बख्खा देना, आवाज़ उठाना, टूट जाना,
काम तमाम करना, आड़े हाथों लेना, आँखों में धूल झोंकना,
चेहरा मुरझाना।

प्रदत्त कार्य-5 कार्य प्रपत्र

स्वतंत्रता सेनानी व संबंधित क्षेत्र

उद्देश्य :

- विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- स्मरण शक्ति का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- यह कार्य विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाने के पश्चात् दिया जाएगा।
- इस कार्य से पूर्व शिक्षक विद्यार्थियों से स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा करेंगे।
- मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- कार्य के लिए विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।



Unit 17

रचनात्मक मूल्यांकन - कारतूस

क्रमांक	नाम	क्षेत्र
1.	लक्ष्मीबाई	झांसी
2.	चन्द्रशेखर आजाद	
3.	भगत सिंह	
4.	तात्या टोपे	
5.	मंगल पांडे	
6.	रामप्रसाद बिस्मिल	
7.	सरदार पटेल	
8.	विपिन चंद्रपाल	
9.	लाला लाजपत राय	
10.	बाल गंगाधर तिलक	

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
पूरे 10 सही उत्तरों के लिए	5
8-9 सही उत्तरों के लिए	4
6-7 सही उत्तरों के लिए	3
4-5 सही उत्तरों के लिए	2
3 व 2 से कम सही उत्तरों के लिए	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ शिक्षक ध्यान दें कि सभी विद्यार्थी इस कार्य में सक्रिय योगदान दें।
- ❖ सभी सही उत्तरों को शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ❖ सबसे पहले सही कार्य पूर्ण करने वाले विद्यार्थी की विशेष सराहना।



कर चले हम फिदा

कैफ़ी आज़मी

प्रदत्त कार्य-1

उद्देश्य :

- ❖ देशभक्ति की भावना
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ संगीत के प्रति रुचि
- ❖ वाचन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ कार्य से परिचित करवाते हुए अध्यापक विद्यार्थियों के समक्ष कुछ मुखड़े लिखेगा - जैसे -
मेरे देश की धरती सोना उगले,
मेरा रंग दे बसंती चोला,
ये मंदिरों का देश है, ये मस्जिदों की सरज़मी
- ❖ 4-5 विद्यार्थियों का एक समूह बनाकर संपूर्ण कक्षा को समूहों में विभक्त किया जाएगा।
- ❖ कार्य करने के लिए विद्यार्थियों को 2-3 दिन का समय दिया जाएगा।
- ❖ प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह को 2-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु कार्य से पूर्व ही विद्यार्थियों को बता दिए जाएंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

गीत का चयन	1
सस्वर गायन (लय, आरोह-अवरोह)	2
सक्रिय योगदान	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1

5



Unit 18

टिप्पणी :

अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता पर प्रत्येक समूह की सराहना की जाए।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ समूह गायन को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत किया जाए।
- ❖ औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2 'फिल्मों का समाज के विकास में योगदान' विषय पर विचार प्रस्तुति

उद्देश्य :

- ❖ आसपास के वातावरण के प्रति जागरुकता
- ❖ चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ अभिव्यक्ति कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा किसी भी फिल्म के माध्यम से विद्यार्थियों व समाज पर उसके प्रभाव के विषय पर बातचीत की जाएगी।
- ❖ विद्यार्थियों के समक्ष विषय की प्रस्तुति की जाए।
- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले से ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को कार्य पूरा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
मौलिकता	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना	1
प्रवाहशीलता व क्रम संबद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता	1

5



टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ प्रत्येक वक्ता को अपनी प्रस्तुति समय सीमा में देनी होगी।
- ♦ प्रस्तुति में उपर्युक्त उदाहरणों का होना आवश्यक है।
- ♦ मुख्य बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखा जाए।
- ♦ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना।

प्रदत्त कार्य-3 परियोजना कार्य

‘देश की जल, थल, वायु सेना व सैनिकों के विषय में जानकारी व चित्र एकत्रित करना’

उद्देश्य :

- ♦ सैनिकों के प्रति गौरव भाव जगाना
- ♦ भावुकता व संवेदनशीलता का विकास
- ♦ जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास
- ♦ तथ्य संकलन की प्रेरणा
- ♦ लेखन क्षमता का विकास
- ♦ ज्ञान का विस्तार
- ♦ शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग

प्रक्रिया :

- ♦ व्यक्तिगत कार्य/सामूहिक कार्य
- ♦ सर्वप्रथम शिक्षक 1962 में चीन द्वारा आक्रमण, 1965 में पाकिस्तान द्वारा, 1971 में बांग्लादेश के आक्रमण तथा 1999 के कारगिल युद्ध का उल्लेख करते हुए देश की सीमाओं की सुरक्षा के संदर्भ में सैनिकों की वीरता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएँगे।
- ♦ यह कार्य कविता आरंभ करने से पूर्व करवाया जाए।
- ♦ छात्रों को पुस्तकालय/इंटरनेट/अध्यापक/माता-पिता से जानकारी एकत्र करने का निर्देश दें साथ ही चित्र इकट्ठे करने की प्रेरणा दें।
- ♦ इस कार्य के लिए छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।



Unit 18

- छात्र परियोजना पुस्तिका में एकत्रित किए हुए चित्र चिपकाएं तथा प्राप्त जानकारी लिखें।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक छात्रों को पूर्व में ही बता दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
अधिकतम जानकारी एकत्रित करना	2
प्रस्तुतीकरण (चित्रों का समावेश, कलात्मकता सौंदर्य)	2
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, शुद्ध वर्तनी	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की समग्रता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना।
- कार्य पूर्ण न कर पाने पर छात्रों को पूरा करने की प्रेरणा।
- किसी भी दृष्टि से कमी रहने पर दूर करने के लिए सुझाव।
- सर्वश्रेष्ठ परियोजना कार्य का चयन व प्रदर्शन

प्रदत्त कार्य-4 एकांकी मंचन (देशभक्ति/देशरक्षा)

उद्देश्य :

- देश प्रेम एवं गौरव भाव जागृत करना
- देश के प्रति दायित्व बोध जागृत करना
- एकांकी विद्या से परिचय
- पटकथा लेखन कौशल तथा संवाद शैली का विकास
- अभिनय क्षमता का विकास
- सहभागिता की प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- सामूहिक कार्य
- शिक्षक किसी देशभक्ति पर आधारित फिल्म, धारावाहिक, उपन्यास का उल्लेख करते हुए कार्य के स्वरूप छात्रों को स्पष्ट करेंगे।



- ❖ कक्षा को कुछ समूहों में बांटा जायगा।
- ❖ एकांकी की तैयारी के लिए विद्यार्थियों को कम से कम एक सप्ताह का समय अवश्य दिया जाए।
- ❖ नियत दिन सभी समूह एकांकी प्रस्तुत करेंगे। शिक्षक व विद्यार्थी सभी प्रस्तुतियों का मूल्यांकन करेंगे।
- ❖ मूल्यांकन के आधार पहले ही बता दिए जाएँ।
- ❖ एकांकी प्रस्तुति हेतु 5-7 मिनट का समय निर्धारित किया जाएगा।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
पटकथा लेखन	1
मौलिकता	1
अभिनय व संवाद शैली	1
सहभागिता व सक्रिय योगदान	1
समग्र प्रस्तुति	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति की सराहना।
- ❖ छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना।
- ❖ अभिनय विशेष की सराहना।
- ❖ कमी रहने पर सुधार हेतु सुझाव।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ एकांकी की विद्यालय मंच पर प्रस्तुति।

प्रदत्त कार्य-5 सैनिक से साक्षात्कार-कार्य प्रपत्र

उद्देश्य :

- ❖ साक्षात्कार विधा से परिचय
- ❖ वाचन एवं लेखन कौशल का विकास
- ❖ देशभक्ति की भावना
- ❖ ज्ञान में अभिवृद्धि



Unit 18

रचनात्मक मूल्यांकन - कर चले हम फ़िदा

प्रक्रिया :

- ♦ अध्यापक साक्षात्कार विधा से विद्यार्थियों को परिचित करवाएंगे।
- ♦ अध्यापक साक्षात्कार हेतु कुछ प्रश्न देगा जैसे -
 - ♦ सैनिक का नाम -
 - ♦ आयु -
 - ♦ रुचि -
 - ♦ परिवार के सदस्य -
 - ♦ सेना में भर्ती होने का निर्णय क्यों लिया -
 - ♦ सीमा पर व्यक्तिगत अनुभव -
 - ♦ सैनिक की विशेष इच्छा -
 - ♦ मेरी अपेक्षाएं -
 - ♦ युद्ध के विषय में विस्तार -
- ♦ साक्षात्कार के लिए विद्यार्थियों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

10 पूर्ण जानकारी के लिए	5
8-9 पूर्ण जानकारी के लिए	4
6-7 पूर्ण जानकारी के लिए	3
4-5 पूर्ण जानकारी के लिए	2
3 और 2 से कम	1

टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ अधिक जानकारी लाने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।
- ♦ कार्य पूर्ण न करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए।
- ♦ श्रेष्ठ जानकारी को सूचनापट्ट पर लगाया जाए।



आत्मत्राण

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रदत्त कार्य-1 प्रार्थना गीत का गायन (पाठ से अलग)

उद्देश्य :

- ❖ भक्ति भाव जागृत करने का प्रयास
- ❖ भावाभिव्यक्ति की क्षमता का विकास
- ❖ गायन/संगीतात्मकता का विकास
- ❖ सहभागी प्रवृत्ति का विकास
- ❖ मंच भय से मुक्ति

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ शिक्षक कोई अन्य प्रार्थना गीत का मुखड़ा कक्षा में गाकर सुनाएंगे।
- ❖ कार्य व मूल्यांकन से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पहले ही दे दी जाए।
- ❖ विद्यार्थियों को कुछ समूहों में बांटकर 3-4 दिन तैयारी हेतु अवश्य दिए जाएं। तैयारी में शिक्षक उनकी सहायता करेंगे।
- ❖ तय दिवस को सभी समूह अपना गीत प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों मूल्यांकन करेंगे।
- ❖ विद्यार्थी वाद्ययंत्रों का उपयोग भी कर सकते हैं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
गीत-चयन का स्तर	1
भावानुकूल लयात्मक प्रस्तुति	1
आत्मविश्वास	1
भाषा की शुद्धता (स्पष्टता)	1
समग्र प्रस्तुति	1
	5



Unit 19

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली प्रस्तुति की सराहना।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर अच्छा करने की प्रेरणा दी जाएगी।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव दिया जाएगा।
- सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को प्रार्थना सभा में गायन का अवसर दिया जाएगा।

प्रदत्त कार्य-2 'जब आप किसी विपदा में होते हैं तो आप' परिचर्चा

उद्देश्य :

- विचार विश्लेषण, लेखन व प्रस्तुति की क्षमता का विकास
- स्वानुभव को शब्दबद्ध करने की क्षमता का विकास
- तार्किकता का विकास
- समस्या समाधान हेतु निर्णय लेने की शक्ति का विकास

प्रक्रिया :

- सर्वप्रथम शिक्षक कुछ ऐसी परिस्थितियों एवं उसमें लिए गए उचित निर्णय पर कक्षा में विस्तार से चर्चा करें।
- यह कार्य सभी छात्र व्यक्तिगत रूप से पहले लिखकर और फिर मौखिक रूप से उसे सुना सकते हैं।
- मूल्यांकन का आधार पहले ही स्पष्ट किया जाए।
- छात्र परिस्थिति एवं उसके समाधान को स्पष्ट करेंगे।
- इस कार्य के लिए उन्हें 10-12 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- इस दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र की गतिविधि पर ध्यान रखें और आवश्यकता अनुसार उनकी सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
वैचारिक स्तर	1
भाषा शुद्धता	1



आत्मविश्वास	1
समग्र प्रभाव	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ अच्छी विचाराभिव्यक्ति की सराहना की जाएगी।
- ❖ सार तत्वों को श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा।
- ❖ कमियों को बताकर सुधार हेतु सुझाव दिए जाएंगे।

प्रदत्त कार्य-3 स्वरचित कविता

विषय : सुख-दुख जीवन के दो पहिये

उद्देश्य :

- ❖ काव्य विधा के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना
- ❖ मौलिक कल्पनाशीलता का विकास
- ❖ कलात्मक व आध्यात्मिक अभिरुचि का विकास
- ❖ रचनात्मक व मानसिक योग्यता का विचार
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि व उनके अनुप्रयोग का अभ्यास
- ❖ वाचन एवं श्रवण कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक कोई तुकबंदी सुनाकर कविता लेखन के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें।

जैसे -

मेरे जीवन की नइया के सुख-दुख खेवइया हैं
कभी कड़वी निवोली तो कभी मीठी सेवइयां है
एक आकर, एक जाकर यूं ही आगे बढ़ाता है
चलने का नाम ही जीवन है ये पाठ पढ़ाता है।

कोई अन्य कविता भी सुना सकते हैं।



Unit 19

रचनात्मक मूल्यांकन - आत्मचरित्र

- ❖ जिस विषय पर कविता लेखन करना है उसे अच्छी तरह स्पष्ट किया जाए।
- ❖ चार-पांच विद्यार्थियों का एक समूह कविता लेखन करेगा और उनका एक प्रतिनिधि उसका वाचन करेगा।
- ❖ शिक्षक कुछ शब्द श्यामपट्ट पर लिख सकते हैं। इसमें विद्यार्थियों का सहयोग भी लिया जा सकता है।

गाड़ी, पटरी, साइकिल, हैंडल, रात, पीड़ा,
उजाला, खेल, फेल, पास, विपत्ति, कटु, पैडल, बाधा,
दिन, गति, अँधेरा, आनंद, रेल, डिब्बे, मस्ती, दुख,
कष्ट, सुख, खुशी, चलना, आराम, मरण, रुकना, प्रेम,
लक्ष्य, द्वेष सत्य, जीवन

नोट - अन्य शब्द भी दिए जा सकते हैं।

- ❖ मूल्यांकन का आधार पहले ही स्पष्ट कर दिए जाएं।
- ❖ विद्यार्थियों को लेखन हेतु 10-15 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
मौलिकता/कल्पनाशीलता	1
शब्द चयन	1
उच्चारण की शुद्धता	1
प्रस्तुतीकरण	1

5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ प्रभावशाली रचना की सराहना एवं विद्यालय के मंच पर प्रस्तुति।
- ❖ औसत प्रस्तुतियों को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा/प्रोत्साहन
- ❖ अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु सुझाव व अतिरिक्त समय दिया जाए।



प्रदत्त कार्य-4 रवींद्रनाथ ठाकुर की किसी अन्य रचना का गायन/वाचन

उद्देश्य :

- ❖ काव्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना
- ❖ संगीतात्मक अभिरुचि का विकास
- ❖ रवींद्रनाथ की अन्य रचनाओं का ज्ञान
- ❖ सहभागिता का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत/सामूहिक कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक रवींद्रनाथ की कुछ रचनाओं के बारे में कक्षा में चर्चा करें
- ❖ इन रचनाओं को पढ़ने के लिए मार्गदर्शन करें।
- ❖ कार्य से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी पहले ही दे दी जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार भी पहले ही समझा दिए जाएं।
- ❖ सामूहिक कार्य हेतु कक्षा को कुछ समूहों में बांट दिया जाए।
- ❖ तैयारी हेतु विद्यार्थियों को 5-7 दिन का समय अवश्य दिया जाए।
- ❖ इस दौरान शिक्षक छात्रों की सहायता करें ताकि वे रचनाओं का चयन एवं गायन का अभ्यास कर सकें।
- ❖ पूर्व निश्चित दिन प्रत्येक समूह गायन करेंगे।
- ❖ वाद्ययंत्रों का उपयोग भी किया जा सकता है।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

रचना का स्तर	1
स्वर (लय, आरोह-अवरोह, गेयता)	1
उच्चारण की शुद्धता	1
भावाभिव्यक्ति	1
आत्मविश्वास/समग्र प्रस्तुति	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।



Unit 19

प्रतिपुष्टि :

- ❖ मधुर व प्रभावशाली वाचन/गायन के लिए सराहना की जाए।
- ❖ औसत प्रस्तुतियों को प्रोत्साहन दिया जाए। अच्छी प्रस्तुति हेतु सुझाव दिए जाएं।
- ❖ सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति को विद्यालय के मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 शांति निकेतन के बारे में जानकारी एकत्रित कर प्रस्तुत करना (परियोजना कार्य)

उद्देश्य :

- ❖ जिज्ञासु प्रवृत्ति व स्वाध्याय का विकास
- ❖ देश के महत्वपूर्ण स्थानों के प्रति गौरव भाव जगाना
- ❖ बौद्धिक विकास
- ❖ लेखन क्षमता का विकास
- ❖ ज्ञान का विस्तार
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि व अनुप्रयोग

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक कुछ प्राचीन व महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्रों के विषय में बताते हुए कार्य से छात्रों को परिचित करवाएँ जैसे - नालंदा विश्वविद्यालय, तक्षशिला इत्यादि....।
- ❖ यह कार्य कविता पढ़ाने के पश्चात् करवाया जाए।
- ❖ छात्रों को पुस्तकालय अथवा इंटरनेट से जानकारी तथा चित्र एकत्रित करने के लिए कहा जाए। जानकारी एकत्रित करने के संदर्भ में छात्रों का कुछ प्रश्नों के माध्यम से मार्गदर्शन करें - जैसे
 - ❖ शांति निकेतन की स्थापना किसने की?
 - ❖ कब की?
 - ❖ शांति निकेतन कहाँ स्थित है?
 - ❖ वर्तमान काल में उसका स्वरूप व महत्व.....?
 - ❖ यहां से शिक्षा प्राप्त कुछ महान व्यक्तियों का नाम.....इत्यादि.....।
- ❖ छात्र परियोजना पुस्तिका में एकत्रित चित्रों को चिपकाएँ तथा जानकारी लिखें
- ❖ मूल्यांकन के आधार बिंदु तथा अंक विभाजन पूर्व में ही छात्रों को बता दिए जाएं।



- इस कार्य के लिए छात्रों को एक सप्ताह का समय दिया जाए।

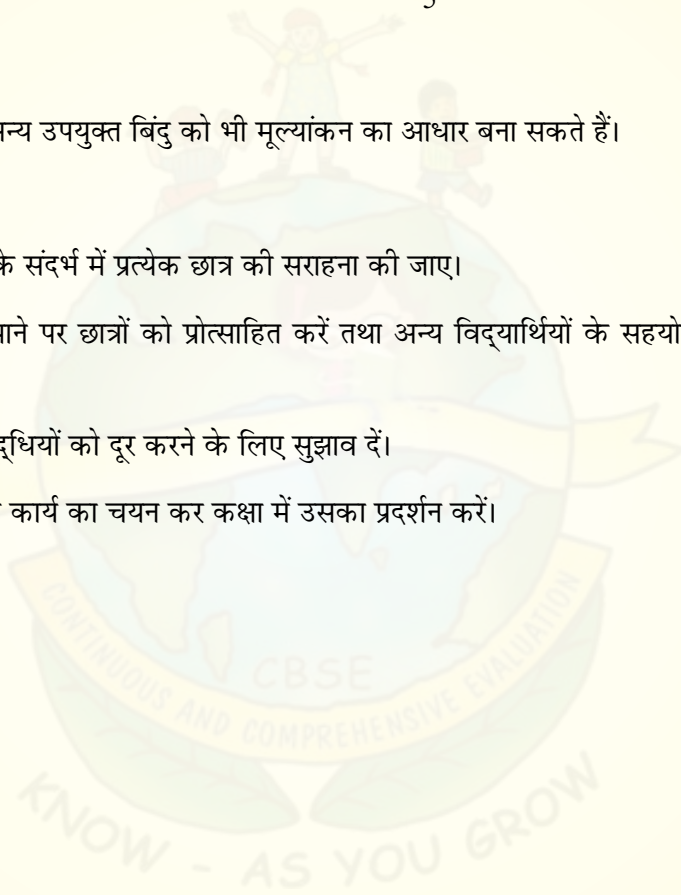
मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
अधिकतम जानकारी एकत्रित करने पर	2
प्रस्तुतीकरण (कलात्मकता, चित्र, सुंदरता)	2
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, शुद्ध वर्तनी	1
	5

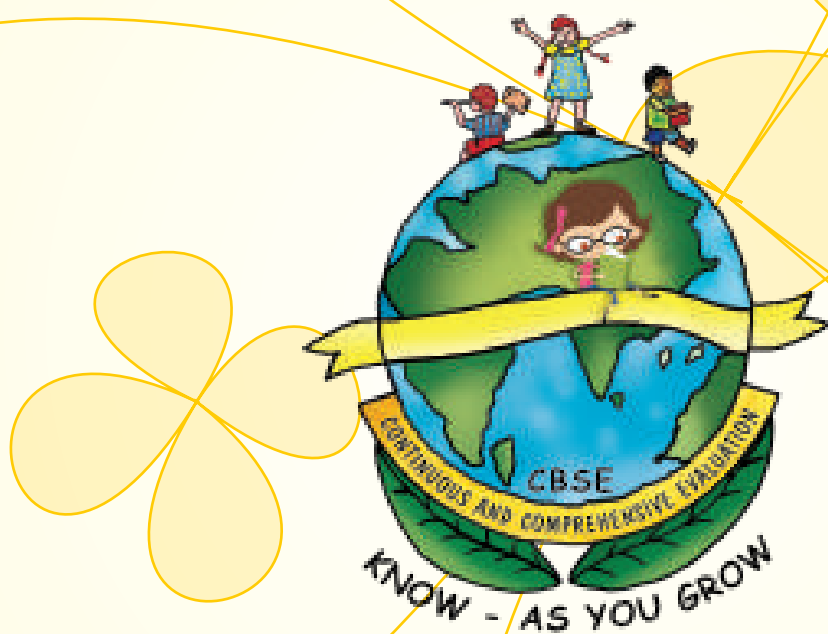
टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की समग्रता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- कार्य पूर्ण न कर पाने पर छात्रों को प्रोत्साहित करें तथा अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से पूरा करने के लिए प्रेरित करें।
- लेखन संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए सुझाव दें।
- सर्वश्रेष्ठ परियोजना कार्य का चयन कर कक्षा में उसका प्रदर्शन करें।





टोपी शुक्ला

राही मासूम रजा

प्रदत्त कार्य-1 विचाराभिव्यक्ति (बाल-मन सांप्रदायिक भेदभाव से दूर) उदाहरण देकर पुष्टि अथवा मित्रता जाति-पाँति नहीं देखती

उद्देश्य :

- आपसी मेलजोल को बढ़ावा देना
- विचार विश्लेषण की क्षमता का विकास
- वाचन एवं श्रवणकौशल का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि एवं अनुप्रयोग
- उदाहरण द्वारा प्रेरणा प्राप्त होना

प्रक्रिया :

- सर्वप्रथम शिक्षक किसी प्रसंग को कक्षा में रोचक ढंग से प्रस्तुत कर इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करें।
- यह कार्य व्यक्तिगत/सामूहिक दोनों प्रकार से कराया जा सकता है
- विचार करने एवं मुख्य बिंदुओं को लिखने हेतु विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- प्रत्येक विद्यार्थी या प्रत्येक समूह से एक वक्ता उदाहरण देकर कथन की पुष्टि करेगा।
- शिक्षक एवं अन्य विद्यार्थी प्रत्येक वक्ता की प्रस्तुति का मूल्यांकन करेंगे।
- प्रत्येक वक्ता को 2-3 मिनट का समय दिया जाए।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
शब्द चयन व सटीक वाक्य	1
तर्क द्वारा / उदाहरणों द्वारा कथन की पुष्टि	1
आत्मविश्वास	1
प्रस्तुति (उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता)	1



Unit 20

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- प्रभावशाली विचाराभिव्यक्ति एवं पुष्टि के लिए दिए गए सटीक उदाहरण की सराहना की जाएगी।
- औसत प्रस्तुति को प्रोत्साहन देकर कार्य अच्छे ढंग से कराया जाएगा।
- अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु अतिरिक्त समय दिया जाएगा।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव दिए जाएंगे।

प्रदत्त कार्य-2 अपने दादा/दादी या नाना/नानी के साथ बिताए क्षणों की मधुर यादों का (संस्मरण) लेखन व प्रस्तुतीकरण

उद्देश्य :

- संस्मरण लेखन विधा से परिचित कराना
- बुर्जुगों के साथ का महत्व समझाना
- स्व-अनुभव को शब्दबद्ध कर अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास
- शब्द-भंडार में वृद्धि व अनुपयोग
- कल्पनाशीलता का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक अपने अनुभव व यादों (घटना) को रोचकता से कक्षा में प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को इस कार्य के लिए अभिप्रेरित करें।
- कार्य व मूल्यांकन के आधार बिंदुओं को पहले ही स्पष्ट किया जाएगा।
- विद्यार्थियों को विचार करने एवं मुख्य बिंदुओं को लिखने हेतु कम से कम 10-12 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- शिक्षक इस दौरान यह ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी रुचिपूर्वक कार्य करें।
- प्रत्येक विद्यार्थी अपनी बात 2-3 मिनट में प्रस्तुत करेंगे।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु (भावानुकूल व विषयानुकूल)

1

शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना, क्रमबद्धता

1



उच्चारण की शुद्धता, प्रवाहशीलता	1
आत्मविश्वास	1
प्रभावशाली/रोचक प्रसंग	1

टिप्पणी :

- ♦ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ♦ प्रभावशाली/रोचक प्रस्तुति की सराहना की जाएगी।
- ♦ प्रस्तुति में कमी पाए जाने पर सुधार हेतु सुझाए दिए जाएँ।
- ♦ उच्चारण व वाक्य विन्यास संबंधी त्रुटियों के सुधार हेतु प्रयास किया जाए।

प्रदत्त कार्य-3 'मेरा मित्र..... (नाम) इसलिए सबसे अच्छा है क्योंकि.....'

विचाराभिव्यक्ति

उद्देश्य :

- ♦ विचारमंथन एवं चिंतन की क्षमता का विकास
- ♦ विचाराभिव्यक्ति की क्षमता का विकास
- ♦ विश्लेषण क्षमता का विकास
- ♦ अच्छे मित्र की पहचान को स्पष्ट करना

प्रक्रिया :

- ♦ व्यक्तिगत कार्य
- ♦ शिक्षक सर्वप्रथम एक अच्छे मित्र की विशेषताओं के विषय में कुछ बातें विद्यार्थियों को बताएंगे।
- ♦ तत्पश्चात् कार्य व मूल्यांकन के सम्पूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट करेंगे।
- ♦ अपने सबसे अच्छे मित्र की कम से कम 5 विशेषताओं को विद्यार्थी संक्षेप में बताएंगे।
- ♦ विचार करने हेतु उन्हें कम से कम 10 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- ♦ प्रत्येक विद्यार्थी को अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु कम से कम 1-3 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ♦ शिक्षक इस दौरान यह ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थी प्रत्येक के विचार ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं या नहीं।



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु	1
मौलिकता (5 विशेषताओं के संदर्भ में)	1
अभिव्यक्ति	1
भाव	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ विशेषताएं स्पष्ट न कर पाने वाले विद्यार्थियों से चर्चा कर उनकी सहायता की जाएगी।
- ❖ विशेषताओं को श्यामपट्ट पर संक्षेप में लिखा जाएगा और कार्य की समाप्ति पर शिक्षक यह बताएंगे कि ये सब एक अच्छे मित्र की विशिष्ट पहचान हैं। इन बातों का ध्यान रखा जाए, जब हम किसी को अपना मित्र बनाते हैं।

प्रदत्त कार्य-4 'स्वानुभव प्रस्तुति'

अच्छा परीक्षा परिणाम न आने पर परिवार की प्रतिक्रिया

उद्देश्य :

- ❖ विश्लेषण, चिंतन-मनन की क्षमता का विकास
- ❖ जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास
- ❖ लेखन, वाचन, श्रवण कौशल का विकास
- ❖ किसी कार्य तथा उसके परिणाम के प्रति जागरुकता

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक व्यक्तिगत सुझाव के आधार पर विचार अभिव्यक्त करें तथा कार्य से छात्रों को परिचित कराएं।
- ❖ यह कार्य पाठ आरंभ करने से पूर्व करवाया जा सकता है
- ❖ विषय पर विचार करने तथा विचार बिंदु लिखने के लिए छात्रों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए।



- कार्य के दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र के क्रियाकलापों पर ध्यान दें तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें।
- विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक छात्र को 2 मिनट का समय दिया जाए।
- छात्र तथा शिक्षक मिलकर कार्य का मूल्यांकन करें।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
विषय वस्तु व मौलिकता	1
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
क्रमबद्धता, सुसंबद्धता	1
आत्मविश्वास	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना।
- कार्य में कमी रह जाने पर पूर्णता हेतु प्रेरणा।
- उच्चारणगत अशुद्धियों का सामान्य रूप से संशोधन।
- सर्वश्रेष्ठ वक्ता व अभिव्यक्ति का चयन।

प्रदत्त कार्य-5 स्वानुभव अभिव्यक्ति

जब आप अकेले होते हैं तो

उद्देश्य :

- कल्पनाशीलता व रचनात्मक क्षमता का विकास
- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- लेखन, वाचन, श्रवण कौशल का विकास
- आत्मविश्वास



Unit 20

शुक्ला दोपी रचनात्मक मूल्यांकन -

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम शिक्षक स्वानुभव के आधार पर विषय को समझाए तथा कार्य से छात्रों को परिचित करवाए।
- ❖ शिक्षक छात्र को बताए कि अकेले होने पर क्या-क्या मानसिक प्रभाव पड़ सकते हैं तथा अकेलेपन को दूर करने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है।
- ❖ यह कार्य पाठ समाप्त होने पर करवाया जा सकता है।
- ❖ छात्रों को विचार करने तथा मुख्य बिंदु लिखने हेतु 10-15 मिनट का समय दिया जाए। इस समय अध्यापक छात्रों का निरीक्षण तथा मार्गदर्शन करें।
- ❖ विचाराभिव्यक्ति हेतु प्रत्येक छात्र को दो मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ प्रत्येक छात्र की अभिव्यक्ति को अन्य छात्र ध्यानपूर्वक सुनें तथा शिक्षक व छात्र मिलकर कार्य करें।
- ❖ मुख्य बिंदुओं को साथ-साथ श्यामपट्ट पर भी लिखा जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

विषय वस्तु	1
मौलिकता	1
शब्द चयन, सटीक वाक्य रचना, क्रमबद्धता	1
उच्चारण की शुद्धता व स्वर की स्पष्टता	1
आत्मविश्वास	1

5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य की पूर्णता के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य में कमी रहने पर छात्रों को प्रेरित कर सुधार करवाया जाए।
- ❖ उच्चारण संबंधी त्रुटियों की ओर ध्यान केन्द्रित कर सामान्य रूप से सुझाव दिया जाए।
- ❖ छात्रों की सहायता से सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति का चयन कर लिपिबद्ध करवाएं तथा सूचनापट्ट पर प्रदर्शित करें।



व्याकरण

शब्द

प्रदत्त कार्य-शब्दों की पहचान व निर्माण

वर्ग पहेली

उद्देश्य :

- ❖ शब्दों की पहचान करवाना
- ❖ शब्द निर्माण करवाना
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि
- ❖ समस्या-समाधान की प्रवृत्ति का विकास
- ❖ चिंतन-मनन, जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ निर्देश - वर्ग में दिए गए वर्णों के सार्थक मेल द्वारा शब्द निर्माण करें -

झ	अ	ब	प्र	ब	ल	आ	म
र	व	वि	हा	र	प	तं	ग
ने	ता	गि	र	गि	ट	क	र
त	र	बू	ज	द्	क	हा	नी
का	र	तू	स	ध	ना	ट	क
दी	आ	बा	दी	लो	क	क	था
प	रो	प	का	र	स	म	म
क	प	त	ता	ल	म	धु	र



Unit 21

व्याकरण - रचनात्मक मूल्यांकन

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ सर्वप्रथम अध्यापक कार्य के विषय में विस्तार से छात्रों को समझाएँ।
- ❖ उपरोक्त वर्ग पहली को श्याम-पट्ट पर ध्यानपूर्वक लिखें। पहले अध्यापक स्वयं एक-दो शब्दों का निर्माण करे इसके, पश्चात् छात्रों को शब्द निर्माण का निर्देश दें। छात्र यह कार्य एक अलग पृष्ठ पर करें।
- ❖ छात्रों को बताया जाए कि उपरोक्त वर्ग में दिए वर्णों के माध्यम से 40 से भी ज्यादा शब्दों का निर्माण हो सकता है।
- ❖ प्रस्तुत कार्य को करने के लिए छात्रों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए तथा निर्धारित समय में कार्य करने का निर्देश दिया जाए।
- ❖ कार्य के दौरान शिक्षक प्रत्येक छात्र की गतिविधियों पर दृष्टि रखें तथा ध्यान रखें कि प्रत्येक छात्र रुचिपूर्वक कार्य में हिस्सा ले रहा है।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

40 शब्दों का निर्माण करने पर	5
32 शब्दों का निर्माण करने पर	4
24 शब्दों का निर्माण करने पर	3
16 शब्दों का निर्माण करने पर	2
08 शब्दों का निर्माण करने पर	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ कार्य को रुचिपूर्वक समाप्त करने की दृष्टि से प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य-प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् छात्रों की सहायता से निर्मित शब्दों की सूची श्यामपट्ट पर लिखें।
- ❖ शिक्षक छात्रों को प्रेरित करें कि वे स्वयं भी इसी प्रकार की वर्ग पहली का अभ्यास कर सकते हैं।

शिक्षकों की सहायता हेतु शब्दों की सूची -

झरने, तरबूज, नेता, कारतूस, दीपक, परोपकर, मधु, बिहार, गिरगिट, आरोप, परोपकार, अब, कथा, कहानी, लोककथा, कसम, पत्ता, प्रबल, नाटक, मर, हार, हाट, लोक, गिद्ध, तालीम, प्रहार, मधु, नाक, पका, रव, बल, मगर, आम, पतंग, पटकना, रस, आबादी, थाम, ताली, तंग, सदी, आतंक



कार्य-प्रपत्र : पदबंध

उद्देश्य :

- ❖ पदबंध के भेदों की पहचान
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि व उनका वाक्य रचना में प्रयोग
- ❖ विचार मंथन
- ❖ लेखन कौशल का विकास

प्रक्रिया :

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ पद व पदबंध और उनके भेद समझा देने के पश्चात् ही यह गतिविधि कराई जाएगी।
- ❖ शिक्षक कार्य से संबंधित प्रपत्र के प्रारूप को श्यामपट्ट पर लिखेंगे जिसे विद्यार्थी पृष्ठ पर उतार कर उत्तर लिखेंगे।

प्रारूप

- ❖ स्वयं को संज्ञा पदबंध में प्रयोग करते हुए दो वाक्यों की रचना करें।
 - 1
 - 2
- ❖ स्वयं को सर्वनाम पदबंध में प्रयोग करते हुए दो वाक्यों की रचना करें।
 - 1
 - 2
- ❖ स्वयं के लिए विशेषण पदबंध में प्रयोग करते हुए दो वाक्यों की रचना करें।
 - 1
 - 2
- ❖ अपने द्वारा किए गए काम को क्रिया पदबंध में प्रयोग करते हुए दो वाक्यों की रचना करें।
 - 1
 - 2
- ❖ अपने द्वारा किए गए काम की विशेषता को क्रिया विशेषण पदबंध में प्रयोग करते हुए दो वाक्यों की रचना करें।
 - 1
 - 2



Unit 21

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण

- मूल्यांकन का आधार पहले ही स्पष्ट कर दिया जाए।
- कार्य के लिए विद्यार्थियों को कम से कम 20 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- कार्य के दौरान शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी का निरीक्षण करें कि वे रुचिपूर्वक कार्य को निर्धारित समय में पूरा करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
9-10 वाक्य सही होने पर	5
7-8 वाक्य सही होने पर	4
5-6 वाक्य सही होने पर	3
3-4 वाक्य सही होने पर	2
1-2 वाक्य सही होने पर	1
	5

टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों की सराहना।
- अच्छे वाक्य को शिक्षक कक्षा में पढ़कर सुनाएं।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव दें।

संधि

प्रदत्त कार्य : कार्य प्रपत्र-संधि व संधिविच्छेद पर आधारित

उद्देश्य :

- व्याकरणिक इकाइयों का ज्ञान
- शब्द भंडार में वृद्धि
- संधि व संधि विच्छेद का ज्ञान
- पूर्वज्ञान की परख तथा अनुप्रयोग

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य



- ❖ यह कार्य संधि पढ़ाने के पश्चात् करवाया जाए।
- ❖ कुछ उदाहरणों द्वारा शिक्षक विषय को समझाकर कार्य के स्वरूप से छात्रों को परिचित करवाएं।
- ❖ कार्य-प्रपत्र पूर्ण करने के लिए छात्रों को 10-15 मिनट का समय दिया जाए।
- ❖ मूल्यांकन के आधार तथा अंक छात्रों को पूर्व में ही बता दिए जाएं।

कार्य-प्रपत्र

निर्देश: नीचे दिए हुए वर्ग में से शब्द चुनकर संधि/संधि विच्छेद कीजिए -

भाव+अर्थ, नदी+ईश, राकेश, लोक+उक्ति, सर्व+उत्तम, प्रत्युत्तर, गंगोर्मि, अत्यंत, अभि+इष्ट, अति+अंत, गणेश, अभ्यागत, रेखा+अंश, एक+एक, पितृ+आज्ञा, लघु+ऊर्मि, गजानन, स्वच्छ, अन्वेषण, तथैव

संधि	संधि-विच्छेद
1.	+.....
2.	+.....
3.	+.....
4.	+.....
5.	+.....
6.	+.....
7.	+.....
8.	+.....
9.	+.....
10.	+.....

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

10 संधि व संधि विच्छेद सही करने पर	5
8-0 संधि व संधि विच्छेद सही करने पर	4
6-7 संधि व संधि विच्छेद सही करने पर	3
4-5 संधि व संधि विच्छेद सही करने पर	2
2-3 संधि व संधि विच्छेद सही करने पर	1



टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- रुचिपूर्वक कार्य करने के संदर्भ में प्रत्येक छात्र की सराहना की जाए।
- सभी उत्तर सही देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- कार्य-प्रपत्र एकत्रित करने के पश्चात् सभी सही उत्तर श्याम-पट्ट पर लिखवाएं।

प्रदत्त कार्य-कार्य-प्रपत्र - लोकोक्तियों की पहचान व अर्थ

उद्देश्य :

- लोकोक्तियों की पहचान
- शब्दभंडार में वृद्धि
- चिंतन-मनन प्रवृत्ति का विकास
- पूर्व ज्ञान की परख व अनुप्रयोग
- स्मरण शक्ति का विकास

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- सर्वप्रथम शिक्षक कुछ लोकोक्तियाँ छात्रों से पूछें तथा उन्हें श्याम पट्ट पर लिखें
- कार्य से छात्रों को परिचित करवाते हुए कार्य-प्रपत्र के द्वारा या श्याम-पट्ट पर लिखकर यह कार्य करवाया जाए।
- इस कार्य के लिए छात्रों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही श्याम-पट्ट पर लिखें।

निर्देश: नीचे दिए चित्रों में से पहले चित्र में से लोकोक्तियाँ चुनकर दूसरे चित्र में से उनके अर्थ ढूँढ़ें तथा लिखें -

लोकोक्तियाँ

1. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत
2. आम के आम गुठलियों के दाम
3. एक थैली के चट्टे-बट्टे
4. एक हाथ से ताली नहीं बजती
5. काला अक्षर भैंस बराबर
6. ऊँट के मुँह में जीरा
7. का बरखा जब कृषि सुखानी
8. मन चंगा तो कठौती में गंगा
9. एक अनार सौ बीमार
10. छठी का दूध याद करना



अर्थ

1. बुरा हाल होना 2. जरूरत से बहुत कम
3. किसी कार्य में दुगुना लाभ 4. वस्तु थोड़ी चाहने वाले अधिक
5. मन शुद्ध हो तो घर बैठे ही तीर्थ है 6. निरक्षर 7. सब एक समान
8. किसी भी कार्य के लिए दो पक्षों का होना अनिवार्य
9. धोखा एक बार ही खाया जा सकता है
10. समय निकल जाने पर प्रयत्न करना व्यर्थ है।
11. समय बीत जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं।

लोकोक्तियां

- ❖ अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत,
- ❖ आम के आम गुठलियों के दाम
- ❖ एक थैली के चट्टे-बट्टे
- ❖ एक हाथ से ताली नहीं बजती
- ❖ काला अक्षर भैंस बराबर
- ❖ काठ की हांडी बार-बार नही चढ़ती
- ❖ ऊंट के मुंह में जीरा
- ❖ का बरखा जब कृषि सुखानी
- ❖ मन चंगा तो कठौती में गंगा
- ❖ एक अनार सौ बीमार
- ❖ छठी का दूध याद करना

अर्थ

- ❖ बुरा हाल होना,
- ❖ जरूरत से बहुत कम
- ❖ किसी कार्य में दुगुना लाभ
- ❖ वस्तु थोड़ी, चाहने वाले अधिक
- ❖ मन शुद्ध हो तो घर बैठे ही तीर्थ है
- ❖ निरक्षर के लिए सब एक समान
- ❖ किसी भी कार्य के लिए दो पक्षों का होना अनिवार्य है



Unit 21

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण

- ❖ धोखा एक बार ही खाया जा सकता है।
- ❖ समय निकल जाने पर प्रयत्न करना व्यर्थ है
- ❖ समय बीत जाने पर पछताने से कोई लाभ नहीं

लोकोक्तियां अर्थ

- छठी का दूध याद आना बुरा हाल होना
-
-
-
-
-
-
-
-
-
-

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

10 लोकोक्तियां व अर्थ सही बताने पर	5
8-9 लोकोक्तियां व अर्थ सही बताने पर	4
6-7 लोकोक्तियां व अर्थ सही बताने पर	3
4-5 लोकोक्तियां व अर्थ सही बताने पर	2
2-3 लोकोक्तियां व अर्थ सही बताने पर	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ रुचिपूर्वक कार्य करने पर सभी छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के बाद विद्यार्थियों की सहायता से लोकोक्तियाँ तथा उनके अर्थ की सूची श्यामपट्ट पर लिखें।



समास

प्रदत्त कार्य-कार्य-प्रपत्र - समास की पहचान

उद्देश्य :

- व्याकरणिक इकाईयों का ज्ञान
- शब्द भंडार में वृद्धि
- समास व उनके भेदों की पहचान व ज्ञान
- जिज्ञासु प्रवृत्ति का विकास
- पूर्वज्ञान की परख व अनुप्रयोग

प्रक्रिया :

- व्यक्तिगत कार्य
- कुछ उदाहरणों के द्वारा शिक्षक कार्य के स्वरूप से परिचित कराएं
- कार्य-प्रपत्र पूर्ण करने के लिए छात्रों को 15-20 मिनट का समय दिया जाए।
- मूल्यांकन के आधार तथा अंक पूर्व में ही छात्रों को बताएं जाएं।

निर्देश :

दिए गए चित्र में से समस्त-पद, समास-विग्रह व भेद छांट कर तालिका बद्ध करें तथा समस्त पद होने पर समास-विग्रह तथा समास-विग्रह होने पर समस्त पद भी बनाएं -

पथ से भ्रष्ट चरण कमल क्रोध रूपी		जीवन संग्राम	देहरूपी लता	
		गृह में प्रवेश	तुलसीकृत	क्षमा का दान
		तत्पुरुष समास	कमल के समान नयन	
पके खरबूजे	गंगाजल	आप पर बीती	धन के समान श्याम	
प्रजाति कर्मधारय समास	रोगमुक्त	सभ्य समाज	धनहीन	
		नीति में निपुण		
			जन्मांध	
		नीला है जो कमल	बंजरभूमि	



Unit 21

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण

	समास	समास विग्रह	भेद
1.	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट	तत्पुरुष समास
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
8.			
9.			
10.			
11.			
12.			
13.			
14.			
15.			
16.			
17.			
18.			
19.			
20.			
21.			



मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक विभाजन
17-20 समास विग्रह, समस्त पद व भेद सही होने पर	5
13-16 समास विग्रह, समस्त पद व भेद सही होने पर	4
9-12 समास विग्रह, समस्त पद व भेद सही होने पर	3
5-8 समास विग्रह, समस्त पद व भेद सही होने पर	2
1-4 समास विग्रह, समस्त पद व भेद सही होने पर	1

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ रुचिपूर्वक कार्य करने पर सभी छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ कार्य प्रपत्र एकत्रित करने के बाद विद्यार्थियों की सहायता से सही समास लिखें।
- ❖ कार्य पूर्ण न कर पाने वाले छात्रों को उसे पूर्ण करने के लिए प्रेरित करें।

पद परिचय

प्रदत्त कार्य - विभिन्न पदों की पहचान (कार्य प्रपत्र)

उद्देश्य :

- ❖ व्याकरणिक इकाइयों की पहचान
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि
- ❖ पूर्वज्ञान की परख एवं प्रयोग

प्रक्रिया :

कार्यप्रपत्र

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पद का चित्रों में से सही विकल्प छांटकर लिखें -

- ❖ सुधा सदा हंसती रहती है।
- ❖ कछुआ धीरे-धीरे चल रहा था।
- ❖ गंगा पवित्र नदी है।
- ❖ हम मुंबई जा रहे हैं।
- ❖ कल हमने ताजमहल देखा।



Unit 21

रचनात्मक मूल्यांकन - व्याकरण



पद	परिचय
1. सुधा	
2. धीरे-धीरे	
3. पवित्र	
4. जा रहे हैं	
5. हमने	

व्यक्तिगत कार्य

- ❖ शिक्षक इस कार्यप्रपत्र को पद परिचय समझने के पश्चात् ही दें।
- ❖ इस कार्यप्रपत्र को पूर्ण करने के लिए विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय ही दिया जाए।
- ❖ आवश्यकतानुसार शिक्षक विद्यार्थियों को बीच-बीच में सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

- 5 सही उत्तर देने पर
- 4 सही उत्तर देने पर
- 3 सही उत्तर देने पर
- 2 सही उत्तर देने पर
- 1 सही उत्तर देने पर

अंक विभाजन

- 5
- 4
- 3
- 2
- 1



टिप्पणी :

- अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- सभी सही उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- अधूरा काम करने वालों को थोड़ा और समय दें
- सभी सही उत्तरों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।

मिश्र व संयुक्त वाक्य

प्रदत्त कार्य-वाक्य पढ़कर मिश्र वाक्यों का संयुक्त वाक्य में और संयुक्त वाक्यों का मिश्र वाक्यों में रूपांतरण कर तालिका भरे।

उद्देश्य :

- वाक्य के स्वरूप से परिचय
- तालिकाबद्ध करने की प्रवृत्ति का विकास
- शब्द भंडार में वृद्धि
- पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग

प्रक्रिया :

कार्यप्रपत्र

क्र.स.	वाक्य
1.	सूर्य छिपा और अँधेरा छा गया।
2.	अब असफल हो गए, तो शोक करना व्यर्थ है।
3.	उसके पास जो कुछ था, वह खो गया।
4.	लड़का बीमार था इसलिए वह डॉक्टर के पास गया।
5.	मेरे पास कामायनी है, जिसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है।
6.	शशि परिश्रमी है और वह कक्षा में प्रथम आती है।
7.	वह व्यक्ति बेईमान है और जल्द ही पकड़ा जाएगा।
8.	जैसे ही गार्ड ने हरी झंडी दिखाई वैसे ही ट्रेन चल पड़ी।
9.	संकटों ने उसे हर तरह से घेरा, किंतु वह निराश नहीं हुआ।
10.	जो विद्यार्थी साहसी होते हैं, वे उन्नति करते हैं।



Unit 21

व्याकरण - रचनात्मक मूल्यांकन

क्र.स.	वाक्य

क्र.स.	वाक्य

- ❖ व्यक्तिगत कार्य
- ❖ शिक्षक इस कार्यप्रपत्र को पद परिचय समझने के पश्चात् ही दें।
- ❖ इस कार्यप्रपत्र को पूर्ण करने के लिए विद्यार्थियों को 10-15 मिनट का समय ही दिया जाए।
- ❖ आवश्यकतानुसार शिक्षक विद्यार्थियों को बीच-बीच में सहायता करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

9-10 सही उत्तर देने पर	5
7-8 सही उत्तर देने पर	4
5-6 सही उत्तर देने पर	3
3-4 सही उत्तर देने पर	2
1-2 सही उत्तर देने पर	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सभी सही उत्तर देने वाले छात्रों की सराहना की जाए।
- ❖ अधूरा काम करने वालों को थोड़ा और समय दें
- ❖ सभी सही उत्तरों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें।



वाक्य अशुद्धिशोधन

प्रदत्त कार्य-1 श्रुतलेख के रूप में अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखो

उद्देश्य :

- शुद्ध वाक्य रचना का अभ्यास
- वर्तनी संबंधी त्रुटियों पर ध्यान आकर्षित करना
- श्रवण एवं लेखन कौशल का विकास (श्रुतलेख का अभ्यास)
- एकाग्रता का विकास
- तीव्र विचार मंथन एवं चिंतन

प्रक्रिया :

- शिक्षक कुछ रोचक अशुद्ध वाक्यों का संकलन करें और उन्हें बहुत आराम से एक-एक कर विद्यार्थियों को सुनाएं।
- विद्यार्थी एक पृष्ठ पर उन अशुद्धियों को पहचान कर सही वाक्य लिखेंगे।
- शिक्षक पहले कुछ वाक्यों को उदाहरण स्वरूप अवश्य बता दें।

जैसे - रोज सुबह एक गिलास भरा दूध पीना चाहिए और रोज सभी बच्चों को काटकर एक सेब खाना चाहिए। रोटी पर असली गाय का घी लगाकर खाना चाहिए। अरे! यह क्या? वर्षा में पानी बह रहा है। मैंने तो अभी बाहर जाना है। आपने भी जाना होगा। न जाने किसकी दृष्टि लग गई। - इत्यादि

शुद्ध वाक्य - रोज सुबह एक गिलास दूध पीना चाहिए और रोज सभी बच्चों को एक सेब काटकर देना चाहिए। रोटी पर गाय का असली घी लगाकर खाना चाहिए। अरे! यह क्या? वर्षा हो रही है। मुझे अभी बाहर जाना है। आपको भी जाना होगा। न जाने किसकी नज़र लग गई।

- इस प्रकार 10 वाक्य तैयार कर श्रुतलेख करवाएँ।
- ध्यान रखें कि सभी विद्यार्थियों को उत्तर लिखने का उचित समय मिल सके।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

9-10 सही वाक्य व वर्तनी सही होने पर	5
7-8 सही वाक्य व वर्तनी सही होने पर	4
5-6 सही वाक्य व वर्तनी सही होने पर	3
3-4 सही वाक्य व वर्तनी सही होने पर	2
1-2 सही वाक्य व वर्तनी सही होने पर	1
	5



Unit 21

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सम्पूर्ण कार्य सही करने वालों की सराहना की जाए।
- ❖ जो कार्य पूरा नहीं कर पाए, उन्हें अतिरिक्त समय दिया जाए।
- ❖ कोई वाक्य नहीं लिख पाए तो पुनः बोलकर लिखवाया जाए ताकि वह कार्य पूरा कर सके।
- ❖ मूल्यांकन के लिए प्रपत्र लेने के पश्चात् सही उत्तर अवश्य बता दिए जाएँ।

संधि

प्रदत्त कार्य-कार्य-प्रपत्र (मिलान करें)

उद्देश्य :

- ❖ संधि का अभ्यास
- ❖ शब्द भंडार में वृद्धि एवं शब्द निर्माण का ज्ञान
- ❖ पूर्व ज्ञान का अनुप्रयोग
- ❖ विचार मंथन एवं चिंतन

प्रक्रिया :

- ❖ स्वर संधि के भेदों को समझाने के पश्चात् ही यह कार्य कराया जाए।
- ❖ कार्य व मूल्यांकन के विषय में विद्यार्थियों को विस्तार से समझाया जाए।
- ❖ कार्य-प्रपत्र को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिख दें, जिसे विद्यार्थी पृष्ठ पर उतार कर उत्तर देंगे।

कार्य प्रपत्र का प्रारूप (मिलान करें एवं शब्द बनाएं)

1.	लघु	+	एषण	=	
2.	पुरुष	+	इत	=	
3.	यथा	+	आगत	=	
4.	लोक	+	ऋषि	=	
5.	अनु	+	उत्तर	=	लघूत्तर (उदाहरण स्वरूप)
6.	सु	+	ऊन	=	



7.	मातृ	+	इका	=	
8.	ब्रह्म	+	आदेश	=	
9.	प्रति	+	अर्थ	=	
10.	गै	+	उत्तम	=	
11.	सत्य	+	ऊर्मि	=	
12.	नि	+	एव	=	

- ❖ इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को 15-20 मिनट का समय अवश्य दिया जाए।
- ❖ शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि सभी ने श्यामपट्ट से सही-सही लिख लिया है

मूल्यांकन के आधार बिंदु

अंक विभाजन

10-12 सही उत्तर पर	5
8-9 सही उत्तर पर	4
6-7 सही उत्तर पर	3
4-5 सही उत्तर पर	2
2-3 सही उत्तर पर	1
	5

टिप्पणी :

- ❖ अध्यापक किसी अन्य उपयुक्त बिंदु को भी मूल्यांकन का आधार बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- ❖ सम्पूर्ण कार्य सही करने वालों की सराहना की जाए।
- ❖ जो कार्य पूरा नहीं कर पाए, उन्हें अतिरिक्त समय दिया जाए।
- ❖ सही उत्तर श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएं ताकि विद्यार्थी अशुद्धियों को सुधार सकें। ध्यान रहे कार्यपत्र का मूल्यांकन करने के पश्चात ही उत्तर बताएं जाएं।

